SPATIAL ANALYSIS OF ELECTORAL SUPPORT IN THE CONSTITUENCIES OF ALLAHABAD DISTRICT

इलाहाबाद जिले के निर्वाचन क्षेत्रों में निर्वाचकीय समर्थन का स्थानिक विश्लेषण
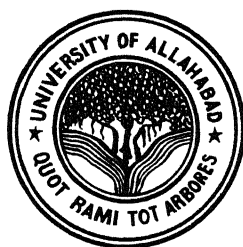
इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी0 फिल् (भूगोल)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

पर्यवेक्षक

डा0 मनोरमा सिन्हा

रीडर, भूगोल विभाग

शोधकर्ता

राजेन्द्र प्रसाद सिंह

भूगोल विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

1999

समर्पण

"मेरा यह प्रयास आत्मबोध की दिशा मे

श्रद्धा–सुमन के रूप में

हार्दिक चरण स्पर्श के साथ

स्वर्गीय पिता श्री राम अचल सिंह जी

की पुण्य–स्मृति मे

सादर समर्पित"

विषयानुक्रम

		क्रम
	विषय–सूची	1–14
	मानचित्र सूची	15–21
	कृतज्ञता ज्ञापन	22–23

प्रथम अध्याय

1.	**विषय–प्रवेश**	**24–45**
1.1	निर्वाचन भूगोल–संक्षिप्त परिचय	27
1.2	निर्वाचन भूगोल के अध्ययन का विकास क्रम	28
1.3	भारत में निर्वाचन सम्बन्धी अध्ययन	31
1.4	अध्ययन का उद्देश्य	32
1.5	संकल्पना	33
1.6	विधितन्त्रात्मक औचित्य	35
1.7	उपागम एवं विधि	36–38
1.7.1	(I) ऐतिहासिक उपागम	
1.7.2	(II) क्षेत्रीय उपागम	
1.7.3	(III) व्यापक या क्रमबद्ध उपागम	
1.7.4	(IV) व्यवहारिक उपागम	
1.8	अध्ययन क्षेत्र परिचय	38
1.9	अध्ययन कार्य से सम्बन्धित समस्याये	44
1.10	अध्ययन कार्य उपलब्धियाँ	45

द्वितीय अध्याय

2.	**अध्ययन प्रक्रिया विश्लेषण**	**46–59**

2 1	शोध योजना	47
2.2	आंकडों का संकलन	47
2.3	आंकडो का श्रोत	48
2.4	आंकडो का शुद्धीकरण	50
2.5	**आंकड़ा सम्बन्धी समस्या उनका समाधान**	51–55
2.5.1	आंकडो की विसंगति	51
2.5.1.1	कालिक विसंगति	51
2.5.1.2	ईकाई विसंगति	51
2.5.1.3	स्थानिक विसंगति	51
2.6.1	**आंकड़ो का सांख्यकीय विश्लेषण**	**56–57**
2.6.1.1	वितरण विश्लेषण	56
2.6.1.2	वास्तविक वितरण	56
2.6.1.3	सापेक्षिक वितरण	57
2.71	**प्रमुख चर विश्लेषण**	**57–58**
2.7.1.1	सामाजिक चर निर्धारण	58
2.7.1.2	सहसम्बन्ध एवं समाश्रयण विश्लेषण	58
2.8.1	**मानचित्रण**	**58–59**
2.8.1.1	सममान रेखी विधि	59
2.8.1.2	छायाकरण विधि	59

तृतीय अध्याय

3.	**भारत में निर्वाचन पृष्ठभूमि**	**60–88**
3.1.	निर्वाचन की ऐतिहासिक पृष्ठिभूमि	61
3.2.	वर्तमान भारतीय निर्वाचन प्रणाली	63
3.3.	**निर्वाचन प्रणाली का संवैधानिक ढांचा**	**65–73**
3.3.1	निर्वाचन आयोग	65
3.3.2	निर्वाचन आयोग के कार्य	66

3.3.2.1 निर्वाचन क्षेत्र परिसीमन 67

3.3.2.2 सीटों का आरक्षण 67

3.3.2.3 निर्वाचन नामांकन 72

3.3.2 4 चुनाव चिन्ह आवंटन 73

3.4 निर्वाचको (मतदाताओं) की योग्यतायें 73

3.5 लोकसभा एवं निर्वाचन प्रक्रिया 74—76

3.5.1 लोकसभा संगठन 74

3.5.2 लोकसभा निर्वाचन पद्धति 74

3.5.3 लोकसभा के सदस्यों की योग्यताऐं 75

3.5.4 लोकसभा का कार्यकाल एवं विघटन 76

3.6 विधानसभा एवं निर्वाचन प्रक्रिया 76—78

3.6.1 विधानसभा का संगठन 76

3.6.2 विधानसभा सदस्यों की योग्यताऐं 77

3.6 3 विधानसभा का कार्यकाल एवं विघटन 78

3.7 निर्वाचन की राजनैतिक पृष्ठभूमि 78—88

3.7.1 प्रथम लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1952 79

3.7.2 द्वितीय लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1957 80

3.7.3 तृतीय लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1962 81

3.7.4 चतुर्थ लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1967 82

3.7.5 पंचम लोकसभा का मध्यावधि निर्वाचन – 1971 83

3.7.6 षष्टम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1974 83

3.7.7 सप्तम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1977 84

3.7.8 अष्टम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1980 85

3.7.9 नवम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1985 86

3.7.10 दशम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1989 87

3.7.11 एकादश लोकसभा विधानसभा निर्वाचन – 1991 88

चतुर्थ अध्याय

4	**सीट वितरण प्रतिरूप**	**89—137**
4.1	**लोकसभा वितरण प्रतिरूप (1952—1991)**	**90—100**
4.1.1	**सीट**	**90**
4.1.1.1	दलों की वास्तविक स्थिति	90
4.1.1.2	दलों की सापेक्षिक स्थिति	92
4.1.1.3	वितरण प्रतिरूप	94
4.1.1.3.1	विजयी दल का वितरण	97
4.1.1.3.2	पराजित (द्वितीय) दल का वितरण	97
4.2	**विधानसभा वितरण प्रतिरूप (1952—91)**	**101—114**
4.2.1	सीट	101
4.2.1.1	दलों की वास्तविक स्थिति	101
4.2.1.2	दलों की सापेक्षिक स्थिति	103
4.2.1.3	वितरण प्रतिरूप	109
4.2.1.3.1	विजयी दल का वितरण	109
4.2.1.3.2	पराजित (द्वितीय) दल का वितरण	110
4.3	**लोकसभा दल प्रतियोगिता विश्लेषण**	**115—118**
4.3.1	लोकसभा दल प्रतियोगिता विश्लेषण	115
4.3.1.1	उच्चतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र	115
4.3.1.2	उच्च दल प्रतियोगिता क्षेत्र	115
4.3.1.3	मध्यम दल प्रतियोगिता क्षेत्र	115
4.3.1.4	निम्न दल प्रतियोगिता क्षेत्र	118
4.3.1.5	निम्नतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र	118
4.4	**विधान सभा दल प्रतियोगिता विश्लेषण**	**118—124**
4.4.1	उच्चतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र	119
4.4.2	उच्च दल प्रतियोगिता क्षेत्र	119
4.4.3	मध्यम दल प्रतियोगिता क्षेत्र	119
4.4.4	निम्न दल प्रतियोगिता क्षेत्र	122

4.4.5 निम्नतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र 122

4.5 प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता 125—129

4.5.1 लोकसभा प्रगाढता 125

4.5.2 विधानसभा प्रगाढता 129

4.6 आरक्षित एवं सामान्य सीट 131—133

4.6.1 लोकसभा (1952—91) 131

4.6.2 विधानसभा (1952—91) 133

4.6.3 आरक्षित एवं सामान्य सीटों में मतदान 134—137

4.6.3.1 लोकसभा (1952—91) 134

4.6.3.2 विधानसभा (1952—91) 136

पंचम अध्याय

5. मतदान वितरण प्रतिरूप 138—166

5.1 मतदान का स्थानिक वितरण 139—144

5.1.1 लोकसभा मतदान स्थानिक वितरण (1952—91) 144—147

5.1.1.1 उच्चतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 144

5.1.1.2 उच्च मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 145

5.1.1.3 मध्यम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 145

5.1.1.4 निम्न मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 145

5.1.1.5 निम्नतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 145

5.2 लोकसभा मतदान वितरण (जेडलब्धि) 1952—91 148—151

5.2.1 उच्चतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 148

5.2.2 उच्च मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 148

5.2.3 मध्यम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 148

5.2.4 निम्न मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 148

5.2.5 निम्नतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 151

5.1.3 विधानसभा मतदान स्थानिक वितरण (1952—91) **151—153**

5.1.3.1 उच्चतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 151

5.1.3.2 उच्च मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 152

5.1.3.3 मध्यम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 152

5.1.3.4 निम्न मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 153

5.1.3.5 निम्नतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 153

5.1.4 विधानसभा मतदान वितरण (जेडलब्धि) 1952—91 **153—157**

5.1.4.1 उच्चतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 156

5.1.4.2 उच्च मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 156

5.1.4.3 मध्यम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 156

5.1.4.4 निम्न मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 157

5.1.4.5 निम्नतम मतदान प्रतियोगिता क्षेत्र 157

5.2 मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण **157—166**

5.2.1 **लोकसभा मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण** (1952—91) **158—163**

5.2.1.1 उच्चतम संकेन्द्रण 161

5.2.1.2 उच्च संकेन्द्रण 161

5.2.1.3 मध्यम संकेन्द्रण 161

5.2.1.4 निम्न संकेन्द्रण 161

5.2.1.5 निम्नतम संकेन्द्रण 161

5.2.2 विधानसभा मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण (1952—91) **164—166**

5.2.2.1 उच्चतम संकेन्द्रण 164

5.2.2.2 उच्च संकेन्द्रण 164

5.2.2.3 मध्यम संकेन्द्रण 165

5.2.2.4 निम्न संकेन्द्रण 165

5.2.2.5 निम्नतम संकेन्द्रण 166

षष्टम् अध्याय

6.	**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) समर्थन**	**167–198**
6.1	**लोकसभा चुनाव में समर्थन (1952–91)**	**168–173**
6.1.1	स्थानिक वितरण (प्रतिशत में) 1951–91	171
6.1.1.1	उच्चतम समर्थन क्षेत्र	171
6.1.1.2	उच्च समर्थन क्षेत्र	172
6.1.1.3	मध्यम समर्थन क्षेत्र	172
6.1.1.4	निम्न समर्थन क्षेत्र	172
6.1.1.5	निम्नतम समर्थन क्षेत्र	173
6.1.2	**जेड लब्धि (1962–91)**	**173–174**
6.1.2.1	उच्चतम क्षेत्र	173
6.1.2.2	उच्च क्षेत्र	173
6.1.2.3	मध्यम क्षेत्र	174
6.1.2.4	निम्न क्षेत्र	174
6.1.2.5	निम्नतम क्षेत्र	174
6.2	**विधान सभा चुनाव में समर्थन (1952–91)**	**174–182**
6.2.1	स्थानिक वितरण प्रतिशत में	177
6.2.1.1	उच्चतम समर्थन क्षेत्र	177
6.2.1.2	उच्च समर्थन क्षेत्र	177
6.2.1.3	मध्यम समर्थन क्षेत्र	177
6.2.1.4	निम्न समर्थन क्षेत्र	180
6.2.1.5	निम्नतम समर्थन क्षेत्र	182
6.2.2	**जेड लब्धि (1962–91)**	**182–187**
6.2.2.1	उच्चतम क्षेत्र	182
6.2.2.2	उच्च क्षेत्र	184
6.2.2.3	मध्यम क्षेत्र	185
6.2.2.4	निम्न क्षेत्र	186
6.2.2.5	निम्नतम क्षेत्र	186

6.3	**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) का क्षेत्रीय संकेन्द्रण**	**186–192**
6.3.1	**लोकसभा निर्वाचन संकेन्द्रण (1952–91)**	**189–190**
6.3.1.1	उच्चतम संकेन्द्रण	189
6.3.1.2	उच्च संकेन्द्रण	190
6.3.1.3	मध्यम संकेन्द्रण	190
6.3.1.4	निम्न संकेन्द्रण	190
6.3.1.5	निम्नतम संकेन्द्रण	190
6.3.2	**विधान सभा निर्वाचन संकेन्द्रण (1952–91)**	**190–192**
6.3.2.1	उच्चतम संकेन्द्रण	190
6.3.2.2	उच्च संकेन्द्रण	191
6.3.2.3	मध्यम संकेन्द्रण	191
6.3.2.4	निम्न संकेन्द्रण	192
6.3.2.5	निम्नतम संकेन्द्रण	192
6.4	**विजयी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) दल**	**192–195**
6.5	**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) की जीत के कारण**	**195–196**
6.6	**भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) की पराजय के कारण**	**197–198**

सप्तम् अध्याय

7.0	**प्रमुख दल समर्थन**	**199–234**
7.0	**भूमिका**	**200**
7.1	**भारतीय जनता पार्टी**	**201**
7.1.1	**भारतीय जनता पार्टी का विकास**	**201**
7.1.2.1	**भारतीय जनता पार्टी का स्थानिक वितरण (लोकसभा एवं विधानसभा)**	**200–205**
7.1.2.1.1	उच्चतम क्षेत्र	202
7.1.2.1.2	उच्च क्षेत्र	203

7.1.2.1.3 मध्यम क्षेत्र 203

7.1.2.1.4 निम्न क्षेत्र 203

7.1.2.1.5 निम्नतम क्षेत्र 205

7.1.3 भारतीय जनता पार्टी जेड लब्धि तल 206—209

7.1.3.1 लोकसभा जेड लब्धि तल 206

7.1.3.2 विधान सभा जेड लब्धि तल 206

7.1.4 भारतीय जनता पार्टी का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 209—212

7.1.4.1 लोकसभा क्षेत्रीय संकेन्द्रण 209

7.1.4.2 विधान सभा का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 211

7.2 जनता दल 212

7.2.1 जनता दल का विकास 212—222

7.2.2.1 जनता दल का स्थानिक वितरण (लोकसभा एवं विधान सभा) 214—217

7.2.2.1.1 उच्चतम क्षेत्र 216

7.2.2.1.2 उच्च क्षेत्र 216

7.2.2.1.3 मध्यम क्षेत्र 216

7.2.2.1.4 निम्न क्षेत्र 216

7.2.2.1.5 निम्नतम क्षेत्र 216

7.2.3 जनता दल जेड लब्धि तल 217—220

7.2.3.1 लोकसभा जेड लब्धि तल 217

7.2.3.2 विधान सभा जेड लब्धि तल 219

7.2.4 जनता दल का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 220—223

7.2.4.1 लोकसभा क्षेत्रीय संकेन्द्रण 220

7.2.4.2 विधान सभा का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 221

7.3 बहुजन समाज पार्टी 223—234

7.3.1 बहुजन समाज पार्टी का विकास 223

7.3.2.1 बहुजन समाज पार्टी का स्थानिक वितरण (लोकसभा एवं विधान सभा) 224—227

7.3.2.1.1 उच्चतम क्षेत्र 226

7.3.2.1.2 उच्च क्षेत्र 227

7.3.2.1.3 मध्यम क्षेत्र 227

7.3.2.1.4 निम्न क्षेत्र 227

7.3.2.1.5 निम्नतम क्षेत्र 227

7.3.3 बहुजन समाज पार्टी जेड लब्धि तल 228–231

7.3.3.1 लोकसभा जेड लब्धि तल 228

7.3.3.2 विधान सभा जेड लब्धि तल 230

7.3.4 बहुजन समाज पार्टी का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 231–234

7.3.4.1 लोकसभा क्षेत्रीय संकेन्द्रण 231

7.3.4.2 विधानसभा का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 233

अष्टम् अध्याय

8. मतदान एवं सामाजिक चरों के मध्य सहसम्बन्ध 235–382

8.1 समाश्रयण प्रतिमान 237–248

8.1.1 सम्बन्धों की प्रकृति 238

8.1.2 सम्बन्धों की मात्रा 244

8.1.3 समाश्रयण अवशेष 245

8.2 मतदान एवं कुल जनसंख्या सह–सम्बन्ध 248–254

8.2.1 सामान्य क्षेत्र 251

8.2.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 252

8.2.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 253

8.3 मतदान एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध 254–260

8.3.1 सामान्य क्षेत्र 254

8.3.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 258

8.3.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 259

8.4 मतदान एवं जनजाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध 260–262

8.4.1 सामान्य क्षेत्र 260
8.4.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 262
8.4.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 262
8.5 मतदान एवं साक्षर जनसंख्या सहसम्बन्ध 263–268
8.5.1 सामान्य क्षेत्र 263
8.5.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 266
8.5.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 266
8.6 मतदान एवं हिन्दू जनसंख्या सह–सम्बन्ध 268–272
8.6.1 सामान्य क्षेत्र 270
8.6.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 271
8.6.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 272
8.7 मतदान एवं मुस्लिम जनसंख्या सह–सम्बन्ध 272–276
8.7.1 सामान्य क्षेत्र 274
8.7.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 275
8.7.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 275
8.8 मतदान एवं कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति, जन–जाति, साक्षर, हिन्दू, मुस्लिम जनसंख्या का समग्र सह–सम्बन्ध 276–282
8.8.1 सामान्य क्षेत्र 276
8.8.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 280
8.8.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 281

नवम् अध्याय

9. विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध 283–330
9.1 समाश्रयण प्रतिमान 285–297
9.1.1 सम्बन्धों की प्रकृति 285
9.1.2 सम्बन्धों की मात्रा 292
9.1.3 समाश्रयण अवशेष 293

9.2	**विजयी दल एवं कुल जनसंख्या सह–सम्बन्ध**	**297–303**
9.2.1	सामान्य क्षेत्र	297
9.2.2	सामान्य से अधिक क्षेत्र	301
9.2.3	सामान्य से निम्न क्षेत्र	302
9.3	**विजयी दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध**	**303–309**
9.3.1	सामान्य क्षेत्र	303
9.3.2	सामान्य से अधिक क्षेत्र	307
9.3.3	सामान्य से निम्न क्षेत्र	308
9.4	**विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध**	**309–312**
9.4.1	सामान्य क्षेत्र	309
9.4.2	सामान्य से अधिक क्षेत्र	311
9.4.3	सामान्य से निम्न क्षेत्र	311
9.5	**विजयी दल एवं साक्षर जनसंख्या सहसम्बन्ध**	**312–317**
9.5.1	सामान्य क्षेत्र	312
9.5.2	सामान्य से अधिक क्षेत्र	316
9.5.3	सामान्य से निम्न क्षेत्र	317
9.6	**विजयी दल एवं हिन्दू जनसंख्या सह–सम्बन्ध**	**318–321**
9.6.1	सामान्य क्षेत्र	318
9.6.2	सामान्य से अधिक क्षेत्र	320
9.6.3	सामान्य से निम्न क्षेत्र	320
9.7	**विजयी दल एवं मुस्लिम जनसंख्या सह–सम्बन्ध**	**321–325**
9.7.1	सामान्य क्षेत्र	321
9.7.2	सामान्य से अधिक क्षेत्र	323
9.7.3	सामान्य से निम्न क्षेत्र	324
9.8	**विजयी दल एवं कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति, जन–जाति, साक्षर, हिन्दू, मुस्लिम जनसंख्या का समग्र सह–सम्बन्ध**	**325–330**
9.8.1	सामान्य क्षेत्र	325

9.8.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 329

9.8.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 329

दशम् अध्याय

10. पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध 331–383

10.1 समाश्रयण प्रतिमान 332–346

10.1.1 सम्बन्धों की प्रकृति 332

10.1.2 सम्बन्धों की मात्रा 341

10.1.3 समाश्रयण अवशेष 343

10.2 पराजित दल एवं कुल जनसंख्या सह–सम्बन्ध 346–352

10.2.1 सामान्य क्षेत्र 346

10.2.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 350

10.2.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 351

10.3 पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध 353–359

10.3.1 सामान्य क्षेत्र 353

10.3.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 357

10.3.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 358

10.4 पराजित दल एवं जनजाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध 359–363

10.4.1 सामान्य क्षेत्र 361

10.4.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 361

10.4.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 362

10.5 पराजित दल एवं साक्षर जनसंख्या सहसम्बन्ध 363–369

10.5.1 सामान्य क्षेत्र 363

10.5.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 367

10.5.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 368

10.6 पराजित दल एवं हिन्दू जनसंख्या सह–सम्बन्ध 369–373

10.6.1 सामान्य क्षेत्र 369

10.6.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 371

10.6.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 372

10.7 पराजित दल एवं मुस्लिम जनसंख्या सह–सम्बन्ध 373–377

10.7.1 सामान्य क्षेत्र 375

10.7.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 376

10.7.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 376

10.8 पराजित दल एवं कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति, जन–जाति, साक्षर, हिन्दू, मुस्लिम जनसंख्या का समग्र सह–सम्बन्ध 377–383

10.8.1 सामान्य क्षेत्र 380

10.8.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र 381

10.8.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र 382

एकादश अध्याय

11 सारांश 384–400

अनुक्रमणिका

2.1 इलाहाबाद जिले के निर्वाचन क्षेत्रों के नाम –1952 से 1991 402–406

2.1.2 लोक सभा क्षेत्र 1952 से 1962 402

2.1.3 लोकसभा क्षेत्र 1967 से 1991 402

2.1.4 विधान सभा क्षेत्र 1952 से 1967 402

2.1.5 विधान सभा क्षेत्र 1967 से 1991 404

2.2 इलाहाबाद जिले की तहसीलों के नाम 406

संदर्भ सूची 407–439

शब्दावली 440–444

'LIST OF MAPS'

FIG. NO	MAP DESCRIPTION	PAGE NO.
1.1	Location Map Of Allahabad	39
2.1	Electoral Data Units (Vidhan Sabha) Constituencies	52
2.2	Electoral Data Units (Lok Sabha) Constituencies	52
2.3	Social Data Units (Tehsils)	55
3.1	Reserved Seats (Vidhan Sabha) Constituencies	71
3.2	Reserved Seats (Lok Sabha) Constituencies	71
4.1.1	Party Distribution : 1952 To 1971 Lok Sabha (Winning Parties)	95
4.1.2	Party Distribution 1977 To 1991 Lok Sabha (Winning Parties)	96
4.2.1	Party Distribution 1952 To 1971 Lok Sabha (Runner Parties)	98
4.2.2	Party Destribution : 1977 To 1991 Lok Sabha (Runner Parties)	99
4.3.1	Party Distribution : 1952 To 1974 Vidhan Sabha (Winning Parties)	107
4.3.2	Party Distribution : 1977 To 1991 Vidhan Sabha (Winning Parties)	108
4.4.1	Party Distribution : 1952 To 1974 Vidhan Sabha (Runner Parties)	111
4.4.2	Party Distribution : 1977 To 1991 Vidhan Sabha	112

(Runner Parties)

4.5.1	Competitiveness 1952 To 1967 (Lok Sabha) Constituency	116
4.5.2	Competitiveness 1977 To 1991 (Lok Sabha) Constituency	117
4.6.1	Competitiveness 1952 To 1967 (Vidhan Sabha) Assembly	120
4.6.2	Competitiveness 1974 To 1991 (Vidhan Sabha) Assembly	121
4.7.1	Contest intensity 1952 To 1971 (Lok Sabha) Constituency	123
4.7.2	Contest Intensity 1977 To 91 (Lok Sabha)	124
4.8.1	Contest Intensity 1952 To 74 (Vidhan Sabha)	127
4.8.2	Contest Intensity 1977 To 91 (Vidhan Sabha)	128
5.1.1	Absolute Distribution Of Turnout 1952 To 1971 (Percent) Lok Sabha	142
5.1.2	Absolute Distribution Of Turnout 1977 To 1991 (Percent) Lok Sabha	143
5.2.1	Turnout Distribution 1952 To 1971 (Z-Score) Lok Sabha	146
5.2.2	Turnout Distribution 1977 To 1991 (Z-Score) Lok Sabha	147
5.3.1	Absolute Distribution Of Turnout 1952 To 1974 (Percent) Vidhan Sabha	149
5.3.2	Absolute Distribution Of Turnout 1977 To 1991 (Percent) Vidhan Sabha	150

5.4.1	Turnout Distribution 1952 To 1974 (Z-Score) Vidhan Sabha	154
5.4.2	Turnout Distribution 1977 To 1991 (Z-Score) Vidhan Sabha	155
5.5.1	Spatial Concentration Of Turnout 1952 To 1971 (Percent) Lok Sabha	159
5.5.2	Spatial Concentration Of Turnout 1977 To 1991 (Percent) Lok Sabha	160
5.6.1	Spatial Concentration Of Turnout 1952 To 1971 (Percent) Vidhan Sabha	162
5.6.2	Spatial Concentration Of Turnout 1977 To 1991 (Percent) Vidhan Sabha	163
6.1.1	Absolute Distribution Of Congress (I) Votes 1952 To 1971 (Percent) Lok Sabha	169
6.1.2	Absolute Distribution Of Congress (I) Votes 1977 To 1991 (Percent) Lok Sabha	170
6.2.1	Distribution Of Congress (I) Votes (Z-Score) 1962 To 1971 Lok Sabha	175
6.2.2	Distribution Of Congress (I) Votes (Z-Score) 1977 To 1991 Lok Sabha	176
6.3.1	Absolute Distribution Of Congress (I) Votes 1952 To 1974 (Percent) Vidhan Sabha	178
6.3.2	Absolute Distribution Of Congress (I) Votes 1977 To 1991 (Percent) Vidhan Sabha	179
6.4.1	Distribution Of Congress (I) Votes (Z Score) 1962 To 1977 Vidhan Sabha	183

6.4.2	Distribution Of Congress (I) Votes (Z Score) 1980 To 1991 Vidhan Sabha	184
6.5.1	Spatial Concentration Of Congress (I) Vote 1952 To 71 (Lok Sabha)	187
6.5.2	Spatial Concentration Of Congress (I) Vote 1977 To 91 (Lok Sabha)	188
6.6.1	Spatial Concentration Of Congress (I) Vote 1952 To 74 (Vidhan Sabha)	193
6.6.2	Spatial Concentration Of Congress (I) Vote 1977 To 91 (Vidhan Sabha)	194
7.1	Absolute Distribution B.J.P. Votes 1980 To 1991 (Percent) Vidhan Sabha & Lok Sabha	204
7.2	Distribution Of B.J.P. Votes Lok Sabha & Vidhan Sabha 1989 To 1991 (Z-Score)	207
7.3	Spatial Concentration Of B.J.P. Votes 1980, 1985, 1989, 91 (Percent) Lok Sabha & Vidhan Sabha	210
7.4	Absolute Distribution Janta Dal Votes Lok Sabha & Vidhan Sabha 1991, 1989 (Percent)	215
7.5	Distribution Of Janta Dal Votes (Z-Score) Lok Sabha & Vidhan Sabha 1991, 1989	218
7.6	Spatial Concentration Of Janta Dal Votes (Percent) Lok Sabha & Vidhan Sabha 1991, 1989	222
7.7	Absolute Distribution Of B.S.P. Votes (Percent) Lok Sabha & Vidhan Sabha 1991, 1989	225
7.8	Distribution Of B.S.P Votes Lok Sabha & Vidhan Sabha (Z-Score) 1991, 1989	229

7.9	Spatial Concentration Of B.S.P. Votes (Present) Lok Sabha & Vidhan Sabha (Percent) 1991, 1989	232
8.2.1	Relationship Between Turnout And Population (1980-1991) : Bivariate Regression.	249
8.2.2	Relationship Between Turnout And Population (1962-1977) : Bivariate Regression.	250
8.3.1	Relationship Between Turnout And S.C. Population (1980-1991) : Bivariate Regression.	255
8.3.2	Relationship Between Turnout And S.C. Population (1962-1977) : Bivariate Regression.	256
8.4.1	Relationship Between Turnout And S.T. Population (1991, 1971) : Bivariate Regression.	261
8.5.1	Relationship Between Turnout And Literate Population (1980-1991) : Bivariate Regression.	264
8.5.2	Relationship Between Turnout And Literate Population (1962-1977) : Bivariate Regression.	265
8.6.1	Relationship Between Turnout And Hindu Population (1974-1991) : Bivariate Regression.	269
8.7.1	Relationship Between Turnout And Muslim Population (1974-1989) : Bivariate Regression.	273
8.8.1	Relationship Between Turnout And All Variables Population (1980-1991) : Multivariate Regression.	277
8.8.2	Relationship Between Turnout And All Variables (1962-1977) : Multivariate Regression.	278
9.2.1	Relationship Between Winner And Population (1980-1991) : Bivariate Regression.	298

9.2.2 Relationship Between Winner And Population (1962-1977) : Bivariate Regression. 299

9.3.1 Relationship Between Winner And S.C. Population (1980-1991) : Bivariate Regression. 304

9.3.2 Relationship Between Winner And S.C. Population (1962-1977) : Bivariate Regression. 305

9.4.1 Relationship Between Winner And S.T. Population (1991, 1977) : Bivariate Regression. 310

9.5.1 Relationship Between Winner And Literate Population (1980-1991) : Bivariate Regression. 313

9.5.2 Relationship Between Winner And Literate Population (1962-1977) : Bivariate Regression. 314

9.6.1 Relationship Between Winner And Hindu Population (1974-1989) : Bivariate Regression. 319

9.7.1 Relationship Between Winner And Muslim Population (1974-1989) : Bivariate Regression. 322

9.8.1 Relationship Between Winner And All Variables (1980-1991) : Multivariate Regression. 326

9.8.2 Relationship Between Winner And All Variables (1962-1977) : Multivariate Regression. 327

10.2.1 Relationship Between Runner And Population (1980-1991) : Bivariats Regression. 347

10.2.2 Relationship Between Runner And Population (1962-1977) : Bivariate Regression. 348

10.3.1 Relationship Between Runner And S.C. Population (1980-1991) : Bivariats Regression. 354

10.3.2	Relationship Between Runner And S.C. Population (1962-1977) : Bivariats Regression.	355
10.4.1	Relationship Between Runner And S.T. Population (1991, 1977) : Bivariats Regression.	360
10.5.1	Relationship Between Runner And Literates Population (1980-1991) : Bivariats Regression.	364
10.5.2	Relationship Between Runner And Literate Population (1962-1977) : Bivariats Regression.	365
10.6.1	Relationship Between Runner And Hindu Population (1974-1989) : Bivariats Regression.	370
10.7.1	Relationship Between Runner And Muslim Population (1974-1989) : Bivariats Regression.	374
10.8.1	Relationship Between Runner And All Variables (1980-1991) : Multivariate Regression.	378
10.8.2	Relationship Between Runner And All Variables (1962-1977) : Multivariate Regression.	379

कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध तथ्यात्मक ज्ञान की तर्क संगत विवेचना है, जिसमें सत्यता का समायोजन है। इस सत्य को निरूपित एवं प्रदर्शित करने के लिए अनेक विद्वानो एवं सहयोगियों के विचारों को समाहित किया है। एतदर्थ आत्मा से उनके प्रति श्रद्धावनत् हूँ।

शोध पर्यवेक्षक डा0 मनोरमा सिन्हा, रीडर भूगोल विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद का हृदय से आभारी हूँ; जिन्होंने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूर्ण कराने में उत्तरदायित्वपूर्ण, सजग, आत्मीय, स्नेहिल निर्देशन प्रदान किया।

गुरू प्रवर डा0 मिथलेश कुमार श्रीवास्तव का हृदय से आभारी हूँ, जिनका स्नेहिल आर्शीवाद बचपन मे मिला करता था; किन्तु आज उनकी पुण्य स्मृति ही मेरे अन्तर्मन की मौन प्रेरणा बन गई है।

भूगोल विभागाध्यक्ष डा0 सबिन्द्र सिंह जी, डा0 आर0 सी0 तिवारी, डा0 एच0 एन0 मिश्रा, भूगोल परिवार के अन्य समस्त सदस्यों के प्रति हम कृतज्ञ हैं, जिनके सहयोग एवं सुझावों से यह कार्य सम्पन्न हो सका। •

मनुष्य के ज्ञान के विपरीत ईश्वर का ज्ञान पूर्ण एवं असीम है। इस असीम ज्ञान के कुछ अंश प्रदान करने के सहयोगार्थ अपने धर्म गुरु आचार्य प्रवर श्री राम आधार चर्तुवेदी का हृदय से आभारी हूँ; जिनका असीम स्नेह हमारे ऊपर विद्यमान है।

संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म0 प्र0) के प्राचार्य डा0 लाल जी खरे; विभागाध्यक्ष भूगोल एवं हमारे सहयोगी मित्र डा0 एस0 यू0 खान, डा0 एच0 एल0 शर्मा, डा0 जै सिंह चौहान, डा0 एम0 के0 सिंह के प्रति मैं कृतज्ञता प्रदर्शित करता हूँ, जिनका सहयोग, सुझाव सदा हमारे साथ रहा।

भारतीय निर्वाचन आयोग, निर्वाचन कार्यालय इलाहाबाद, जनगणना एवं सांख्यिकी विभाग, निर्वाचन कार्यालय लखनऊ; बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद एवं अन्य पुस्तकालयों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिनके अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई।

शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए 'टीचर्स फैलोसिप् परियोजना' के अन्तर्गत टीचर्स फैलोसिप प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मध्य क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल एवं उसके संयुक्त निदेशक डा0 कमलाकर सिंह जी का ह्वदय से आभारी हूँ, जिनके सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

अपने मित्र डा0 सुनील त्रिपाठी (इलाहाबाद डिग्री कालेज इलाहाबाद) डा0 अर्चना पाल (जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद) के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान की है।

पूज्य पिता स्वर्गीय श्री राम अचल सिंह जी की पुण्य स्मृति ही आज मेरे लिए आशीष एवं सम्बल है उनके प्रति श्रद्धावनत होते हुए, माँ श्रीमती सती रामा जी, भाई ऋषि प्रसाद सिंह प्रवक्ता भूगोल, श्री शम्भू शरण सिंह, भतीजे सुनील सिंह एवं अन्य सम्बन्धियों, शुभेच्छुओं का ह्वदय से कृतज्ञ हूँ, जिनकी प्रेरणा मेरे इस शोध कार्य में पाथेय सिद्ध हुई है।
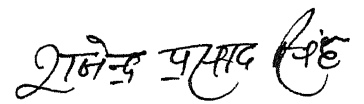
पत्नी श्रीमती नीलम सिंह ने इस शोध कार्य मे मेरी बहुत सहायता की है अतः सहयोग के लिए उसके प्रति हार्दिक कृतज्ञता की अनुभूति सहज स्वाभाविक है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के टंकण का दायित्व श्री अशीष एवं सुमित जी ने वहन किया; मानचित्रों को सुन्दर, सुनियोजित किया श्री अनवर सईद सिद्दकी जी ने, अतः इन सभी साथियों के प्रति मैं ह्वदय से कृतज्ञ हूँ।

अन्त में पुनः डा0 (श्रीमती) मनोरमा सिन्हा जी का चिरऋणी रहूँगा; जिनके अप्रतिम स्नेह एवं विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन से यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

भूगोल विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

राजेन्द्र प्रसाद सिंह

11 जुलाई 1999

(राजेन्द्र प्रसाद सिंह)

प्रथम अध्याय

विषय प्रवेश

1. विषय प्रवेश

एक युग था जब भूगोल को पर्वतों, पठारों, नदियों समुद्रों एवं नगरों का कोश समझा जाता था किन्तु आज का भूगोल वैज्ञानिक विषयों की तरह एक गत्यात्मक विज्ञान है। जिसका आधार वर्णन नहीं अपितु व्याख्या है। आज का भूगोल मानवीय कार्यकलापो के मूलतत्वों की पारस्परिक अवस्थिति एवं उनके समुच्चयिक स्वरूप के सभी अन्तर्प्रवाहिनी संकल्पनाओं को एक स्वरूप में पिरोने का प्रयत्न करता है। वास्तविक रूप में वर्तमान भूगोल का सर्वोपरि उद्देश्य मानव कल्याण है। मानव कल्याण हेतु भूगोल में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सांस्कृतिक तत्वों के विश्लेषण से सामाजिक विभेदों को समझने में सरलता रहती है। भूगोल की प्रमुख समस्या यही रही है कि मानवीय समस्याओं को कैसे उजागर किया जाए क्योंकि, समस्याओं का यह क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा था, अतः इस समस्या के समाधान हेतु इसकी अनेक शाखाएँ एवं प्रशाखाएँ हो गयीं जैसे प्राकृतिक भूगोल, गणितीय भूगोल, जलवायु विज्ञान; समुद्रविज्ञान, आर्थिक भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल; राजनैतिक भूगोल, सामाजिक भूगोल आदि। जिसमें राजनैतिक भूगोल, का सम्बन्ध राजनैतिक क्षेत्रों की इकाई के भूगोल से है, इसमें विभिन्न राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों के अध्ययन के साथ राष्ट्रीय समस्याओं एवं सम्बन्धों का अध्ययन होता है। इसमें राज्य एवं भूभाग के समागम तथा दोनों के मध्य स्थापित होने वाले सम्बन्धों का भी अध्ययन होता है। राजनीतिक भूगोल की शाखा निर्वाचन भूगोल में भारतीय राजनीति के क्षेत्रीय एवं सामाजिक व्यवहारों के अध्ययन का एक लघु प्रयास, यह शोध प्रबन्ध है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्रात्मक देश है। अनादिकाल से सत्ता की राजनीति यहाँ एक जटिल खेल रहा है। मानव सभ्यता के पाँच हजार वर्ष से

भी पुराने इतिहास में कहीं भी कभी भी इतने व्यापक पैमाने पर लोकतांत्रिक प्रयोग नहीं चला जैसा की भारत में स्वाधीनता के बाद से चल रहा है। आज स्वाधीनता के 50 वर्ष पूर्ण हो गये, इस अवधि में भारत के मानचित्र में अनेक राजनैतिक सामाजिक परिवर्तन हुए। यह परिवर्तन मुख्यत. देश की एकता को बनाये रखने के लिए हुआ, क्योंकि भारत में व्यक्ति को लोकतन्त्र की इकाई मानते हुए राष्ट्रीय एकता को महत्वपूर्ण आधार दिया गया है। भारतीय लोकतन्त्र मात्र राजनैतिक एवं सामाजिक परिस्थिति ही नहीं अपितु वह शासन और जीवन की लोकजयी नैतिक धारणा भी है। इसी लोकजयी नैतिक धारणा के आधार पर राजनीतिक प्रक्रिया द्वारा सामाजिक ढांचे एवं मूल्यों को बदलने में सहयोग मिला और राजनैतिक व्यवस्था ने जनता को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। राजनीति की बढ़ती हुई इसी प्रवृत्ति के कारण अब तक जो गांव समाज, वर्ग और सम्प्रदाय राजनीतिक व्यवस्था से दूर थे; वे निकट आ रहे हैं; जिसका मुख्य कारण खुली हुई राजनीतिक व्यवस्था है। इसी व्यवस्था के अन्तर्गत केन्द्रीय सत्ता को बाहरी एवं विजातीय सत्ता के रूप में लादा नहीं जाता बल्कि यह प्रयास किया गया है कि व्यवस्था में विभिन्न वर्गों के लोग स्थान पा सकें।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में राजनीतिक व्यवस्था के कुछ विशिष्ट आयामों के साथ–साथ निर्वाचन का संक्षिप्त परिचय, अध्ययन का विकास क्रम, विधितन्त्रात्मक औचित्य, अध्ययन की प्रक्रिया का विश्लेषण, निर्वाचन की पृष्ठभूमि उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद के संसदीय एवं विधान सभायी निर्वाचन क्षेत्रों का एक रचनात्मक एवं सांख्यिकीय विश्लेषण; निर्वाचकों का दायित्व, उनकी दुर्बलता एवं सबलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन, साथ में लोकतन्त्र को सुदृढ़ बनाने का सुझाव तथा भारतीय तन्त्र के भविष्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय को 10 अनुभागों में विभक्त किया गया है। प्रथम अनुभाग में निर्वाचन भूगोल संक्षिप्त परिचय, द्वितीय में अध्ययन का विकास क्रम, तृतीय में भारत मे निर्वाचन सम्बन्धी अध्ययन, चतुर्थ मे संकल्पना, पंचम में अध्ययन का उद्देश्य,षष्टम् मे विधितांत्रात्मक औचित्य, सप्तम् में उपागम एवं विधि, अष्टम् में अध्ययन क्षेत्र परिचय, नवम् में अध्ययन से सम्बन्धित समस्याओं आदि का वर्णन है।

''निर्वाचन भूगोल संक्षिप्त परिचय''

''राजनीतिक स्वेच्छा का भूगोल'' की संज्ञा से अभिहित निर्वाचन भूगोल राजनीति भूगोल की एक नवीन शाखा है। निर्वाचन भूगोल निर्वाचन एवं भूगोल दो शब्दों का मेल है। निर्वाचन का अर्थ है चुनाव (राजनीतिक व्यक्ति का चुनाव) और भूगोल का पृथ्वी का अध्ययन करने वाला विज्ञान या क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन करने वाला विज्ञान। इस प्रकार एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र में जन प्रतिनिधि के चुनाव का अध्ययन जिस भूगोल की शाखा से किया जाता है उसे निर्वाचन भूगोल कहते हैं। विभिन्न राजनीतिक भूगोल वेत्ताओं ने निर्वाचन भूगोल की भिन्न–भिन्न परिभाषायें दी हैं उसमें प्रमुख कुछ निम्न हैं–

''वे सभी अध्ययन जो भूगोल में निर्वाचन प्रक्रिया की व्याख्या करने में प्रयोग होता है, जब कि निर्वाचन सम्बन्धी विचार भूगोल के क्षेत्र से अलग है; फिर भी एक तार्किक पृष्ठिभूमि में भूगोल समाजिक और राजनैतिक कार्यक्षेत्र होने से निर्वाचन सम्बन्धी प्रक्रिया का अध्ययन करता है निर्वाचन भूगोल कहलाता है।'' (प्रेस काट Precott)।

निर्वाचन मानचित्र कार्यों की प्रादेशिक विभिन्नता को प्रकट करता है जिसमें लोग सामान्यतः निरपेक्ष विषय वस्तु पर विचार प्रकट करते हैं निश्चित दशाओं के

अन्तर्गत चुनाव (निर्वाचन) अध्ययन राजनीतिक भूगोल में खोज के लिए प्रारम्भिक विन्दु हो सकता है........ राज्य के प्रोदशिक विभाजन प्रस्तुत करने के सिद्धान्त के द्वारा स्पष्ट रूप से निर्वाचन भूगोल का मुख्य योगदान प्रादेशिक और राज्य के राजनीतिक भूगोल से ही (HORT SHONE 1950)।

स्पष्ट है कि "निर्वाचन भूगोल राजनीतिक भूगोल की वह शाखा है जो निश्चित भौगोलिक परिस्थितियों की परिसीमा में चुनाव का अध्ययन करती है।

निर्वाचन भूगोल के अध्ययन का विकास क्रम

निर्वाचन भूगोल को अन्य विज्ञानों की भाँति वर्तमान स्वरूप में आने के लिए अनेक अवस्थाओं से गुजरना पडा। यूँ तो निर्वाचन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना की मानव जन्म का इतिहास; किन्तु यह तब तक राजनीतिक भूगोल के साये में पलता रहा जब कि एक महान् पाश्चात्य भूगोल वेत्ता (Edward krehfied's) की नवीनतम विचारधारा निर्वाचन भूगोल के रूप मे उभर कर नहीं आ गयी। यह स्वार्णिम काल जो निर्वाचन भूगोल का जन्म काल माना जा सकता है वह सन् 1885 है।

निर्वाचन भूगोल के अध्ययन का विकास निम्न चरणों में हुआ–

(I) प्रारम्भिक काल	(सन् 1885 ई0 से 1916 ई0 तक)
(II) पूर्व मध्य काल	(सन् 1916 ई0 से 1940 ई0 तक)
(III) मध्यकाल	(सन् 1940 ई0 से 1960 ई0 तक)
(IV) उत्तर मध्यकाल	(सन् 1960 ई0 से 1980 ई0 तक)
(V) आधुनिक काल	(सन् 1980 ई0 से आज तक)

पाश्चात्य भूगोल वेत्ता (Edward krehfied's) एक ऐसा व्यक्तित्व था जिसने ब्रिटिश निर्वाचन प्रणाली के आधार पर निर्वाचन भूगोल की प्रथम विचारधारा प्रस्तुत की। जिसमें उन्होंने निर्वाचन के परिणाम पर वातावरण का प्रभाव बताया तथा उन्होंने मतदान प्रक्रिया में क्षेत्रीय संगठन का सिद्धान्त स्थापित किया। इसके अतिरिक्त इस दिशा में कार्य सेगफ्रेड (1913) और क्रेबहेल (1916) का रहा। 1916 में क्रेबहेल ने ब्रिटेन के संसदीय चुनावों का विश्लेषण किया।

सन् 1985 ई0 1916 तक एडवर्ड क्रीयफील्ड की परिकल्पना व्यवहार में थी। बाद में अनेक विद्वानों के द्वारा अनेक नवीन विचारों का प्रतिपादन हुआ। प्रसिद्ध समाजशास्त्री twart rice की राजनीति में मात्रात्मक पद्धति की विचारधारा प्रमुख थी; जिसमें उन्होंने मतदान प्रक्रिया का वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। 1932 में जे0 के0 राइट ने सं0 रा0 अमेरिका के 1876 से 1928 तक के राष्ट्रपति चुनावों के परिणामों को मानचित्रों द्वारा अंकित कर उनका विश्लेषण प्रस्तुत किया सन् 1932 में C.O. PAULLIM के द्वारा 'संयुक्त राज्य के ऐतिहासिक भूगोल का एटलस' लेख में मतदान परिणाम का मानचित्रीकरण किया गया। 1935 ई0 में HAROLD GOSMELL के द्वारा मानचित्रीय सांख्यिकीय का क्रमबद्ध विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। इसी समय शिकागो के F.W. OGBURN और J.A. JAFFE ने 1936 में 'निर्वाचन और स्वतन्त्र मतदाता के सम्बन्ध' की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इस तरह 1940 ई0 तक मतदान प्रक्रिया विकसित हो चुकी थी।

1940 से 1960 ई0 के काल में मतदान प्रक्रिया में एक नवीन दृष्टिकोण का विकास हुआ। इस समय के अग्रदूत समाजशास्त्रीय थे जो यह मानते थे कि व्यक्तिगत व्यवहार (प्रक्रियाओं) की व्याख्या सामूहिक आंकड़ों से नहीं की जा सकती है; इसलिए वे राजनीतिक पक्षों की व्याख्या करने के लिए व्यक्तित्व पर

अधिक ध्यान देते थे तथा वातावरण का संयोजन भी करते थे। इस प्रकार के आंकड़ों की इस तकनीकी पद्धति का नाम ''पैनल मैथड'' के नाम से जाना जाता है। द्वितीय महायुद्ध के बाद इस क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए। महान् विचारक F. LAZARSFELD'S ने अपनी कृति The PEOPLE,S CHOICE (1948) में उल्लेख किया कि लोगों की मतदान प्रक्रिया का चुनाव पूरी तरह से सामुदायिक वातावरण से प्रभावित हुए विना नहीं रहता। 1949 में बी0 के0 डीन ने न्यूफाडण्डलैण्ड के निर्यावन आंकड़ों का स्थानीय भौगोलिक स्वरूप प्रस्तुत किया। इसी समय रावर्ट एम0 क्रिस्टल महोदय ने चुनाव प्रक्रिया का विश्लेषण अपनी प्रसिद्ध कृति ज्योग्राफिकल रिव्यू (Geogrophical Review April 1952) में किया तथा स्मिथ और हार्ट महोदय ने क्षेत्रीय विविधता का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत किया।

1960 से 1980 ई0 के दो दशकों में विद्वानों ने निर्वाचनों में भौगोलिक अध्ययन ही प्रमुख आधार है इसे मानने से इन्कार कर दिया उन्होने भौगोलिक अध्ययन के साथ–साथ प्रक्रिया, वातावरण सामाजिक बन्धन, रीति रिवाज, साक्षरता को भी आधार मानते हुए मात्रात्मक विधि का प्रयोग किया। इस प्रकार वास्तविक निर्वाचन भूगोल का विकास इन्हीं दो दशकों में हुआ। प्रमुख अमेरिकन विचारक ROGER KASPERSON'S ने अपने प्रसिद्ध लेख "ON THE IMPACT OF NEGRO MIGRATION ON THE ELECTORAL GEOGRAPHY OF FLINT MICHIGM" (1965) में जनसंख्या के स्थानान्तरण का निर्वाचन प्रक्रिया से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया, इसी समय 1970 में ROBERT NORRIS ने सर्वप्रथम भौगोलिक अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि' का उपयोग किया। KEVIN COX के द्वारा महानगरीय पद्धति तथा एडवार्ड वॉन और इजर द्वारा गणतन्त्रतीय मतदान प्रणाली; अनेक नगरीय एवं अर्धनगरीय प्रणालियों पर लेख

लिखे गये। STANLY D. BRUMN के लेख "GEOGRAPHY AND POLITICS IN AMERICA' (1974) तथा ROBERT E. NORRIS THE CANADIN RIVER SPLiT : AN ANALYSIS OF VOTING IN OKLAHOMA (1974) से पता चलता है कि इस समय भूगोलवेत्ताओं ने निर्वाचन प्रक्रिया का अध्ययन व्यापक क्षेत्र में किया।

1980 से आज तक के काल में निर्वाचन भूगोल मे जो दोषपूर्ण तकनीक विद्‌यमान थी उसे लगभग समाप्त कर दिया गया है। राष्ट्रस्तर पर अध्ययन तो हो ही रहे हैं किन्तु स्थानीय अध्ययन में भी जागरूकता आयी है। आज प्रक्रिया और व्यावहारिकता में व्यापक परिवर्तन हुआ है। इस समय मत की नवीन पद्धति, सुगम तकनीकी क्षेत्रीय प्रचार प्रक्रिया एवं राजनीति प्रक्रियाओं को विधिवत क्रमबद्ध एवं वैसानिक समालोचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। 1980 से आज तक काल में कतिपय भूगोल वेत्ता एवं विद्वानों ने निर्वाचन भूगोल पर अपने सारगर्भित लेख प्रकाशित किये जैसे – R.J. JOHNSTON (1982) SHORT TERM ELECTORAL CHANGE IN ENGLAND : ESTIMATE OF ITS SPATIAL VARIATION; M.K. SRIVASTAVA (1982) ELECTORAL GEOGRAPHY OF AN INDIAN STATE, SPACE-TIME SOCIOLOGICAL MODELS OF CONGRESS SUPPORT IN UTTAR PRADESH; P.J. TAYLER, S.R. MAHESHWARI; इत्यादि।

भारत में निर्वाचन सम्बन्धी अध्ययन

वीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भूगोल की मात्रात्मक क्रांति से निर्वाचन सम्बन्धी अध्ययन को महत्व दिया जाने लगा। क्योंकि सत्तर के दशक में अनेक सामाजिक, राजनैतिक मानवीय समस्याओं का उदय हुआ। यद्यपि भारत में इस प्रकार के अध्ययनों

का प्रारम्भ 1952 के प्रथम लोक सभा एवं विधान सभा चुनाव के उपरान्त ही प्रारम्भ हो गया था। फिर भी यह कार्य नगण्य ही था। वास्तविक रूप से भारत में 1970 के दशक से निर्वाचन सम्बन्धी कार्यों को महत्व दिया जाने लगा। निर्वाचन सम्बन्धी तथ्यों का यह विश्लेषण मात्र भूगोल में ही नहीं अपितु समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, मनोविज्ञान, जैसे विषयों में भी हुआ। भूगोल में निर्वाचन सम्बन्धी तथ्यों का विश्लेषण यद्यपि कलकत्ता विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, चण्डीगढ विश्वविद्यालय में हुआ फिर भी वर्तमान समय में निर्वाचन भूगोल के अध्ययन का केन्द्र इलाहाबाद विश्वविद्यालय है। इसका प्रमाण हाल के वर्षो में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध हैं। सिन्हा मनोरमा (1977); जे0सी0 शर्मा (1980), सिंह सी0पी0 (1981); श्रीवास्तव एम0 के0 (1982) तिवारी विनोद कुमार (1982); विश्वास जै श्री (1984); सिंह उमाशंकर (1985); पाण्डेय राजकुमार–1985 श्रीवास्तव अशोक कुमार (1987); श्री वास्तव गिरजेश लाल (1987) दूबे बटुकनाथ (1988), खॉन शमशाद अहमद (1989); पाल अर्चना (1990), राम अजिन (1992), शाह तनवीर अहमद (1993)।

अध्ययन का उद्देश्य : राजनीति भूगोल के अध्ययन में निर्वाचन राजनीति एक आधार पक्ष है तथा समाज की वास्तविक मानसिकता का नियामक है। इसके अन्तर्गत न केवल वर्तमान निर्वाचन तन्त्र का बल्कि भूत, भविष्य के निर्वाचन स्वरूप का वास्तविक अध्ययन सम्भव है। इसके अन्तर्गत मुख्य विषयों यथा निर्वाचन की समस्या; निर्वाचकों की समस्या, निर्वाचन आयाम, मतदान, मतदान स्वरूप; विभिन्न दल, दलों का विचार एवं घोषणा पत्र; प्रतिनिधित्व, निर्वाचन सुधार, जनमत संग्रह; जनमत का रूख; निर्वाचन का संवैधानिक स्वरूप; निर्वाचन कर्त्ताओं के अधिकार, निर्वाचन की धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक चुनौतियाँ; उनका समाधान, सांसदों; विधायकों के पक्ष में पड़ने वाले मत के भौगोलिक, सांस्कृतिक प्रतिरूप को सम्मिलित किया गया है। उत्तर प्रदेश की राजनीति में तीन लोकसभा एवं

चौदह विधान सभा सदस्यों को चुनने वाला जनपद इलाहाबाद का विशेष महत्व है; क्योंकि जहाँ इस जनपद से राज्य की राजनीति प्रभावित है वहीं देश की राजनीति को भी इलाहाबाद जनपद प्रभावित करता है इस जनपद की भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनैतिक सामाजिक परिस्थितियों में अत्यधिक विविधता है। अस्तु जनपद की जनता का मतदान के व्यवहार एवं परिणाम पर क्या प्रभाव पड़ता है उसको अध्ययन में विश्लेषित किया गया है। जनपद में 1952 से 1991 तक के चुनाव परिणामों का विश्लेषण क्षेत्रीय आधार पर मानचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रस्तुतीकरण का उद्देश्य जनता के व्यावहारिक मतदान रूपों को क्रमबद्ध ढंग से निरूपित करना है। इस उद्देश्य के साथ की ये मानचित्र चुनाव आयोग, सरकार, राजनीतिक दल एवं जन सामान्य के लिए उपयोगी होंगे। इसके अन्तर्गत न केवल वर्तमान का अपितु भावी स्वरूप के आंकलन को लेकर सरकार, राजनीतिक दल, राजनेता के सामने निर्वाचन क्षेत्रों की समस्यायें क्या हैं उनको क्रमबद्ध ढंग से रेखांकित किया गया है साथ ही 1952 से अब तक चुनाव में मतदान व्यवहार के कौन से कारक किस वर्ष अधिक प्रभावी थे, उनके प्रभावी होने का क्या कारण था, को तर्क के द्वारा सैद्धान्तिक रूप में विश्लेषित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इस तथ्य का भी ध्यान रखा गया है कि किन–किन निर्वाचन वर्षों में कौन–कौन से वातावरणीय तत्व किस रूप मे मतदाताओं को प्रभावित किये हैं, उसको क्रमबद्ध ढंग से विवेचित करने का तर्क संगत प्रयास किया गया है। साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय एवं क्षेत्रीय दलों की वास्तविक स्थिति को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

संकल्पना

भौगोलिक अध्ययन 1960 ई0 के पूर्व वर्णन प्रधान था। परम्परागत एवं क्षेत्रीय विषमता की संकल्पना से भूगोल के प्रत्येक क्षेत्र में अतिरंजित वर्णन की

प्रधानता थी। सिद्धान्तों के प्रतिपादन का सर्वथा अभाव था। 1960, 1970, 1980, 1990 के इन चार दशकों में भूगोल में विभिन्न अभिनव प्रवृत्तियों जैसे स्थानीयकरण सम्बन्धी नियम एवं तथ्यात्मक प्रक्रियाओं की व्याख्या होने लगी। जैसा कि निश्चित है कि आदर्श संकल्पना के द्वारा किसी विषय का वास्तविक निर्धारण होता है। निर्वाचन से सम्बन्धित अध्ययन प्रारम्भ में राजनीति शास्त्र समाजशास्त्र जैसे विषयों में होते आये हैं विगत 35 वर्षों से इसका अध्ययन निर्वाचन भूगोल के अन्तर्गत प्रारम्भ हो गया। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की संकल्पना का निर्धारण प्रारम्भ से अन्त तक के अध्ययनों के सहारे हो सका। इस शोध प्रबन्ध में निर्वाचन के विभिन्न तथ्यों यथा निर्वाचन का उद्भव, निर्वाचन पृष्ठभूमि, अवस्थिति निर्धारण, चुनावी राजनीति एवं मतदान व्यवहार, मानचित्रीकरण एवं चरों का सम्बन्ध क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है। निर्वाचन की विशिष्टता का प्रकटीकरण केवल सैद्धान्तिक दृष्टि से ही नही अपितु व्यावहारिक दृष्टि से भी किया गया है, साथ में ऐसे प्रभावकारी तत्वों या घटनाओं का विश्लेषण भी है जो निर्वाचन पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में विवरण को जितना महत्त्व दिया गया है उतना ही महत्त्व विवेचन की क्रमबद्धता; स्पष्टता एवं तार्किकता को भी।

शोध प्रबन्ध में निगमनात्मक उपागम (सिद्धान्तों को विशिष्ट परिस्थितियों में कार्यान्वित कर उनके परिणामों को देखना) के माध्यम से प्रत्यक्ष आधार पर प्राप्त सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। चरों के एकल एवं मिश्रित प्रभावों का विश्लेषण व्यावहारिक उपागम के माध्यम से प्रस्तुत है। निर्वाचन परिणामों पर क्षेत्रीय समस्याओं आर्थिक, सामाजिक, वर्गवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद का कैसा प्रभाव रहा उसे सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इन तत्वों के अतिरिक्त सांख्यिकीय विश्लेषण एवं प्रक्रियात्मक विवेचन की विधि बड़े पैमाने पर अपनायी गयी है। अध्ययन में दलों

की दलगत राजनीति, दलों की प्रगाढ़ता दलों के विजित एवं पराजित होने का परिस्थिति को व्यावहारिक माध्यम से विवेचित किया गया है।

विधितन्त्रात्मक औचित्य

विधितन्त्र का तात्पर्य विश्लेषण की विधि (TECHNIQUE OF ANALYSIS) नही, अपितु विषय की सम्पूर्ण विज्ञान के सन्दर्भ में क्या **स्थिति एवं महत्त्त** है, अर्थात् वास्तविकता के आकलन में संकल्पनात्मक स्तर पर इसका क्या विशिष्ट स्थान एवं योगदान है, इसकी समीक्षा से है।

जैसा कि जानते हैं निर्वाचन भूगोल राजनीति भूगोल की एक प्रमुख शाखा है। जिसका प्रारम्भ अलग विज्ञान के रूप में 1916 (क्रेसिल) की कृति से माना जाता है, परन्तुं विज्ञान की इस शाखा (निर्वाचन भूगोल) को प्रमुख स्थान 1971 के आस–पास प्राप्त हुआ जब इसमें व्यवहार परक अध्ययनों को प्राथमिकता दी जाने लगी। जिस देश में दुनिया के सबसे विविध चरित्रों एवं मान्यताओं वाले 47. 5 करोड़ के लगभग मतदाता हो साथ ही राजनैतिक माहौल बेहद अनिश्चित हो, मतदाता की आस्था मजबूत न हो, राजनीति मे अपराधीकरण की प्रवृत्ति बढ रही हो, नैतिक मूल्यों का तीव्र ह्रास हो रहा हो, राजनैतिक विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी हो; जनतन्त्र की प्रवृत्ति का ह्रास हो रहा हो, वहाँ निर्वाचन विज्ञान (भूगोल) का एक विषय के रूप में महत्व बढ जाता है; क्योंकि निर्वाचन राजनीति को पर्यावरण का अध्ययन व्यावहारिक, सैद्धान्तिक माध्यम से क्रमबद्ध ढंग से एक अतिरिक्त विकसित विज्ञान में ही हो सकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर 1971 के बाद राजनीति भूगोल के अन्तर्गत निर्वाचन भूगोल की इकाई का महत्व बढ़ गया जिससे अलग विज्ञान के रूप में इसका विकास सम्भव हुआ इस विज्ञान में अनेक ऐसे कार्य हो चुके हैं जिसके माध्यम से सामाजिक ढांचे की प्रवृत्तियों के

अध्ययन में सुगमता आ गयी है। आज इस विज्ञान में वैज्ञानिकतावाद, तत्ववाद का पूर्ण समन्वय हो चुका है जिससे राजनीतिक व्यवस्था का सूक्ष्म परीक्षण करके उसकी विसंगतियों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

संक्षेप एवं सरल शब्ब्दों में निर्वाचन भूगोल राजनैतिक स्वरूप, प्रक्रिया, संरचना, के अध्ययन के साथ राजनैतिक मूल्यों में गिरती प्रवृत्ति का व्यापक अध्ययन वर्णित विभिन्न आधारों पर प्रस्तुत करती है तथा भविष्य के राजनैतिक माहौल (व्यवस्था) का आंकलन मात्रात्मक विश्लेषण से प्रस्तुत करती है। आज राज की निर्वाचन राजनीति में सांख्यिकीय विधियों का अधिक सक्षम एवं विश्वासपूर्ण उपयोग हो रहा है। इनके प्रयोग से व्यापक एवं सार्थक प्रश्न उठने लगे हैं जिनका समाधान सक्षमता एवं नयी विधि (सांख्यिकीय) से हो रहा है।

उपागम एवं विधि (ऐतिहासिक, क्षेत्रीय, व्यावहारिक उपागम

उपागम एवं विधि से अभिप्राय वास्तविकता को जानने के लिए समस्याओं या प्रश्नों में प्रयुक्त कसौटियां हैं जिसके आधार पर विचार–विमर्श के लिए प्रश्न और आधार सामग्री लेने या छोड़ने का निर्णय किया जाता है। इसी उपागम का कार्य जब विचाराधीन विषय के बारे में समस्याओं और आधार सामग्री के चुनाव से आगे निकल जाता है तब उसे सिद्धान्त कहा जाता है तब वही उपागम सिद्धान्त का रूप तो लेता है। निर्वाचन अध्ययन के भौगोलिक आयाम में अभी तक निम्न उपागमों का प्रयोग किया गया है।

i) ऐतिहासिक उपागम

ii) क्षेत्रीय उपागम या सूक्ष्म उपागम

iii) क्रमबद्ध उपागम या व्यापक उपागम

iv) व्यावहारिक उपागम

ऐतिहासिक उपागम में सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किया जाता है, चूँकि वर्तमान अतीत का फल है अतः इसे अतीत के प्रकाश में ही समझा जा सकता है। इसके अन्तर्गत यह विचार किया जाता है कि राजनीतिक संस्थाओं का, राजनीतिक व्यवस्था का विकास क्यों और कैसे हुआ अतीत में इसका क्या स्वरूप था।

क्षेत्रीय उपागम की विधि निर्वाचन भूगोल में एक सूक्ष्म अध्ययन के रूप में प्रस्तुत की जाती है। इसके अन्तर्गत भौतिक तथा सामाजिक और मतदान प्रतिरूप के मध्य निहित सह–सम्बन्ध को सूक्ष्म अध्ययन के उपरान्त व्यक्त किया जाता है। इस उपागम के द्वारा छाँटे गये प्रश्नों में पूर्व–निर्धारित कसौटी के आधार पर समाँग गुण प्राप्त होते हैं। इसमे मानचित्रीय तथ्यों का प्रयोग अधिक होता है। इस दिशा में सेगफ्रेड (1913, 1949); मैकार्टी (1960); मोसर और स्कार्ट (1961); राबटर्स (1965); बून (1970); तथा प्रेस काट (1972); का कार्य उल्लेखनीय है।

क्रमबद्ध उपागम या व्यापक उपागम जिसे "TOPICAL APPROACH" भी कहा जाता है। इस उपागम के अन्तर्गत संसार के देशों के निर्वाचन पद्धति का अध्ययन व्यापक पैमाने पर किया जाता है इसके अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों की जनसंख्या का स्थानान्तरण; जनसंख्या और जलवायु, जनसंख्या और भू–आकृति, जनसंख्या और अधिवास तथा वैज्ञानिकी–करण आदि का चुनाव प्रक्रिया पर होने वाले प्रभाव का व्यापक अध्ययन सम्मिलित है, साथ ही तकनीकी एवं प्रचार माध्यमों का भी अध्ययन इस विधि के अन्तर्गत व्यापक रूप से किया जाता है। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि इसके अलग–अलग लक्षणों का अध्ययन क्रमबद्ध ढंग से किया जाता है।

व्यावहारिक उपागम 'निर्वाचन राजनीति' का सहचर है; क्योंकि यह इससे इतना अधिक जुडा है कि यह विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण इकाई हो गयी है। इसमें यह जानने की कोशिश की जाती है कि व्यक्ति का आचरण या व्यवहार कैसा है; कौन सा तत्व उसे प्रभावित कर रहा है और वह किस प्रकार निर्वाचन–प्रक्रिया को प्रभावित करता है। 'डेविड ट्र मैन' के अनुसार–''व्यवहारवादी उपागम से अभिप्राय है कि अनुसंधान क्रमबद्ध हो तथा अनुभवात्मक तरीकों का प्रयोग किया जाए।

निर्वाचन राजनीति का अन्तरंग समझने के लिए मानव व्यवहार, वातावरण एवं मतदान सम्बन्ध का अध्ययन नये तरीके से किया जाता है, यह तरीका कोई विधि नहीं है। अपितु विभिन्न विधियों एवं मॉडलों का समायोजन है। इसी के आधार पर यह पता लगाया जाता है कि भारत में धार्मिक आधार पर किन–किन दलों का निर्माण हुआ है तथा चुनाव में समर्थन और मत प्राप्त करने में क्या धर्म का सहारा लिया जाता है। निर्वाचन में वर्ग, सम्प्रदाय, जाति, सम्पत्ति, व्यक्तिगत प्रभाव और क्षेत्रीयता की भूमिका का स्पष्टीकरण भी इन अध्ययनों से होता है। किन्तु इस उपागम के द्वारा विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन सम्भव नही हो पाता है। मानचित्रण भी कठिन होता है। जब कि निर्वाचन भूगोल जैसे विषय में मानचित्रण एक परम्परागत उपागम है। इसके उपरान्त भी यह उपागम निर्वाचन राजनीति की समस्याओं को समझाने में हद तक सफल है; इसलिए अधिकतर भूगोलविद इस उपागम का प्रयोग अधिक करते हैं। यह उपागम लघुक्षेत्रों के निर्वाचन व्यवहार को समझने में अधिक सटीक प्रतीत होता है अस्तु इसका प्रयोग लघु क्षेत्रों के लिए समीचीन है।

अध्ययन क्षेत्र परिचय

उत्तर प्रदेश के दक्षिण पूर्व क्षेत्र में स्थित इलाहाबाद जनपद प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का अध्ययन क्षेत्र है। जिसे पूर्व काल में प्रयाग एवं तीर्थराज नामों से भी
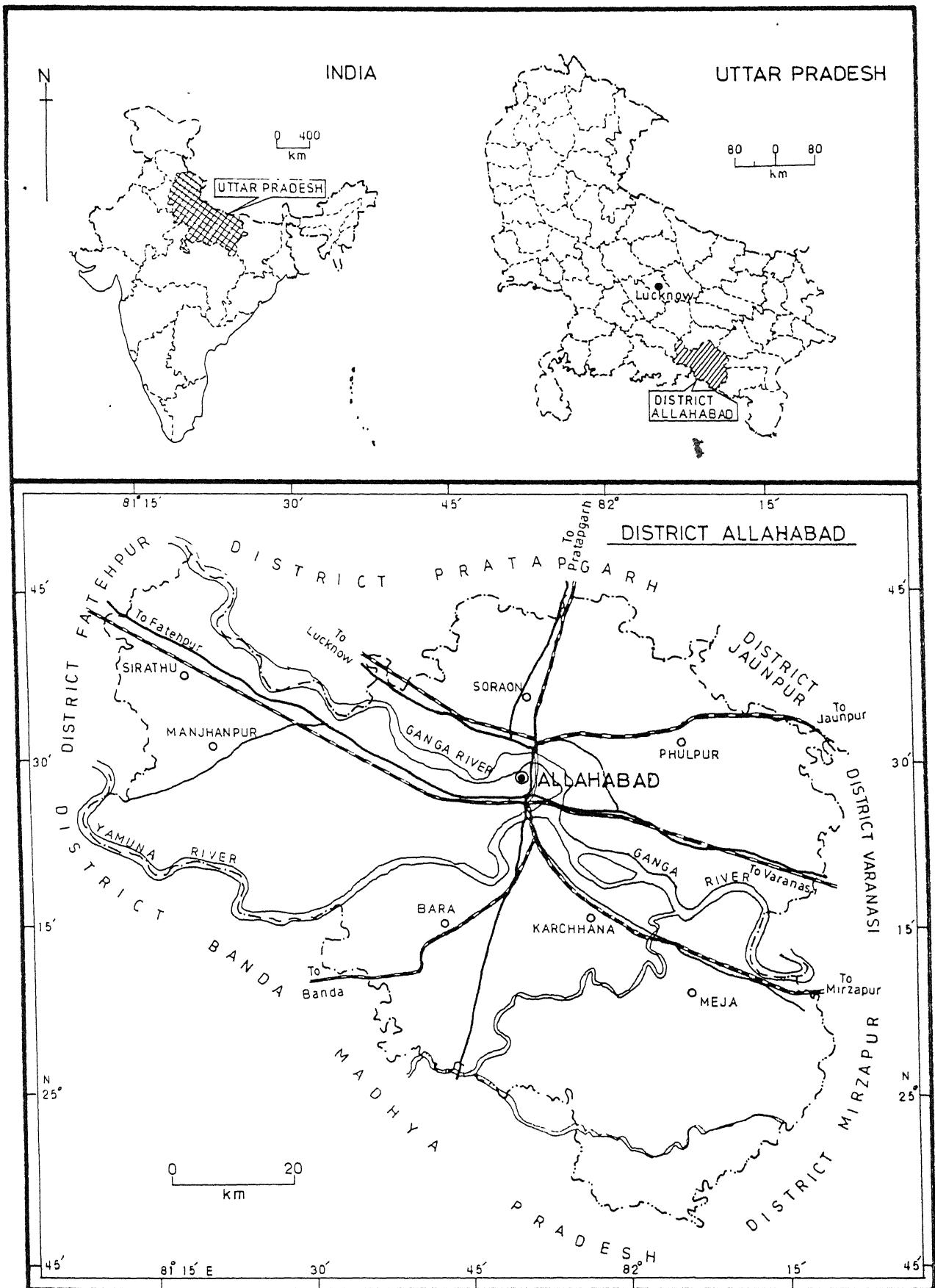
Fig. 1.1 Location Map of Allahabad

अभिहित किया जाता था। ऐतिहासिक एवं राजनैतिक दृष्टि से आज भी विशिष्टता को धारण किये गंगा नदी के मैदानी भाग की मध्यवर्ती घाटी में (24^0 47' से 25^0 48' उत्तरी अक्षांश तथा 81^0 19' से 82^0 21' पूर्वी देशान्तर के मध्य) स्थित इस जनपद का क्षेत्रफल 7261 (सात हजार दो सौ इकसठ) वर्ग कि0 मी0 है। इलाहाबाद जनपद पूर्व में वाराणसी, पूर्वोत्तर में जौनपुर पश्चिम में फतेहपुर, दक्षिण में बाँदा एवं मध्य प्रदेश राज्य का रींवा जनपद; दक्षिण–पूर्व में मिर्जापुर एवं उत्तर में प्रतापगढ़ जिले की सीमा का स्पर्श करती है। इलाहाबाद नगर जो कभी संयुक्त प्रान्त की राजधानी थी; का विस्तार 25^0 31' उत्तर से 81^0 55' पश्चिम है। सागरतल से इलाहाबाद नगर की ऊँचाई (85 मीटर) है।

उत्तर प्रदेश राज्य के कुल क्षेत्रफल के 2.4 प्रतिशत भाग पर विस्तृत इलाहाबाद जनपद में राज्य की कुल 4921313 (1991) जनता निवास करती है। जो राज्य की जनसंख्या का (3.54 प्रतिशत) है तथा जनघनत्व 677.77 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि0मी0 है। अधिकतम क्षेत्रफल तथा अधिकतम जनसंख्या वाले जनपद इलाहाबाद को सिराथू, चायल, सोरांव, फूलपुर, हंडिया, बारा, मेजा, करछना, मंझनपुर नौ तहसीलों में बाँटा गया है। यह उत्तर भारत का मुख्य प्रशासनिक, आर्थिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्र है। अधिकांश जनता ग्रामीण है। सम्पूर्ण जिले में 28 ब्लाक क्षेत्र, 3953 गांव, 2366 गांव सभायें तथा 344 न्याय पंचायते हैं। यहाँ पर नगरीय आकारिकी का भी सम्यक् विकास हुआ है; एक महानगर एवं 16 कस्बा क्षेत्र (टाऊन एरिया) स्थित है।

राज्य को जनसंख्या के आधार पर प्रायः समान निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। विभाजन इस प्रकार किया जाता है कि कम से कम 75 हजार जनसंख्या का प्रतिनिधित्व एक विधान सभा सदस्य करे। इस विभाजन में इलाहाबाद जनपद के तीन लोकसभा (फतेहपुर की खागा विधान सभा सीट को

मिलाकर) तथा 14 विधान सभा क्षेत्र आते हैं। जनपद की तीन लोकसभा सीटों (I) इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र, (II) फूलपुर ससदीय क्षेत्र,(III) चायल संसदीय क्षेत्र में विधान सभाओं का समायोजन इस प्रकार किया गया है–

इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में मेजा, करछना, बारा, इलाहाबाद उत्तरी तथा इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। फूलपुर संसदीय क्षेत्र में झूंसी, हंडिया, प्रतापपुर, सोरांव, नवाबगंज को सम्मिलित किया गया है। चायल संसदीय क्षेत्र में इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू तथा फतेहपुर, जनपद की खागा विधान सभा क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। मेजा, चायल, मंझनपुर, सिराथू विधान सभा क्षेत्र अनुसूचित जाति के लोगों के लिए संवैधानिक नियमों के आधार पर आरक्षित किया गया है।

प्रशासनिक दृष्टि से नौ तहसीलों में बँटे इस जनपद में निर्माण उद्योग लघु एवं कुटीर उद्योगों की प्रधानता है तथापि इस जनपद का भाग्य अभी कृषि व्यवसाय से जुड़ा है एवं अधिकांश क्षेत्र कृषित है। विगत दो दशकों से जिले का औद्योगिक विकास तीव्र गति से हुआ है। लगभग प्रत्येक विकास खण्ड एवं तहसीलों में औद्योगिक इकाइयाँ विकसित हो रही हैं। जिसमें नैनी इन्डस्ट्रीयल काम्पलेक्स महत्वपूर्ण है। नैनी इन्डस्ट्रीयल काम्पलेक्स के अतिरिक्त फूलपुर औद्योगिक क्षेत्र मेजा औद्योगिक क्षेत्र भी तीव्रगति से विकास कर रहा है।

साक्षरता का लक्ष्य एक राष्ट्रीय पद्धति स्थापित करना होता है जिसमें समाज की संस्कृति का एकात्मक पक्ष तो प्रविष्ट होता ही है साथ में प्रजातांत्रिक उदात्त और धर्म निरपेक्ष समाज के आवश्यक मूल्य भी स्थापित होते हैं। साक्षर उस व्यक्ति को माना जाता है; जो किसी भी एक भाषा में लिख पढ़ सकता हो। साक्षर व्यक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उसने विधिवत किसी विद्यालय में

शिक्षा प्राप्त की हो या कोई परीक्षा उत्तीर्ण की हो। यह समाज के आर्थिक प्रतिरूपों, नगरीकरण, जीवनस्तर, जातीय संरचना, स्त्रियों की स्थिति, शैक्षणिक सुविधाओं, यातायात एवं परिवहन, तकनीकी आदि के वास्तविक विकास का सूचक है। जनपद इलाहाबाद के विभिन्न क्षेत्रों (तहसील स्तर) पर साक्षरता का विवरण इस प्रकार है :– सर्वाधिक साक्षरता चायल (49.9 प्रतिशत) है। इसके उपरान्त क्रमश : फूलपुर (30.56 प्रतिशत), करछना (29.62 प्रतिशत), बारा (29.34 प्रतिशत), सोरांव (29.34 प्रतिशत), मेजा (29.03 प्रतिशत), हंडिया (28.04 प्रतिशत), सिराथू (23.40 प्रतिशत), मंझनपुर (21.43 प्रतिशत)। शोध प्रबन्ध में साक्षरता के मूल्याकन से यह स्पष्ट है कि कम साक्षरता वाले क्षेत्रों में राजनैतिक दल विभिन्न कल्पित आयामों के द्वारा जनता को अपने पक्ष में कर लेते हैं तथा अवैध मत अधिक पड़ते हैं परन्तु अधिक साक्षरता वाले क्षेत्रों में उन्हें अपने कार्यों का वास्तविक रूप जनता को दिखाना होता है।

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में धर्मों की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान में धर्म का निर्वाचन राजनीति पर व्यापक प्रभाव है। विभिन्न क्षेत्रों में धर्म को राजनीति का मोहरा बनाकर राजनीतिज्ञ निर्वाचन में भाग लेते हैं अस्तु इस सन्दर्भ में इलाहाबाद जनपद में विभिन्न धर्मों की स्थिति का संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत है। जनपद में 86.72 प्रतिशत हिन्दू धर्म के लोग रहते हैं। इसके अतिरिक्त मुस्लिम 12.96 प्रतिशत, क्रिश्चियन 0.18 प्रतिशत, सिक्ख 0.06 प्रतिशत, जैन 0.03 प्रतिशत तथा बौद्ध 0.01 प्रतिशत। मुस्लिम सम्प्रदाय की अधिकांश जनता नगरों, कस्बों में बसी है। इसलिए जनपदीय (जिला स्तर की) राजनीति में इनका व्यापक प्रभाव है।

परिवहन तन्त्र क्षेत्रीय विकास को समझने का एक प्रत्यक्ष कारक नहीं है फिर भी इसके द्वारा किसी क्षेत्र का आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक; शैक्षणिक

विकास प्रभावित होता है। परिवहन तन्त्र क्षेत्र की भौगोलिक दशाओं से प्रभावित होते हैं इलाहाबाद जनपद एक समतल क्षेत्र है (कुछ क्षेत्रों को छोड़कर)। यहॉ सड़क एवं रेल परिवहन का विकास सुगमता से हुआ है। विमान सेवा भी यहाँ उपलब्ध है। प्राचीन काल में जनपद में परिवहन के मुख्य साधन नदियां एवं सड़के थी उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ सड़क तथा रेल परिवहन का पूर्ण विकास हुआ। इलाहाबाद जनपद पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों तरफ से ब्राड गेज (बड़ी लाइन) एवं मीटर गेज (छोटी लाइन) से घिरा है। पूर्व मे वाराणसी जनपद, पश्चिम में फतेहपुर जनपद, दक्षिण में सतना एवं उत्तर में प्रतापगढ़ सीमावर्ती जिलों को इलाहाबाद जनपद रेल लाइनों से जोड़ता है। यहाँ से होकर अनेक तीव्रगामी गाड़ियाँ गुजरती हैं। यहाँ से गुजरने वाली रेलवे की मुख्य शाखायें इस प्रकार हैं–

i) दिल्ली से अलीगढ़, कानपुर, इलाहाबाद मुगलसराय होती हुई वाराणसी।

ii) इलाहाबाद से वाराणसी होती हुई गोरखपुर।

iii) इलाहाबाद से भोपाल होते हुए इन्दौर।

iv) इलाहाबाद से वाराणसी होते हुए कलकत्ता आदि।

जनपद में कम्प्यूट्रीकृत आरक्षण होता है। यहॉ पर रेलवे भर्ती बोर्ड भी है। जिसका चेयरमैन यहाँ बैठता है जो नियुक्ति एवं अन्य प्रशासकीय कार्य करता है। जनपद में सड़कों का विकास विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत किया गया है। यहाँ से ग्रैड ट्रंक रोड गुजरती है। इसके अलावा पड़ोसी जनपदों से भी पक्की सड़क मार्गों से जनपद पूरी तरह जुड़ा हुआ है। इस तरह जनपद में परिवहन की सुविधा आवश्यकता के अनुरूप परिलक्षित होती है।

अध्ययन कार्य से सम्बन्धित समस्याँए

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को जिस रूप में प्रस्तुत करने का विचार था; जितना समय, जितना कार्य आंकडों के संकलन के लिए निर्धारित किया गया था वह समय पर पूर्ण न हो सका, क्योंकि कार्यालयों में जाने पर पता चलता था कि आज कार्यालय का मुख्य अधिकारी बाहर गया है बिना उसकी अनुमति के आवश्यक जानकारी नहीं मिल पायेगी फलतः मै लौट आता था। पुनः दूसरे कार्यालय पहुँचता तो कभी अधिकारी है तो सम्बन्धित विषय का कार्यालय सहायक छुट्टी पर है। इस तरह अनावश्यक समय एव धन की बर्बादी होती थी जिससे समय कुछ लम्बा खिंच गया।

शोध कार्य को पूर्ण करने में आने वाली कुछ मुख्य समस्यायें प्रस्तुत है–

i) निर्वाचन आंकड़ों का सम्बन्धित विभाग (जिला निर्वाचन कार्यालय) में अव्यवस्थित रूप में मिलना जिसको व्यवस्थित रूप में लाने में अनावश्यक समय की बर्बादी।

ii) कार्यालयों में ऐसे अधिकारियों एवं कर्मचारियों का मिलना जो जानकारी उपलब्ध कराने में रूचि नहीं लेते।

iii) जिला जनगणना पुस्तिका एक स्थान पर उपलब्ध न होना जैसे 1952 की जिला जनगणना हस्तपुस्तिका सरकारी प्रेस में नहीं मिली। कई पुस्तकालयों में तलासने के बाद उपलब्ध हो पायी।

iv) कार्यालयीन कर्मचारी का कार्य का बहाना बनाकर इधर–उधर चले जाना और फिर घंटो बाद वापस आना इसके बाद भी कार्य का बहाना बनाकर फाइलें इधर–उधर करते रहना।

v) मानचित्र के लिए कोई भी अधिकारी पटवारी समय पर न मिले फलतः उन्हें तलाशने एवं आवश्यक जानकारी प्राप्त करने में अनावश्यक समय लगता था तथा मानसिक परेशानी भी होती थी।

उपरोक्त समस्यायों के अलावा ऐसी अनेक समस्यायें सामने आयी जिनकी विवेचना समीचीन नही है। चक्का जाम; कर्फ्यू या बीच में स्थानीय अवकाश (जिसकी जानकारी शोधकर्ता को नही होती थी) पड़ जाने के कारण भी कार्यगति में अवरोध उत्पन्न हो जाता था।

अध्ययन कार्य की उपलब्धियाँ

'इलाहाबाद जनपद के निर्वाचकों का निर्वाचकीय सर्मथन विषय पर निर्वाचकों की भूमिका; उनका निर्वहन; उनकी विशिष्ट विशेषतायें; उनके विभिन्न उत्तरदायी कारकों का सुसंगत, क्रमबद्ध, सांख्यिकीय विवेचन एवं विश्लेषण करने का यह एक प्रयास है।

इस अध्ययन में शोधकार्य के सभी द्वितीयक आँकड़े विश्वसनीय एवं प्रामाणिक स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं। जब कि प्राथमिक आंकडे शोधकर्ता द्वारा स्वयं काफी सावधानी से एकत्रित किये गये हैं। प्रयुक्त चर, उनकी तालिकाएं क्रमबद्ध ढंग से एवं सावधानी से तैयार की गयी हैं। राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक चरों को आवश्यकतानुसार ही समावेशित किया गया है। आवश्यक मानचित्र प्रमाणित स्रोतों से लिये गये हैं; कुछ शोध कार्य में प्रयुक्त आकड़ो पर आधारित है जो स्वयं शोधकर्ता द्वारा तैयार किया गया है। आंकड़ों एवं मानचित्रों का विश्लेषण यहाँ के भौगोलिक राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास है। अतः शोध कार्य के प्रस्तावित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन को शोधकर्ता की उपलब्धि माना जा सकता है, जिसकी उपयोगिता एवं विश्वसनीयता पर संदेह की सम्भावना नहीं रह जाती।

द्वितीय अध्याय

अध्ययन प्रक्रिया विश्लेषण

2. शोध योजना

वर्तमान में राजनीतिक प्रक्रियाओं की वास्तविकता को परखने के लिए राजनीतिक व्यवस्था में भाग लेने वाले समाजिक तत्वों मूल्यों एवं दशाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक परिवर्तन की वास्तविक स्थिति के द्वारा राजनैतिक परिवर्तन स्वतः सम्भव होता है। अतः सामाजिक परिवर्तन राजनीति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं इसका विवेचन आसानी से किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध में विषय वस्तु को ध्यान में रखकर द्वितीय प्रकार के आंकड़ों को प्रयोग में लाया गया है। सामाजिक एवं निर्वाचन सम्बन्धी प्रमुख आंकड़ों के द्वारा समस्या के विश्लेषण में जिन विधियों का प्रयोग हुआ है उनका वर्णन प्रस्तुत अध्याय में किया जा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन को निम्न भागों में विभाजित कर विश्लेषण किया गया है। प्रथम भाग में आंकड़ों के संकलन एवं स्रोतों का विवेचन है। द्वितीय भाग में आंकड़ों का शुद्धिकरण, आंकड़ा सम्बनधी समस्या तथा उनका समाधान प्रस्तुत किया गया है। तृतीय भाग में आंकड़ों का पूर्व नियोजन कर आंकड़ों की विसंगति (कालिक, इकाई विसंगति) का विवेचन है। चतुर्थ भाग में आंकड़ो का सांख्यिकीय (आर्थिक, सामाजिक) विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अन्तिम भाग में मुख्य चरों का विश्लेषण, मानचित्रण एवं छायाचित्रण हेतु प्रयुक्त विधियों पर प्रकाश डाला गया है।

आँकड़ा संकलन एवं श्रोत

आंकड़ो का संकलन : प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में दो प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्रथम निर्वाचन सम्बन्धी, द्वितीय सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से सम्बन्धित जो निर्वाचन व्यवहार के कारक के रूप में संकलित हुए है। इस शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त समस्त आंकड़े प्रकाशित स्रोतों से लिये गये हैं। चरों

का चयन विशेष रूप से इस प्रकार किया गया है, जिससे निर्वाचन व्यवहार एवं निर्वाचकों की सामाजिक विशिष्टताओं का गहन अध्ययन हो सके।

निर्वाचन सम्बन्धी आंकड़े विविध हैं किन्तु मुख्य रूप से निर्वाचन आंकड़ों को दो वर्गों में रखा जा सकता है। प्रथम वर्ग में लोक सभा चुनाव से सम्बन्धित आंकड़े जो 1952 से अब तक प्राप्त हैं, द्वितीय वर्ग में विधान सभा से से सम्बन्धित आंकड़े जो 1952 से 1991 तक प्राप्त हैं।

सामाजिक आर्थिक तथ्यों से सम्बन्धित आंकड़ो के विश्लेषण के लिए 15 चरों का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त उपलब्ध आंकड़ो द्वारा इलाहाबाद संसदीय क्षेत्रों के निर्वाचकों की वास्तविक प्रवृत्तियों को समझने के लिए एक नवीनतम् संदर्श का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के आधार पर ही मानचित्र तैयार किये गये हैं जिनकी शुद्धता एवं पूर्णता आंकड़ों पर निर्भर है।

आंकड़ों के स्रोत

सामान्यतः प्रकाशित आंकड़ों को निम्न वर्गों में रखा जा सकता है। प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय द्वितीय राष्ट्रीय प्रकाशन। प्रस्तुत अध्ययन में राष्ट्रीय प्रकाशन एवं सांख्यिकीय सूचना केन्द्रों का सहारा मुख्य रूप से लिया गया है। चरों के स्रोतों का उल्लेख तालिका (2.1) में प्रस्तुत है–

तालिका (2.1)

चर सूची

क्रम संख्या	चर	स्रोत
(क)	निर्वाचन आंकड़े	केन्द्र

1)	प्रथम लोकसभा मतदान–	1952	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
2)	द्वितीय लोकसभा मतदान–	1957	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
3)	तृतीय लोकसभा मतदान–	1962	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
4)	चतुर्थ लोकसभा मतदान–	1967	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
5)	पंचम् लोकसभा मतदान–	1971	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
6)	षष्टम् लोकसभा मतदान–	1977	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
7)	सप्तम् लोकसभा मतदान–	1980	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
8)	अष्टम् लोकसभा मतदान–	1985	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
9)	नवम् लोकसभा मतदान–	1981	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
10)	दशम् लोकसभा मतदान–	1991	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
11)	प्रथम विधान सभा मतदान–	1952	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
12)	द्वितीय विधान सभा मतदान	1957	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
13)	तृतीय विधान सभा मतदान–	1962	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
14)	चतुर्थ विधान सभा मतदान–	1967	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
15)	पंचम् विधान सभा मतदान–	1974	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
16)	षष्टम् विधान सभा मतदान–	1977	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
17)	सप्तम् विधान सभा मतदान–	1980	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
18)	अष्टम् विधान सभा मतदान–	1985	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट

19)	नवम् विधान सभा मतदान–	1989	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
20)	दशम् विधान सभा मतदान–	1991	निर्वाचन आयोग रिपोर्ट
(ख)	**सामाजिक आर्थिक चर**		
1)	सामाजिक आर्थिक आंकड़े	1951	जनपद गजेटियर भारतीय जनगणना रिर्पोट
2)	सामाजिक आर्थिक आंकड़े	1961	"
3)	सामाजिक आर्थिक आंकड़े	1971	"
4)	सामाजिक आर्थिक आंकड़े	1981	"
5)	सामाजिक आर्थिक आंकड़े	1991	"
समस्त आंकड़े प्रतिशत में संगणित कर प्रयोग में लाये गये हैं			

आंकड़ो का शुद्धीकरण

अध्ययन की विषयवस्तु को देखते हुए; इलाहाबाद जिले की लोकसभा एवं विधानसभा के मतदान सर्मथन को जानने के लिए द्वितीयक स्रोत के आंकड़े प्रयोग में लाये गये हैं। ये आंकड़े शुद्धता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ और उपयुक्त होते हैं। इसलिए इसमें विशेष शुद्धीकरण की आवश्यकता नहीं समझी गयी। निर्वाचन आंकड़ों का एकीकरण क्रमिक रूप से किया गया तथा सामाजिक–आर्थिक आंकड़ों का भी एकीकरण किया गया। एकीकरण के उपरान्त आंकड़ों को एक मापक पर लाकर उनका प्रभाव देखा गया; जिसका विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। मूल रूप से निर्वाचन आंकड़े निर्वाचन आयोग से प्राप्त हैं; तथा सामाजिक–आर्थिक आंकड़े भारतीय जनगणना रिपोर्ट पर आधारित है। अतः ये पूर्णतः शुद्ध हैं।

आंकड़ा सम्बन्धी समस्या एवं समाधान

आंकड़ों को चूंकि विभिन्न स्रोतों से प्राप्त किया गया इसलिए उसमें कालिक विसंगति, इकाई विसंगति, स्थानिक विसंगति का पाया जाना स्वाभाविक है। इनकी समस्या एवं समाधान निम्न रूप में प्रस्तुत है।

कालिक विसंगति

निर्वाचन सम्बन्धी आंकड़े वर्ष 1952, 1957, 1962, 1967, 1974, 1977, 1980, 1985, 1989, 1991 के लिए एकत्रित किये गये जब कि सामाजिक आर्थिक आंकड़े जिन पर निर्वाचन व्यवहार व्याख्येय है 1951, 61, 71, 81, 91 से प्राप्त किये गये हैं। फलस्वरूप जनगणना और निर्वाचन वर्ष में सामंजस्य का अभाव है; स्पष्ट है कि दोनों के वर्षों में कालिक विसंगति व्याप्त है। इन आंकड़ों को प्रतिशत में लाकर एक मूल्य पर स्थापित किया गया।

ईकाई विसंगति

निर्वाचन सम्बन्धी आंकड़े 'निर्वाचन क्षेत्रानुसार' (लोकसभा, विधान सभा) तथा जनगणना सम्बन्धी आंकड़े तहसील स्तर पर प्राप्त हैं। दोनों आंकड़ों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के लिए "रैखिक अन्तर्वेशन विधि" (1969 पृष्ठ–110) का प्रयोग किया गया है। अन्तर्वेशन विधि द्वारा उसे निर्वाचन क्षेत्र की इकाई पर लाया गया है।

स्थानिक विसंगति

"औसत उच्चता विधि" के अनुसार लोकसभा क्षेत्र एवं विधान सभा क्षेत्र के आंकड़ों को तहसील स्तर पर स्थानान्तरित किया गया। इसमें सर्वप्रथम मानचित्र
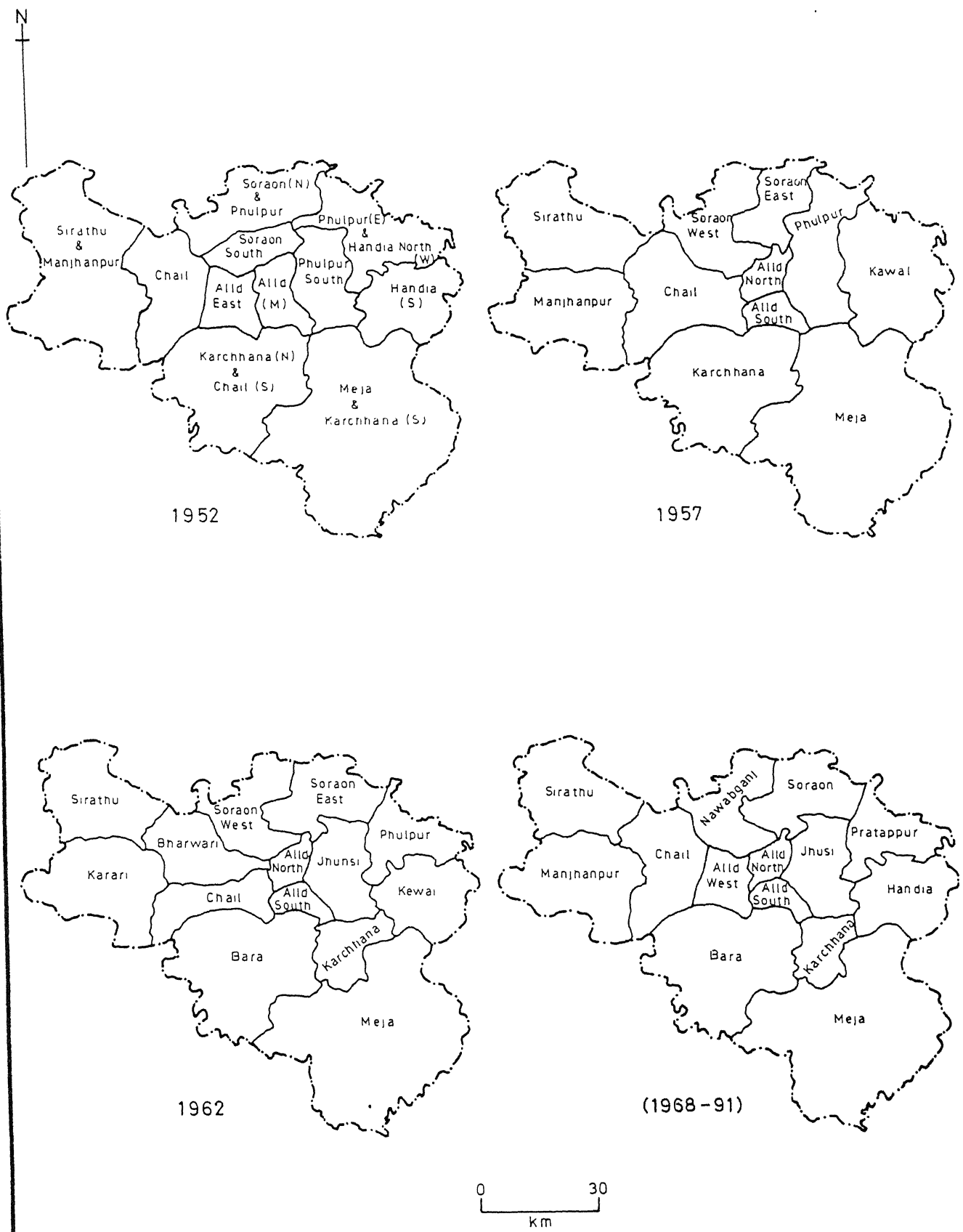
Fig..2.1 Electoral Data Unit Vidhan Sabha Constituency(1952-91)
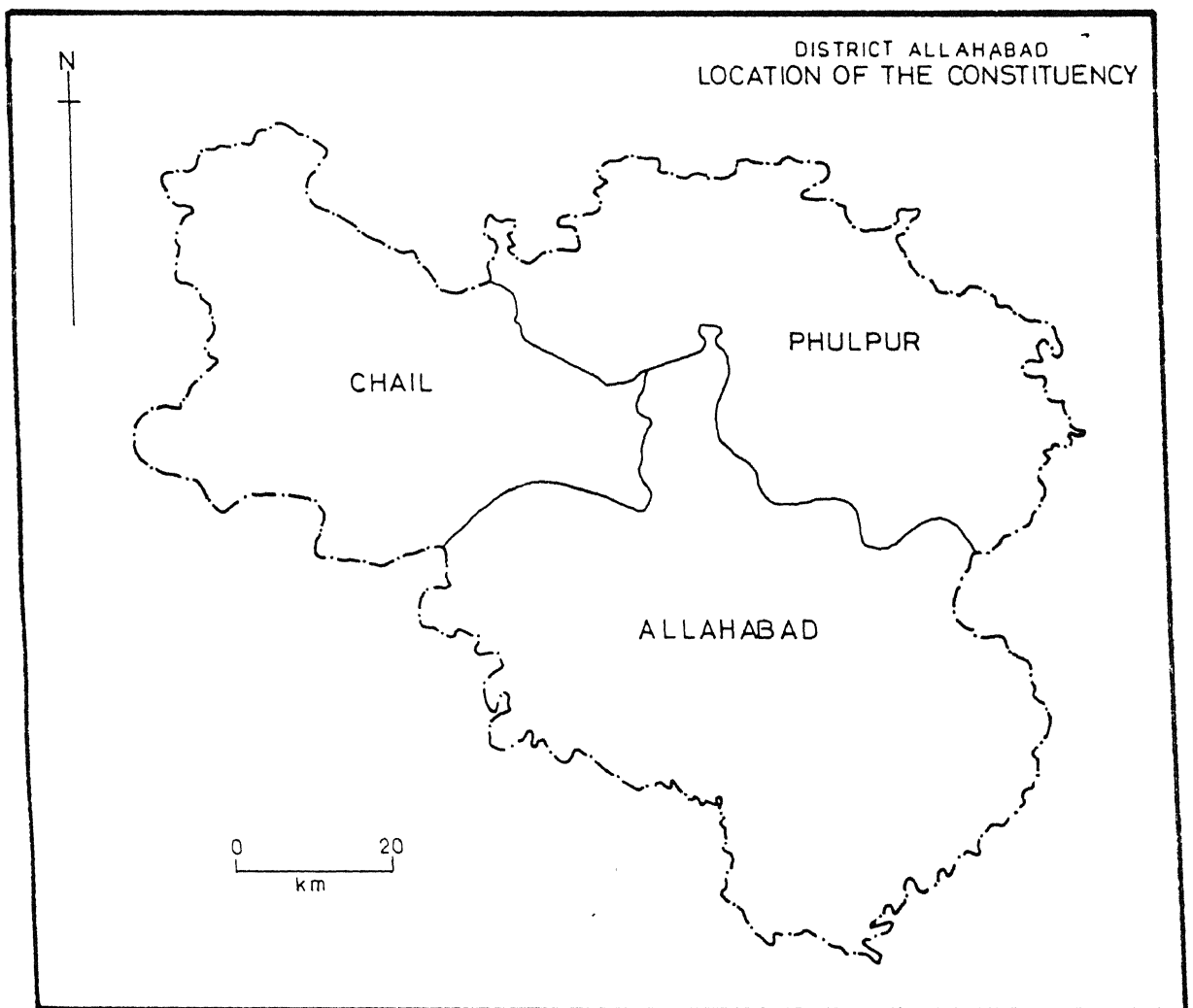
Fig. 2.2 Electoral Data Unit (LOKE SABHA CONTITUENCIES)

(निर्वाचन एवं तहसील) को एक मानक पर लाया गया। इच्छित बिन्दुओं के लिए आंकड़े उत्पन्न किये गये, इससे समस्या का निदान हुआ और व्याख्यार्थ आंकड़े प्रयोग में लाये गये। आंकड़ों की स्थानिक विषमता निम्न तालिकाओं क्रमश : 2.2, 2.3, 2.4 से स्पष्ट है।

तालिका 2.2

लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र

क्रमांक	1952	1957	1962
1.	इलाहाबाद जिला पश्चिमी लोकसभा क्षेत्र	1. इलाहाबाद लोक सभा क्षेत्र	1. इलाहाबाद लोक सभा क्षेत्र
2.	इलाहाबाद जिला (पूर्वी + जौनपुर) लोकसभा क्षेत्र	2. फूलपुर लोकसभा क्षेत्र	2. चायल लोकसभा क्षेत्र 3. फूलपुर लोकसभा क्षेत्र
नोट—1962 के बाद आज तक इलाहाबाद जिले में तीन लोक सभा क्षेत्र हैं।			

तालिका 2.2

विधानसभा क्षेत्र

वर्ष क्र0	1952 विधानसभा क्षेत्र	1952 विधानसभा क्षेत्र	1952 विधानसभा क्षेत्र	1952 विधानसभा क्षेत्र	1952 विधानसभा क्षेत्र
1)	मेजा (करक्षना सम्मिलित क्षेत्र) दक्षिण	मेजा	मेजा	मेजा	मेजा
2)	करछना उत्तरी एव चायल दक्षिणी	करछना	करछना	करछना	करछना
3)	सोरांव उत्तर एवं फूलपुर पश्चि0	सोरांव पश्चि0	सोरांव पश्चि0	सोरांव	सोरांव
4)	सोरांव दक्षिण	सोरांव पूरब	सोरांव पूरब	प्रतापपुर	प्रतापपुर

5)	फूलपुर मध्य	फूलपुर	फूलपुर	बहादुरपुर	प्रतापपुर
6)	फूलपुर पूर्व एव हडिया उत्तर पश्चिम	केवाई	केवाई	हंडिया	हंडिया
7)	हंडिया दक्षिण	चायल	चायल	चायल	चायल
8)	सिराथू एवं मंझनपुर	मंझनपुर	झूंसी	इलाहाबाद दाक्षिण	झूंसी
9)	इलाहाबाद शहर पूर्व	इलाहाबाद शहर उत्तरी	इलाहाबाद शहर उत्तरी	इलाहाबाद शहर उत्तरी	इलाहाबाद शहर उत्तरी
10)	इलाहाबाद शहर मध्य	इलाहाबाद दाक्षिणी	इलाहाबाद शहर दक्षिण	इलाहाबाद पश्चिम	इलाहाबाद दाक्षिणी
11)	चायल उत्तर	-------	भरवारी	मंझनपुर	मंझनपुर
12)	-------	-------	करारी	कोरिधर	नवाबगंज
13)	-------	-------	सिराथू	सिराथू	सिराथू
14)	-------	-------	बारा	बारा	बारा

नोट – 1974 के बाद आज तक विधानसभाओं की सीमाओं तथा क्षेत्रों के नाम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

तालिका 2.4

इलाहाबाद जिले की तहसीलें

वर्ष क्रमांक	1981	1991
1.	सिराथू	सिराथू
2.	चायल	चायल
3.	सोरांव	सोरांव
4.	फूलपुर	फूलपुर
5.	हंडिया	हंडिया
6.	मेजा	बारा
7.	करछना	मेजा
8.	मंझनपुर	करछना
9.	------------	मंझनपुर

नोट – 1951 से 1981 तक 8 तहसीले थी 1991 मे 9 तहसीलें हो गयी।
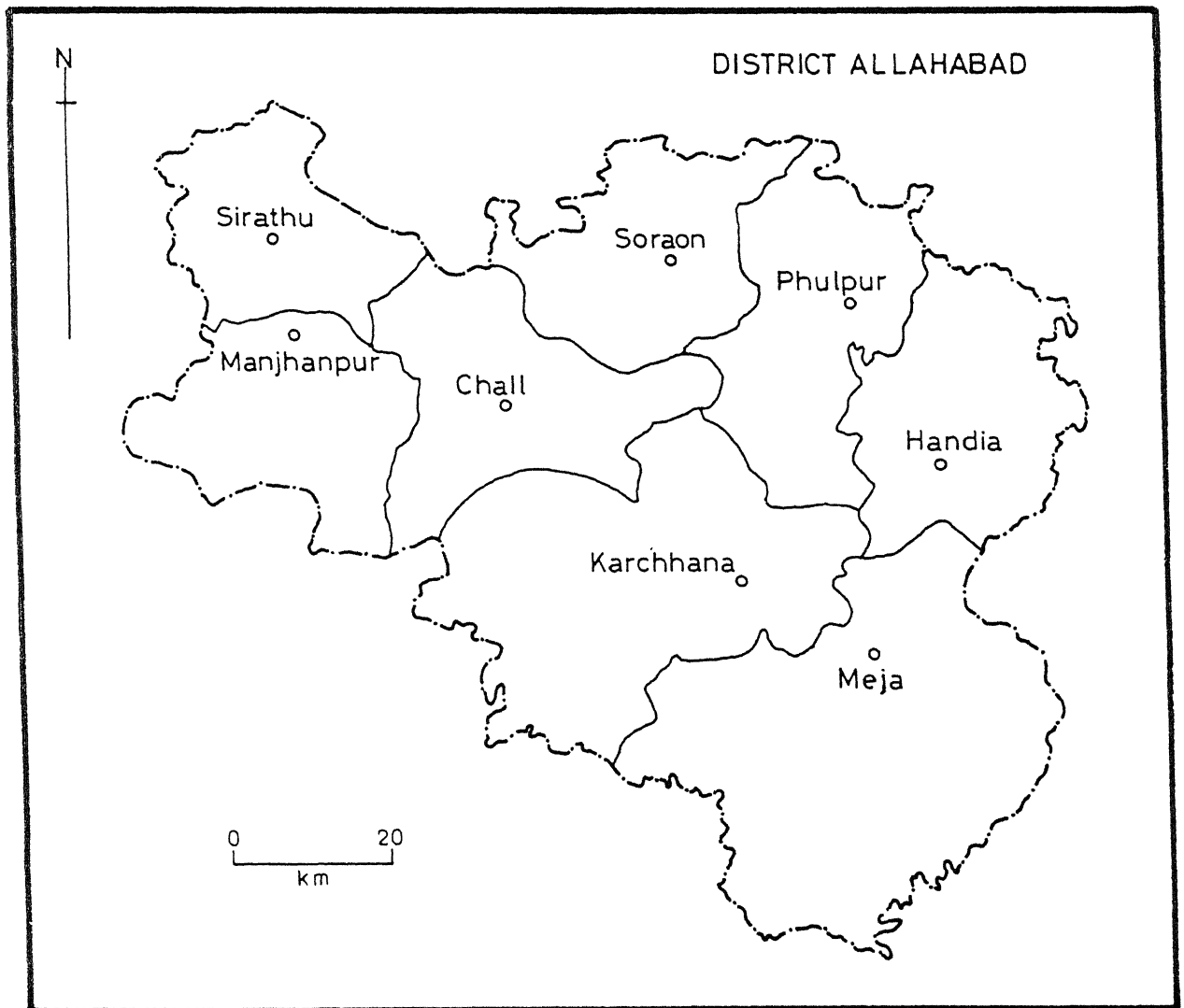
Fig. 2.3 Social Data Unit (TAHSILS)

2.6.1 आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

शोध अध्ययन के विस्तृत और क्रमिक विश्लेषण के लिए निर्वाचन–व्यवहार से सम्बन्धित कई बिन्दु लिये गये हैं। इसमें कुल मतदान; वैध मतदान, अवैध मतदान, विजयी पाटी को प्राप्त मत, द्वितीय पार्टी को प्राप्त मत। विभिन्न दल क्रमशः कांग्रेस (I) भा0 ज0 पा0, लोकदल, जनता दल, ब0 स0 पार्टी, को प्राप्त मत, अन्य दलों को प्राप्त सम्मिलित किया गया है। इन मतों का विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है–

2.6.1.1 वितरण विश्लेषण

इलाहाबाद जनपद में निर्वाचकों के वितरण, कांग्रेस मत, मतदान का वितरण, कांग्रेस मत का वितरण, भारतीय जनता पार्टी का वितरण लोकदल मत का वितरण, कम्युनिस्ट पार्टी का मत एवं विभिन्न वर्षों में अन्य दलों के मतों के वितरण को भौगोलिक अध्ययन के लिए अवस्थितिकी विश्लेषण हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके निम्नलिखित रूप में वितरण विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

2.6.1.1.1 वास्तविक वितरण

वितरण प्रस्तुत करने के लिए सर्वप्रथम इलाहाबाद जनपद में कुल मतदान, कांग्रेस मत, भा0 ज0 पार्टी मत, लोकदल मत, जनता दल मत, ब0 स0 पा0 मत एवं अन्य पार्टियों के मतों का वितरण प्रतिशत (%) रूप और मानक लब्धि के रूप में निर्वाचन क्षेत्रानुसार मानचित्रित किया गया है। तथा उसके निरपेक्ष वितरण को स्पष्ट किया गया है। निरपेक्ष वितरण पर प्रभावी कारकों का प्रभाव तार्कित ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

2.6.1.1.2 सापेक्षिक वितरण

सापेक्षिक वितरण में वितरण विश्लेषण के तथ्यों को सम्मिलित किया गया है। क्षेत्रीय संकेन्द्रण सूचकांक के माध्यम से यह विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सम्पूर्ण क्षेत्र के औसत के द्वारा धनात्मक एवं ऋणात्मक क्षेत्रों को प्रदर्शित किया गया है।

$$C = \frac{X}{X}$$

यहाँ C सांद्रण, X विभिन्न इकाइयों से सम्बन्धित आंकड़े और X उसका माध्य प्रस्तुत करता है।

प्रमुख चर विश्लेषण

सामाजिक आर्थिक आंकड़ों की प्रारम्भिक मैट्रिक को अधिक बोधगम्य बनाने के लिए प्रमुख चर विश्लेषण विधि का सहारा लिया गया है।–जिसका विस्तृत विवेचन जानसन् 11/97811 से प्राप्त किया गया है चर लब्धि के संगणन का सूत्र निम्न है।

S I K = N

D I J L J K

J = I

जहां D I J = पर्यवेक्षण I का चर J पर मानक मूल्य

L J K = घटक K पर चर J का

N = पर्यवेक्षण संख्या

सामाजिक चर निर्धारण—निर्धारण के प्रथम चरण में जनगणना वर्ष 1951, 1961, 1971, 1981, 1999, के लिए संकलित 15 चरों में से मुख्य चरों का मतदान पर प्रभाव निरूपित किया गया है।

6.3.1.4 सह सम्बन्ध एवं समाश्रयण विश्लेषण

इलाहाबाद जिले के निर्वाचन तथ्यों, 'कुल मतदान, वैध मतदान, अवैध मतदान, कांग्रेस (आई) मत, भा0 ज0 पा0 मत, जनतादल, ब0 स0 पा0, लोकदल पार्टी मत एवं अन्य पार्टियों के मत का सामाजिक आर्थिक वातावरण को व्यक्त करने वाले घटकों के बीच सम्बन्ध व्यक्त किया गया है सह सम्बन्ध एवं समाभ्रमण तकनीक के द्वारा निम्न बातें स्पष्ट हुई।

i) मतदान की संरचना पर सामाजिक घटकों का प्रभाव 1952 से 1991 तक।

ii) कांग्रेस, भ0 ज0 पा0 वोट पर सामाजिक घटकों का प्रभाव 1952 से 91 तक।

iii)सामाजिक घटकों का अन्य दलों के मत पर प्रभाव।

iv)चरों की बहुविकल्पीय प्रकृति को बेहतर ढंग से समझने के लिए ऐसी पद्धति अपनायी गयी कि यह प्रतिमान निम्न रूप में रेखीय रहा।

$$Y = a + bx_1 + 6bx_2 + bx_3 + bx_4 + bx_5 + bx_6$$

यहां पर y चर मतदान एवं कांग्रेस के लिए, गए $x_1, x_2, x_3, x_4, x_5, x_6$ सामाजिक घटकों के लिए प्रयुक्त हैं।

मानचित्रण

मानचित्र स्थानिक वितरणों को समझने में सहायक होते हैं तथा उनके द्वारा अध्ययन स्पष्ट, सरल, सुग्राह्य हो जाता है इन मानचित्रों द्वारा तुलनात्मक

आंकड़ो का स्पष्ट एवं सरलीकृत प्रदर्शन भी हो जाता है जिसमें स्थानिक वितरणों का तात्कालिक गुण ग्रहण सम्भव हो जाता है; अस्तु विषय को स्पष्ट करने के लिए परिणामों को मानचित्रित किया गया है। चरों की समस्या को ध्यान में रखते हुए, मानचित्रण की विभिन्न विधियों का प्रयोग किया गया है। इसमें दो प्रमुख विधियां मुख्य है। प्रथम सममान रेखी विधि तथा वर्णभासी मानचित्रण विधि तथा द्वितीय छाया विधि है।

सममान रेखी विधि

स्थानिक वितरणों के साथ ही कुछ मात्राओं का संकेत देने वाले मानचित्रों को **'मात्रात्मक क्षेत्रीय मानचित्र'** कहते हैं। इसक`दो मुख्य भाग हैं प्रथम में ऐसे मानचित्र सम्मलित हैं जिन्हें सममान रेखाओं से दिखलाया जाता है। दूसरे वे मानचित्र हैं जिसमें प्रशासनिक प्रदेश में जिले के उपलब्ध आंकडों को औसतमान प्रति इकाई क्षेत्रफल में दर्शाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीय विधि पर बल दिया गया है। जिसमें चरों की मानक लब्धि को प्रदर्शित किया गया है। समरेखाओ मे अर्न्तवेशन को ज्यामितीय ढंग से दर्शाया गया है।

छायाकरण विधि

अमात्रात्मक मानचित्र पर किसी विशिष्ट वितरण का प्रभेद करने के लिए या सममान रेखी अन्तरों को प्रस्तुत करने के लिए या सममान रेखी अन्तरों को प्रस्तुत करने एवं उसके महत्व को ध्यान में रखते हुए उचित रंगों का सावधानी से प्रयोग करते हुए छायाकृत मानचित्र बनाये गये हैं। इस विधि का प्रयोग समरेखी विधि द्वारा चित्रित ऐसे अंशों के लिए करते हैं, जो उसमें छूट गये हैं। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि इकाइयां इतनी सूक्ष्म होती हैं कि वहाँ सममान रेखी मानचित्र बनाना सम्भव नही होता है।

तृतीय अध्याय

भारत में निर्वाचन पृष्ठभूमि

3. निर्वाचन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में निर्वाचन की परम्परा अति प्राचीन है। वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इस काल में निर्वाचन संकेत प्रणाली पर आधारित था। उस समय निर्वाचन में "चयन" एवं "संस्तुति" जैसी पद्धतियों का प्रचलन था। इस काल (वैदिक) में दो प्रकार की शासन पद्धतियां प्रचलित थी–राजतन्त्र एवं प्रजातन्त्र। राजतन्त्र में राजा वंश परम्परागत होता था; और प्रजातन्त्र में राजा का चुनाव होता था। दोनों में राज्याभिषेक होता था। राजा के निर्वाचन में भाग लेने वाले को "राजकृतः" कहा जाता था। जिसकी आधुनिक शब्दावली 'निर्वाचक' है। उस समय निर्वाचन प्रक्रिया में पाँच प्रकार के व्यक्ति थे।

1) राजानः (अधीनस्थ राजा या राज–परिवार के व्यक्ति)

2) सूत

3) ग्रामणी

4) रथकार

5) कर्मार

स्रोत : अथर्ववेद – 3, 5, 6 और 7

वैदिक काल में समाज राजनीतिक दृष्टि से 5 भागों में बंटा हुआ था (1) गृह या कुल (2) ग्राम (3) विश् (ग्राम से बड़ी इकाई, मण्डल या जिला) (4) जन (विश से बड़ी इकाई, जनपद या कमिश्नरी) (5) राष्ट्र (प्रदेश)

अथर्ववेद में विश के प्रतिनिधियों द्वारा राजा के निर्वाचन का उल्लेख मिलता है–

''**विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु** : (अथर्व0 6–87–9) अर्थात् सभी विश् के प्रतिनिधि आपको (राजा के रूप में) चाहते हैं।

तथा

''त्वां विशो वृजती राज्याय।''

(अथर्ववेद–3–4–2)

अर्थात् विश के प्रतिनिधि राज्य के लिए आपका वरण निर्वाचन, चुनाव कर रहे है।

बौद्ध साहित्य मे निर्वाचन की अनेक पद्धतियों का उल्लेख मिलता है। इसमें चुनाव द्वारा गण सभाओं का गठन होता था। जो जनता के प्रति उत्तरदायी होते थे। धीरे धीरे चुनाव व्यवस्था क्षीण होती गयी एवं राजतन्त्रात्मक शक्ति का उदय हुआ। राजतन्त्रात्मक शक्ति बहुत दिनों तक विद्यमान रही।

नवीं शताब्दी में दक्षिण में चोलवंश की स्थापना हुई। यह प्रशासन भारतीय इतिहास में ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योकि इनका शासन जनतांात्रिक व्यवस्था पर आधारित था निर्वाचन इस तंत्र की प्रमुख व्यवस्था थी। कालान्तर में मुस्लिम शासकों ने भारत में राज विस्तार किया जिसमें निर्वाचन परम्परा पूर्ण रूप से समाप्त हो गयी।

पुनः भारत में लोकतन्त्र की स्थापना का प्रयास ''1909 में मिंटो–मार्ले सुधार'' के साथ स्थापित हुआ। जब विधान परिषदो के लिए अप्रत्यक्ष रूप से चुनाव कराये गये। भारत सरकार अधिनियम 1919 (माटेग्यू चेम्सफोर्ड अधिनियम) के द्वारा केन्द्रीय एवं प्रांतीय विधान सभाओं के चुनाव कराये गये। किन्तु यह एक ऐसी सभा थी जो ब्रिटिश शासन के उपांग के रूप में कार्यरत थी। इसलिए

चुनावी दृष्टि से महत्वहीन थी। भारत सरकार अधिनियम 1935 में भी चुनाव की व्यवस्था थी, किन्तु उपरोक्त सभी चुनाव लोकतांत्रिक न होकर एक विदेशी राज्य द्वारा शासित थे। इस तरह ब्रिटिश शासन के प्रभाव के कारण जनता निर्वाचन से अछूती रही।

ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद भारत में भारतीय संविधान के अनुसार ''लोक प्रतिनिधित्व अधीनियम 1950'' एवं 1951 के अन्तर्गत चुनावों का वास्तविक संचालन किया गया। प्रथम बार शिक्षित, अशिक्षित, ग्रामीण, नगरीय, धनी, निर्धन सभी भारतीयों को वोट देने का अवसर प्राप्त हुआ जिनकी उम्र 21 वर्ष से ऊपर हो। इधर के वर्षो में उम्र सीमा घटाकर 18 वर्ष कर दी गयी।

इस प्रकार जहां ब्रिटेन अमेरिका जैसे देशो में शताब्दियों बाद लोगों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ वही भारतीय लोगों को यह अधिकार एक ही बार में प्राप्त हो गया। यह स्वच्छ प्रजातन्त्र की अनूँठी मिसाल है।

भारत में जब तक राष्ट्रीय स्तर पर 1952, 1957, 1962, 1967, 1971, 1977, 1980, 1985, 1989, 1991 में संसदीय निर्वाचन सम्पन्न हुए। वहीं उत्तर प्रदेश में 1952, 57, 62, 1967, 1969, 1974, 1977, 1980, 1985, 1991 में विधान सभा निर्वाचन सम्पन्न हुए। ये निर्वाचन भारत में ही नही अपितु विश्व में अपनी स्वच्छ परम्परा के द्योतक सिद्ध हुए। भारतीय निर्वाचन प्रणाली का उदाहरण देते हुए अन्य लोकतांत्रिक देश इसकी नकल करते है। विगत कुछ चुनाव तो भारतीय राजनीति के लिए आधार पक्ष है क्योकि ये निर्वाचन निष्पक्षता की स्वच्छ मिसाल हैं।

वर्तमान भारतीय निर्वाचन प्रणाली

स्वतन्त्रता समानता और विश्वबन्धुत्व की भावना को आदर्श स्थिति में कायम रखने के लिए निष्पक्ष निर्वाचन की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय संविधान

के साथ भारतीय लोकतंत्र को उन्नत बनाये रखने के लिए एक निष्पक्ष निर्वाचन प्रणाली का स्वरूप निष्पादित किया गया जो 1952 से आज तक भारतीय लोक सभा एवं विधान सभा चुनावों को निष्पच्छ रूप से सम्पादित करते हुए भारतीय राजनैतिक प्रणाली को शक्ति एवं स्थायित्व प्रदान कर रहा है। इन चुनावों की सुव्यवस्था एवं निष्पक्षता की सराहना सारी दुनिया के देशों ने किया।

भारतीय निर्वाचन प्रणाली लोकतंत्रीय शासन चलाने की एक पद्वति मात्र नहीं अपितु ऐसा विकासशील मार्ग है जिसके सहारे अधिकार कायम है। इसकी निष्पक्षता ही भारतीय जीवन का आधार है। जिसके लिए भारतीय संविधान में स्पष्ट प्रावधान है।

भारतीय संविधान के पन्द्रहवें अध्याय में निर्वाचन आयोग की व्यवस्था का वर्णन हुआ है। भारत में निर्वाचन चुनाव का संचालन लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 एवं लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के अन्तर्गत किया जाता है।

सम्बन्धित सरकार की संस्तुति पर चुनाव आयोग चुनाव का कार्यक्रम निश्चित करता है। लेकिन चुनाव प्रकिया की शुरूआत स्थिति के अनुसार राष्ट्रपति या राज्यपाल की घोषणा के बाद होती है। उम्मीदवार को नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए '8' आठ दिन का समय दिया जाता है। कोई भी उम्मीदवार चाहें जितनी सीट से चुनाव लडंने के लिए स्वतन्त्र होता है। नामांकन पत्र की जांच 8 दिन बाद शुरू होती है। इसके बाद पीठासीन अधिकारी उम्मीदवारों की सूची क्षेत्रवार तैयार करता है। और उन्हे चुनाव चिन्ह आवंटित करता है। नामांकन पत्र वापस करने की तिथि से कम से कम 20 दिन का समय उम्मीदवार को चुनाव अभियान के लिए दिया जाता है। लोक सभा एवं विधान सभा के चुनाव खर्च के लिए अधिकतम सीमा निर्धारित की गयी है जिसके पीछे मन्तव्य यह है कि उम्मीदवार समानता से प्रचार कार्य करें। लोक सभा चुनाव के

लिए बडें राज्यों के लिए 1.5 लाख, एवं छोटे राज्यो के लिए 1.3 लाख व्यय की सीमा निर्धारित की गयी है। राज्य विधान सभा चुनाव के लिए विभिन्न राज्यो के लिए 10 हजार से लेकर 15 हजार तक अधिकतम व्यय सीमा निर्धारित की गयी है।

3. निर्वाचन प्रणाली का संवैधानिक ढांचा

3.1– **निर्वाचन आयोगः–** संविधान के अनुच्छेद 324 में निर्वाचन के संचालन एवं निर्देशन के लिए चुनाव आयोग के गठन का प्रावधान किया गया है।

चुनाव आयोग में मुख्य चुनाव आयुक्त एवं अन्य क्षेत्रीय चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति संसद द्वारा बनायें गये प्रावधानों के अन्तर्गत की जाती है। इनकी नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। चुनाव आयुक्त का कार्यकाल एवं सेवा शर्तें संसद द्वारा बनाए गये नियमों के आधार पर राष्ट्रपति करता है। किन्तु मुख्य चुनाव आयुक्त को पदच्युत करने का अधिकार राष्ट्रपति को नहीं दिया गया है। इसका कारण मुख्यतः चुनाव आयोग की स्वायत्तता को पूरी तरह बनाये रखना है। मुख्य चुनाव आयुक्त की पदच्युति उन्ही प्रक्रियाओं द्वारा होती है, जिन संवैधानिक प्रक्रियाओं के द्वारा उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की पदच्युति होती है। (मुख्य चुनाव आयुक्त की अनुशंसा पर राष्ट्रपति पदच्युत कर सकता है।) चुनाव आयोग केन्द्र में राष्ट्रपति एवं राज्य में राज्यपाल से चुनाव कार्यो के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार के कर्मचारियों को मांग सकता है। संसद को यह शक्ति प्राप्त है। कि वह संसद के किसी भी सदन अथवा राज्य व्यवस्थापिका के सदन में निर्वाचनों से सम्बन्धित नियमो का निर्माण कर सकता है। जिसे मानने के लिए निर्वाचन आयोग बाध्य है। संसद द्वारा अथवा राज्य व्यवस्थापिका द्वारा निर्वाचन क्षेत्र से सम्बन्धित अथवा उनमें सीटों के आवंटन से संबधित किसी भी नियम को

न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती। उन्ही निर्धारित क्षेत्रो के आधार पर निर्वाचन आयोग क्षेत्रों का परिसीमन करता है।

3.2 निर्वाचन आयोग के कार्यः—अनुच्छेद 324 के अनुसार चुनाव आयोग का मुख्य कार्य चुनाव क्षेत्रों का परिसीमन, मतदाता सूची तैयार करना, सीटों का आरक्षण करना, चुनाव चिन्हो का आवंटन करना, अर्धन्यायिक कार्य करना, राजनीतिक दलों के लिए आचार संहिता तैयार करना, राजनीतिक दलो को आकाशवाणी पर चुनाव प्रचार की सुविधा दिलवाना, उम्मीदवारों द्वारा व्यय की राशि निश्चित करना, मतदाताओं मतदान करवाने वाले कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना, याचिकाओ के सम्बन्ध में उचित परामर्श देना है। चुनाव आयोग चुनाव कार्यक्रम की घोषणा सरकार की सस्तुति पर करता है किन्तु चुनाव प्रकिया की शुरूआत स्थिति के अनुसार राष्ट्रपति या सम्बन्धित राज्यपाल की घोषणा के बाद होती है।

इसके अतिरिक्त चुनाव आयोग के कुछ कार्य और है यथा :—

1. राष्ट्रपति या राज्यपाल से जिसका सम्बन्ध हो किसी सदन के सदस्य की योग्यता के सन्दर्भ में परामर्श देना।

2. चुनाव सम्बन्धी अनियमितता के बारे में उठे सन्देहों व विवादों के निरीक्षण के लिए चुनाव अधिकारियों की नियुक्ति करना।

3. विशेष परिस्थितियों में पुनः निर्वाचन का आदेश देना।

4. क्षेत्र परिसीमन में आयोग की लिपिकीय त्रुटियों को पुर्वानुमान से ठीक करना।

5. चुनाव प्रक्रिया के सम्बन्ध में जनमत को शान्त करने के लिए संकटग्रस्त क्षेत्रों की यात्रा करना एवं जनसंचार माध्यमों का प्रयोग करना।

संक्षेपतः स्वतन्त्र व निष्पक्ष निर्वाचन करने के लिए आयोग सभी संवैधानिक प्रक्रियाएं अपनाने के लिए सक्षम है।

3.2.1 **निर्वाचन क्षेत्र परिसीमा** :—चुनाव आयोग का प्रमुख कार्य सर्वप्रथम लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों की सीमा का निर्धारण करना है। प्रथम बार आम चुनाव 1952 में निर्वाचन क्षेत्रों का सीमांकन 'जनप्रतिनिधत्व अधिनियम 1951' के अन्तर्गत राष्ट्रपति के आदेश के तहत किया गया था। किन्तु कतिपय अव्यवस्था के कारण संसद ने सीमा निर्धारण कार्य "परिसीमा आयोग 1952" के अधिनियम द्वारा निर्धारित किया। इस अधिनियम में यह व्यवस्था की गई है कि प्रत्येक जनगणना के उपरान्त निर्वाचन क्षेत्रों का सीमांकन किया जाना चाहिए इस आयोग का अध्यक्ष मुख्य चुनाव आयुक्त होता है। इसके अतिरिक्त इसके दो सदस्य सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश होते हैं। परिसीमन आयोग की सहायता के लिए प्रत्येक राज्य से 2 से लेकर 7 सदस्यों की व्यवस्था है। ये सदस्य सहायक सदस्य के रूप में माने जाते हैं। इनका इनका निर्वाचन सम्बद्ध राज्य के लोक सभा एवं राज्य सभा के सदस्यों में से होता है। इस सीमांकन आयोग के गठन का उद्देश्य यह है कि निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन में कोई पक्षपात न हो सके। इस कार्य के लिए 'समान जनसंख्या,' को आधार बनाया गया है।

जनसंख्या के अलावा उच्चावच, आवागमन के साधन एवं जनसामान्य की अन्य गति विधियों को भी ध्यान में रखा जाता है।

1956 में राज्यों के नवनिर्माण के कारण निर्वाचन क्षेत्रों में पूर्णतः परिवर्तन हो गया था।

3.2.2 **सीटों का आरक्षण** :—संविधान के अनुच्छेद 330 एवं 332 में क्रमशः लोकसभा एवं विधानसभाओं में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जन

जातियों के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात में स्थान आरक्षित करने का उपबन्ध है।

अनुच्छेद 331 के अनुसार यदि राष्ट्रपति आंग्ल भारतीय समुदाय के प्रतिनिधित्व को लोकसभा में अपर्याप्त समझता है तो दो सदस्यों को नामांकित कर सकता है। इसी तरह राज्यपाल अनु0 333 के अनुसार विधानसभा में एक सदस्य नामांकित कर सकता है।

उपरोक्त अधिनियम को ध्यान में रखकर वर्तमान समय में लोकसभा में अनुसूचित जाति के लिए 78 (अठहत्तर) एवं अनुसूचित जनजाति असम क्षेत्रों की जनजाति को छोड़कर) के लिए 30 स्थान आरक्षित किया गया है।

लोकसभा, विधानसभाओं में आरक्षण की वास्तविक स्थिति तालिका नं0 3. 1, 3.2, 3.3 एवं 3.4 से स्पष्ट है–

तालिका नं0 3.1

उ0प्र0 मे लोकसभा सीटों का आरक्षण

वर्ष	सम्पूर्ण सीट	अनु0 जाति के लिए आरक्षित सीट	अनु0 जनजाति के लिए आरक्षित सीट	सामान्य सीट
1952	88	17	NIL	69
1957	86	18	NIL	68
1962	86	18	NIL	68
1967	85	18	NIL	67
1971	85	18	NIL	67
1977	85	18	NIL	67

1980	85	18	NIL	67
1985	85	18	NIL	67
1989	85	18	NIL	67
1991	85	18	NIL	67

तालिका नं0 3.2

उ0प्र0 मे विधानसभा मे सीटों का आरक्षण

वर्ष	सम्पूर्ण सीट	अनु0 जाति के लिए आरक्षित सीट	अनु0 जनजाति के लिए आरक्षित सीट	सामान्य सीट
1952	430	83	NIL	347
1957	430	89	NIL	341
1962	430	89	NIL	341
1967	425	89	16	320
1969	425	89	16	320
1974	425	89	16	320
1977	425	89	16	320
1980	425	92	16	320
1985	425	92	16	320
1989	425	92	16	320
1991	425	92	16	320

तालिका नं0 3.3

इलाहाबाद जिले की लोकसभा क्षेत्रो मे सीटों का आरक्षण

निर्वाचन वर्ष	सम्पूर्ण सीट	अनु0 जाति के लिए आरक्षित सीट	अनु0 जनजाति के लिए आरक्षित सीट	सामान्य सीट
1952	02	अप्राप्त	अप्राप्त	02
1957	02	अप्राप्त	अप्राप्त	02
1962	03	01	अप्राप्त	02
1967	03	01	अप्राप्त	02
1971	03	01	अप्राप्त	02
1977	03	01	अप्राप्त	02
1980	03	01	अप्राप्त	02
1985	03	01	अप्राप्त	02
1989	03	01	अप्राप्त	02
1991	03	01	अप्राप्त	02
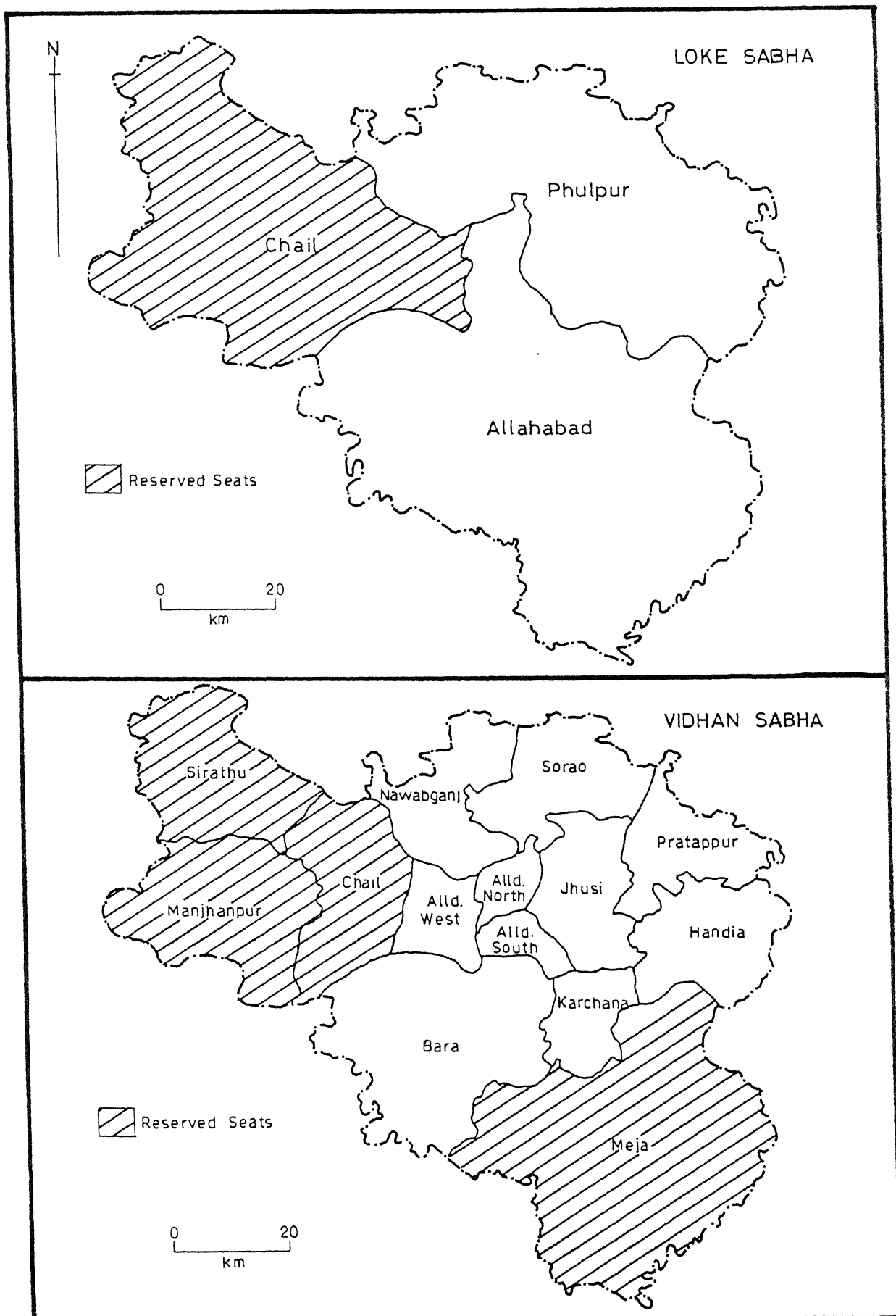
Fig. 3.1 Reserved Seats

तालिका नं0 3.4

इलाहाबाद जिले की विधानसभा मे सीटों का आरक्षण

निर्वाचन वर्ष	सम्पूर्ण सीट	अनु0 जाति के लिए आरक्षित सीट	अनु0 जनजाति के लिए आरक्षित सीट	सामान्य सीट
1952	14+	अप्राप्त	–	11
1957	14	03	–	10
1962	14	04	–	10
1967	14	04	–	11
1974	14	03	–	11
1977	14	03	–	11
1980	14	03	–	11
1985	14	03	–	11
1989	14	03	–	11
1991	14	03	–	11

3.2.3 **निर्वाचन नामांकन** : चुनाव प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण है। चुनावों की तिथि नामांकन के लिए काफी समय पूर्व ही तय कर दी जाती है।

राजनैतिक दल विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों के लिए अपने–अपने उम्मीदवारों का चयन करते ही, दलों द्वारा मनोनीत किये उम्मीदवार सम्बद्ध क्षेत्र के निर्वाचन अधिकारी के सम्मुख अपने--अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत करते हैं। नामांकन पत्रों की जांच की जाती है। जांच पूरी होने के दो–तीन दिन पश्चात् नामांकन वापस लेने की अंतिम तिथि होती है। कोई भी उम्मीदवार यदि चुनाव न लड़ने का निर्णय करें तो वह अपना नामांकन वापस ले सकता है।

नामांकन की यह प्रक्रिया मतों के अपव्यय को रोकने में सहायक होती हैं।

3.2.4 **चुनाव चिन्ह आवंटन** : चुनाव आयोग विभिन्न राजनीतिक दलों को आरक्षित चुनाव–चिन्ह प्रदान करता है। जहां तक सम्भव हो आयोग दल की पसंद का चिन्ह स्वीकार कर लेता है। परन्तु ऐसा करते समय निर्वाचन आयोग यह भी सुनिश्चित कर लेता है कि विभिन्न दलों के चुनाव–चिन्ह मिलते जुलते तथा भ्रमात्मक न हों।

प्रत्येक राजनैतिक दल का चुनाव चिन्ह एक विशिष्टता को इंगित करता है, जिससे मतदाता भी आसानी से अपने पसंद के उम्मीदवार का चयन कर सकता है।

निर्वाचकों की योग्यताएं

लोकसभा एवं विधानसभा का निर्वाचन सार्वजनिक वयस्क मताधिकार के आधार पर होता है। इसलिए मतदाताओं के लिए निम्न योग्यताएं निर्धारित की गई हैं।

1– वह भारत का नागरिक हो।

2– उसकी आयु 18 वर्ष पूरी हो चुकी हो।

3– वह सम्बन्धित क्षेत्र में कम से कम 180 दिनों तक निवास कर चुका हो।

4– वह निर्वाचन सम्बन्धी किसी अपराध का दोषी न हो।

5– संसद एवं विधानसभा द्वारा निर्धारित किसी भी प्रकार की अयोग्यता उसमें न हो।

लोकसभा एवं निर्वाचन प्रक्रिया

भारतीय संविधान के अनुसार लोकसभा जनता का प्रतिनिधि सदन है। अर्थात् इसके सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्षरूप से निर्वाचित होते हैं। लोकसभा भारतीय राजनीति के गुरुत्वाकर्षण का केन्द्र है। चूंकि यह वयस्क मताधिकार वाली आम जनता के लिए निर्मित सदन है। यही देश के लोक कल्याण कारी कानून को पारित कर उसे लागू करवाती है। इसका संगठन कुछ इस प्रकार से है–

5.1 लोकसभा संगठन–भारतीय संविधान के अनुच्छेद 81 द्वारा लोकसभा के सदस्यों की संख्या 500 निर्धारित की गई थी। किन्तु वे संशोधन द्वारा इसके सदस्यों की संख्या 500 से बढ़ाकर 520 कर दी गई और पुनः उसे 51वें संवैधानिक संशोधन द्वारा बढ़ाकर 544 कर दिया गया इसमें 542 सदस्यों का चुनाव विभिन्न राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों की जनता द्वारा होता है। संविधान के अनुच्छेद 331 के अनुसार राष्ट्रपति दो आंग्ल भारतीयों को लोकसभा में मनोनीत कर सकता है।

5.2 लोकसभा निर्वाचन पद्धति–लोकसभा के सदस्य जनता द्वारा प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा चुने जाते हैं। निर्वाचित प्रतिनिधियों का निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर होता है। चुनाव के लिए समस्त भारत में एक सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्रों का निर्माण किया जाता है। मूल संविधान में निर्वाचन क्षेत्रों का निर्माण 7.5 लाख जनसंख्या पर कम से कम एक सदस्य और प्रत्येक 5 लाख की जनसंख्या के लिए अधिक से अधिक एक सदस्य थे। 1952 के द्वितीय संविधान संशोधन द्वारा प्रत्येक 7.5 लाख जनसंख्या पर एक सदस्य निर्धारित किया गया। 1956 ई0 के सविधान संशोधन अधिनियम द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि निर्वाचन क्षेत्र में

निर्माण के लिए एक राज्य के किसी भाग को दूसरे राज्य में नहीं मिलाया जायेगा।

5.3 लोकसभा सदस्यों की योग्यताएं—भारतीय संविधान के अनु सार लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने के लिए निम्नलिखित योग्यताएं होनी चाहिए—

i) वह भारत का नागरिक हो।

ii) उसकी आयु 25 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए।

iii) ऐसी योग्यताएं रखता हो जो संसद विधि द्वारा निर्धारित की गयी हों।

लोकसभा की सदस्यता के लिए किसी भी प्रत्याशी में निम्नलिखित अयोग्यताएं नहीं होनी चाहिए—

i) वह किसी लाभ के पद पर न हो।

ii) किसी (उपयुक्त) न्यायालय द्वारा पागल करार नहीं दिया गया हो।

iii) दिवालिया न हो।

iv) भारत की नागरिकता छोड़ दी हो। तथा किसी विदेश की नागरिकता ग्रहण कर ली हो।

1951 ई0 में भारतीय संसद ने अग्रलिखित अयोग्यता का निर्धारण किया—

i) वह निर्वाचन सम्बन्धी किसी अपराध में दोषी न हो।

ii) वह किसी भी सरकारी नौकरी से भ्रष्टाचार के आधार पर न निकाला गया हो।

iii) वह सरकार से सम्बन्धित किसी अनुबन्ध या कारखाने का हिस्सेदार न हो।

5.4 लोकसभा का कार्य–काल एवं विघटन : लोकसभा का सामान्य कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। यदि इसके पहले राष्ट्रपति के द्वारा यह विघटित न की गयी हो। यह अवधि आम निर्वाचन के बाद पहले सत्र की पहली बैठक से ली जाती है। आपातकाल में इसकी अवधि संसद द्वारा पारित नियम के आधार पर एक बार में अधिक से अधिक एक वर्ष के लिए बढ़ाई जा सकती है। आपातकाल की समाप्ति के बाद इसकी अवधि 6–6 महीने के लिए बढ़ाई जा सकती है।

लोकसभा के विघटन के सम्बन्ध में राष्ट्रपति उस प्रधानमंत्री के परामर्श की अवहेलना नहीं कर सकता है। जिसे संसद का विश्वास प्राप्त हो। प्रधानमंत्री संसद में पराजित होने के बाद या एक अल्पमत प्रधानमंत्री जिसे संसद में विश्वास प्राप्त करना हो यदि विघटन की मांग करे तो राष्ट्रपति पूर्णतया अपनी स्वेच्छा का प्रयोग कर सकता है और ऐसी स्थिति में उसे प्रधानमंत्री की राय को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

विधान सभा निर्वाचन प्रक्रिया

राज्य विधान मण्डल का निम्न एवं प्रथम सदन विधानसभा है। केन्द्र में जो काम लोकसभा का है वही काम राज्य में विधानसभा का है। यह जनता की प्रतिनिधि सभा है राज्य की मंत्रिपरिषद विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होती है।

6.1 विधानसभा का गठन : राज्य की विधानसभा में सदस्यों की संख्या अधिकतम 500 और न्यूनतम 60 होनी चाहिए सभा के सदस्यों का निर्धारण सम्बन्धित राज्य की जनसंख्या के आधार पर किया जाता है। विधान सभा के

सदस्यों का निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर उस राज्य की जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होता है। उत्तर प्रदेश राज्य में विधानसभा के कुल सदस्यों की संख्या 425 निर्धारित है। जिसमें अनुसूचित जाति के लिए 89 एवं अनुसूचित जनजाति के लिए 16 सीटें आरक्षित की गई हैं।

6.2 विधान सभा सदस्यों की योग्यताएं एवं अयोग्यताएं : विधान सभा का सदस्य होने के लिए निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक है।

i) वह भारत का नागरिक हो।

ii) उसकी उम्र कम से कम 25 वर्ष हो।

iii) वह संसद एवं राज्य विधान मण्डल द्वारा निर्धारित समस्य योग्यताएं पूरी करता हो।

अयोग्यताएं : कोई भी व्यक्ति यदि उसमें निम्नलिखित अयोग्यताएं पायी जाती हैं तो विधान सभा का सदस्य नहीं हो सकता यदि–

i) वह भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन किसी ऐसे पद पर जिस पद को कानून द्वारा राज्य के मण्डल ने उन्मुक्ति नहीं दी है।

ii) किसी न्यायालय द्वारा अपराधी घोषित कर दिया गया हो।

iii) वह दिवालिया घोषित हो।

iv) वह भारत का नागरिक न हो। या किसी अन्य विदेशी राज्य की नागरिकता ग्रहण कर ली हो।

v) वह संसद विधि द्वारा निर्योग्य न हो।

विधान सभा का कार्यकाल एवं विघटन : विधि के अनुसार विधान सभा का कार्यकाल पांच वर्षों का होता है। यह अवधि विधानसभा के पहले सत्र के प्रथम बैठक से ली जाती है। पाँच साल के बाद यह स्वतः समाप्त हो जाती है। लेकिन आपात्–काल की घोषणा के दौरान संसदीय कानून द्वारा इस अवधि को एक बार में एक वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता है। आपातकाल की समाप्ति के बाद किसी भी स्थिति में विधन सभा की अवधि छः महीने से अधिक नहीं बढ़ाई जा सकती। इसके लिए राज्यपाल विधानसभा को अवधि से पहले भंग कर सकता है।

निर्वाचन की राजनैतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अनुभाग में प्रथम आम चुनाव 1952 से लेकर 1991 तक हुए चुनावों की राजनीतिक परिस्थितियों का वृहद विश्लेषण 'इलाहाबाद' जिले के सन्दर्भ में किया जा रहा है। जिससे निर्वाचकों के मनोभावों का पता लग जायेगा, अर्थात् आज तक के निर्वाचन में मतदाताओं ने कब–2 किन दलों को पसन्द किया ओर उसके पीछे कारण क्या था?

तालिका क्रमांक 3.5 एवं 3.6 से सम्पूर्ण जिले में दलों की वस्तुस्थिति स्पष्ट हो रही है।

जो इस प्रकार है–

तालिका–3.5

विभिन्न वर्षों में विजयी दल, द्वितीय दल एवं अन्य दलों द्वारा प्राप्त मत % में लोक सभा

क्र0 स0	वर्ष	कुल लोक	कांग्रेस जीती	अन्य दल जीते	विजयी दल को प्राप्त वोट	द्वितीय दल को प्राप्त वोट	अन्य/निर्दलीय को

		सभा क्षेत्र			%	%	प्राप्त वोट %
1	1952	02	02	NIL	45.80	27.40	26.80
2	1957	02	02	NIL	47.60	32.20	20.20
3	1962	03	03	NIL	54.03	26.10	19.87
4	1967	03	03	NIL	44.94	32.75	22.31
5	1971	03	03(J)	NIL	56.78	25.16	18.06
6	1977	03	NIL	03(भा0लो0दल)	64.11	26.53	09.34
7	1980	03	02	01 (जनता S)	42.68	29.68	27.63
8	1985	03	03	NIL	56.53	33.37	10.08
9	1989	03	01	02 (जनता S)	41.89	35.50	22.61
10	1991	03	NIL	03 (जनता S)	32.59	25.40	42.00

तालिका–3.6
विभिन्न वर्षो में विजयी दल, द्वितीय दल एवं अन्य दलों द्वारा प्राप्त मत : में विधान सभा

क्र0 स0	वर्ष	कुल विधान सभा क्षेत्र	कांग्रेस जीती	विजयी दल को प्राप्त वोट %	द्वितीय दल को प्राप्त वोट %	अन्य निर्दलीय को प्राप्त %
1	1952	14+	14	43.16	9.52	47.32
2	1957	14+	13	46.31	26.34	27.35
3	1962	14	07	47.28	26.87	25.85
4	1967	14	08	38.43	26.49	35.08
5	1971	14	03	39.24	26.42	34.64
6	1977	14	NIL	48.85	33.03	18.12
7	1980	14	12	41.88	28.00	30.21
8	1985	14	08	41.49	27.31	31.19
9	1989	14	02	41.27	27.25	31.48
10	1991	14	NIL	36.03	23.97	40.00

7.1 प्रथम लोकसभा विधानसभा निर्वाचन 1952 : 1952 में हुआ प्रथम आम चुनाव वास्तव में एक वृहद लोकप्रिय कार्यवाही की तरह था। इस चुनाव ने पहली बार राजनैतिक दृष्टि से महत्त्वाकांक्षी असन्तुष्ट वर्ग को अपना भाग्य

आजमाने का अवसर प्रदान किया। कांग्रेस, साम्यवादी जनसंघ व समाजवादी प्रमुख दलों के अलावा छोटे–छोटे दलों (जैसे रामराज्य, परिषद्, जनता पार्टी, कृषक लोकपार्टी आदि) ने भी हिस्सा लिया।

प्रथम आम चुनाव इलाहाबाद जनपद में लोकसभा की 2 सीटों एवं विधान सभा की 14 सीटों में कांग्रेस ने विजय प्राप्त की। क्योंकि इस चुनाव में जनपद से पंडित जवाहर लाल जैसे व्यक्तित्व का प्रभाव था। जनपद में कुल 47.51 प्रतिशत मतदाताओं ने हिस्सा लिया। कांग्रेस पार्टी को कुल पडे मतों का लोकसभा में 45.80 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। जब कि शेष मत अन्य पार्टी एवं निर्दलीयों को मिला। इसी तरह 14 विधानसभाओं में कुल पड़े मतों का 43.16 प्रतिशत भाग काग्रेस के हिस्से में आया।

इस तरह स्पष्ट है कि इलाहाबाद जनपद की राजनीति में नेहरू, शास्त्री, सप्रू एवं अन्य राजनीतिज्ञों के कार्य से जनता पूरी तरह संतुष्ट थी। तथा कांग्रेस को भारी विजय दिलायी। कांग्रेस की इस विजय से विरोधी दल के नेताओं को ध्रुव्रीकरण की दिशा में सोचने को विवश किया। परिणामस्वरूप 1952 में समाजवादी व कृषक–मजदूर प्रजापार्टी ने मिलकर प्रजा समाजवादी दल बनाया। प्रजासमाजवादी दल में कांग्रेस समर्थन के विषय पर इसी समय विवाद हुआ, जिससे लोहियावादी गुट अलग हो गया।

7.2 द्वितीय आम निर्वाचन लोकसभा, विधानसभा 1957 : प्रथम आमचुनाव 1952 में विरोधी दल बुरी तरह से पराजित हुए थे। जिससे 1957 के आम चुनाव में विरोधी दलों ने अपनी स्थिति को मजबूत कर चुनाव में सम्मिलित हुए। किन्तु कांग्रेस के सत्ता में होने के कारण तथा राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने के कारण जनता ने विरोधी दलों को समर्थन नहीं दिया।

कांगेस ने 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना का शुभारम्भ किया। 1955 के आवडी अधिवेशन में समाजवादी समाज की रचना का लक्ष्य ग्रहण किया। राष्ट्र के उद्देश्य की व्याख्या की। आर्थिक एवं वार्षिक नीति का उद्देश्य का समान वंटवारा बताया। उपरोक्त सभी तथ्यों का प्रभाव जनमानस पर स्पष्ट रूप से पड़ा। जिससे द्वितीय आम चुनाव में कांग्रेस दल ने क्षेत्रीय दलों एवं संगठनों का वर्चस्व समाप्त कर दिया।

लोकसभा की 2 सीटों में से दोनों कांगेस को प्राप्त हुई तथा विधानसभा की 10 सीटों में 9 सीट पर विजय प्राप्त हुई। कुल वैध मतों का 47.60% मत लोकसभा में एवं 46.31 प्रतिशत मत विधानसभा में अकेले कांग्रेस को प्राप्त हुआ। विधानसभा की 1 मात्र सीट पी एस पी ने जीता। जहां वैधमतों का 52.45 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। जबकि कांग्रेस को 47.55 प्रतिशत मत प्राप्त किया।

7.3 तृतीय आम चुनाव में लोकसभा एवं विधानसभा 1962 : द्वितीय आम निर्वाचन के बाद कई महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई जिन्होंने तृतीय आम चुनाव में कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएं समानें आयी। बहुल सदस्यीय निर्वाचन क्षेत्र पद्धति समाप्त हो गयी। भारत चीन सीमा टकराव जोरों पर था। कांग्रेस द्वारा सहकारी खेती पद्धति सम्बन्धी प्रस्ताव पारित करने के विरोध में दक्षिण पंथियों ने एक नया राष्ट्रीय एवं धर्मनिरपेक्ष संगठन बनाया।

उपरोक्त कारणों से जनता स्पष्ट रूप से प्रभावित हो गयी तथा कांग्रेस ने लोकसभा में अपार सफलता प्राप्त की। किन्तु विधान सभाओं में उसका प्रदर्शन सराहनीय नहीं रहा।

इलाहाबाद जिले में कांग्रेस ने लोकसभा की तीनों सीटों पर विजय हासिल की पंडित जवाहर लाल नेहरू फूलपुर से निर्वाचित हुए। उन्हें कुल वैधमतों का

61.62% मत प्राप्त हुआ इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से लालबहादुर शास्त्री निर्वाचित हुए। उन्हें कुल वैध मतों का 58.06% मत प्राप्त हुआ। तीसरी सीट चायल (आ0जा0) भी कांग्रेस ने ही जीती। कुल मिलाकर इलाहाबाद जिले में कुल संसदीय बैधमतों का 54.03% मत कांग्रेस ने प्राप्त किया जबकि शेष विपक्षी दलों एवं निर्दलीयों ने प्राप्त किया। किन्तु इनके मतों का प्रतिशत भी उच्च रहा क्योंकि डा0 राममनोहर लोहिया जैसा व्यक्तित्व चुनाव में नेहरू जी के विपरीत रहे था।

विधानसभा की 14 सीटों में से 7 सीट कांग्रेस ने जीती तथा पी एस पी–5, जनसंघ–1, निर्दलीय–1 सीट विजयी रहे प्राप्त की।

स्पष्ट है कि जनपद के मतदाताओं ने केन्द्र में कांग्रेस को स्वीकार किये। किन्तु राज्य में क्षेत्रीय दलों को महत्व दिया। फिर भी राज्य में सरकार कांग्रेस की ही बनी।

7.4 चतुर्थ लोकसभा, विधानसभा निर्वाचन 1967 : 1962 के तृतीय आम चुनाव के बाद देश की राजनैतिक परिस्थिति बहुत बदल चुकी थी। अक्टूबर 1962 के भारत चीन युद्ध से नेहरू के नेतृत्व वाली सरकार की उपलब्धियों को गहरा धक्का लगा। मई 1964 में नेहरू की मृत्यु के पश्चात कांग्रेस के सबल नेतृत्व व स्थित की अपूण्रनीय क्षति हुई। कई क्षेत्रीय दलों ने राज्य में अपनी उपस्थिति का प्रमाण दिया। देश के कई भागों में हिंसात्मक तोड़–फांड हुई। जिससे भारतीय राजनैतिक व्यवस्था की स्थिरता ही खतरे में पड़ गई तथापि कांग्रेस ने जनमत में अपना बहुमत बनायें रखा। इलाहाबाद जिले में उपरोक्त तथ्यों का प्रभाव विशेष नहीं पड़ा। क्योंकि लोकसभा की तीनों सीटें कांग्रेस ने ही जीती। किन्तु उसके मतों की संख्या कम हुई। जहां 1962 के चुनाव में उसे वैधमतों का 54.03% प्राप्त हुआ था वहीं 1967 के चुनाव में उसे कुल वैध मतों का

44.94% ही प्राप्त हुआ। एस.एस.पी. एवं रिपब्लिकन ने अपने मतों के % में बढ़ोत्तरी की और उन्हें वैधमतों का 32.75 मत % प्राप्त हुआ। विधान सभा चुनाव में कांग्रेस ने 14 सीटों में से 8 सीटों पर विजय हासिल की जबकि एस.एस. पी. –3, जनसंघ–1, निर्दलीय 2 पर रहे। स्पष्ट है कि विधानसभा में सीटों का पूर्णरूप से बँटवारा हो गया और कांग्रेस वर्चस्व को चुनौती मिली।

7.5 पंचम लोकसभा मध्यावधि चुनाव 1971 : 1969 में कांग्रेस विभाजन से लोकसभा में कांग्रेसी सरकार का स्पष्ट बहुमत खत्म हो गयां अतः प्रधानमंत्री ने जनता का नया आदेश लेने का निर्णय लिया। 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण वाले मामले में सर्वोच्च न्यायालय का प्रतिकूल निर्णय। कांग्रेस के प्रगतिशील नीति के क्रियान्वयन पर मुहर लगाने के लिए सरकार ने लोकसभा भंग कर निर्वाचन की घोषणा की। मतदाताओं ने श्रीमती इन्दिरागांधी के रचनात्मक नारे "गरीबी हटाओ" को विपरीत दलों के नकारात्मक नारे "इन्दिरा हटाओ" की अपेक्षा अधिक महत्व दियां किन्तु इलाहाबाद जिले में कांग्रेस (जे) का वर्चस्व रहा, यहां लोकसभा की तीनों सीटें कांगेस (जे) के खाते में गयीं और उसे कुल वैधमत का 56.78% प्राप्त हुआ जबकि अन्य दलों कांग्रेस (N), वी0के0डी को 25.16% एवं निर्दलीय को 18.06% मत प्राप्त हुए।

7.6 षष्टम् विधानसभा निर्वाचन 1974 : 1974 का विधानसभा चुनाव विषमपरिस्थितियों में सम्पन्न हुआ कांग्रेस के 'गरीबी हटाओ' नारे ने जनता को काफी प्रभावित किया। प्रदेश के 425 विधान सभा सीटों में कांग्रेस को स्थान मिले। इलाहाबाद जिले के 14 विधान सभा सीटो में से कांग्रेस (आई) एवं अन्य दलों को प्राप्त सीटों का विवरण इस प्रकार है।

पार्टी	सीट
कांग्रेस सत्तारूढ़	2
कांग्रेस संगठन	1
कांग्रेस (एस)	1
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	3
भारतीय क्रांतिदल	5
कांग्रेस (R)	1
भारतीय जनसंघ	1
	14

तालिका– 3.6 से निर्धारित होता है कि 1974 के विधानसभा चुनाव में कदापि कांग्रेस ने 3 सीटें ही जीती किन्तु उसे कुल 39.94% मत मिले जो उसके लिए एक उपलब्धि रही तालिका से यह स्पष्ट है कि मतों को विभाजन उच्च स्तर पर हुआ अन्य/निर्दलीय को 36.64% मत मिले। अन्य क्षेत्रों में कांग्रेस के पराजित होने का कारण मतों का निर्दलीय उम्मीदवार की तरफ झुकाव। झुकाव का कारण क्षेत्रीय विकास को राष्ट्रीय पार्टियों द्वारा महत्व न देना निर्दलीयों द्वारा यह आश्वासन देना की कम समय में तीव्र विकास किया जायेगा।

7.7 सप्तम् लोकसभा, विधानसभा निर्वाचन 1977 : वर्ष 1977 के निर्वाचन की परिस्थितियां अन्य निर्वाचन वर्षो से भिन्न थी। 26 जून 1975 से 18 जनवरी 1977 के आपातकाल के बाद यह चुनाव हुआ। कांग्रेस इस चुनाव में मतदाताओं का विश्वास़ खो चुकी थी। देश का पूरा राजनीतिक ढांचा दो भागों में

विभाजित था। कांग्रेस सी0पी0 आदि, अन्ना–डी0एम0 के एकतरफ। दूसरी तरफ लोकदल, जनसंघ संगठन कांग्रेस, समाजवादियों ने एक नये दल जनतापार्टी का गठन किया। परिणामस्वरूप भारत के आम निर्वाचन के इतिहास में पहलीबार कांग्रेस व उनके विरोधियों में सीधा संघर्ष हुआ। चुनाव का परिणाम बड़ा ही विस्मयकारी था। इसमें कांग्रेस का पतन एवं उसके मलवे पर जनता पार्टी का अभ्युदय था।

पूरे भारत मे इस निर्वाचन वर्ष में जनतापार्टी एवं उसके सहयोगियों को 295 स्थान प्राप्त हुआ जब कि कांग्रेस को मात्र 154 स्थान। इलाहाबाद जिले की तीनों लोकसभा सीट भारतीय लोकदल के खाते में गयी। भारतीय लोकदल को कुल वैधमतों का 64.11% मत प्राप्त हुआ। जबकि कांग्रेस को मात्र 26.55% मत। विधानसभा परिणाम भी कांग्रेस के विपक्ष में गया। यहां 14 विधान सभा सीटों में कांग्रेस एक सीट भी न प्राप्त कर सकी। समस्त सीट जनतापार्टी ने जीता। 14 विधान सभा क्षेत्र की समस्त सीटों में वैधमतों का 48.85% भारतीय जनतापार्टी ने प्राप्त किया। जबकि कांग्रेस को 33.05% मत मिला। यह पराजित दल (तृतीय दल) के रूप में रहे।

7.8 अष्टम् लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन–1980 : वर्ष 1980 के संसदीय एवं विधानसभायी चुनाव निम्न तत्वों के परिणाम थे–

1) जनतापार्टी एक वैकल्पिक राष्ट्रीय संगठन नहीं बना पायी।

2) जनता पार्टी सरकार में रहकर हरिजनों, मुसलमानों और निर्बलवर्ग की सुरक्षाा नहीं कर सकी।

3) जनता पार्टी के शासनकाल में अनेक सांम्प्रदायिक दंग्रे हुए।

4) चुनाव में जनता से किये गये वादों को यह पार्टी पूरा करने में विफल रही।

वही 1980 के चुनाव में कांग्रेस ने जनता पार्टी के दुश्शासन एवं मुख्य नीतियों को जनता के सामने विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत किया।

1977 में जनतापार्टी की भारी विजय का कारण संगठित विपक्ष था। जो 1980 में जनता के सामने कांग्रेस के अलावा कोई विकल्प नहीं रह गया और कांग्रेस भारी मतों से विजयी हुई। प्रदेश की 425 विधानसभा सीटों में से कांग्रेस को 300 स्थान प्राप्त हुए। इलाहावाद जनपद में लोकसभा की तीन सीटों में से 2 सीट कांग्रेस को मिली तथा एक सीट जनतापार्टी (एस) को प्राप्त हुई। कांग्रेस (आई) ने इलाहाबाद एवं चायल संसदीय क्षेत्रों से वैधमतों का 43.36% मत प्राप्त किया।

विधानसभा की 14 सीटों में से कांग्रेस को 12 सीटे प्राप्त हुई। 2 सीटें जनता पार्टी (5) को चौधरीचरण को प्राप्त हुई। ये सीटें भी पार्टी छवि के कारण नहीं वरन उम्मीदवार छवि के कारण प्राप्त हुई।

7.9 नवम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन 1984–85 : दिसम्बर 1984 में हुए लोकसभा चुनाव में मतदाताओं ने कांग्रेस (I) भारी विजय दिलायी किन्तु मार्च 1985 में हुए विधानसभाओं के चुनाव में विपक्ष ने अपने स्थान का एहसास दिला दिया। विधानसभा चुनाव में लोकसभा चुनाव जैसी प्रबल राजीव लहर नही चल सकी।

लोकसभा चुनाव में इलाहाबाद जनपद की तीनों संसदीय सीटों पर कांग्रेस (I) ने भारी बहुमत से विजय प्राप्त की। कांग्रेस को कुल वैधमतों का 55.53: मत प्राप्त हुआ जो कि एक कीर्तिमान था। विधानसभा चुनावों में कांग्रेस ने 14 में से

मात्र आठ सीटों पर विजय प्राप्त की। 3 सीटें लोकसदल एवं 3 निर्दलीय उम्मीदर विजयी हुए।

7.10 दशम् लोकसभा विधान सभा निर्वाचन 1989 : 1989 का चुनाव नवीं लोकसभा एवं दसवीं विधानसभा के लिए हुआ। लोकसभा चुनाव में राजनीतिक दलों के पास अनेक मुद्दे थे कांग्रेस (I) ने लोगों के सामने यह मुद्दा रखा की केन्द्र में स्थाई सरकार केवल वही बना सकती है। इसके साथ–2 कांग्रेस ने पंचायती राज विधेयक नगरपालिका विधेयक का व्योरा देते हुए आरोप लगाया कि विपक्ष ने उसे पारित नही होने दिया। इधर विपक्ष के पास भी मुद्दों की कमी नही थी भ्रष्टाचार मूल्यों में वृद्धि, देश भर में साम्प्रदायिक उफान और केन्द्र व राज्य की उपेक्षा और सबसे बड़ा मुद्दा था बोफोर्स तोप सौदे में दलाली का आरोप, रामजन्मभूमि, बाबरी मस्जिद विवाद पूरे देश में फैल गया। सम्पूर्ण देश में अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना घर कर गयी। विपक्ष ने विश्वास दिलाया की सत्ता परिवर्तन ही उनकी सुरक्षा का कवच बन सकेगा।

लोकसभा की 525 सीटों के लिए चुनाव हुआ। कांग्रेस (I) 193 सीटें प्राप्त कर सबसे बड़ी पार्टी बन गयी। कांग्रेस (आई) को 1985 में 48.1 प्रतिशत मत मिले जो कि 1989 में घटकर 38.2% हो गया।

इलाहाबाद जनपद में 1989 के चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन बहुत खराब था। 3 लोकसभा सीटों में से कांग्रेस (आई) मात्र एक सीट पर विजय प्राप्त की। शेष दो सीटें जनतादल के खाते में गयी। जनतादल को कुल वैधमतों का 40.79 प्रतिशत मत मिला तथा कांग्रेस (आई) को 36.60 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। विधानसभा की 14 सीटों में जनता दल ने नौ सीटों पर विजय हासिल की, जब कांग्रेस ने 2 सीटों पर विजय प्राप्त की; 2 सीटों पर भा0ज0पा0 तथा 1 सीट निर्दलीय ने विजय प्राप्त की। जनतादल को कुल वैध मतों का 43.53 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

7.11 एकादश् लोकसभा, विधानसभा निर्वाचन—1991 : 1991 के लोकसभा चुनाव में विभिन्न राजनीतिक दलों ने अपने–अपने नीतियों एवं कार्यक्रमों से जनता को प्रभावित करने का प्रयास किया। कांग्रेस ने यह चुनाव राजीव गांधी के नेतृत्व में लड़ा, किन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि प्रथम चरण चुनाव के बाद 21 मई को उनका देहावसान हो गया। कांग्रेस मूल्यवृद्धि, रोजगार में वृद्धि; श्रमिकों के लिए पेंशन, अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा जैसे मुद्दों पर चुनाव लड़ी तो भा0ज0पा0 स्वदेश व स्वधर्म की नीति, छद्म धर्मनिरपेक्षता का विरोध, अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण, उत्तरांचल को अलग राज्य बनाना, सरकारिया आयोग की रिर्पोट लागू करना जैसे मुद्दों पर चुनाव लड़ी। दोनों दलों ने उपरोक्त मुद्दों पर जनमत को अपनी ओर आकर्षित करने का पूर्ण प्रयास किया।

लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 225 स्थान, भा0ज0पा0 को 119 स्थान मिले और केन्द्र में कांग्रेस (आई) की सरकार बनी किन्तु उ0प्र0 विधानसभा में 211 स्थान प्राप्त कर भा0ज0पा0 ने अपनी सरकार का निर्माण किया।

इलाहाबाद जिले में कांग्रेस (आई) की स्थिति शून्य रही है। तीनों संसदीय क्षेत्रों में जनतादल ने विजय हासिल की जब भा0ज0पा0 दूसरे स्थान पर रही। कांग्रेस को जिले के मतदाताओं ने पूर्णरूप से अस्वीकार कर दिया। 1991 के निर्वाचन में इलाहाबाद जनपद के मतदाताओं ने जनतादल को स्वीकार किया और उसे कुल वैध मतों का 32.59 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। जब कि भारतीय जनता पार्टी को 29.17 प्रतिशत प्राप्त हुआ। विधानसभा चुनाव में मतदाताओं का झुकाव जनतादल की तरफ ही रहा। 14 विधान सभा सीटों में से 09 सीटें जनतादल, 03 सीटे भा0ज0पा0, 01 सीट स0पा0 और 01 सीट निर्दलीय को प्राप्त हुई। जनतादल को कुल वैधमतों का 36.03 प्रतिशत एवं भारतीय जनता पार्टी को 23.97 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ।

चर्तुथ अध्याय

सीट वितरण प्रतिरूप

4. सीट वितरण प्रतिरूप

प्रस्तुत अध्याय में उ0प्र0 के इलाहाबाद जनपद में 1952 से 1991 तक सम्पन्न हुए लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन में विजित सीटों की दलीय स्थिति; वितरण प्रतिरूप, आरक्षित सीटों तथा प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन को सुविधा की दृष्टि से छः भागों में विभाजित किया गया। प्रथम भाग 4.1 में लोकसभा सीट वितरण प्रतिरूप में दलों की वारतविक रिथति, सापेक्षिक स्थिति तथा वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय भाग 4.2 में विधानसभा सीट वितरण प्रतिरूप दलों की वास्तविक स्थिति, सापेक्षिक स्थिति तथा वितरण प्रतिरूप को दर्शाया गया है। तृतीय भाग 4.3 में दल प्रतियोगिता विश्लेषण लोकसभा एवं विधानसभा प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ भाग 4.4 में विधानसभा दल प्रतियोगिता विश्लेषण निरूपित किया गया है। पंचम भाग 4.5 में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता लोकसभा एवं विधानसभा दर्शाया गया है। अन्तिम भाग 4.6 में आरक्षित एवं सामान्य सीटों का वर्णन लोकसभा विधानसभा प्रस्तुत किया गया है, साथ में आरक्षित एवं सामान्य सीटों में मतदान को दर्शाया गया है।

4.1 लोकसभा वितरण प्रतिरूप

4.1.1 सीट : प्रस्तुत भाग में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में 1952 से 1991 तक सम्पन्न लोकसभा निर्वाचन में दलों की वास्तविक स्थिति सापेक्षिक स्थिति एवं वितरण प्रतिरूप का विशद् विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

4.1.1.1 **दलों की वास्तविक स्थिति** : 1952 से 1991 के लोकसभा निर्वाचन में वास्तविक दलीय स्थिति तालिका क्रमांक 4.1 में प्रस्तुत है–

तालिका 4.1 – दलीय स्थिति 1952–1991

दल का नाम	1952	1957	1962	1967	1971	1977	1980	1985	1989	1991
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (I)/(J)	02	02	03	03	03		02	03	01	–
कम्युनिस्ट पार्टी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
जनता पार्टी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
एस.एस.पी	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
जनसघ	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
भा.ज.पा.	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
जनता दल	–	–	–	–	–	–	–	–	02	03
जनता (S)	–	–	–	–	–	–	01	–	–	–
भारतीय लोक दल	–	–	–	–	–	03	–	–	–	–
अन्य निर्दलीय	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

तालिका 4.1 से स्पष्ट है कि कांग्रेस इलाहाबाद जिले के तीनों संसदीय क्षेत्र 1952 से 1971 तक अपना एकाधिकार बनाये रखी। इन वर्षों में कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) के अलावा अन्य कोई दल कभी भी चुनाव में एक भी स्थान प्राप्त न. कर सके। कारण स्वतन्त्रता आन्दोलन का केन्द्र इलाहाबाद होने के साथ–2 पंडित जवाहर लाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री जैसे राष्ट्रीय नेता इस पार्टी के साथ जुड़े थे। 1977 के लोकसभा निर्वाचन में कांग्रेस ने अपना अस्तित्व खो दिया। तीनों संसदीय क्षेत्रों में से कांग्रेस (आई) एक पर भी विजय प्राप्त न कर सकी। तीनों सीटें लोकदल के पक्ष में गई जनता ने कांग्रेस की तानाशाही नीतियों का खुल कर विरोध किया। 1980 के निर्वाचन वर्ष में कांग्रेस ने पुनः अपना प्रभाव बढ़ाया तथा 3 लोकसभा क्षेत्रों में से 2 स्थान उसे प्राप्त हुए। एक स्थान फूलपुर जनता पार्टी (एस) को प्राप्त हुआ। पुनः 1985 के चुनाव में

Seats won by Different Parties (1952-1991)
Lok Sabha
Seats
3
2.5
2
1.5
1
0.5
0
1952
1957
1962
1967
1971
1977
1980
1985
1989
1991
Year
Congress
Janta Dal
Janta S
Lok Dal
Table 4.1
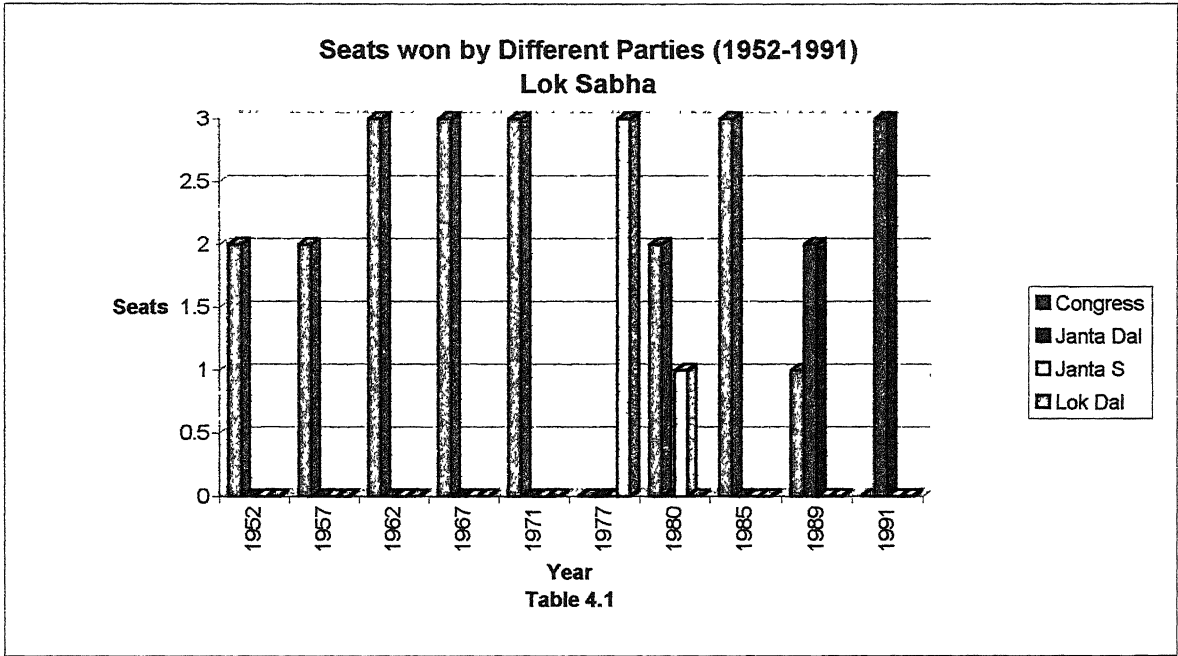
कांग्रेस (आई) ने अपने पुराने प्रभाव का प्रदर्शन किया, राजीव लहर ने कांग्रेस (आई) को तीनों सीटों पर विजय दिलायी। 1989 में कांग्रेस से अलग हुए कुछ राष्ट्रीय नेताओं एवं विपक्ष ने मिलकर कांग्रेस (आई) के विरोध में चुनाव लड़ा जिसका प्रभाव निर्वाचन पर पूर्ण रूप से पड़ा क्योंकि कांग्रेस (आई) ने मात्र एक सीट पर विजय प्राप्त की जबकि जनतादल ने 2 सीटों पर विजय प्राप्त की। पुनः 1991 के चुनाव कांग्रेस (आई) ने इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र से अपना प्रभाव पुनः खो दिया क्योंकि इस चुनाव में तीनों सीटों पर जनतादल ने विजय प्राप्त की।

दलों की सापेक्षिक स्थिति : 1952 से 1991 तक के निर्वाचन की इलाहाबाद जनपद में संसदीय क्षेत्रों की सापेक्षिक दलीय स्थिति तालिका 4.2 में प्रदर्शित है–

तालिका 4.2

दल का नाम	1952	1957	1962	1967	1971	1977	1980	1985	1989	1991
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (I)/(J)	73.20	79.80	54.03	44.94	25.98	26.55	39.01	56.53	36.63	10.10
कम्युनिस्ट पार्टी	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
जनता पार्टी	-	-	-	-	-	-	15.72	-	-	10.78
एस.एस.पी	-	-	-	32.75	0.43	-	-	-	-	-
जनसंघ	-	-	25.06	-	-	-	-	-	-	-
भा.ज.पा.	-	-	-	-	-	-	-	-	-	28.94
जनता दल	-	-	-	-	-	-	-	-	40.80	32.56
जनता (S)	-	-	-	-	-	-	33.36	-	-	-
भारतीय लोकदल	-	-	-	-	-	64.11	-	33.37	-	-
सोसलिस्ट	-	-	9.39	-	-	-	-	-	-	-
अन्य/निर्दलीय	26.80	20.20	11.52	22.81	8.96	9.30	11.31	10.17	3.77	1.98
कांग्रेस (J)	-	-	-	-	-	0.04	-	-	-	-
भारतीय क्रान्तिदल	-	-	-	-	7.85	-	-	-	-	-
कांग्रेस (J)	-	-	-	-	56.78	-	-	-	-	-
बी.एसपी	-	-	-	-	-	-	-	-	18.83	15.88

तालिका 4.2 से स्पष्ट है कि वर्ष 1952 के प्रथम नव निर्वाचन में कांग्रेस ने जनमत पर पूरी तरह से कब्जा किया था क्योंकि उसे 1952 में कुल बैध मतों का 73.20 प्रतिशत मत अकेले प्राप्त हुआ। पांच साल सत्ता में रहने के बाद भी जनमत का कांग्रेस से मोहभंग नही हुआ क्योंकि कांग्रेस में पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं लालबहादुर शास्त्री जैसे व्यक्तित्व थे। 1957 के निर्वाचन वर्ष में कांग्रेस की छवि सुधरी और उसे 79.80 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। दोनों महानिर्वाचनों के बाद 1962 में जिस समय चीन भारत तनाव चल रहा था उस वर्ष नेहरू की नीतियों के कारण जनमत कई दिशाओं में बट गया। 1962 के महानिर्वाचन में कुल वैध मतों का कांग्रेस को केवल 54.03 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ जबकि जनसंघ को 25.06 एवं सोसलिस्ट पार्टी को 9.39 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। कांग्रेस के लिए जनमत की चेतावनी थी कि हर गलत–सही निर्णयों पर जनता अपना समर्थन नहीं करेगी। 1967 के महानिर्वाचन में कांग्रेस का जनमत 9.09 प्रतिशत नीचे गिरा अर्थात् कुल वैध मतों का कांग्रेस को केवल 44.94 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ वही जनसंघ को वोट बैंक बढ़ा उसे कुल वैधमत का 32.75 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। 1971 के चुनाव कांग्रेस (J) नयी पार्टी के रूप में उभरी जिसने भा0रा0कांग्रेस की छवि धूमिल कर दी। इस निर्वाचन में जहाँ कांग्रेस (आई) को 25.98 प्रतिशत मत मिले वहीं कांग्रेस (जे) को 57.78 प्रतिशत मत मिले, अन्य छोटे–छोटे क्षेत्रीय दलों की ओर भी जनमत आकृष्ट हुआ जिससे भारतीय क्रान्ति दल को 7.8 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। 1977 के महानिर्वाचन में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्रीय से भा0रा0 कांग्रेस का अस्तित्व लगभग समाप्त सा हो गया क्योंकि तीन सीटों में से भारतीय कांग्रेस को एक सीट पर भी विजय नहीं मिली। तीनों सीटों पर भारतीय लोकदल ने विजय हासिल की उसे कुल वैध मतों का 64.11 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ कांग्रेस को 25.55 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ 1980 के निर्वाचन में भा0रा0 कांग्रेस ने अपनी स्थिति में सुधार कियां उसे कुल वैध मतों का 39.01 प्रतिशत मत मिला जबकि जनता (S) जो कांग्रेस की मुख्य प्रतिद्वन्द्वी

थी उसे वैध मतों का 33.36 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। 1985 के महानिर्वाचन में कांग्रेस (आई) को राजीव जैसा व्यक्ति मिला वैध मतों में वृद्धि बहुत तो नहीं हुई किन्तु कांग्रेस ने तीनों सीटों पर विजय प्राप्त कर 56.53 प्रतिशत मत प्राप्त किया वहीं उसकी प्रतिद्वन्द्वी भारतीय लोकदल ने 33.37 प्रतिशत मत प्राप्त किया। 1989 का निर्वाचन वर्ष कांग्रेस (आई) के लिए चुनौती भरा था, क्योंकि कई राष्ट्रीय नेताओं एवं क्षेत्रीय पार्टियों के मिलकर कांग्रेस (आई) के खिलाफ एक मोर्चा खड़ा किया। इस वर्ष कांग्रेस को मात्र एक सीट पर विजय प्राप्त हुई वह भी उम्मीदवार छवि के कारण। कांग्रेस (आई) को कुल वैध मतों का 36.60 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ जब कि जनतादल को 40.80 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। क्षेत्रीय पार्टी के रूप में उभरी बी.एस.पी. ने जो कि मोर्चे में शामिल नहीं हुई अपने नीति एवं कार्यक्रम के आधार पर कुल वैध मतो का 18.83 प्रतिशत भाग प्राप्त किया। निर्वाचन वर्ष 1991 जनमत के लिए चुनौती भरा था क्योंकि इस चुनाव के पहले राजनैतिक उठापटक अपने चरम विन्दु थी। जनता पूरी तरह से भ्रमित थी किन्तु चुनाव के समय जनता ने राजनेताओं को अपनी सोच का एहसास करा दिया। कांग्रेस (आई) को 10.90 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ जो कि इस पार्टी के लिए एक चेतावनी थी। 1952 से 1991 तक कभी भी इतना खराब प्रदर्शन कांग्रेस का नहीं रहा। जनता दल मुख्य पार्टी के रूप में उभरी उसे कुल वैधमतों का 32.56 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। जनतापार्टी को 10.78 प्रतिशत एवं बी.एस.पी. को 15.88 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। अर्थात क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व जनमत ने स्वीकार किया।

वितरण–प्रतिरूप

प्रस्तुत भाग में लोकसभा सीटों का वितरण प्रतिरूप इलाहाबाद जनपद में 1952 से 1991 तक प्रस्तुत किया गया। विजयी दलों में वितरण के साथ–साथ, द्वितीय दल वितरण एवं अन्य दलों के वितरण प्रतिरूप को प्रस्तुत किया गया है।
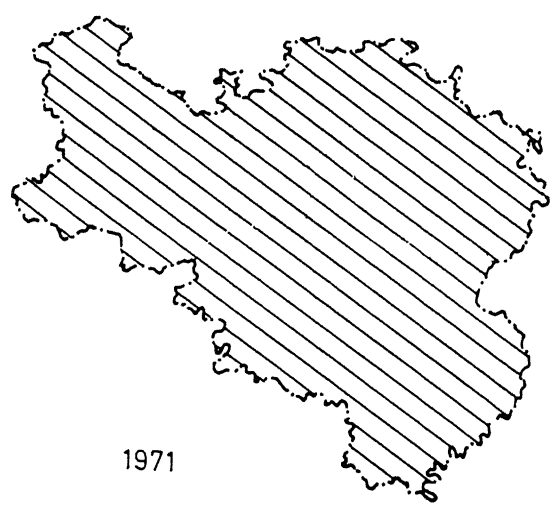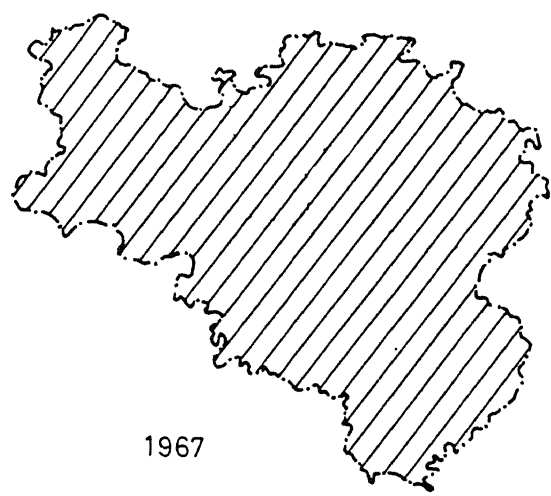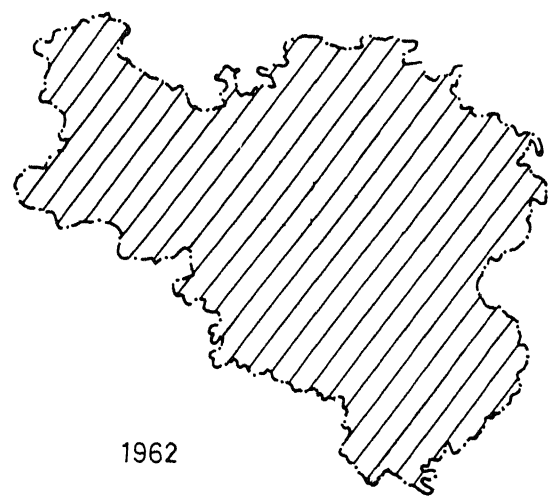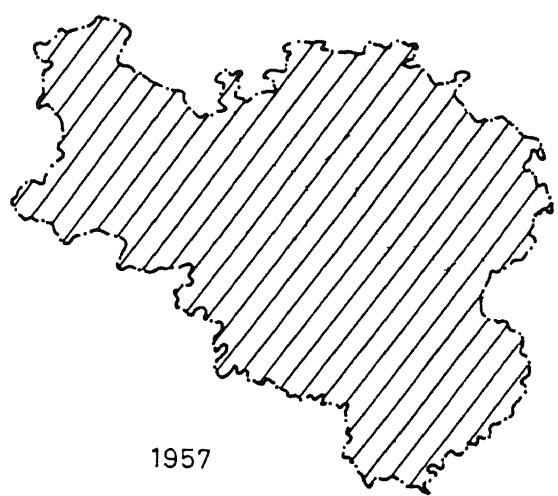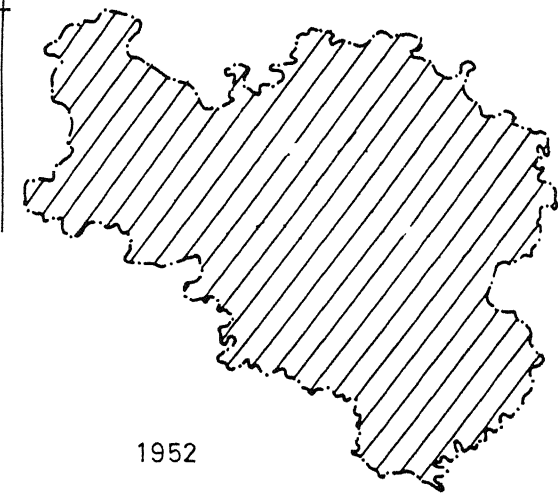
Fig. 4.1.1 Party Distribution 1952 to 1971 Loke Sabha (Winning Parties)
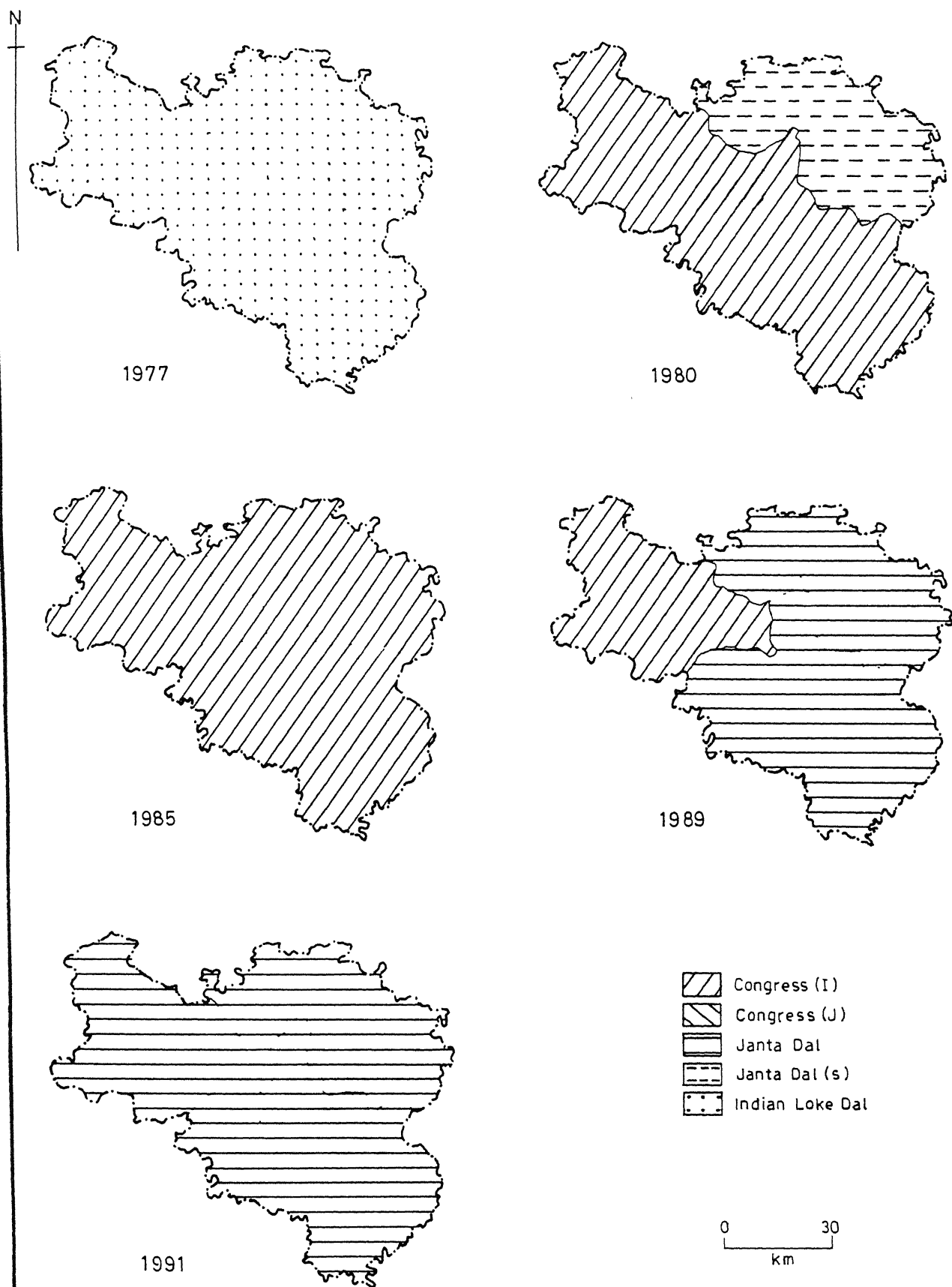
Fig. 4.1.2 Party Distribution : 1977 to 1991 Loke Sabha (Winning Parties)

विजयी दल का वितरण

1992 से 1991 तक के निर्वाचन वर्षो में विजयी दलों का वितरण मानचित्र 4.1.1 एवं 4.1 2 में प्रस्तुत किया गया। मानचित्रानुसार विभिन्न दलों का वितरण प्रतिरूप निम्न प्रकार से है।

1952 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस लोकसभा के तीनों क्षेत्रों में फैली रही। 1957, 1962, एवं 1967 में कांग्रेस सम्पूर्ण जनपद में फैली रही। 1971 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस (जे) ने भा0 रा0 कांग्रेस के तीनों स्थानों पर अपना प्रमुख स्थान कायम कियां 1977 में तीनों लोकसभा इलाहाबाद, चायल, फूलपुर पर लोकदल ने विजय प्राप्त किया। 1980 में अ0 भा0 कांग्रेस ने दो सीटों क्रमशः इलाहाबाद, चायल पर विजय प्राप्त की। जब कि फूलपुर सीट जनता पार्टी (S) का क्षेत्र बना। पुनः 1985 में लोकसभा की तीनों सीटें कांग्रेस (आई) के खाते में गयी। 1989 के निर्वाचन वर्ष में पुनः क्षेत्रीय वितरण में परिवर्तन हुआ। इस चुनाव में कांग्रेस (आई) ने चायल संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में विजय प्राप्त की जब कि जनता दल ने इलाहाबाद एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्रों में विजय हासिल की। 1991 के चुनाव में इलाहाबाद जनपद के तीनों संसदीय क्षेत्र इलाहाबाद, चायल, फूलपुर **जनता दल** का क्षेत्र बन गया।

पराजित द्वितीय दल का वितरण

इस अनुभाग में निर्वाचन क्षेत्रों में द्वितीयक दल वितरण को प्रस्तुत किया गया। 1952 से 1991 तक लोकसभा निर्वाचन में द्वितीयक दलों का वितरण मानचित्र 4.2.1 एवं 4.2.2 में प्रस्तुत किया गया है मानचित्र के अनुसार निम्नक्षेत्र पाये गये।
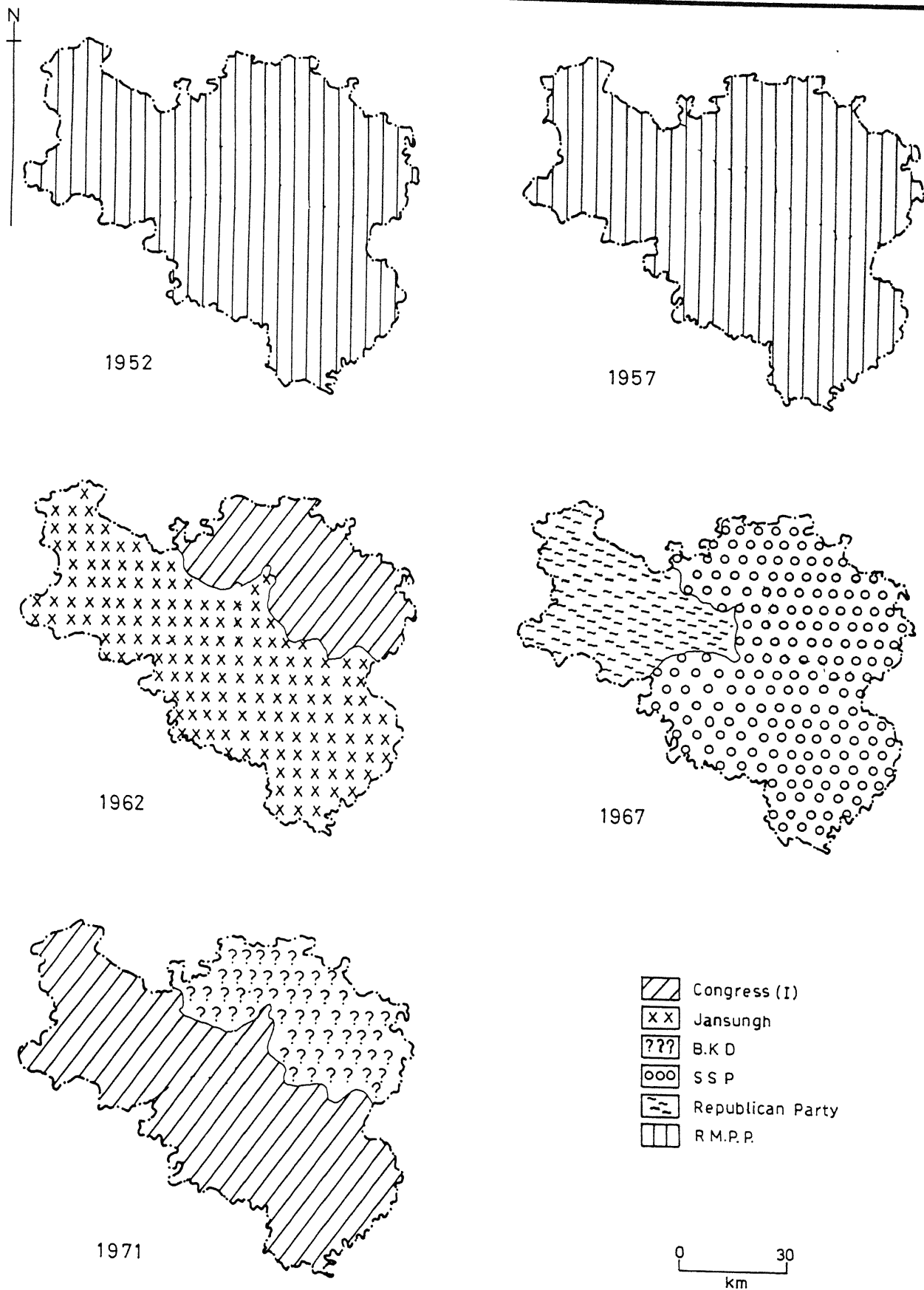
Fig. 4.2.1 Party Distribution : 1952 to 1971 Loke Sabha (Runner Parties)
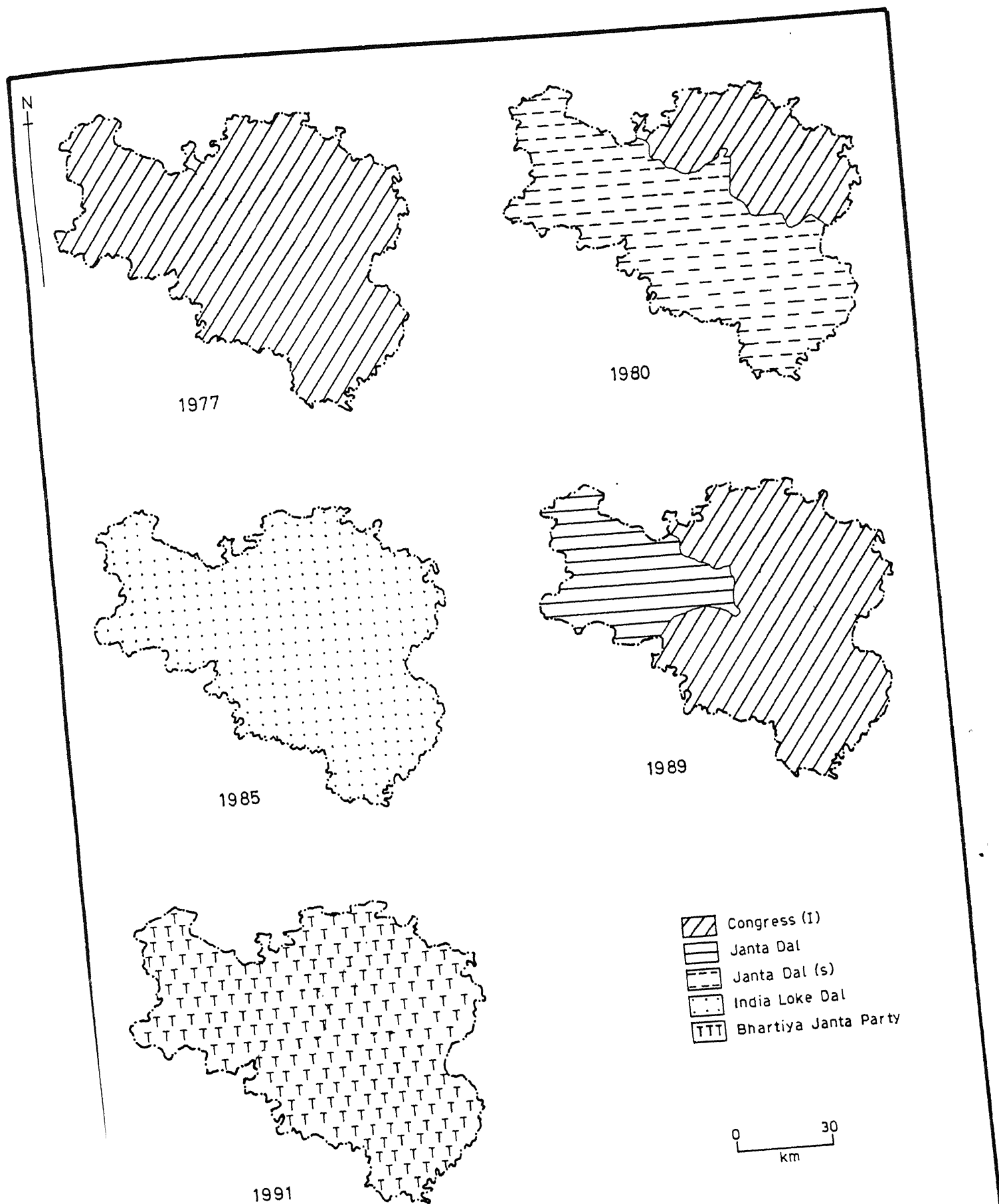
Fig. 4.2.2 Party Distribution : 1977 to 1991 Loke Sabha (Runner Parties)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस/कांग्रेस (आई) : 1952 से 1991 तक के निर्वाचन में 1971 में इसका क्षेत्र इलाहाबाद चायल था। 1977 में इलाहाबाद, फूलपुर, चायल तीनों क्षेत्र था। 1980 में फूलपुर में द्वितीय दल क्षेत्र था। 1989 के चुनाव में इलाहाबाद एवं फूलपुर क्षेत्र था, जबकि 1991 के निर्वाचन में भा0 रा0 कांग्रेस/कांग्रेस (आई) का इलाहाबाद जनपद में कोई क्षेत्र नही रहा। द्वितीय दल के रूप जब भी कांग्रेस स्थान प्राप्त किया इसके पीछे प्रमुख कारण कांग्रेस का विभाजन या नेताओं का पलायन रहा है।

जनसंघ द्वितीय दल के रूप में जनसंघ 1962 में इलाहाबाद, चायल, संसदीय क्षेत्र में था।

भा0ज0पार्टी–1991 में चुनाव में भा0ज0पा0 इलाहाबाद चायल, फूलपुर संसदीय क्षेत्र में द्वितीयक् दल के रूप में रही।

जनता दल–1989 में चायल संसदीय क्षेत्र जनता दल के क्षेत्र में था।

लोकदल क्षेत्र–1985 में इलाहाबाद फूलपुर, चायल तीनों संसदीय क्षेत्रों में लोकदल द्वितीयक दल के रूप में विद्यमान था।

जनता (एस) क्षेत्र–1980 में निर्वाचन में इलाहाबाद चायल संसदीय क्षेत्र में जनता (एस) द्वितीयक दल के रूप में विद्यमान थी।

भारतीय क्रांतिदल–1971 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र में भारतीय क्रान्ति दल का क्षेत्र था।

एस–एस–पी–1967, फूलपुर, इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में एस–एस–पी का क्षेत्र था।

रिपब्लिकन क्षेत्र–1967 में चायल संसदीय क्षेत्र रिपब्लिकन पार्टी विद्यमान थी।

सोसलिस्ट क्षेत्र–1962 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र सोसलिस्ट के साथ थीं।

4.2 – विधानसभा वितरण प्रतिरूप (1952–91)

4.2.1 सीट–प्रस्तुत भाग में उ0प्र0 के इलाहाबाद जनपद में विधानसभा निर्वाचन में दलों की वास्तविक स्थिति, सापेक्षिक स्थिति एवं वितरण प्रतिरूप का वर्णन निर्वाचन वर्ष 1952 से 91 तक किया गया है। उपरोक्त स्थितियों का वर्णन करते समय तात्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक नीतियों का प्रभाव निर्वाचन मत पर दर्शाया गया।

4.2.1.1–दलों की वास्तविक स्थिति : निर्वाचन वर्ष 1952 से 1991 तक विधान सभा में दलों की वास्तविक स्थिति तालिका क्रमांक 4.3 में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित है।

तालिका क्रमांक 4.3 से स्पष्ट है कि–विधानसभा चुनावों में लोकसभा जैसी स्थिति नहीं थी। 1952 एवं 1957 दो महानिर्वाचन वर्षों में भा0रा0 कांग्रेस को जनमत ने पूर्ण रूप से समर्थन दिया। किन्तु 1962 में अखिल भारतीय कांग्रेस के प्रति लोगों का मोहभंग हुआ क्योंकि क्षेत्रीय दलों का विकास हुआ। 1962 के चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अब 06 स्थानों पर विजय प्राप्त की जब 8 स्थान अन्य दलों एवं विपक्ष ने जीता जिसमें जनसंघ–1, पी.एस.पी.–06, निर्दलीय–एक स्थान जीता। 1974 के निर्वाचन में कांग्रेस विभाजित हो चुकी थी इसलिए मतदाताओं को अधिक प्रभावित नहीं कर सकी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 03 स्थान, कांग्रेस संगठन को 01 स्थान, कांग्रेस सत्ता को 03 स्थान, कांग्रेस (आर) को 1 स्थान मिला वही विपक्षी पार्टी भारतीय क्रांतिदल को 05 एवं जनसंघ

को 01 स्थान प्राप्त हुआ। चार भागों में विभाजित कांग्रेस स्पष्ट है पूरी तरह से इस निर्वाचन में आन्तरिक कलह से ग्रस्त थी। 1977 के निर्वाचन में जनमत ने

तालिका—4.3

दल का नाम	1952	1957	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
भा.रा.काग्रेस कांग्रेस (I)	14	14	06	08	03	—	12	10	05	—
सोसलिस्ट	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
भा0ज0पा0	—	—	—	—	—	—	—	—	02	03
जनसंघ	—	—	01	01	01	—	—	—	—	—
कम्युनिस्ट	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
जनतापार्टी	—	—	—	—	—	14	—	01	—	—
जनतादल	—	—	—	—	—	—	—	—	05	09
कांग्रेस संगठन	—	—	—	—	01	—	—	—	—	—
बी0एस0पी0	—	—	—	—	—	—	—	—	—	01
पी.एस.पी.	—	—	06	—	—	—	—	—	—	—
जनता पार्टी (S)	—	—	—	—	—	—	02	—	—	—
लोकदल	—	—	—	—	—	—	—	03	—	—
रिपलिक	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
लोकदल (ब)	—	—	—	—	—	—	—	—	01	—
आर.आर.पी.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
कांग्रेस सत्ता	—	—	—	—	03	—	—	—	—	—
स्वतन्त्रपार्टी	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
भा0का.दल	—	—	—	—	05	—	—	—	—	—
कांग्रेस (R)	—	—	—	—	01	—	—	—	—	—
किसान मजदूर प्र.पा.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
एस.एस.पी.	—	—	—	03	—	—	—	—	—	—
अन्य / निर्दलीय	—	—	01	02	—	—	—	—	01	01
योग	**14**	**14**	**14**	**14**	**14**	**14**	**14**	**14**	**14**	**14**

Seats won by Different Parties (1952-1974)
Vidhan Sabha
Seats
Year
14
12
10
8
6
4
2
0
1952
1957
1962
1967
1974
Congress
BJP
Jan Sangh
Janta Party
Janta Dal
Congress(S)
BSP
PSP
JP(S)
Lok Dal
Lok Dal(B)
Congress Satta
CPI(M)
Congress(R)
SSP
Other/Ind

Seats won by Different Parties (1977-1991)
Vidhan Sabha
Seats
Year
14
12
10
8
6
4
2
0
1977
1980
1985
1989
1991
Congress
BJP
Jan Sangh
Janta Party
Janta Dal
Congress(S)
BSP
PSP
JP(S)
Lok Dal
Lok Dal(B)
Congress Satta
CPI(M)
Congress(R)
SSP
Other/Ind

Table 4.3

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को स्वीकार नहीं किया। जनपद इलाहाबाद की 14 विधान सभा सीटें जनतापार्टी नामक नये दल ने जीता। किन्तु 1980 के निर्वाचन में कांग्रेस ने अपनी पराजय का बदला ले लिया उसे 14 सीटों में से 12 सीटें प्राप्त हुई जब जनतापार्टी (s) को दो सीटें मिली। 1985 में कांग्रेस (I) ने जनपद की 14 सीटों में से 10 सीटों पर विजय प्राप्त किया जबकि अन्य विपक्षी पार्टियों को क्रमशः जनतापार्टी को 01, लोकदल को 03 स्थान प्राप्त हुए। 1989 का निर्वाचन कांग्रेस (I) के लिए चुनौती भरा रहा जनमत कांग्रेस से ऊब चुकी थी। इस निर्वाचन में कांग्रेस को मात्र 05 सीटों पर विजय मिली जबकि जनतादल –05, भाजपा 02 एवं लोकदल (B) 01 स्थान पर रहे। इसमें एक स्थान निर्दलीय को भी प्राप्त हुआ। 1989 की लहर 1991 के निर्वाचन में कायम रही और कांग्रेस का इलाहाबाद से पूरी तरह सफाया हो गया इसे जनपद में कोई भी स्थान नहीं मिला जब कि विपक्षीदल जनता दल को 09, भाजपा को 03, बी.एस.पी. को 01 एवं निर्दलीय को 01 स्थान प्राप्त हुआ।

दलों की सापेक्षिक स्थिति

दलों की सापेक्षिक स्थिति तालिका क्रमांक–4.4 से स्पष्ट होता है। तालिका से निम्न तथ्य उभर कर आते हैं। (1) कांग्रेस की स्थिति विधान सभा चुनावों से लोकसभा चुनावों जैसी नहीं रहती है। 1952 में कांग्रेस को विधान सभा चुनावों में मात्र 43.16 प्रतिशत मत मिले हैं जबकि 1952 में लोकसभा चुनाव ने 73.20 प्रतिशत मत (तालिका 4.2) मिले थे। (2) विधान सभा चुनावों में क्षेत्रीय मुद्दे उम्मीदवार का व्यक्तित्व पार्टी की साख आदि सभी प्रभाव डालते हैं।

(3) 1957 के चुनाव में कांग्रेस ने 46.31 प्रतिशत मत प्राप्त किया जब कि एक राष्ट्रीय पार्टी थी किन्तु पी.एस.पी. ने 17.72 प्रतिशत मत प्राप्त कर कांग्रेस को भविष्य के लिए चौकन्ना कर दिया।

(4) 1962 के महानिर्वाचन वर्ष में भा0 रा0 कांग्रेस को 42.32 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ वही पी0एस0पी0 ने अपना जनमत बढ़ाते हुए 28.87 प्रतिशत मत प्राप्त किया। जनसंघ एक तीसरी पार्टी के रूप में ऊपरी और उसे कुल बैध मतों का 8.04 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ।

तालिका – 4.4

	वर्ष									
दल का नाम	1952	1957	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
भा.रा.कांग्रेस कांग्रेस (I)	43.16	46.31	42.32	36.10	11.59	33.03	41.34	36.36	23.18	11.32
भा0ज0पा0	-	-	-	-	-	-	6.80	1.63	6.86	21.42
जनसंघ	-	-	8.04	12.12	12.29	-	-	-	-	-
कम्युनिस्ट	1.57	-	0.25	0.08	-	-	-	4.35	-	0.14
सोसलिस्ट	1.05	-	-	-	00.41	-	-	-	-	-
जनतापार्टी	-	-	-	-	-	48.85	-	6.86	0.09	10.02
रिपब्लिक	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
जनता दल	-	-	-	-	-	-	-	-	30.70	30.05
आर.आर.पी.	0.83	-	-	-	-	-	-	-	-	-
कांग्रेस संगठन	-	-	-	-	7.07	-	-	-	-	-
एस.एस.पी.	-	-	-	24.92	-	-	-	-	-	-
बहुजन स0 पार्टी	-	-	-	-	-	-	-	-	16.20	15.02
पी.एस.पी.	-	17.72	28.87	2.48	-	-	-	-	-	-
जनता पार्टी (S)	-	-	-	-	-	26.85	-	-	-	-
लोकदल	-	-	-	-	-	-	28.18	-	-	-
लोकदल (ब)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
कांग्रेस सत्ता	-	-	-	4.43	-	-	-	7.74	-	-
भा0कां.दल	-	-	-	25.13	-	-	-	-	-	-
काग्रेस (R)	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
किसान मजदूर प्र.पा.	8.41	-	-	-	-	-	-	-	-	-
अन्य / निर्दलीय	44.89	35.97	20.16	23.64	39.08	18.12	25.05	22.62	15.21	11.98

(5) 1967 के महानिर्वाचन में कांग्रेस (भा0रा0) ने 36.10 प्रतिशत मत ही प्राप्त किया जब नयी पार्टी के रूप में ऊभरी एस.एस.पी. ने 24.92 प्रतिशत मत प्राप्त किया। जनसंघ ने अपनी नीतियों कार्यक्रमों से भी रा0 कांग्रेस को प्रभावित किया उसे कुल वैध मतों का 12.12 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ।

(6) 1974 के निर्वाचन में कांग्रेस को जनमत ने अपनी बौद्धिकता का पूरा परिचय दिया। क्योंकि क्षेत्रीय पार्टी के रूप में विकसित भारतीय क्रान्तिदल को जनमत ने स्वीकार किया। उसे कुल वैधमतों का 25.13 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ दूसरे स्थान पर रही जनसंघ जिसे 12.29 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। कांग्रेस (भा0रा0) को मात्र 11.59 प्रतिशत मत ही मिले। कांग्रेस पूरी तरह से इस निर्वाचन में विखण्डित हो चुकी थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अलग हुए गुट कांग्रेस (संगठन) 7.07 कांग्रेस (सत्ता) 4.43 प्रतिशत मत प्राप्त किया। अगर तीनों कांग्रेस को साथ भी कर दिया जाता तो भी जनमत उन्हें स्वीकार नहीं करता।

(7) 1977 के निर्वाचन में लगभग सभी विपक्षी दलों ने मिलकर जनतापार्टी नामक एक नया संगठन बनाया वे कांग्रेस के नीतियों एवं कार्यक्रमों के विरोध में एक हुए थे। कांग्रेस को बुरी तरह से हराकर। जनतापार्टी ने कुल वैध मतों का 48.85 प्रतिशत मत अकेले प्राप्त किया। जबकि कांग्रेस 1952 से 77 तक कभी इतनै प्रतिशत वोट नहीं प्राप्त कर सकी थी। यद्यपि इस चुनाव में कांग्रेस को 33.03 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ था।

(8) 1980 के निर्वाचन में कांग्रेस को 41.36 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। जनता पार्टी के आपसी मतभेदों के कारण जनमत उनसे पूरी तरह छुटकारा पाना चाहता था किन्तु 26.85 प्रतिशत मत जनता पार्टी (s) नाम से लड़कर प्राप्त कर लिए वही अन्य एवं निर्दलीय को 25.05 प्रतिशत मत प्राप्त हुए।

(9) 1985 के महानिर्वाचन में विपक्ष पूरी तरह से विभाजित था जिसका फायदा कांग्रेस ने उठाया उसे कुल वैध मतों का 36.36 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ तथा उसने 10 विधानसभा सीटों पर विजय प्राप्त की। वही विपक्षी दलों लोकदल–28.10 प्रतिशत, जनतापार्टी 6.36 प्रतिशत कम्युनिष्ट 4.34, भाजपा 1.63 प्रतिशत तथा अन्य एवं निर्दलीय उम्मीदवारों ने 22.62 प्रतिशत मत प्राप्त किया कुल मिलाकर जनपद 63.64 प्रतिशत मतदाता 4 सीटों पर विजय दिला पाये जब 36.36 प्रतिशत मतदताओं ने 10 सीटों पर विजय दिलायी। अर्थात मूलतः जनमत कांग्रेस में नहीं था।

(10) 1989 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के पास 23.18 प्रतिशत मतदाता ही रह गये। एक नये दल जनतादल ने कांग्रेस का स्थान ग्रहण कर लिया उसे कुल वैध मतों का 30.70 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। बहुजन समाज पार्टी ने इस विधान सभा चुनाव में 16.20 प्रतिशत मत प्राप्तकर इलाहाबाद जनपद में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। इन दलों के अतिरिक्त अन्य दलों ने भी मतदाताअें का समर्थन हासिल किया; भा0ज0पा0 ने 6.86 प्रतिशत मत कांग्रेस सत्ता को 7. 74 प्रतिशत एवं जनता पार्टी को 0.09 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ।

(11) 1991 का महानिर्वाचन वर्ष कांग्रेस (I) के लिए निराशा पूर्ण रहा कयोंकि 1952 के बाद पहली बार कांग्रेस को सम्पूर्ण वैधमतों का मात्र 11.32 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। जनमत ने पूरी तरह से कांग्रेस (I) को अस्वीकार कर दिया। इस निर्वाचन वर्ष में सर्वाधिक जनमत आकर्षण जनतादल की ओर हुआ दूसरे स्थान पर भा0ज0पा0 रही उसे 21.42 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। बहुजन समाज पार्टी ने अपने जनमत को लगभग बनाये रखा उसे 15.02 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ। इसके अलावा जनता पार्टी को कुल वैध मतों का 10.02 प्रतिशत, कम्युनिस्ट को 0.14 प्रतिशत मत प्राप्त हुआ।
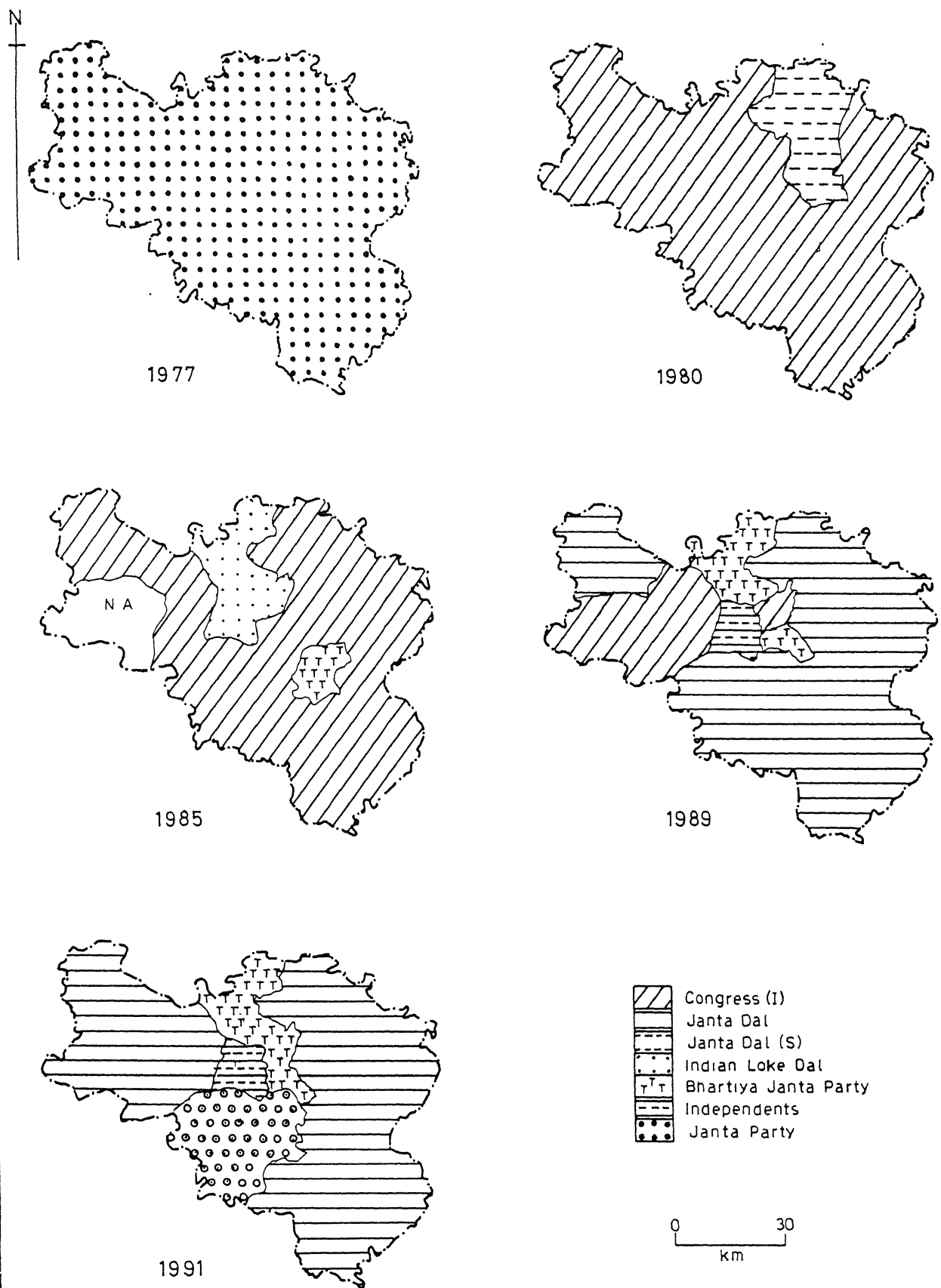
Fig. 4.3.2 Party Distribution 1977 to 1991 (Winner Parties) Vidhan Sabha

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि 1952 से 1991 के निर्वाचन वर्षों में कांग्रेस ने धीरे–धीरे अपने जनमत को खो दिया। जनमत किसी दल विशेष के साथ अधिक निर्वाचन वर्षों तक नही रहता। एक या दो निर्वाचन के बाद जनमत सत्ता धारी दल को बदल कर अन्य दलों को महत्व देता है।

4.2.1.3–वितरण प्रतिरूप : इस अनुभाग में इलाहाबाद जनपद के विधानसभा चुनावों का 1952 से 1991 तक वितरण स्वरूप प्रदर्शित किया गया। वितरण प्रतिरूप विजयी एवं पराजित दलों (द्वितीय दल) का प्रस्तुत किया गया है।

4.2.1.3.1 विजयी दल का वितरण : विजय दलों वितरण मानचित्र 4.3. 1. एवं 4.3.2 में प्रस्तुत है। मानचित्रानुसार 1952–1957 के निर्वाचन वर्ष में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जनपद की सम्पूर्ण विधानसभा सीटों पर विजयी रही। किन्तु 1962, 1967 के महानिर्वाचन वर्ष में भरातीय राष्ट्रीय कांग्रेस को क्रमश : 6, 8 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। शेष सीटें क्रमशः जनसंघ को 1, पी.एस.पी. को 06 एस.एस.पी. 1962 में शून्य 1967 में 03 एवं निर्दलीय उम्मीदवारों को प्राप्त हुई। 1974 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को मात्र 3 सीटें मिली शेष क्रमशः जनसंघ को 01, कांग्रेस (सत्ता)–03, कांग्रेस (R)–1 एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 6 द स्थान प्राप्त हुए। 1977 के निर्वाचन वर्ष में विजयी पार्टी के रूप में जनता पार्टी बनी उसे जनपद की 14 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। 1980 एवं 1985 के महानिर्वाचन में कांग्रेस को क्रमशः 12 एवं 10 स्थान प्राप्त हुए जब कि 1980 में 2 स्थान जनता पार्टी (S) को मिला एवं 1985 में तीन स्थान लोकदल को एवं 1 स्थान जनता पार्टी को मिला। 1989 के निर्वाचन वर्ष में विजयी पार्टी के रूप में

कांग्रेस (R) एवं जनता दल हुए, उन्हें क्रमशः 5,5 स्थान प्राप्त हुआ। 1991 के निर्वाचन में जनता दल विजयी पार्टी के रूप में आयी 14 विधानसभा क्षेत्रों में से उसे 9 स्थान मिले जब कि भा.ज.पा. को 03, बहुजन समाज पार्टी को 01 एवं एक स्थान निर्दलीय को मिला।

4.2.1.3.2 पराजित (द्वितीय) दल का विवरण

प्रस्तुत भाग में निर्वाचन क्षेत्रों में द्वितीय दल विवरण मानचित्र 4.4.1 एवं 4.4.2 में प्रस्तुत किया गया है। मानचित्र के अनुसार विभिन्न दलों के विभिन्न वर्षों में निम्नानुसार क्षेत्र पाये गये हैं।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस या कांग्रेस (I) क्षेत्र—पराजित (द्वितीय दल) के रूप में कांग्रेस (I) या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1962 के चुनाव में आयी। 1962 में कांग्रेस का क्षेत्र मेजा, झूंसी, सोरांव, पश्चिम, इलाहाबाद शहर दक्षिणी, चायल, भरवारी, था। 1967 में कांग्रेस का क्षेत्र द्वितीय दल के रूप में निम्नानुसार था करछना, बहादुरपुर, हंडिया, सोरांव, इलाहाबाद दक्षिणी मंझनपुर। 1974 प्रतापपुर, इलाहाबाद दक्षिणी क्षेत्रों में कांग्रेस द्वितीय दल के रूप में विधमान थी। 1977 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस/कांग्रेस (I) करछना, बारा, झूंसी, हंडिया, प्रतापपुर सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी और पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू, क्षेत्रों में द्वितीय दल के रूप में विद्यमान थी। 1980 में इस स्थिति में परिवर्तन आया और कांग्रेस निम्न क्षेत्रों झूंसी, सोरांव में द्वितीय दल के रूप में विद्यमान रही। 1985 के निर्वाचन वर्ष में कांग्रेस (I) द्वितीय दल के रूप में निम्न क्षेत्रों में रही नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी) इलाहाबाद पश्चिमी।

निर्वाचन वर्ष 1989 में कांग्रेस इलाहाबाद दक्षिणी, सिराथू, करछना, इलाहाबाद उत्तरी, प्रतापपुर, मेजा, झूंसी, इलाहाबाद पश्चिमी क्षेत्रों में पराजित
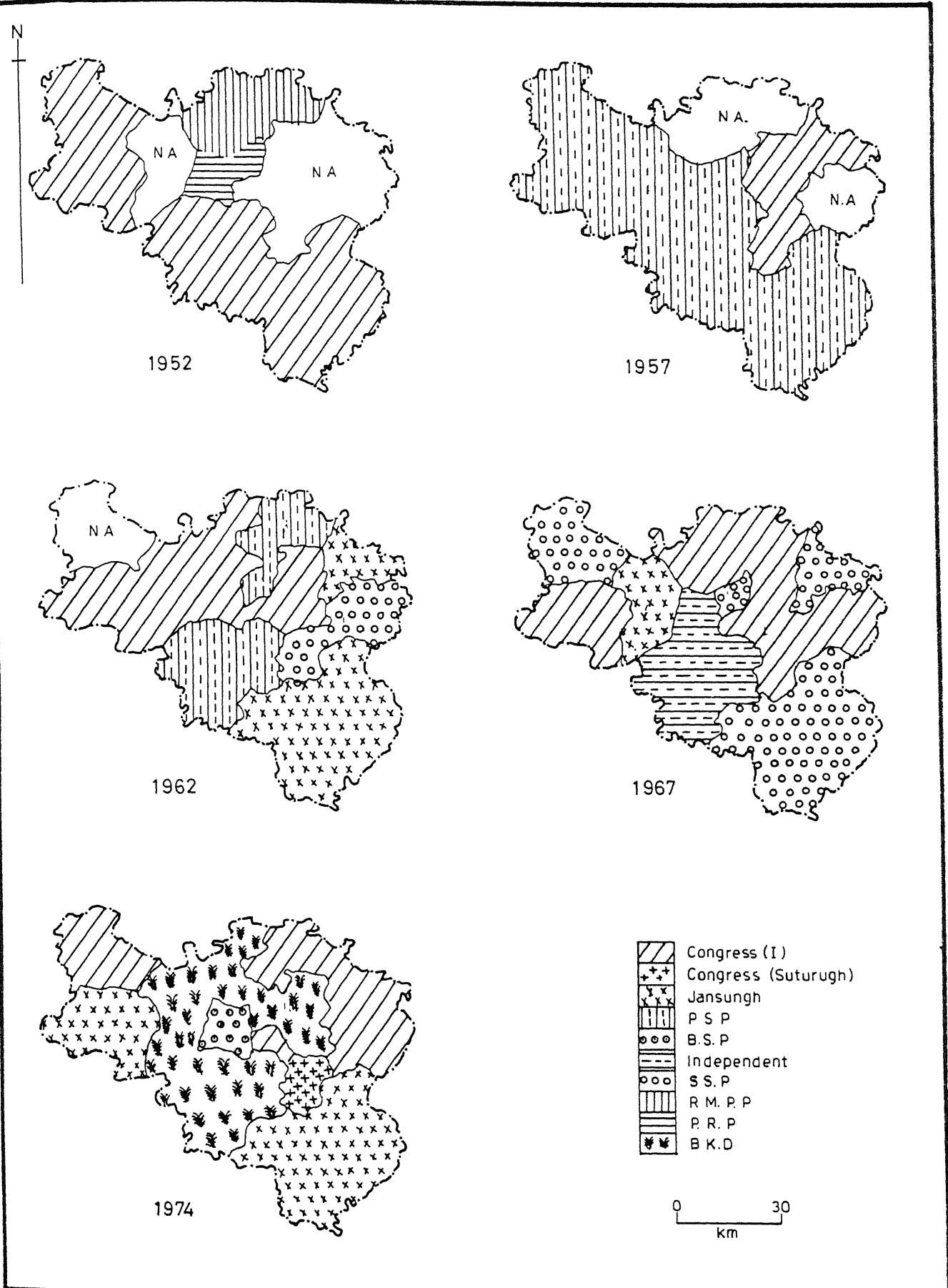
Fig. 4.4.1 Party Distribution 1952 to 1974 (Runner Parties) Vidhan Sabha
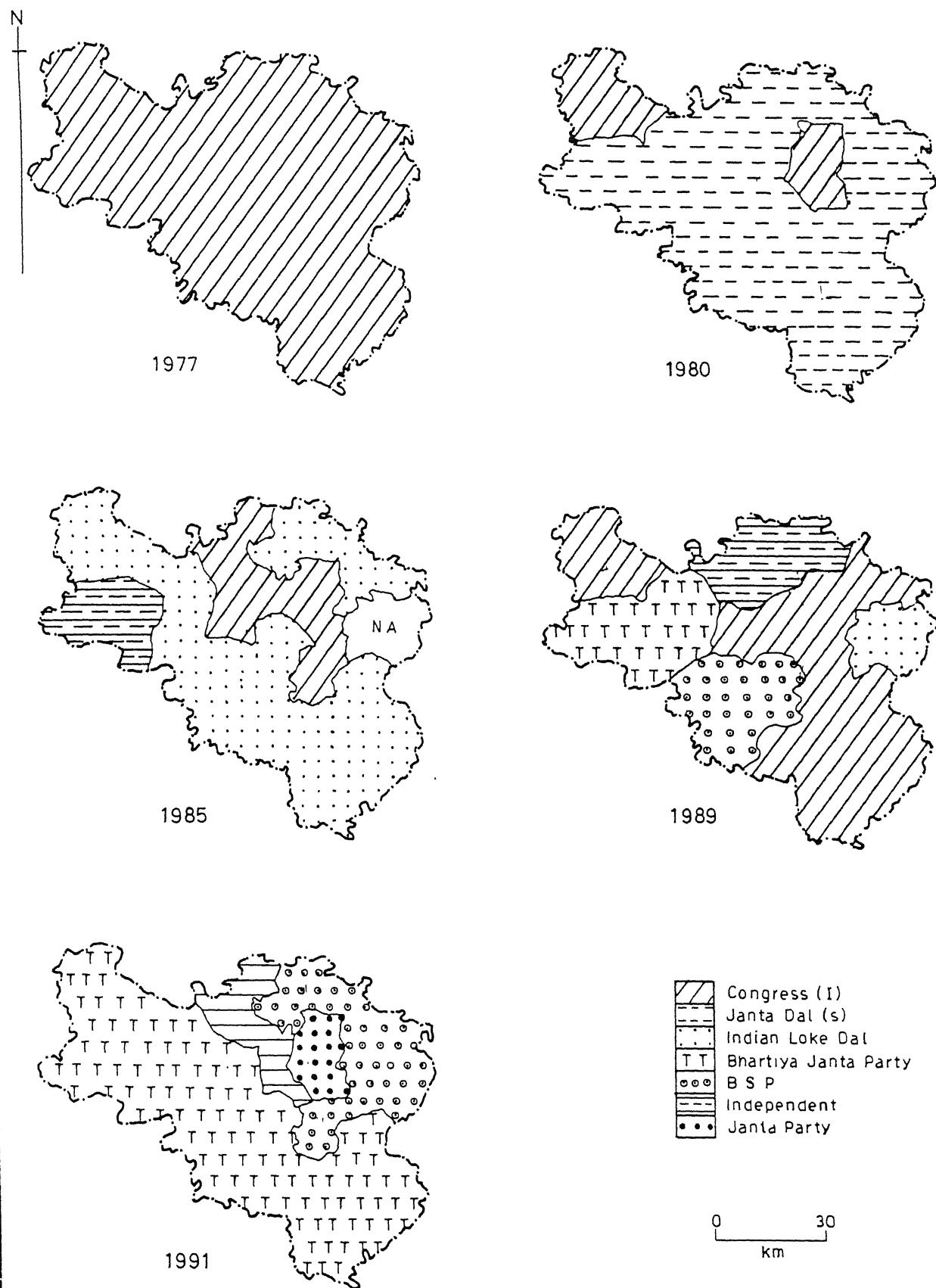
Fig. 4.4.2 Party Distribution 1977 to 1991 (Runner Party) Vidhan Sabha

(द्वितीय) दल के रूप विस्तृत थी। 1991 में कांग्रेस तृतीय एवं चतुर्थ दल के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में रही।

भा.जा.पा.—भारतीय जनतापार्टी निर्वाचन वर्ष 1991 में मात्र निम्न क्षेत्रों मेजा, बारा, इलाहाबाद, पश्चिमी, चायल, मंझनपुर सिराथू में पराजित (द्वितीय दल) के रूप में स्थित थी।

जनसंघ—जनसंघ पराजित (द्वितीय दल) के रूप 1962 में फूलपुर 1967 में चायल एवं 1974 में मेजा, मंझनपुर में द्वितीय दल के रूप में फैली थी।

पी.एस.पी.—पी.एस.पी. 1957 के निर्वाचन में निम्न क्षेत्रों मंझनपुर, चायल, इलाहाबाद शहर उत्तरी केवाई करछना मेजा में द्वितीय स्थान पर रही। 1962 में बारा सोरांव पूर्व, इलाहाबाद शहर उत्तरी में द्वितीय स्थार पर रही।

एस.एस.पी.—एस.एस.पी. इलाहाबाद विधानसभा में 1967 के निर्वाचन में मेजा, प्रतापपुर इलाहाबाद उत्तरी तथा सिराथू में द्वितीय स्थान पर रही।

जनता दल—जनता दल एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में 1989 के 24 अक्टूबर को प्रकाश में आयी। पराजित (द्वितीय दल) के रूप में 1989 में हंडिया विधान सभा क्षेत्र रही। 1991 के निर्वाचन में जनतादल नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी में द्वितीय स्थान पर रही।

भारतीय लोकदल—1974 में भारतीय लोकदल की स्थापना हुई। इसके बाद के निर्वाचन वर्षों में लोकदल निम्न क्षेत्रों में पराजित या द्वितीयदल के रूप में रही।

निर्वाचन वर्ष 1985 में मेजा, बारा, प्रतापपुर, चायल, सिराथू इलाहाबाद दक्षिणी, सोरांव। निर्वाचन वर्ष 1989 हंडिया में द्वितीय (पराजित) दल के रूप में रही।

बी.एस.पी.—बहुजन समाज पार्टी का विभिन्न निर्वाचन वर्षों में पराजित (द्वितीय दल) विवरण इस प्रकार है—

1991—करछना, हंडिया, सोरांव

1989—बारा,

जनता पार्टी एवं जनता पार्टी (S) : विभिन्न निर्वाचन वर्षों में ये दोनों पार्टियां निम्नानुसार द्वितीय (पराजित) दल के रूप में विद्यमान थी—

1991 झूँसी (JP) **1980**—मेजा, करछना, बारा, हण्डिया, प्रतापपुर, सोरावं नवाबगंज, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी चायल, मंझनपुर।

जे.पी.एस.—उपरोक्त राजनीतिक दलों के अलावा अन्य छोटे दल एवं निर्दलीय उम्मीदवार भी पराजित दल या उम्मीदवार के रूप में विभिन्न वर्षों में रहे हैं। जो इस प्रकार है—

1952 के निर्वाचन में के0एम0पी0पी0—सोरांव उत्तरी और फूलपुर तथा R.R.P. सोरांव दक्षिणी में पराजित दल के रूप में थी। 1962 के निर्वाचन में सोसलिस्ट केवाई विधानसभा क्षेत्र में द्वितीय स्थान पर थी। 1967 में स्वतन्त्र उम्मीदवार कौरिहार, इलाहाबाद विधानसभा क्षेत्र में द्वितीय स्थान पर थे।

1974 के निर्वाचन में कांग्रेस सत्तारूढ़ करछना, विधानसभा क्षेत्र में द्वितीय स्थान पर थी जबकि बारा, झूंसी, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, चायल विधानसभा क्षेत्रों में भारतीय क्रान्तिदल द्वितीय दल के रूप में रही। 1985 के निर्वाचन में मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र एवं 1987 में सोरांव, नवाबगंज विधानसभा क्षेत्र में स्वतन्त्र उम्मीदवार पराजित दल के रूप में थे।

4.3 लोक सभा दल प्रतियोगिता विश्लेषण : प्रस्तुत अध्याय के इस अनुभाग में 1952 से 1991 के निर्वाचन वर्षों में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा विजयी दल एवं पराजित (द्वितीय) दल के मध्य प्रतियोगिता के स्तर का निर्धारण किया गया है। मानचित्र 4.5.1 से 4.5.2 में विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रतियोगिता के स्तर के निर्धारण में विजयीदल एवं पराजित दल के बीच प्राप्त वैध मत प्रतिशत अन्तराल प्रदर्शित किया गया है। दल प्रतियोगिता को पांच भागों में बाँटा गया है जो इस प्रकार है–(I) उच्चतम दल 45 (II) उच्च दल 30–45 (III) मध्यमदल 15–30 (IV) निम्न दल 5–15 (V) निम्नतम दल 0–5

उच्चतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र : 45 प्रतिशत से अधिक प्रतियोगिता मूलक क्षेत्रों को इसमे सम्मिलित किया गया है। इलाहाबाद जनपद के एक ही निर्वाचन वर्ष में उच्चतम प्रतियोगिता क्षेत्र पाया गया। जिसमें निर्वाचन वर्ष 1977 में चायल लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

उच्च दल प्रतियोगिता क्षेत्र : इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद में निर्वाचन 1952–57 में कोई क्षेत्र सम्मिलित नही है। 1962 में फूलपुर, 1971 में इलाहाबाद, 1977 फूलपुर, 1985 इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र सम्मिलित हैं। निर्वाचन वर्ष 1967, 1980, 1989, 1991 में कोई संसदीय क्षेत्र उच्चदल प्रतियोगिता मूलक नही था। तीनों क्षेत्र 30–45 प्रतिशत के मध्य प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र हैं।

मध्यमदल प्रतियोगिता क्षेत्र–इसके अन्तर्गत उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जो क्षेत्र 15 प्रतिशत से 30 प्रतिशत प्रतियोगिता मूलक हैं। मानचित्रानुसार इसमें निम्नलिखित क्षेत्र आते हैं। 1952 एवं 1957 इलाहाबाद जिला पश्चिम संसदीय क्षेत्र इलाहाबाद जिला (इस्ट कम जोनपुर) संसदीय क्षेत्र सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1962 में इलाहाबाद एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र,
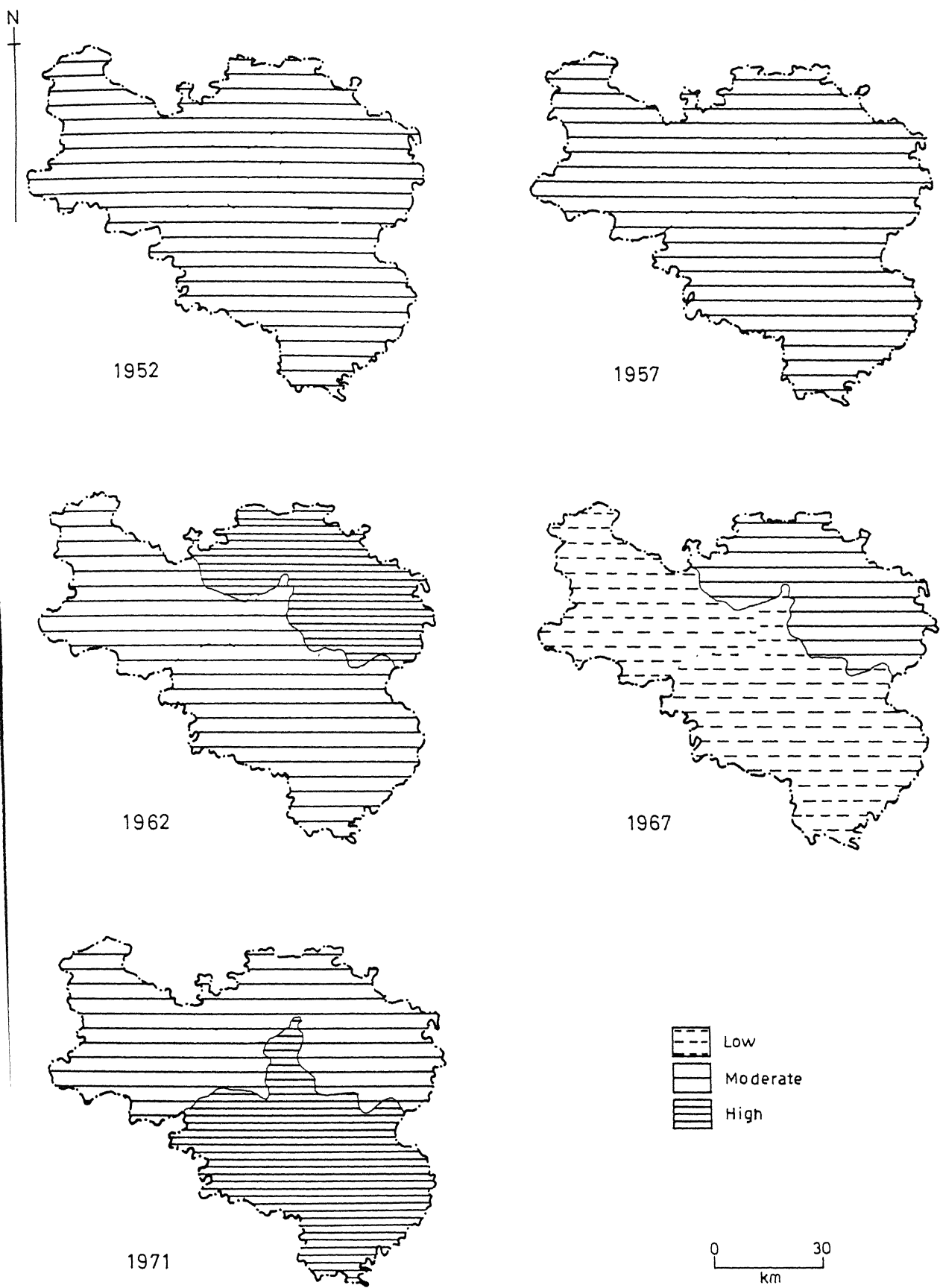
Fig. 4.5.1 Competitiveness 1952 to 1971 (Loke Sabha Constituency)
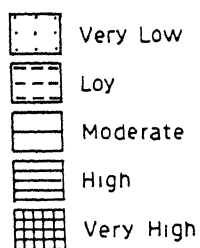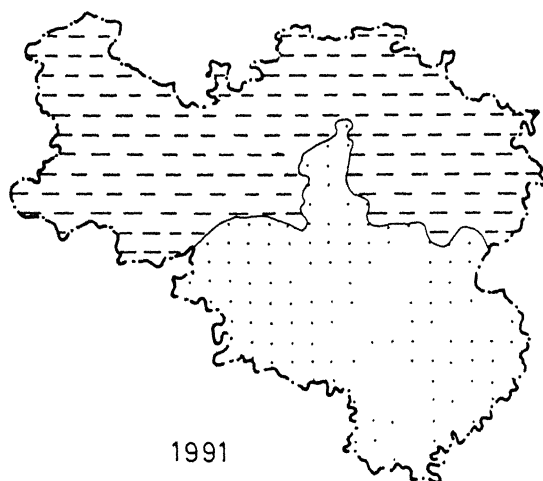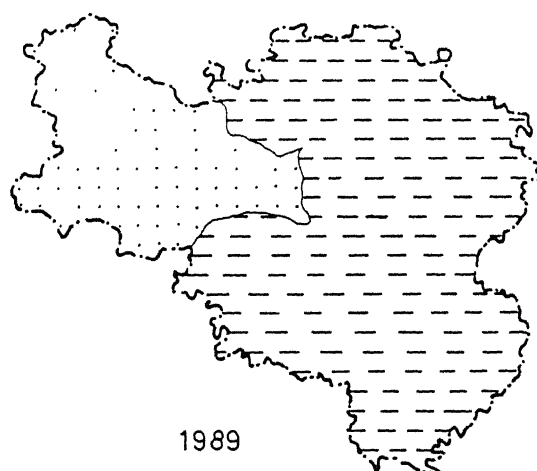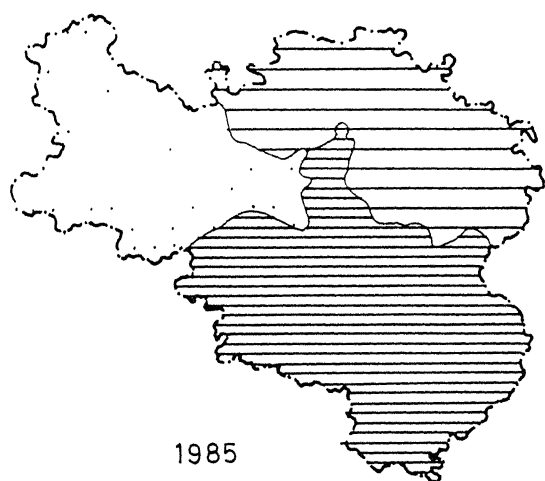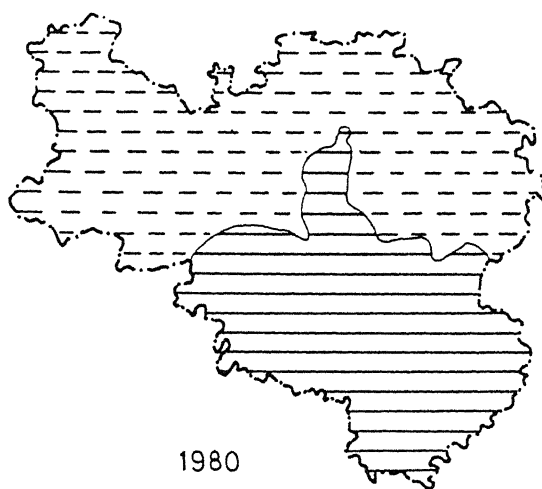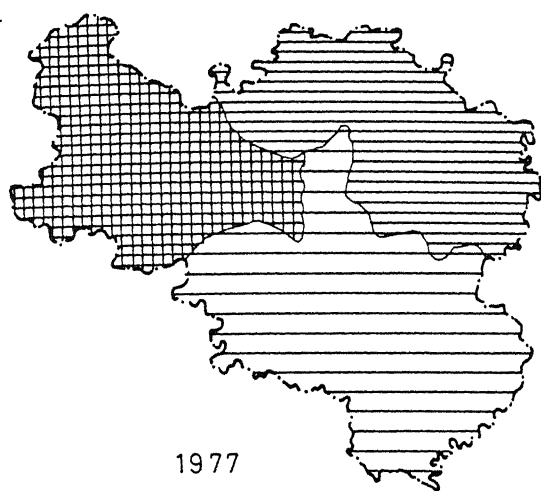
Fig. 4.5.2 Competitiveness 1977 to 1991 (Loke Sabha Constituency)

निर्वाचन वर्ष 1967 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र, निर्वाचन वर्ष 1971 में चायल एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र निर्वाचन वर्ष 1977 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र, निर्वाचन वर्ष 1980 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र, 1985 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र सम्मिलित है। 1989 एवं 1991 के निर्वाचन वर्षों में इसके अन्तर्गत कोई क्षेत्र नही आता है।

निम्नदल प्रतियोगिता क्षेत्र : निम्नदल प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न निर्वाचन वर्षों में निम्नक्षेत्र सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1952 से 1962 तक इसके अन्तर्गत कोई क्षेत्र सम्मिलित नहीं है। निर्वाचन वर्ष 1967 में इलाहाबाद एवं चायल संसदीय क्षेत्र, 1980 में चायल, फूलपुर निर्वाचन क्षेत्र; 1989 फूलपुर, इलाहाबाद क्षेत्र एवं 1991 में चायल, फूलपुर संसदीय क्षेत्र इसके अन्तर्गत सम्मिलित है। 5 प्रतिशत से 15 प्रतिशत के प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

निम्नतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र – इसके अन्तर्गत 0–5 प्रतिशत प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। निर्वाचन वर्ष 1952 से 1980 तक इसके अन्तर्गत कोई क्षेत्र सम्मिलित नहीं है क्योंकि उस समय तक प्रतियोगिता में मतदाताओं ने स्पष्ट जनाधार दिया। किन्तु 1980 के बाद राजनैतिक़ माहौल बदला जनमत भ्रमित हुआ। तथा निम्नतम दल क्षेत्र विकसित हुए। इसक`अन्तर्गत 1985 में चायल; 1989 में चायल और 1991 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र सम्मिलित है।

4.4 विधानसभा दल प्रतियोगिता विश्लेषण

प्रस्तुत अनुभाग में निर्वाचन वर्ष 1952 से 1991 तक विभिन्न विधान सभा क्षेत्रों की दलीय प्रतियोगिता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। मानचित्र 4.6.1 एवं 4.6.2 के अनुसार दल प्रतियोगिता निम्नप्रकार है–

1) उच्चतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र– इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जिले के विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं जिसका प्रतियोगिता मूलक प्रतिशत 45 प्रतिशत से ऊपर है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1952 में सोरांव उत्तरी (फूलपुर); फूलपुर दक्षिणी, हंडिया दक्षिणी इलाहाबाद शहर पूर्व, इलाहाबाद शहर मध्य, चायल उत्तरी विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है। 1957 निर्वाचन वर्ष में फूलपुर दक्षिणी एवं फूलपुर पूर्व हंडिया उत्तर सोरांव पूर्व विधान सभा क्षेत्र आते हैं निर्वाचन वर्ष 1962 में हण्डिया, निर्वाचन वर्ष 1980 में सिराथू, 1985 में इलाहाबाद उत्तरी क्षेत्र उच्चतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र है। 1967, 77, 89, 91 के निर्वाचन में कोई क्षेत्र इस वर्ग में नहीं आता है।

उच्चदल प्रतियोगिता क्षेत्र–30 से 45 प्रतिशत के बीच प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र इसमें सम्मिलित हैं इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1952 में सोरांव दक्षिणी 1957 में सिराथू एवं मंझनपुर, 1962 में सोरांव, नवाबगंज, सिराथू, 1967 में बार, चायल, 1974 में करछना बारा, 1977 में इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी 1985 में मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित थे। 1991 में मेजा ।

मध्यमदल प्रतियोगिता क्षेत्र : मध्यम दल प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र के अन्तर्गत 15 से 30 प्रतिशत के बीच वाले विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद में निर्वाचन वर्ष 1952 में कोई विधानसभा क्षेत्र नहीं आता जबकि 1957 में मात्र एक विधानसभा करछना आती है। 1962 के निर्वाचन वर्ष में मेजा, इलाहाबाद (उत्तरी) चायल; 1967 में मेजा 1974 में सोरांव, इलाहाबाद दक्षिणी, वर्ष 1977 में करछना, सोरांव, इलाहबाद उत्तरी, मंझनपुर 1980 में मेजा, इलाहाबाद दक्षिणी, मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र 1985 में मेजा; हण्डिया, इलाहाबाद दक्षिणी, चायल क्षेत्र वर्ष 1989 में मेजा, हण्डिया, प्रतापपुर सोरांव, इलाहाबाद उत्री, चायल, मंझनपुर, सिराथू, 1991 के निर्वाचन में करछना,
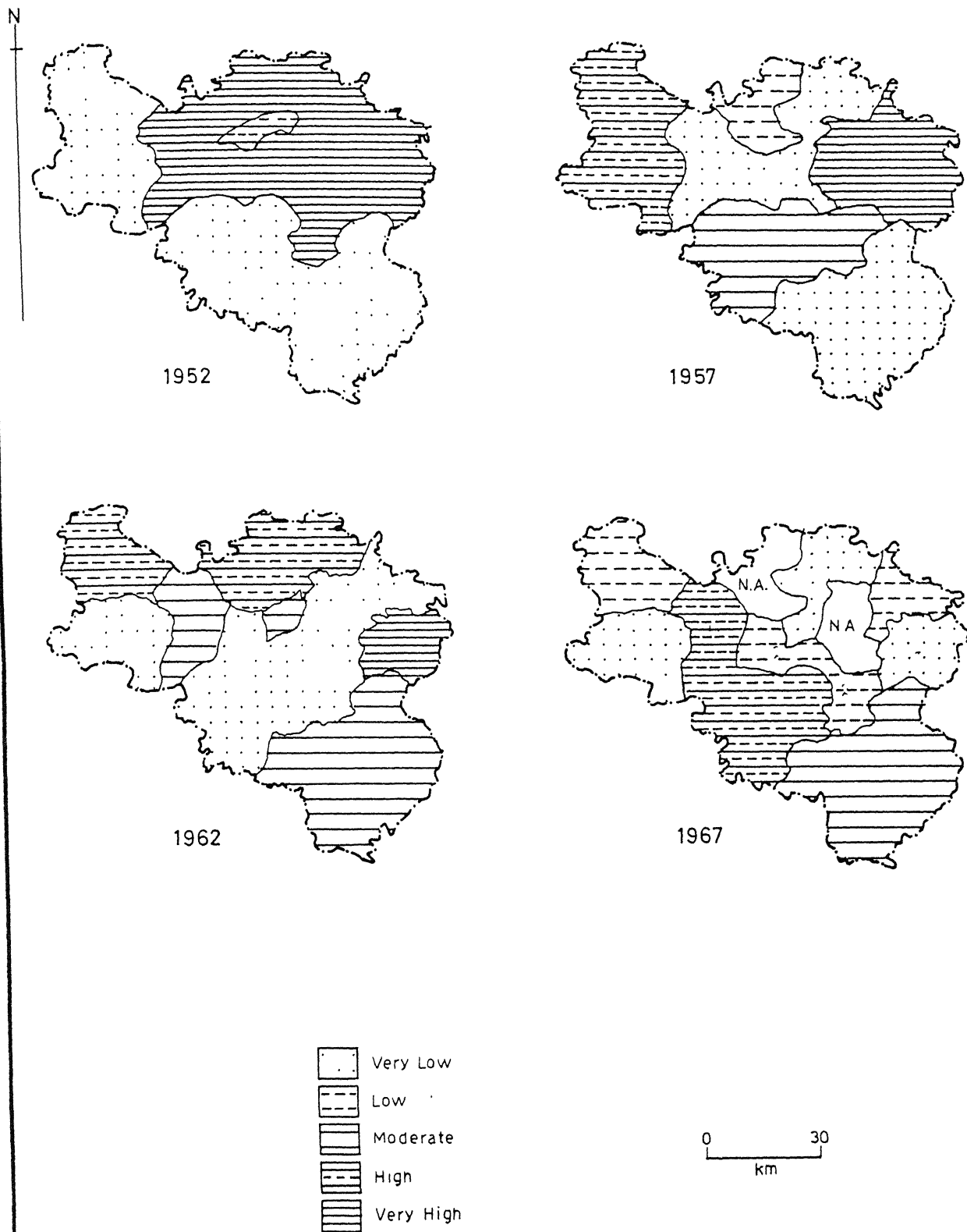
Fig. 4.6.1 Competitiveness 1952 to 1967 Vidhan Sabha Assembly
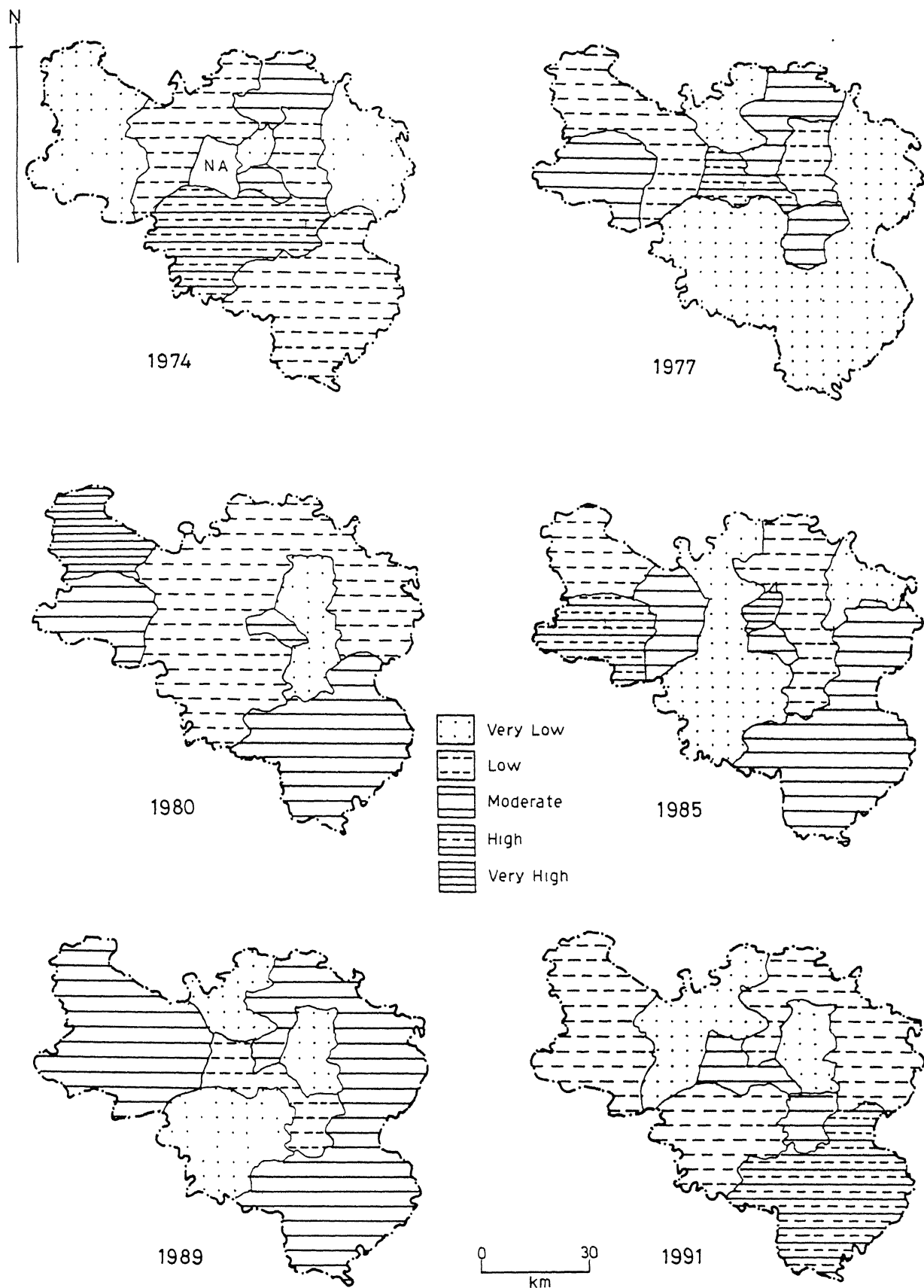
Fig.4.6.2 Competitiveness 1974 to 1991 (Vidhan Sabha Assembly)

इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद पश्चिमी मध्यमदल प्रतियोगिता क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

निम्नदल प्रतियोगिता क्षेत्र : इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1957 के सोरांव उत्तरी एवं फूलपुर, 1967 में करछना प्रतापपुर, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी; सिराथू 1974 में मेजा, झूंसी, नवाबगंज, चायल, 1977 में झूंसी, चायल, सिराथू 1980 में बारा हण्डिया; प्रतापपुर, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, 1985 में करछना, झूंसी, सोरांव, सिराथू; 1989 में करछना, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी 1991 में–बारा, हण्डिया, प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद उत्तरी, मंझनपुर, सिराथू सम्मिलित है। 1952, 62 के निर्वाचन वर्ष में कोई विधानसभा क्षेत्र निम्न प्रतियोगिता मूलक क्षेत्र नहीं था। इसमें 5 प्रतिशत से 15 प्रतिशत अन्तराल वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

निम्नतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र : 0 प्रतिशत से 0.5 प्रतिशत वोटों के अन्तरवाले विधानसभा क्षेत्रों को इसके सम्मिलित किया गया इस आधार पर निम्नतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र में निम्न क्षेत्र आते हैं। 1952 में मेजा एवं करछना दक्षिणी; करछना उत्तरी एवं चायल दक्षिणी; सिराथू एवं मंझनपुर; 1957 में मंझनपुर; चायल; इलाहाबाद शहर दक्षिणी, फूलपुर मेजा। 1962 के निर्वाचन वर्ष में करछना, बारा झूंसी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा क्षेत्र इसके अन्तर्गत आते। 1967 में हण्डिया, सोरांव इलाहाबाद उत्तरी, मंझनपुर क्षेत्रों में निम्नतम प्रतियोगिता थी। वर्ष 1974 में हण्डिया प्रतापपुर, इलाहाबाद (उत्तरी) मंझनपुर, सिराथू; 1977 में मेजा, बारा, हण्डिया, प्रतापपुर, नवाबगंज, वर्ष 1980 में करछना, झूंसी 1985 में बारा, प्रतापपुर, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी; 1989 में
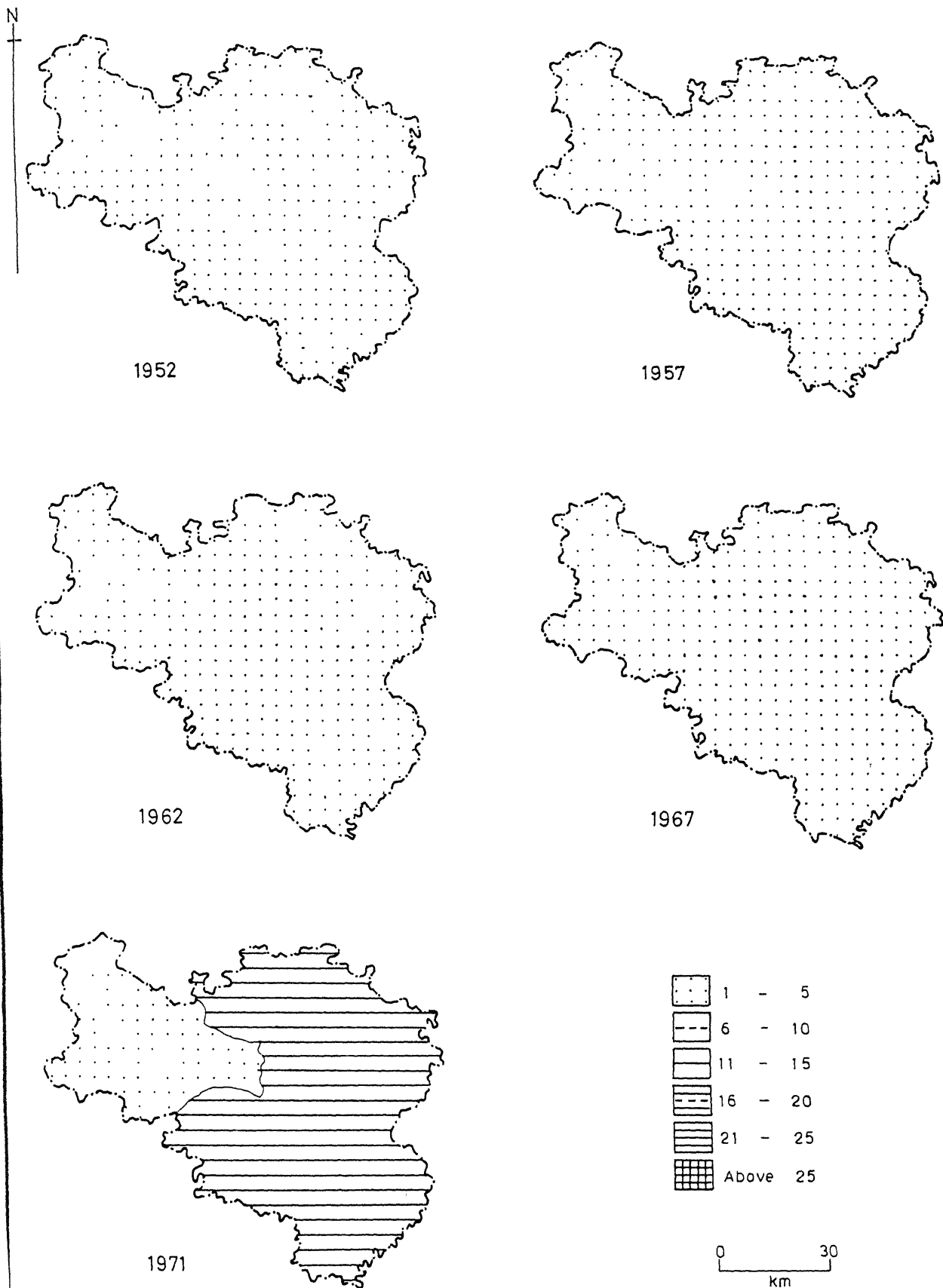
Fig. 4.7.1. Contest Intensity 1952 to 1971 (Loke Sabha)
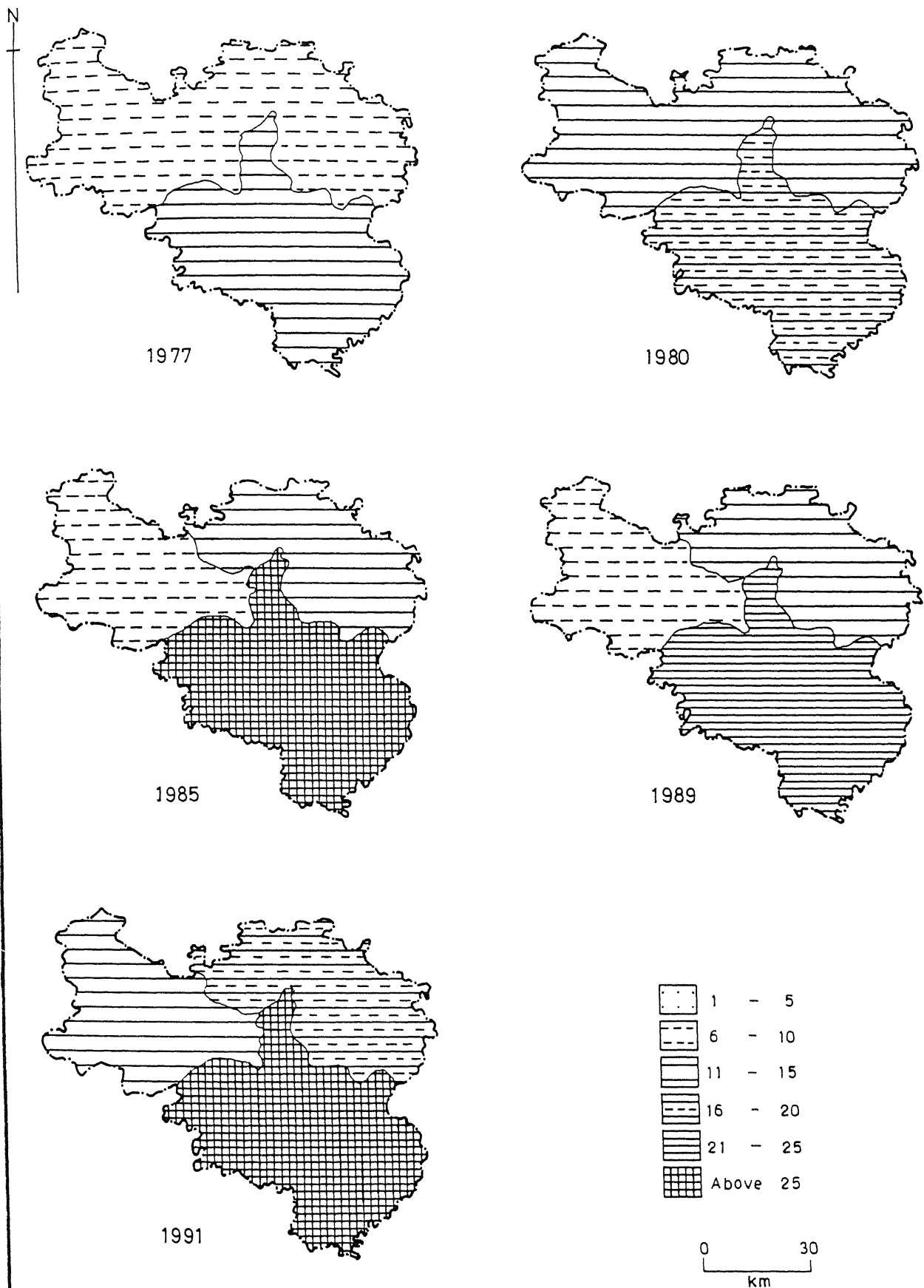
Fig. 4.7.2 Contest Intensity 1977 to 1991 (Loke Sabha)

बारा, झूंसी, नवाबगंज, वर्ष 1991 में झूंसी, चायल नवाबगंज क्षेत्र निम्नतम दल प्रतियोगिता क्षेत्र है।

4.5 प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता

प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता प्रति सीट उम्मीदवारों की संख्या के आधार पर निश्चित होती है। यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र में उम्मीदवारों की संख्या आधिक है, तो वहाँ प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता कम होगी। किन्तु यदि उम्मीदवारों की संख्या कम है तो वहाँ पर प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता अधिक होगी। इलाहाबाद जिले के 1952 से 1991 तक सम्पन्न लोकसभा निर्वाचन में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता मानचित्र 4.7 एवं 407A में प्रस्तुत किया गया हे।

4.5.1 लोकसभा प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता—तालिका 4.5 में प्रतिसीट प्रतियोगियों की भागीदारी का प्रतिशत प्रदर्शित किया गया है। तालिका 4.5 से स्पष्ट है कि इलाहाबाद के लोकसभा चुनाव में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता विभिन्न वर्षों में भिन्न—भिन्न रही है। निर्वाचन वर्ष 1952, 1957, 67 प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता बहुत अधिक भी क्योंकि किसी भी निर्वाचन क्षेत्र में 5 से अधिक उम्मीदवार नही थे। प्रति सीट 1—5 प्रतियोगी वाले क्षेत्र 1952 से 1967 तक 100 प्रतिशत था। 1967 के बाद 1971 के लोकसभा निर्वाचन में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता में परिवर्तन हुआ। प्रतिसीट 1 से 5 उम्मीदवार अब 33.33 प्रतिशत सीटों पर रहे जबकि 6—10 उम्मीदवार किसी भी क्षेत्र में नही थे;

तालिका—4.5

प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता (लोकसभा) इलाहाबाद जनपद (1952—91)

प्रति सीट उम्मीदवारों की संख्या	कुल सीटों का प्रतिशत वर्ष									
	1952	1957	1962	1967	1971	1977	1980	1985	1989	1991
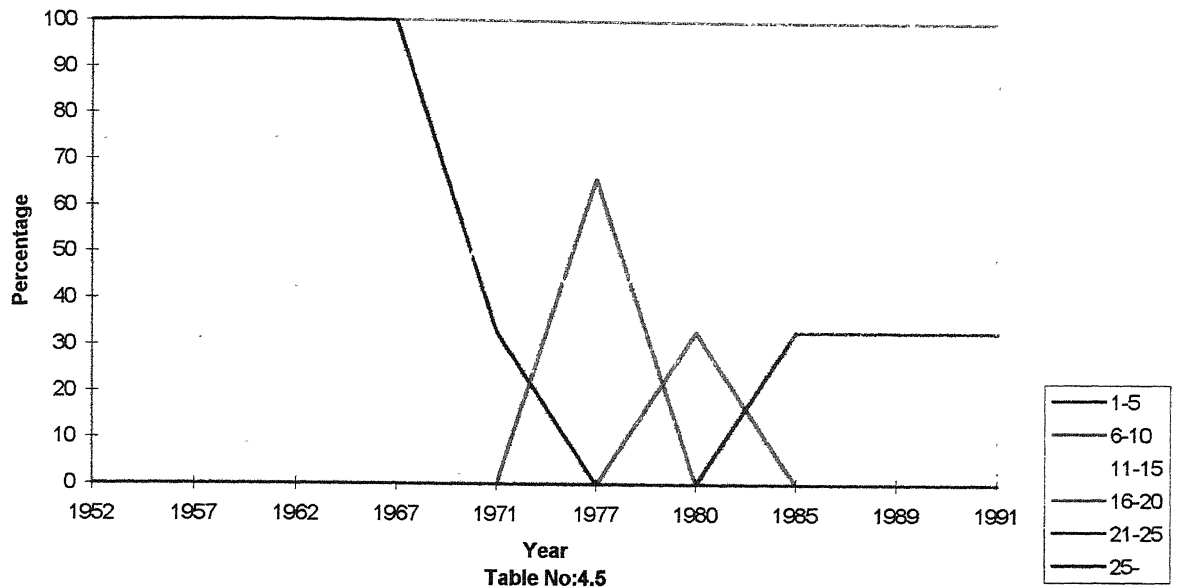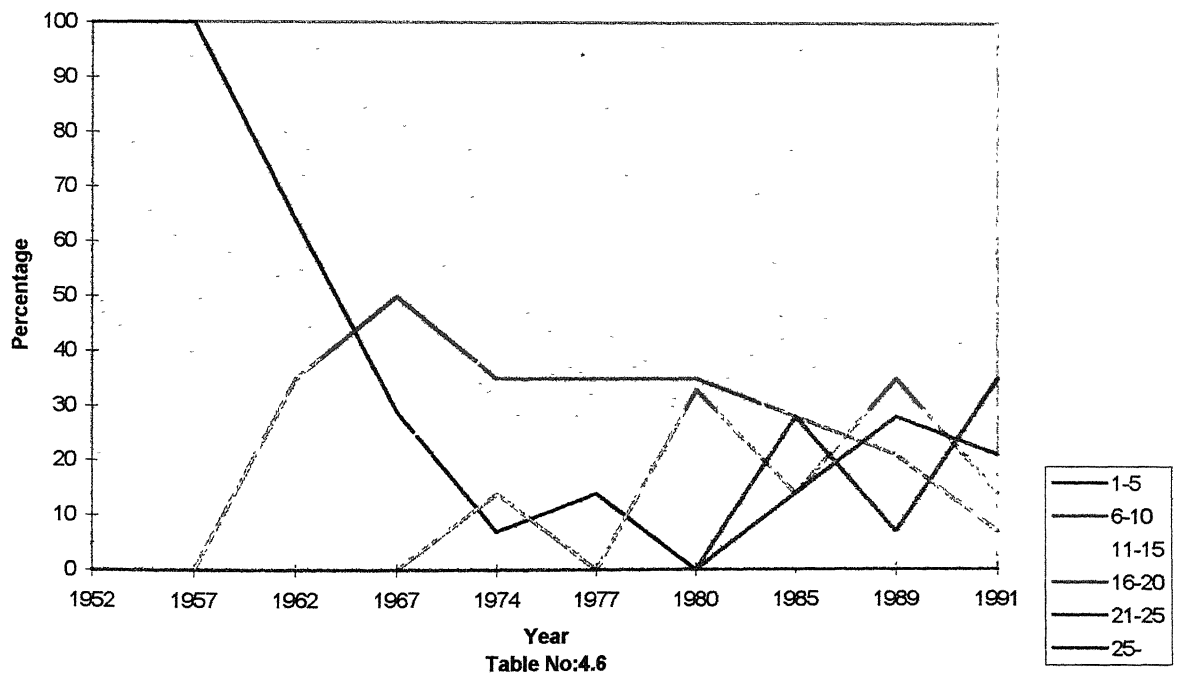
1—5	100%	100%	100%	100%	33 33	NIL	NIL	—	—	—
6—10	—	—	—	—	—	66 67	NIL	33 33	33 33	—
11—15	—	—	—	—	66.67	33.33	66.67	33.33	33 33	66.67
16—20	—	—	—	—	—	—	33.33	—	—	—
21—25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
25 से ऊपर	—	—	—	—	—	—	—	33.33	33.33	33 33

प्रतिसीट 11 से 15 प्रतियोगियों वाले क्षेत्र 66.67 प्रतिशत सीटों में रहा अर्थात् प्रगाढ़ता कम हुई। वर्ष 1977 में प्रगाढ़ता मध्यम थी क्योंकि प्रतिसीट 6—10 उम्मीदवारों की संख्या 66.67 प्रतिशत क्षेत्र में रही। जबकि 11 से 15 उम्मीदवार 33—33 प्रतिशत क्षेत्रों में रहे। 1980 के निर्वाचन में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता 1971 की अपेक्षा कम थी क्योंकि उम्मीदवारों की संख्या बढ़ गयी। 66.67 प्रतिशत सीटों में प्रतिसीट उम्मीदवारों की संख्या 11 से 15 थी तथा 33.33 प्रतिशत सीटों पर उम्मीदवरों की संख्या 16 से 20 थी। तालिका से स्पष्ट है कि 1985 एवं 1989 में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता समान थी दोनो वर्षों में 33—33 प्रतिशत सीटों पर प्रतियोगियों कि संख्या क्रमशः 6 से 10, 11 से 15 एवं 25 से ऊपर थी। 1952 से 1991 के निर्वाचन में सबसे कम प्रगाढ़ता 1991 के निर्वाचन में थी अर्थात् 1991 के निर्वाचन में प्रतिसीट उम्मीदवारों की संख्या सर्वाधिक थी। तालिका 4.5 से स्पष्ट है कि 1991 में 66.67 प्रतिशत सीटों पर उम्मीदवारों की प्रतिसीट संख्या 11 से 15 रही तथा 33.33 प्रतिशत सीटों पर उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 25 से ऊपर रही।
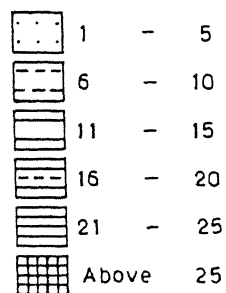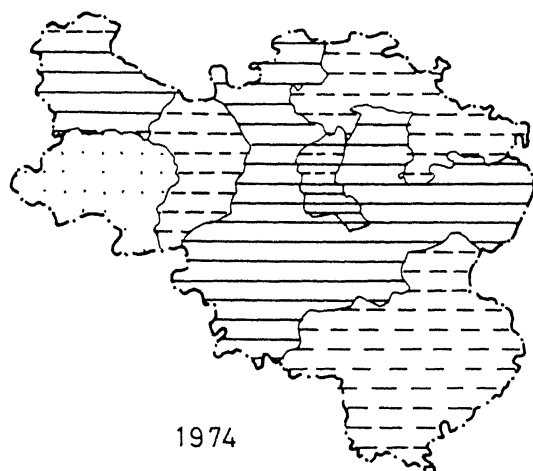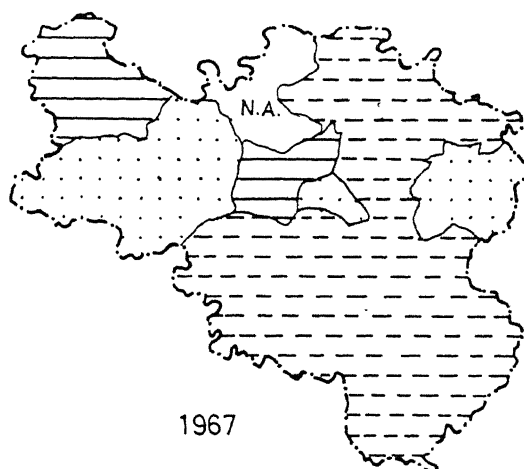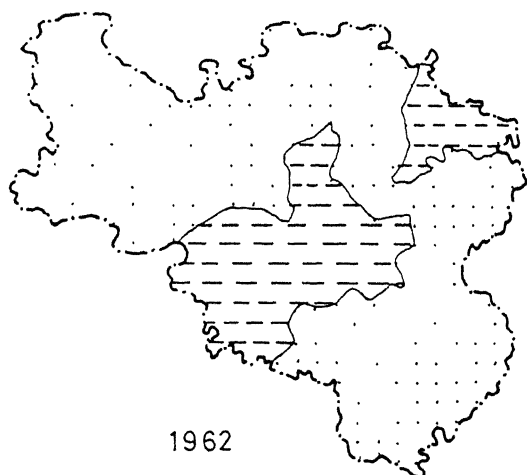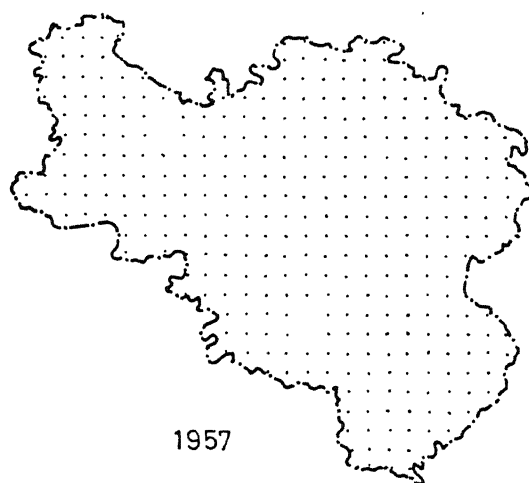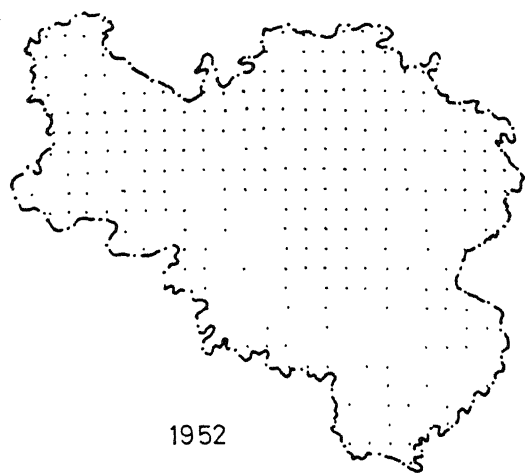
Fig.4.8.1 Contest Intensity 1952 to 1974 (Vidhan Sabha)
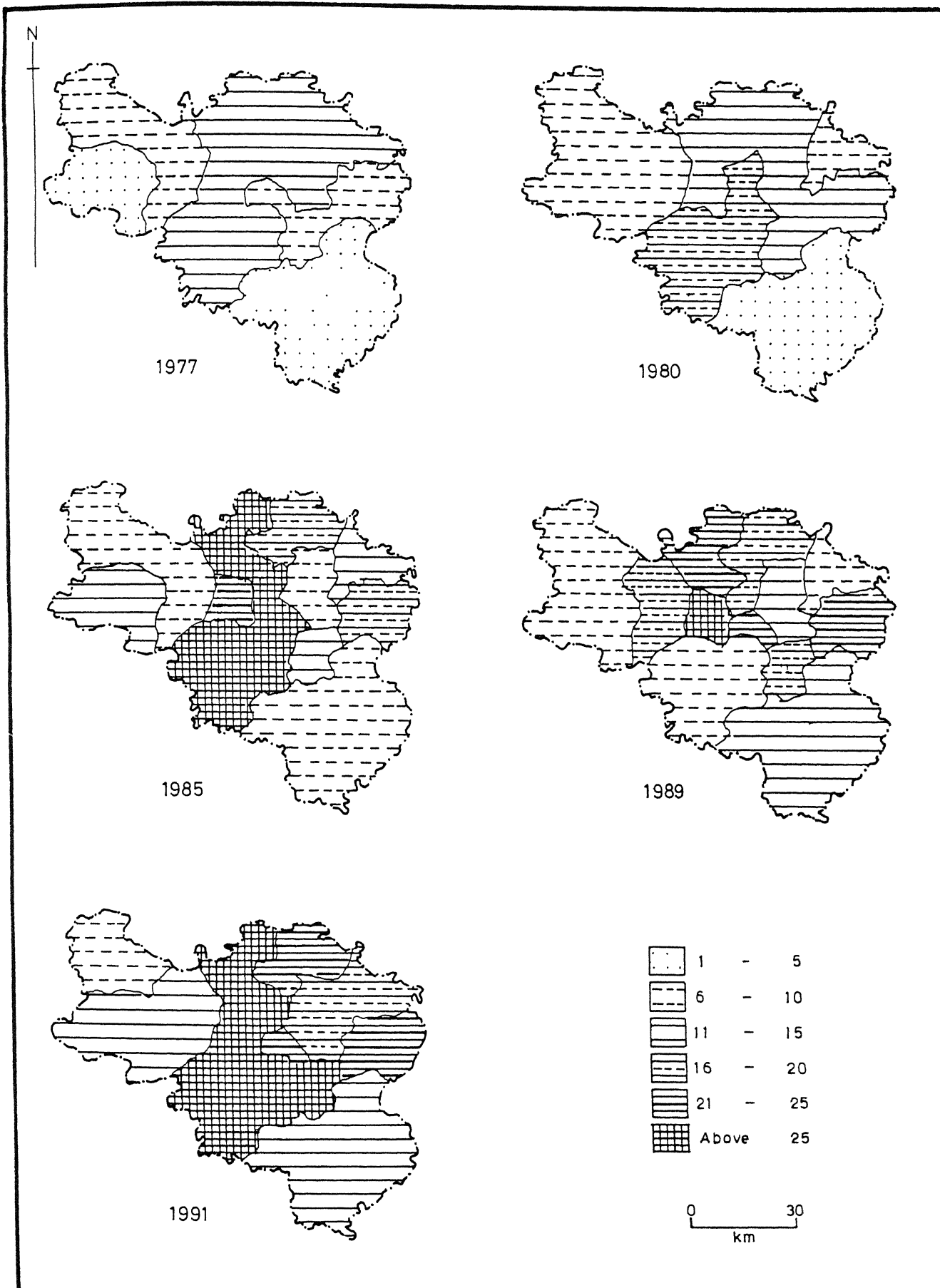
Fig. 4.8.2 Contest Intensity 1977 to 1991 (Vidhan Sabha)

4.5.2 विधानसभा प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता

इलाहाबाद जिले में विधानसभा प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता लोकसभा से भिन्न है। मानचित्र 4.8.1 एवं 4.8.2 में विधानसभा प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता प्रदर्शित की गयी है। तालिका 4.6 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक प्रगाढ़ता 1952 एवं 1957 में थी जब कि सबसे कम प्रगाढ़ता 1985 से 1991 तक रही। जिसमें वर्ष 1991 के निर्वाचन की प्रगाढ़ता सबसे कम रही। तालिका 4.6 के अनुसार विभिन्न वर्षों में प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता इस प्रकार रही।

निर्वाचन वर्ष 1952, 1957 में 100 प्रतिशत सीटों पर उम्मीदवारों की संख्या 1 से 5 के बीच रही। 1962 में 64.29 प्रतिशत सीटों पर प्रतिसीट 1 से 5 उम्मीदवार रहे जबकि 35.71 प्रतिशत सीटों पर प्रतिसीट उम्मीदवारों की संख्या 6 से 10 थी। 1967 के निर्वाचन में उम्मीदवारों की संख्या में वृद्धि हुई 50 प्रतिशत सीटों पर 6 से 10 उम्मीदवार थे जबकि 28.57 प्रतिशत सीटो पर प्रतिसीट 1 से 5 उम्मीदवार थे। 21.43 प्रतिशत सीटों पर 11 से 15 उम्मीदवार थे। 1974 में प्रगाढ़ता और कम हुई क्योंकि 42.86 प्रतिशत सीटों पर प्रतिसीट 11 से 15 उम्मीदवार थे एवं 14.28 प्रतिशत सीटों पर 16–20 उमेदवार थे। 35.71 प्रतिशत सीटों पर 6 से 10 उम्मीदवार प्रतिसीट मात्र 7.14 प्रतिशत सीट में प्रगाढ़ता अधिक रही अर्थात् उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 1 से 5 थी। वर्ष 1977 के निर्वाचन में प्रगाढ़ता इस प्रकार रही 64.25 प्रतिशत सीटों पर 11 से 15 उम्मीदवार प्रतिसीट, 35.71 प्रतिशत सीटों पर 6–10 प्रतिसीट उम्मीदवार एवं 14. 29 प्रतिशत सीटों पर 1 से 5 प्रतिसीट उम्मीदवार थे। 1980 में 1977 से कम प्रगाढ़ता थी। 64.29 प्रतिशत सीटों पर 11 से 15 उम्मीदवार 35.71 प्रतिशत सीटों पर 6 से 10 प्रतिसीट उम्मीदवार थे। वर्ष 1985 में प्रगाढ़ता में काफी

तालिका–4.6

प्रतियोगियों की प्रगाढ़ता (विधानसभा) इलाहाबाद जनपद (1952–91)

	कुल सीटों का प्रतिशत वर्ष									
प्रति सीट उम्मीदवारों की संख्या	1952	1957	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1–5	100%	100%	64.29	28.57	7.14	14.29	-	-	-	-
6–10	-	-	35.71	50.00	35 71	35.71	35.71	28.58	21.43	7.14
11–15	-	-	-	21.43	42.86	64.29	64.29	14.28	21.43	21.43
16–20	-	-	-	-	14.28	-	-	14.28	35.72	14.28
21–25	-	-	-	-	-	-	-	14.28	28.58	21.43
25 से ऊपर	-	-	-	-	-	-	-	28.58	7.14	35.72

परिवर्तन हुआ जो 1991 के निर्वाचन तक हावी रहा। वर्ष 1985 में 28.58 प्रतिशत सीटों पर उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 25 से अधिक रही। 14.28 प्रतिशत क्षेत्रों पर क्रमशः 11 से 15, 16–20, 21–25 प्रतिसीट उम्मीदवार थे। 28.58 प्रतिशत सीट में उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 6 से 10 रही। निर्वाचन 1989 में प्रगाढ़ता इस प्रकार रही 21.43 प्रतिशत क्षेत्र पर उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 6 से 10; पुनः 21.43 प्रतिशत क्षेत्र में उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 11–15; 35.72 प्रतिशत क्षेत्र पर उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 16 से 20 रही। 28.58 प्रतिशत क्षेत्र में उम्मीदवारों की संख्या प्रतिसीट 21–25 रही एवं 7.14 प्रति0 क्षेत्र पर उम्मीदवारों की संख्या 25 से प्रतिसीट अधिक थी। वर्ष 1991 के निर्वाचन में प्रगाढ़ता अत्यल्प रही, क्योंकि 35.72 प्रतिशत क्षेत्र पर उम्मीदवारों की संख्या 25

से ऊपर थी। 21.43 प्रतिशत क्षेत्र पर 21 से 25 उम्मीदवार प्रतिसीट; 14.28 प्रतिशत क्षेत्र पर 16 से 20 उम्मीदवार प्रतिसीट एवं पुनः 21.43 प्रतिशत क्षेत्र पर 11 से 15 उम्मीदवार प्रतिसीट थे। इस निर्वाचन में 7.14 प्रतिशत क्षेत्र पर 6–10 उम्मीदवार प्रतिसीट थे।

लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि चुनावों में प्रगाढ़ता लगभग हर वर्ष घटती जा रही है क्योंकि 1952, 62, 67 में सबसे अधिक प्रगाढ़ता एवं 1991 में सबसे कम प्रगाढ़ता है।

4.6 आरक्षित एवं सामान्य सीट

भारतीय संविधान में प्रारम्भ से ही लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन में आरक्षित सीटों की व्यवस्था का प्रावधान था। प्रस्तुत अध्याय में इलाहाबाद जनपद की लोकसभा एवं विधानसभा सीटों में आरक्षित एवं सामान्य सीटों का विवेचन किया गया है। आरक्षित एवं सामान्य सीटों पर विभिन्न दलों द्वारा प्राप्त सीटों का विवेचन 1952–91 तक समेकित रूप से प्रतिशत में प्रस्तुत किया गया है।

4.6.1–लोकसभा आरक्षित एवं सामान्य सीट

तालिका क्रमांक 4.7 में 1952 से 1991 तक लोकसभा चुनाव में इलाहाबाद जनपद में आरक्षित सीट का विवरण दल अनुसार प्रस्तुत किया गया है। शेष सीटें सामान्य के अन्तर्गत समाहित हैं। 1952 से 1991 तक के निर्वाचन में आरक्षित सीटों में 62.50 प्रतिशत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस/कांग्रेस (I) ने अकेले प्राप्त किया। जबकि कांग्रेस (J) एवं भारतीय लोकदल ने क्रमशः 12.50 प्रतिशत सीटें प्राप्त की। जनता दल ने 12.00 प्रतिशत आरक्षित सीटें प्राप्त की। अर्थात् कुल आरक्षित सीटों का आधे से अधिकांश भाग कांग्रेस (I) ने अकेले प्राप्त किया

तालिका– 4.7

लोकसभा आरक्षित सीट : इलाहाबाद जनपद–1952–1991

क्रमांक	दलों का नाम	प्राप्त सीटों में आरक्षित सीटों का प्रतिशत	आरक्षित सीटों का प्रतिशत (कुल आरक्षित सींटों में)
1.	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस /कांग्रेस (I)	31.25	62.50
2.	कांग्रेस (J)	33.33	12.50
3.	भारतीय लोकदल	33.33	12.50
4.	जनता (एस.)	00.00	00.00
5.	कम्युनिस्ट	00.00	00.00
6.	कम्युनिस्ट (मार्क्स)	00.00	00.00
7.	जनता पार्टी	00.00	00.00
8.	भा0 क्रा0दल	00.00	00.00
9.	जनता दल	20.00	12.00
10.	अन्य/निर्दलीय	00.00	00.00

जब कि 3 दलों लोकदल, कांग्रेस (J) जनतादल को छोड़कर किसी दल ने एक भी आरक्षित सीट पर विजय नहीं प्राप्त की। कांग्रेस (I) को कुल प्राप्त सीटों में 31.25 प्रतिशत आरक्षित सीटें थी तथा शेष सामान्य। कांग्रेस (J), भारतीय लोकदल ने 33.33 प्रतिशत कुल प्राप्त सीटों में आरक्षित सीटें प्राप्त की। जबकि जनता दल ने 20 प्रतिशत बाकी दलों ने सामान्य सीटों पर विजय प्राप्त की।

तालिका 4.8

विधानसभा आरक्षित सीट : इलाहाबाद जनपद 1952–1991

क्रमांक	दलों का नाम	प्राप्त सीटों में (आरक्षित सीटों का प्रतिशत)	आरक्षित सीटों का प्रतिशत (कुल आरक्षित सींटों में)
1.	भा0रा0कांग्रेस / कांग्रेस(I)	29.24	57.58
2.	कांग्रेस (सत्ता)	100.00	06.06
3.	कांग्रेस (संगठन)	00.00	00.00
4.	भा0ज0पार्टी	00.00	00.00
5.	जनता दल	23.53	12.12
6.	लोकदल	00.00	00.00
7.	जनसंघ	66.67	06.06
8.	ब0स0पार्टी	00.00	00.00
9.	जनता पार्टी	21.33	09.09
10.	पी.एस.पी.	00.00	00.00
11.	सोसलिस्ट	00.00	00.00
12.	कम्युनिस्ट	00.00	00.00
13.	एस.एस.पी.	00.00	00.00
14.	भा.क्रान्तिदल	00.00	00.00
15.	अन्य / निर्दलीय	33.33	09.09

4.6.2—विधानसभा आरक्षित सीट (1952—1991)

तालिका 4.8 के अवलोकन से स्पष्ट है कि विधानसभा निर्वाचन में 1952 से 1991 तक कुल आरक्षित सीटों का 57.58 प्रतिशत भाग कांग्रेस को प्राप्त हुआ

जबकि जनता दल को 12.12 प्रतिशत; जनतापार्टी को 9.09 प्रतिशत, कांग्रेस (सत्ता) को 6.06 प्रतिशत जन संघ को 6.06 प्रतिशत एवं निर्दलीय को 9.09 प्रति सीटें प्राप्त हुई।

1952 से 1991 तक प्राप्त कुल सीटों में कांग्रेस (I) ने 29.24 प्रतिशत आरक्षित सीटें प्राप्त की जब कि कांग्रेस सत्ता ने 1952–91 तक जो सीट प्राप्त की आरक्षित सीटें ही प्राप्त की चाहे उनकी संख्या 01 ही रही हो। इसी तरह से कुल प्राप्त सीटों में जनतादल ने 23.53 प्रतिशत आरक्षित सीटें प्राप्त की जव कि जनसंघ ने 66.67 प्रतिशत आरक्षित सीटें प्राप्त की शेष सामान्य। जनतापार्टी कुल प्राप्त सीटों का 21.33 प्रतिशत आरक्षित एवं निर्दलीय 33.33 प्रतिशत आरक्षित सीटों पर विजयी रहे।

उपरोक्त तालिका 4.8 से यह स्पष्ट हो चुका कि ऐसे दल जिन्होंने 1952 से 1991 तक 1, 2 या 3, 4 सीटों पर ही विजय हासिल की उनका आरक्षण प्रतिशत अधिक है क्योंकि यदि 1 सीट प्राप्त की और वह भी आरक्षित में तो उनका आरक्षित प्रतिशत 100 हो गया। संक्षेप में यह तथ्य स्पष्ट है कि कांग्रेस (I) ही एक ऐसी पार्टी है जिसने 1952–91 तक सर्वाधिक आरक्षित सीटों एवं सामान्य सीटों पर विजय हासिल किया है।

4.6.3 आरक्षित एवं सामान्य सीटों में मतदान (1952–91)

आरक्षित एवं सामान्य सीटों में मतदान प्रतिरूप को इस भाग में प्रस्तुत किया गया है। 1952 से 1991 तक लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन में सीटों पर पड़े वैधमतों का प्रतिशत अलग–2 प्रदर्शित किया गया है।

लोकसभा में आरक्षित एवं सामान्य मतदान (1952–91) तालिका 4.9 से निम्न निष्कर्ष निकलता है–

1) इलाहाबाद जनपद के लोकसभा निर्वाचन में 1952 से 1991 तक 50.00 प्रतिशत आरक्षित सीटों पर 20 से 30 प्रतिशत मतदान हुआ है। तथा 50 प्रति0 सीटों पर 30 से 40 प्रतिशत मतदान हुआ है।

2) सामान्य सीटों पर मतदान अधिक हुआ है। किसी भी सामान्य सीट पर 30 प्रतिशत से कम मतदान नहीं हुआ है। कुल सामान्य सीटों के 55 प्रतिशत भाग में 30 से 40 प्रतिशत मतदान हुआ एवं 40 प्रतिशत भाग में 40 से 60 प्रतिशत मतदान हुआ। कुल सामान्य सीटों के 5 प्रतिशत भाग पर 60 से 70 प्रतिशत मतदान हुआ।

अतः स्पष्ट है कि सामान्य सीटों पर लोकसभा क्षेत्रों में औसत मतदान 45 प्रतिशत हुआ जबकि आरक्षित सीटों पर 30 प्रतिशत । जिसका कारण आरक्षित सीटों के मतदाताओं का मतदान के प्रति रूझान कम, अशिक्षा, गरीबी, राजनैतिक चालों से दूर रहने की इच्छाशक्ति आदि रही है।

तालिका – 4.9

लोकसभा में आरक्षित एवं सामान्य सीट में मतदान प्रतिशत : जनपद इलाहाबाद : 1952–1991

मतदान	सामान्य सीट प्रतिशत (कुल सामान्य सीटों में)	आरक्षित सीट प्रतिशत (कुल आरक्षित सीटों में)
0–10	00.00	00.00
10–20	00.00	00.00
20–30	00.00	50.00
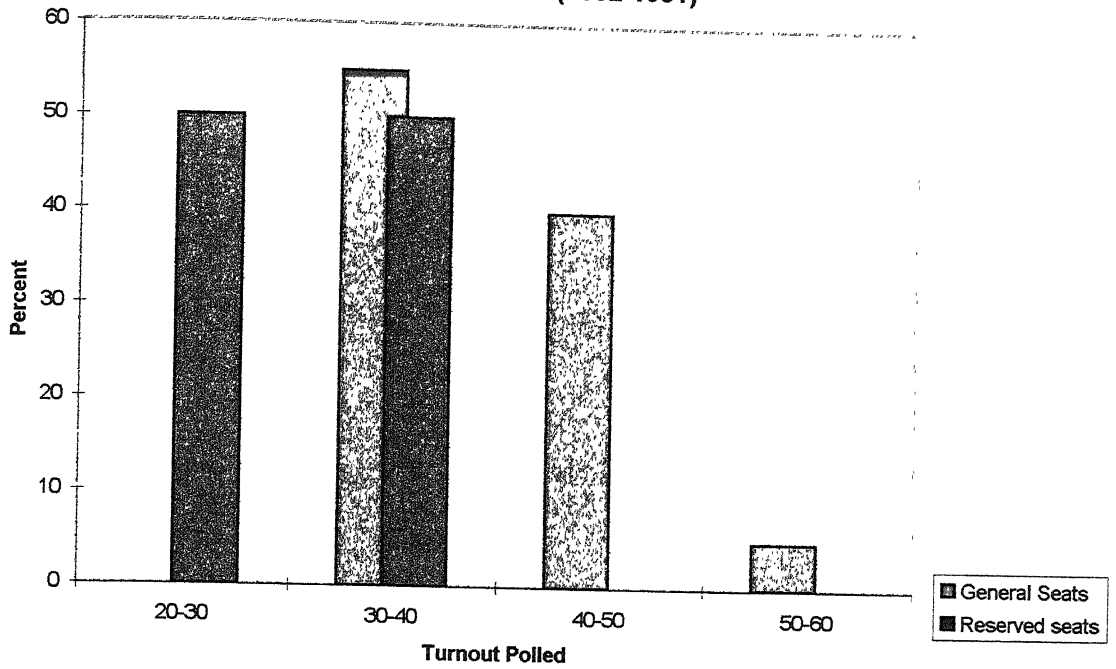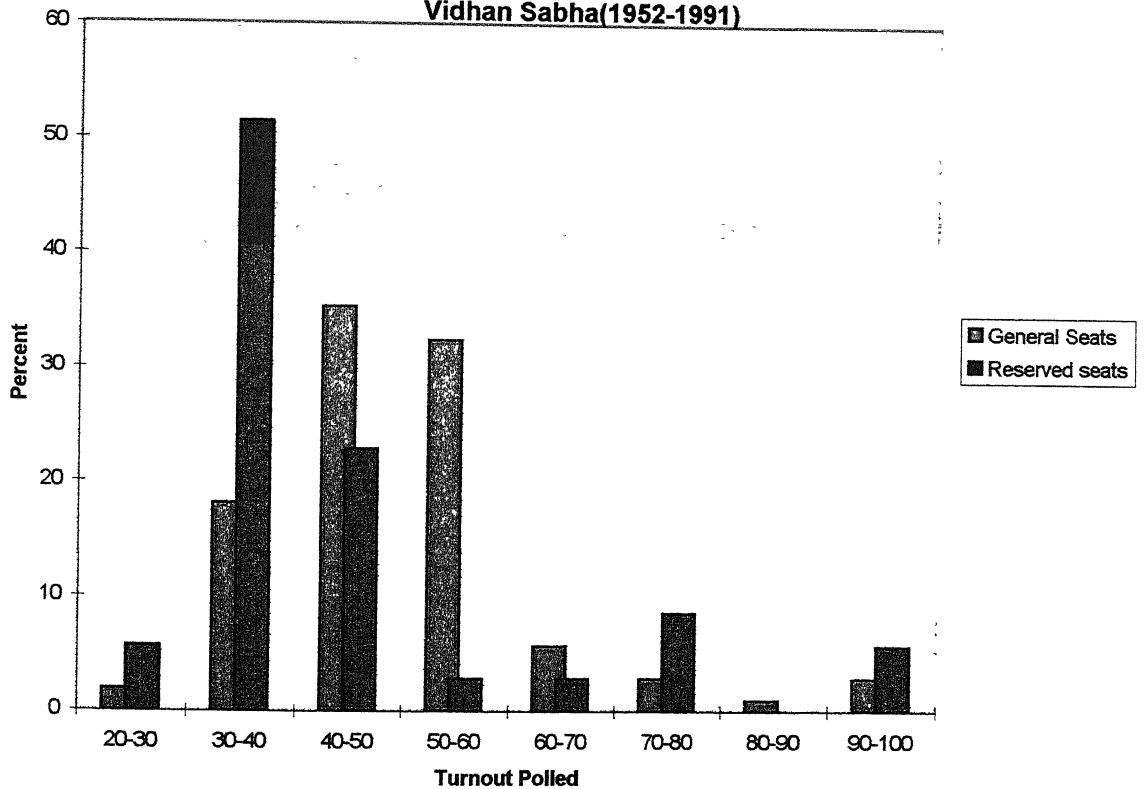
30—40	55.00	50.00
40—60	40.00	00.00
60—70	05.00	00.00
70—80	00.00	00.00
80—90	00.00	00.00
90—100	00.00	00.00

4.6.3.2 विधानसभा में आरक्षित एवं सामान्य सीटों पर मतदान 1952 से 1991 — तालिका 4.10 से इलाहाबाद जनपद में विधानसभा निर्वाचन में आरक्षित एवं सामान्य सीटों का विवरण प्रदर्शित होता है। उपरोक्त तालिका से निम्न निष्कर्ष निकलता है—

1) आरक्षित सीटों में मतदान का प्रतिशत निम्न है अब कि सामान्य सीटों पर उच्च। कुल आरक्षित सीटों के 80 प्रतिशत भाग पर मतदान 50 प्रतिशत से कम हुआ है। जबकि सामान्य सीटों के 53.24 प्रतिशत भाग ही 50 प्रतिशत से कम मतदान है।

तालिका — 4.10

विधान सभा में आरक्षित एवं सामान्य सीट में मतदान प्रतिशत · जनपद

इलाहाबाद 1952 1991

मतदान प्रतिशत	सामान्य सीट प्रतिशत (कुल सामान्य सीटों मे)	आरक्षित सीट प्रतिशत (कुल आरक्षित सीटो मे)
0—10	—	--
10—20	—	00.00

20—30	01.91	5.71
30—40	18.09	51.43
50—60	35.24	22.86
40—60	32.38	02.86
60—70	05.71	02.86
70—80	02.86	08.57
80—90	00.95	00.00
90—100	02.86	05.71

2) सामान्य सीटों के 32.38 प्रतिशत भाग पर मतदान 50 से 60 प्रतिशत के बीच हुआ है जबकि आरक्षित सीटों के मात्र 2.86 प्रतिशत भाग पर 50 से 30 प्रतिशत मतदान हुआ है।

3) तालिका से यह भी स्पष्ट है कि कुछ ऐसी आरक्षित सीटें हैं जहां मतदान का प्रतिशत 90प्रतिशत के ऊपर रहा है।

अतः कुल मिलाकर मतदान का स्वरूप सम्बन्धित क्षेत्र में राजनैतिक जागरूकता, आर्थिक सम्पन्नता, शिक्षा, पर निर्भर है। मतदान का कुछ प्रतिशत क्षणिक सहायता, जातीय समीकरण, वर्ग समीकरण पर भी आधारित है।

संक्षेप मतदान का स्वरूप लोकसभा एवं विधानसभा में क्षेत्र की राजनैतिक जागरूकता पर ही निर्भर है। प्रायः सामान्य क्षेत्रों में यह जागरूकता अधिक पायी गई इसलिए वहां का मतदान प्रतिशत उच्च है। जब कि आरक्षित क्षेत्रों में इसके विपरीत परिस्थितियां हैं।

पंचम् अध्याय

मतदान वितरण प्रतिरूप

5. मतदान वितरण

लोकतांत्रिक देशों में नागरिकों को अधिकार प्रदान होते हैं। इन्हीं अधिकारों के कारण वे नागरिक कहलाते हैं। नागरिकों को सुखी तथा लोकतांत्रिक जीवन व्यतीत करने के लिए अधिकारों की प्राप्ति आवश्यक है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान ने लोकसभा एवं विधान सभा सदस्यों का निर्वाचन वयस्क मताधिकार के आधार पर प्रत्यक्ष मतदान द्वारा निश्चित किया। वयस्क मताधिकार का तात्पर्य कि 18 वर्ष के प्रत्येक नागरिक को मत देने का अधिकार है चाहे वह किसी धर्म, जाति भाषा आदि का क्यों न हों। मतदान के द्वारा ही नागरिक अपनी इच्छानुसार नेता, पार्टी का चयन करता है। जिस पार्टी के ऊपर अधिकांश मतदाताओं का विश्वास होता है वही सत्ता में आती है जिसे 'जनता की सरकार' नाम से जाना जाता है। **मतदान का स्वरूप** प्रत्येक राज्य में, जिले में ब्लाक में, गांव में समान रूप से नहीं पाया जा सकता है क्योंकि राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक सामाजिक भिन्नातायें सर्वत्र व्याप्त हैं। इन्हीं भिन्नताओं काप्रभाव मतदाताओं पर पड़ता है। जिससे मतदान वितरण में असमानता होती है। इसी असमानता को प्रस्तुत अध्याय में विश्लेषित किया गया है; क्योंकि निर्वाचन में मतदाताओं की सहभागिता ही सफल लोकतान्त्रिक व्यवस्था की सूचक है।

प्रस्तुत अध्याय में मतदान के भौगोलिक राजनीतिक स्वरूप को सांख्यिकीय विधियों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के प्रथम अनुभाग (5.1) में इलाहाबाद जनपद के मतदान का स्थानिक वितरण वर्णित है, जिसमें 5.1.1 में लोकसभा मतदान का वर्णन है। द्वितीय अनुभाग (5.1.2) में लोकसभा मतदान की जेडलब्धि (Z) उपलब्धि प्रदर्शित है। तृतीय अनुभाग (5.1.3) में विधानसभा मतदान का

स्थानिक वितरण दर्शाया गया है। चतुर्थ अनुभाग (5.1.4) को विधान सभा मतदान वितरण की जेडलब्धि दर्शित है। अनुभाग पंचम (5.2) में मतदान का क्षेत्रीय सकेन्द्रण प्रस्तुत किया गया है। जिसमें अनुभाग (5.2.1) में लोकसभा मतदान का क्षेत्रीय सकेन्द्रण एवं 5.22 में विधानसभा मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण प्रस्तुत है।

तालिका क्रमांक 5.1 में इलाहाबाद जिले के संसदीय चुनावों में मतदान का प्रतिशत 1952 से 91 तक प्रदर्शित है जिससे स्पष्ट है कि 1985 के लोकसभा निर्वाधन में सर्वाधिक मतदान 54.81 प्रतिशत हुआ है। इसके अलावा 1957 के निर्वाचन में 52.26 प्रतिशत मतदान प्रदर्शित है बाकी के वर्षों में 50 प्रतिशत से कम मतदान हुआ है। अर्थात् 50 प्रतिशत जनता की सरकारों बनी हैं।

तालिका – 5.1

इलाहाबाद जिले के संसदीय क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत – 1952–91

क्रमांक	निर्वाचन वर्ष	मतदान का प्रतिशत
1.	1952	47.51
2.	1957	52.26
3.	1962	47.49
4.	1967	47.78
5.	1977	41.44
6.	1977	49.55
7.	1980	44.78
8.	1985	54.81

Turnout Percent
Lok Sabha (1952-1991)
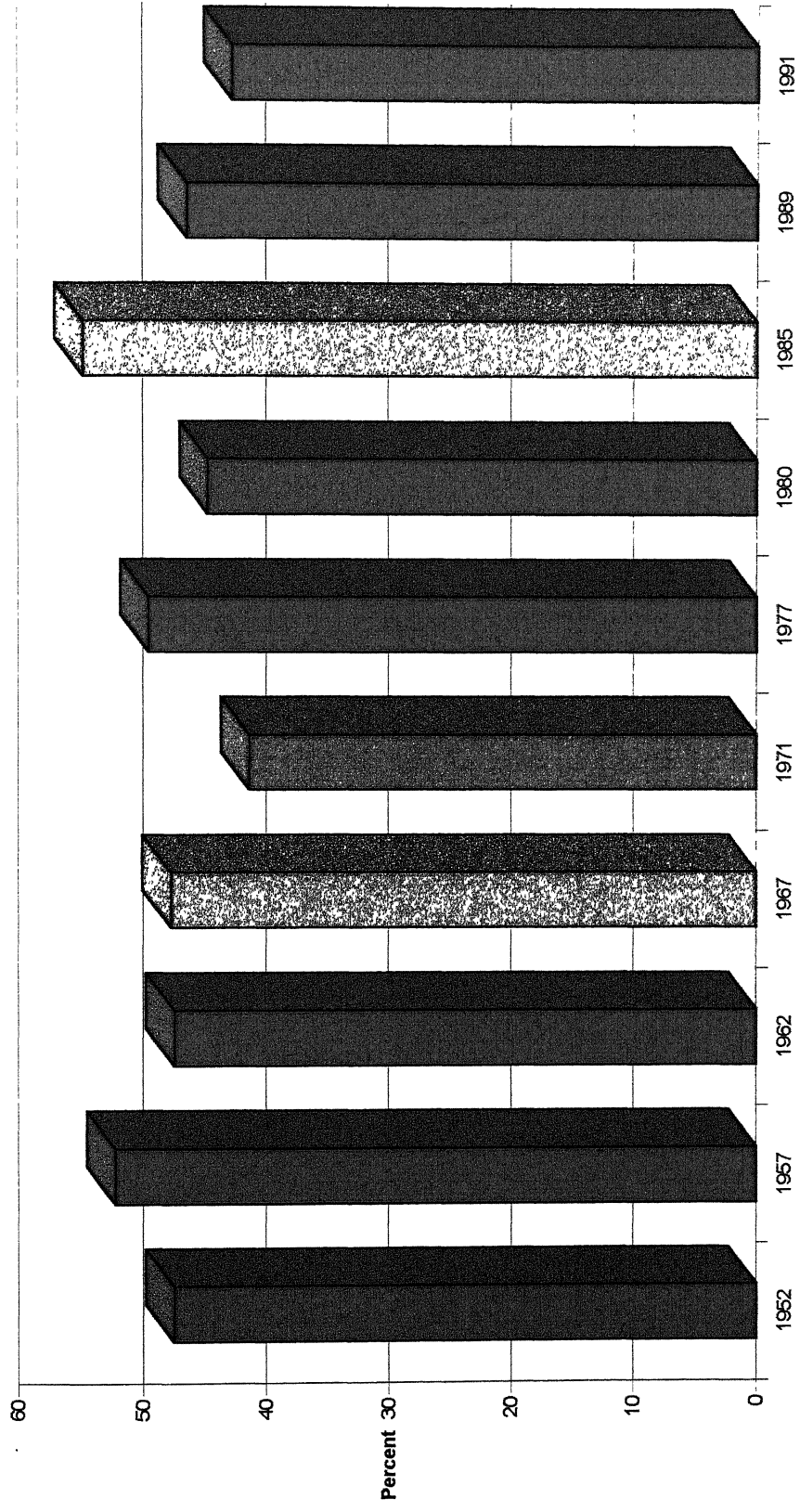
Table No : 5.1

9.	1989	46.44
10.	1991	42.74

तालिका क्रमांक 5.2 में इलाहाबाद जिले के विधानसभा क्षेत्रों का मतदान प्रतिशत (1952–91) प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि 1952, 57, 74 के निर्वाचन वर्षों में 50 प्रतिशत से कम मतदान हुआ है।

तालिका – 5.2

इलाहाबाद जिले के विधानसभा क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत – 1952–91

क्रमांक	निर्वाचन वर्ष	मतदान का प्रतिशत
1.	1952	50.90
2.	1957	60.82
3.	1962	43.05
4.	1967	40.91
5.	1974	52.22
6.	1977	41.99
7.	1980	38.39
8.	1985	38.53
9.	1989	49.15
10.	1991	42.25

Turnout Percent
Vidhan Sabha (1952-1991)
70
60
50
40
30
20
10
0
Percent
1952
1957
1962
1967
1974
1977
1980
1985
1989
1991
Year
Table No : 5.2
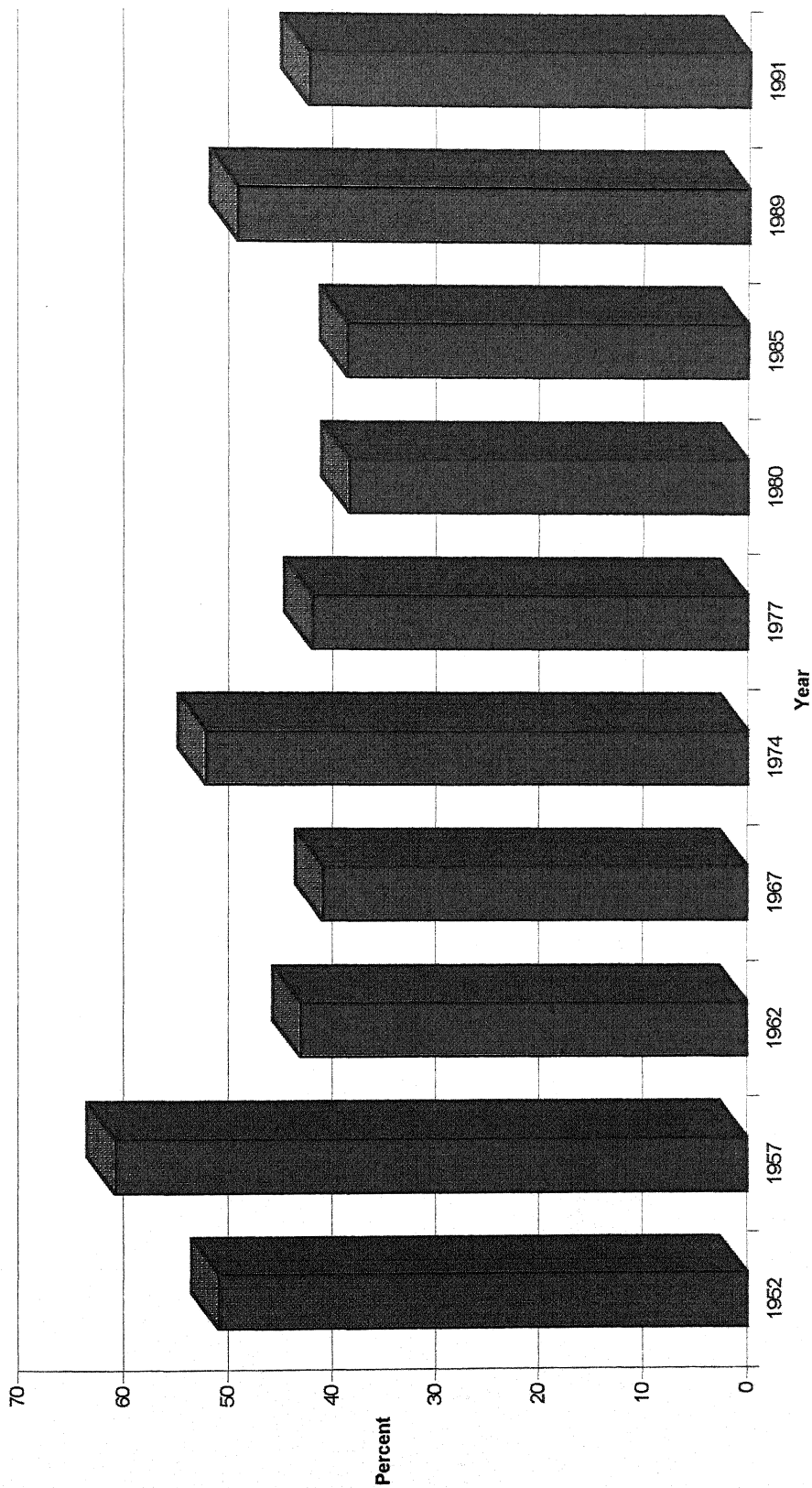
Fig. 5.1.1 Absolute Distribution of Turnout 1952 to 1971 (Per cent) Loke Sabh
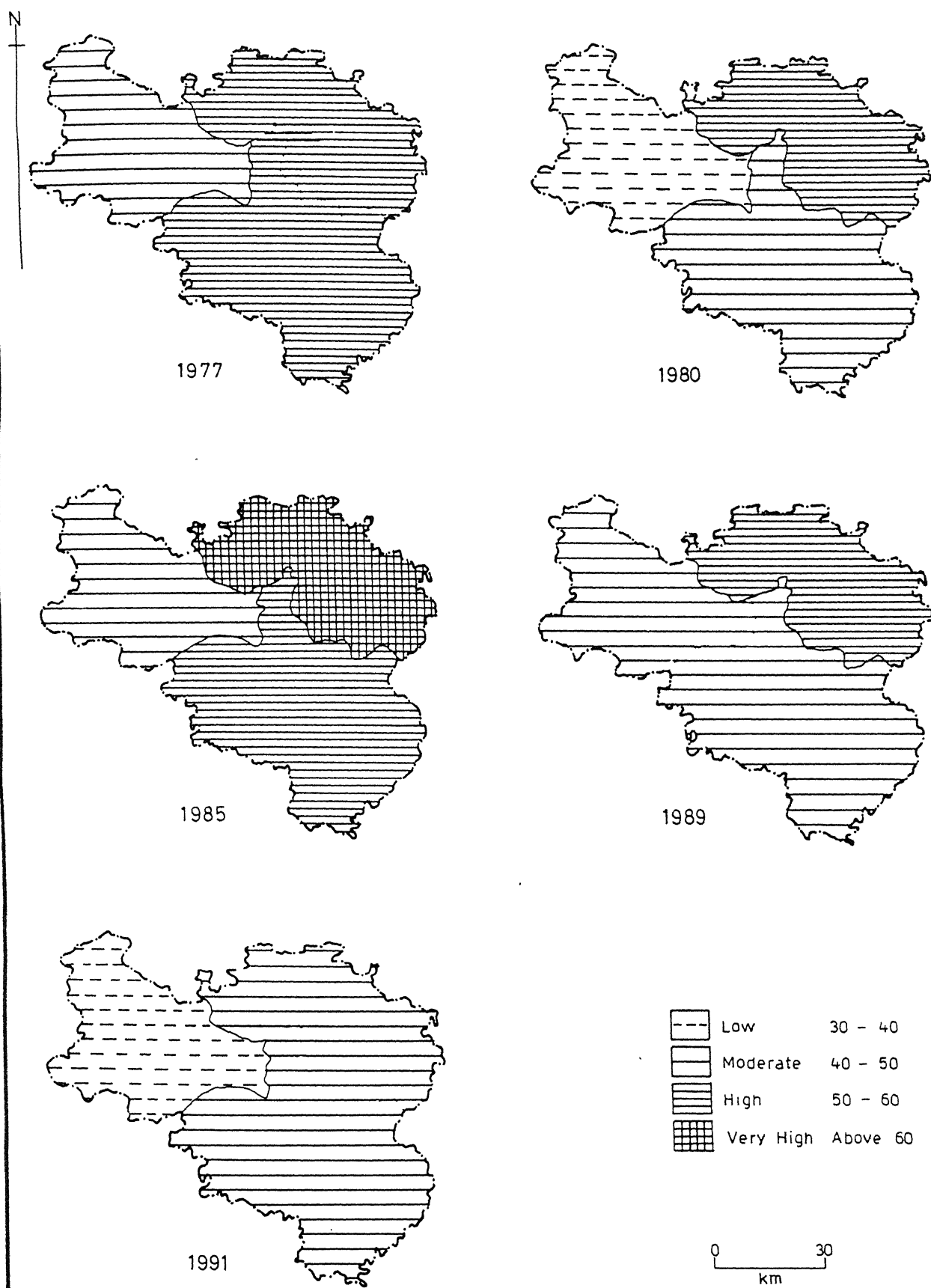
Fig. 5.1.2 Absolute Distribution of Turnout 1977 to 1991 (Per cent) Loke Sabha

तालिका क्रमांक 5.1 एवं 5.2 से स्पष्ट है कि अभी भी भारतीय जनमत पूरी तरह से सजग नहीं हुआ है, जिसका परिणाम सरकारी नीतियों पर पड़ रहा है।

5.1 मतदान का स्थानिक वितरण

5.1.1– लोकसभा मतदान का स्थानिक वितरण : प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले के 1952 से 1991 तक सम्पन्न लोकसभा चुनावों में प्राप्त मतदान प्रतिशत के वास्तविक स्थानिक वितरण को प्रस्तुत किया गया है। जिसका मानचित्रण चित्र क्रमांक 5.1.1 एवं 5.1.2 में प्रदर्शित किया गया है। मतदानों के प्रतिशत को 5 भागों में विभक्त किया गया है।

i) उच्चतम मतदान क्षेत्र–जिसके अन्तर्गत ऐसे क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जहाँ मतदान 60 प्रतिशत से अधिक हुआ है।

ii) उच्च मतदान क्षेत्र के अन्तर्गत 50 से 60 प्रतिशत मतदान वाले क्षेत्र सम्मिलित हैं।

iii) मध्यम मतदान क्षेत्र–जिसके अनतर्गत 40 से 50 प्रतिशत मतदान वाले क्षेत्र आते हैं।

iv) निम्न मतदान क्षेत्र के अन्तर्गत 30 से 40 प्रतिशत मतदान वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है।

v) निम्नतम मतदान क्षेत्र के अन्तर्गत 30 प्रतिशत से कम मतदान वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

5.1.1.1–उच्चतम मतदान क्षेत्र : 1952 से 1991 तक के निर्वाचन वर्षों में निर्वाचन वर्ष 1985 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र उच्चतम मतदान क्षेत्र था। इसके

अतिरिक्त किसी भी निर्वाचन वर्ष में इलाहाबाद जनपद के किसी भी लोकसभा क्षेत्र में 60 प्रतिशत से अधिक मतदान नहीं हुआ।

5.1.1.2—उच्चमतदान क्षेत्र : इलाहाबाद जनपद के निम्न लोकसभा क्षेत्र उच्च मतदान क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। निर्वाचन वर्ष 1952 में इलाहाबाद जिला (ईस्टकम जौनपुर) 1957 फूलपुर, इलाहाबाद 1962 इलाहाबाद शहर,, 1967 इलाहाबाद 1977 में इलाहाबाद एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र, 1980 में फूलपुर, 1985 में इलाहाबाद, 1989 में फूलपुर अर्थात इलाहाबाद एवं फूलपुर जिले लगभग वर्षों में उच्च मतदान क्षेत्र रहे हैं।

5.1.1.3—मध्यम मतदान क्षेत्र : मध्यम मतदान क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न लोकसभा क्षेत्र आते है। 1952 के निर्वाचन वर्ष में इलाहाबाद जिला पश्चिमी0; 1962 में इलाहाबाद, फूलपुर, 1967 फूलपुर, चायल, 1971 में इलाहाबाद, फूलपुर, 1977 में चायल, 1980 में इलाहाबाद, 1985 में चायल, 1989 में इलाहाबाद ,चायल 1991 में इलाहाबाद फूलपुर।

5.1.1.4—निम्न मतदान क्षेत्र : इसके अन्तर्गत 30 से 40 प्रतिशत मतदान वाले क्षेत्र सम्मिलित है। इसमें इलाहाबाद जिले के निम्न संसदीय क्षेत्र आते हैं : 1962 में निर्वाचन में चायल, 1971 में चायल, 1980 में चायल, 1991 में चायल।

5.1.1.5—निम्नतम मतदान क्षेत्र : निम्नतम मतदान क्षेत्र के अनतर्गत 30 प्रतिशत से कम मतदान वाले क्षेत्र आते हैं। इलाहाबाद जनपद के किसी लोकसभा क्षेत्र में निम्नतम मतदान नहीं हुआ।

सारांशत : इलाहाबाद जिले की संसदीय सीटें निम्न मतदान आरक्षित सीटों पर ही हुआ है। सामान्य सीटों पर निम्न एवं निम्नतम मतदान कभी नहीं हुआ। हमेशा मध्यम या उच्च मतदान इन क्षेत्रों में हुआ।
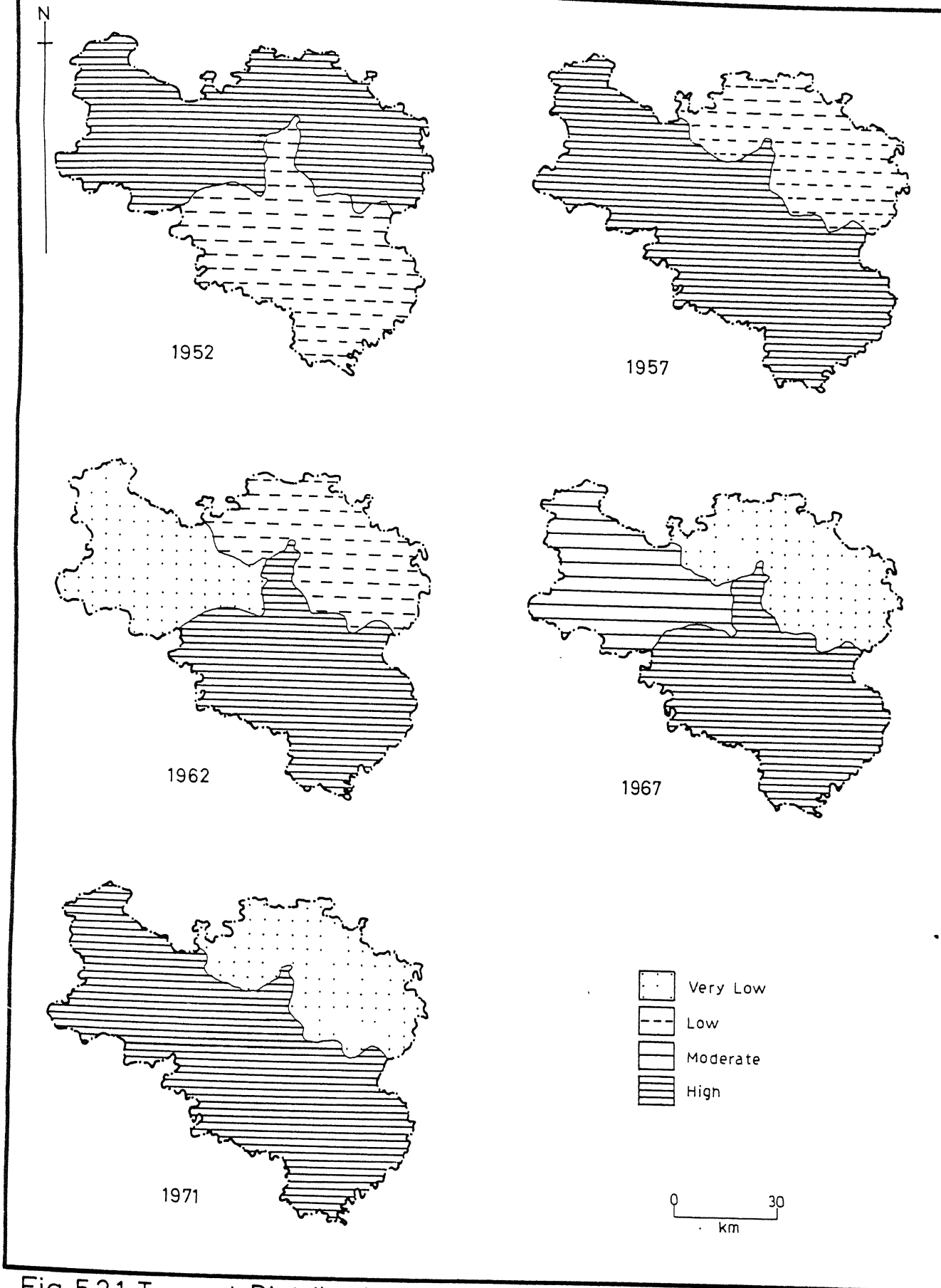
Fig. 5.2.1 Turnout Distribution 1952 to 1971 (Z Score) (Loke Sabha)
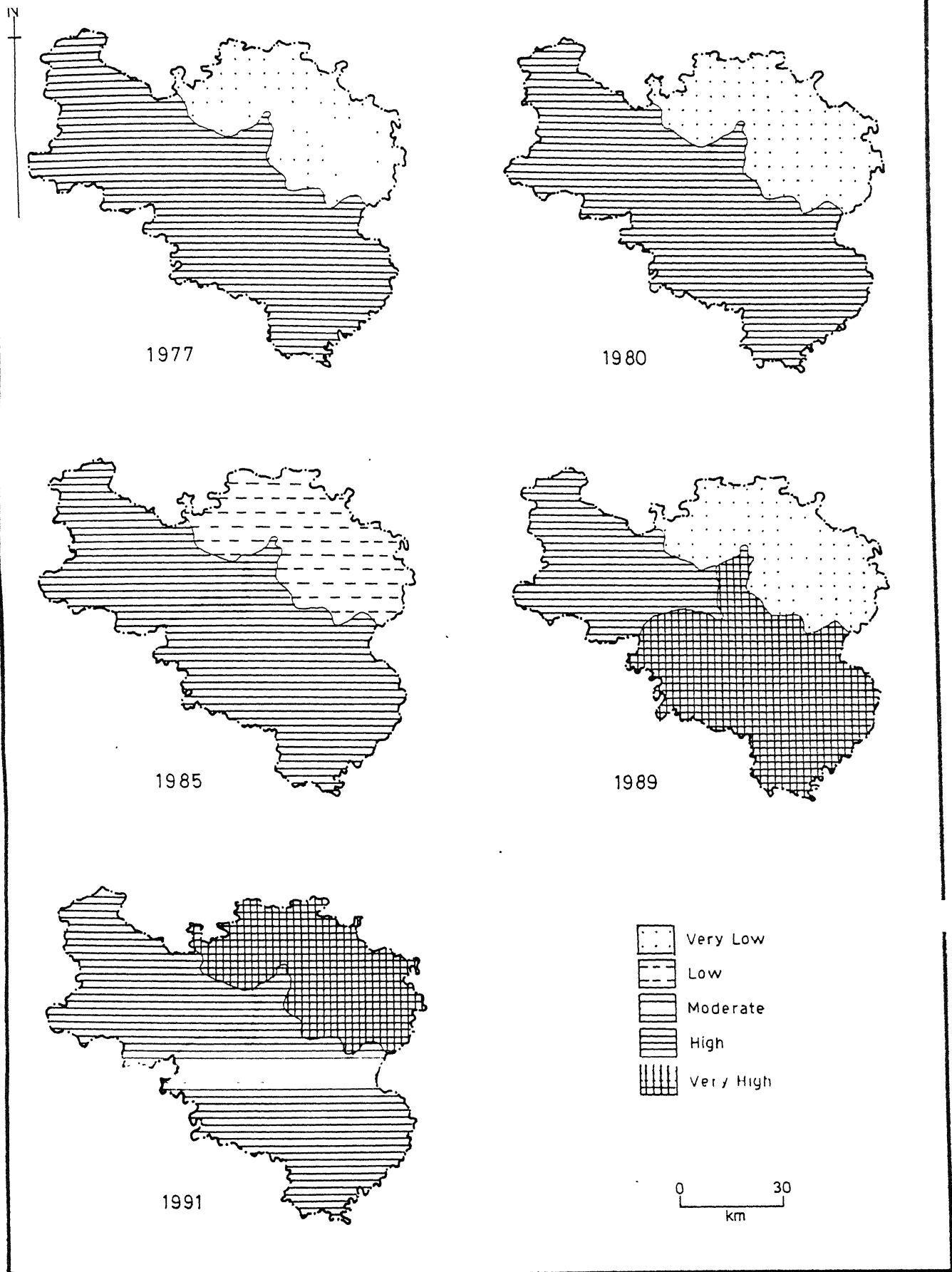
Fig. 5.2.2 Turnout Distribution 1977 to 1991 (Z Score) Loke Sabha

5.1.2 लोकसभा मतदान वितरण (जेडलब्धि) 1952–91

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले के 1952 से 1991 तक सम्पन्न लोकसभा चुनावों में विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त मतदान को जेडलब्धि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शन में प्राप्त परिणामों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जिसको मानचित्र 5.2.1 एवं 5.2 2 में दर्शाया गया है–

5.2.1–उच्चतम मतदान–मानचित्र से स्पष्ट है कि उच्चतम मतदान वाले क्षेत्रों केवल दो वर्षों 1991 में फूलपुर तथा 1989 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में उच्चतम Z लब्धि परिलक्षित होती है।

5.2.2–उच्च मतदान–इलाहाबाद जिले में उच्च मतदान जेडलब्धि के क्षेत्र निम्नानुसार है वर्ष 1991 में चायल इलाहाबाद, 1989 में चायल, 1985 में इलाहाबाद चायल; 1980 में इलाहाबाद चायल, 1977 में इलाहाबाद, चायल, 1971 में इलाहाबाद चायल, 1967, 62, 57 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र 1952 से 1991 तक प्रायः सभी वर्षों में जेडलब्धि इलाहाबाद एवं चायल संसदीय क्षेत्र में उच्च Z लब्धि रही है।

5.2.3–मध्यम मतदान–मध्यम मतदान 'Z' लब्धि जिले के संसदीय क्षेत्रों में नहीं के बराबर पायी गयी है। वर्ष 1967 में चायल संसदीय क्षेत्र में मतदान 'Z' लब्धि मध्यम रही।

5.2.4–निम्न मतदान–इलाहाबाद जिले के संसदीय क्षेत्रों में निम्न मतदान, मतदान 'Z' लब्धि बहुत कम क्षेत्रों में पायी गयी। इसका विवरण निम्नानुसार है–वर्ष 1957, 62, 85 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र में तथा वर्ष 1952 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में निम्न मतदान 'Z' लब्धि पायी गई है।
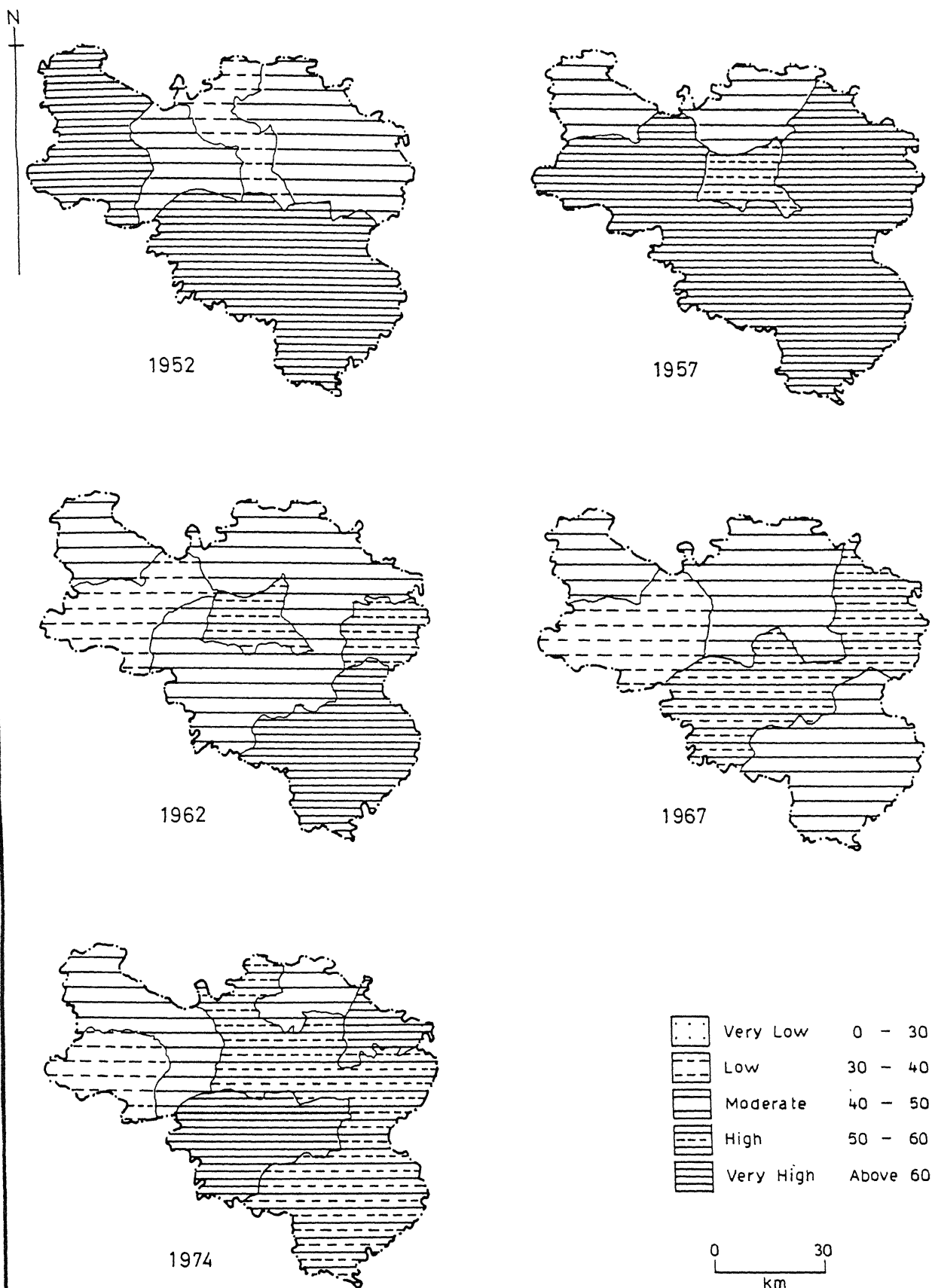
Fig. 5.3.1 Absolute Distribution of Turnout 1952 to 1974 (Per cent) Vidhan Sabha
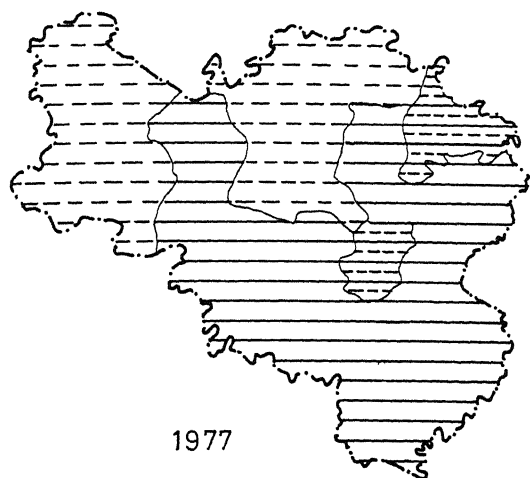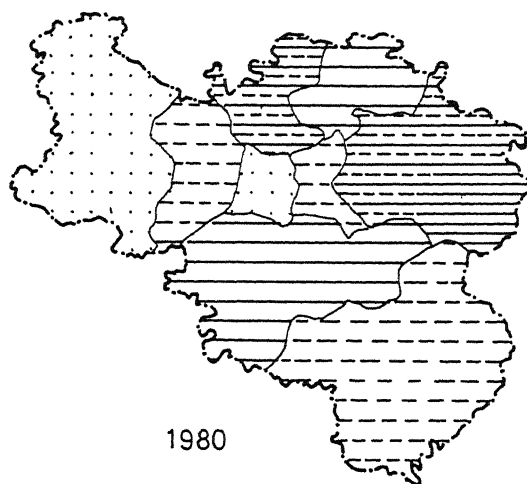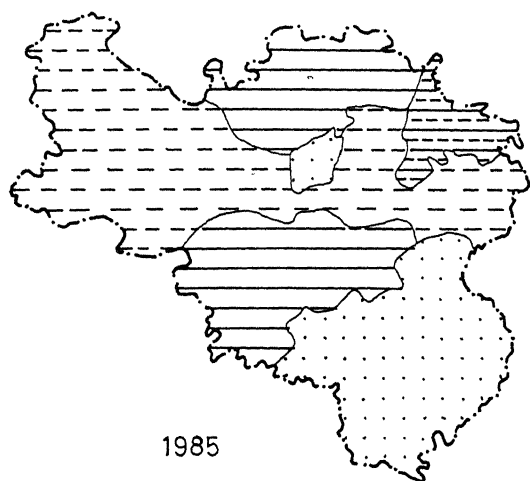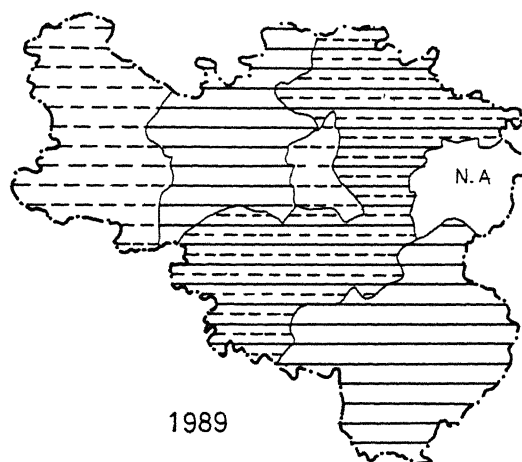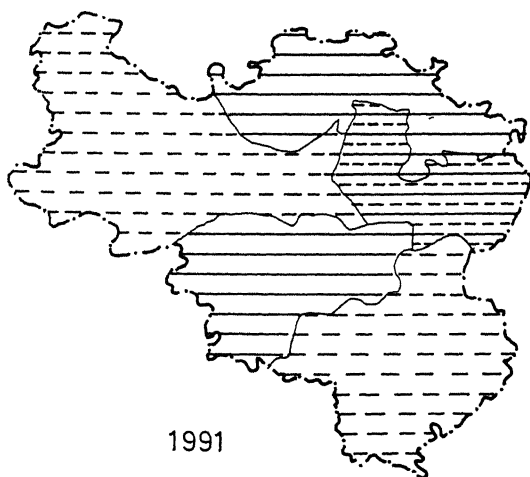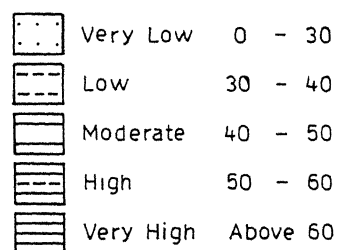
ig. 5.3.2 Absolute Distribution of Turnout 1977 to 1991 (Per cent) Vidhan Sabha

5.2.5—निम्नतम मतदामं—निम्नतम मतदान Z लब्धि तल जिले के फूलपुर संसदीय क्षेत्र में 1967, 71, 77, 80 में पायी गयी। 1962 में चायल संसदीय क्षेत्र निम्नतम Z लब्धि उभरी। इस तरह स्पष्ट ही निम्नतम Z लब्धि तल विगत 4 वर्षों में फूलपुर संसदीय क्षेत्र में उभरा।

5.1.3—विधानसभा मतदान का स्थानिक वितरण (1952—91)—प्रस्तुत अनुभाग में विधान सभा मतदान का स्थानिक वितरण 1952—91 तक के निर्वाचन का इलाहाबाद जिले के सन्दर्भ में प्रस्तुत है। वास्तविक स्थानिक वितरण प्रतिशत में प्रदर्शित किया गया। मानचित्र 5.3.1 एवं 5.3.2 के अनुसार इलाहाबाद जनपद के विधानसभा क्षेत्रों में मतदान का प्रारूप इस प्रकार है। समस्त जिले के मतदान प्रारूप को पाँच भागों में बाँटा गया है।

i) उच्चतम मतदान क्षेत्र (60 प्रतिशत से अधिक मतदान)

ii) उच्च मतदान क्षेत्र (50 से 60 प्रतिशत मतदान)

iii) मध्यम मतदान क्षेत्र (40 से 50 प्रतिशत मतदान)

iv) निम्न मतदान क्षेत्र (30 से 40 प्रतिशत मतदान)

v) निम्नतम मतदान क्षेत्र (30 प्रतिशत से कम मतदान)

5.1.3.1—उच्चतम मतदान क्षेत्र : 1952 से 1991 तक के निर्वाचन में 60 प्रतिशत से कम मतदान 1967, 77, 80, 91 के निर्वाचन वर्षों में हुआ। 60 प्रतिशत से अधिक मतदान 1952 में मेजा करछना, करछना उत्तरी एवं चायल सिराथू एवं मंझनपुर, 1957 में मंझनपुर, चायल, फूलपुर, मेजा, 1962 में मेजा, 1974 में करछना, बारा, प्रतापपुर 1980 में हंडिया विधान सभा क्षेत्र में हुआ। अर्थात्

उच्चतम मतदान सीमित क्षेत्रों में है। 10 व़र्षों के निर्वाचन में मात्र 12 निर्वाचन क्षेत्रों में उच्चतम मतदान हुआ।

5.1.3.2—उच्च मतदान क्षेत्र : उच्च मतदान क्षेत्रों की संख्या अधिक है। किन्तु अधिकतम मतदान सामान्य विधान सभा क्षेत्रों में हुआ है। 1952 में किसी विधानसभा क्षेत्र में उच्च मतदान नहीं हुआ। निर्वाचन वर्ष 1957 में इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद (दक्षिणी); करछना, 1962 में केवाई, इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद (दक्षिणी), 1967 में करछना, वारा, हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद (उत्तरी); इलाहाबाद (दक्षिणी), 1974 में मेजा, झूंसी, हंडिया, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद (दक्षिणी), इलाहाबाद (पश्चिमी); 1977 में करछना, प्रतापपुर; 1980 में झूंसी, नवाबगंज, प्रतापपुर; 1985 में प्रतापपुर 1989 में करछना, बारा, झूंसी, प्रतापपुर, सोरांव, 1991 में झूंसी, हंडिया उच्च मतदान केन्द्र थे। इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी विधानसभा क्षेत्रों में प्रायः उच्च मतदान हुआ है। जिसका कारण शहरी निर्वाचक का अपने अधिकारों के प्रति सचेत रहना।

5.1.3.3—मध्यम मतदान क्षेत्र : 40 से 50 प्रतिशत मतदान वाले क्षेत्रों को इसके अन्तर्गत रखा गया है। जिसमें 1952 में फूलपुर, फूलपुर पूर्व एवं हंडिया उत्तरी, हंडिया दक्षिणी, इलाहाबाद शहर पूर्व सम्मिलित हैं। 1957 में सोरांव पश्चिमी, सोरांव पूर्व एवं केवारी, 1962 में बारा, करछना, झूंसी, फूलपुर, सोरांव पूरब, सोरांव पश्चिम, चायल, सिराथू; 1967 में मेजा कोरिहार, बहादुरपुर, इलाहाबाद (उत्तरी), सोरांव, सिराथू 1974 में सोरांव, सिराथू, चायल, 1977 में मेजा, बारा, झूंसी, हंडिया, चायल, 1980 में करछना, बारा, सोरांव, 1985 में करछना, बारा, नवाबगंज, सोरांव, 1989 में मेजा, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिम, चायल 1991 में करछना, बारा, प्रतापपुर सोरांव, नवाबगंज विधानसभा क्षेत्र मध्यम

मतदान के अनतर्गत आते हैं। मध्यम मतदान 1952–91 तक कुल 41 विधान सभा क्षेत्रों में हुआ है। अर्थात् अधिकांश क्षेत्रों में मध्यम मतदान हुआ है।

5.1.3.4–निम्न मतदान क्षेत्र : निम्न मतदान क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है। 1952 के निर्वाचन में सोरांव उत्तरी, सोंरावं दक्षिणी इलाहाबाद शहर (मध्य); चायल उत्तरी, 1962 में भरवारी, करारी, 1967 चायल, मंझनपुर, 1974 मंझनपुर, 1977 सोरांव नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी) इलाबाद (दक्षिणी) इलाहाबाद (पश्चिमी); मंझनपुर, सिराथू; 1980 में मेजा, इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद (दक्षिणी) चायल, 1985 में इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू, झूंसी, हंडिया, इलाहाबाद (दक्षिणी)। 1989 में इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद दक्षिणी, मंझनपुर, सिराथू, 1991 में मेजा, इलाहाबाद (उत्तरी) इलाबाद (दक्षिणी) इलाहाबाद (पश्चिमी); चायल, मंझनपुर, सिराथू; विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं। इस वर्ग में 1957 में कोई विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित नहीं था। सारांशतः आरक्षित क्षेत्रों में निम्न मतदान हुआ है।

5.1.3.5–निम्नतम मतदान क्षेत्र–30 प्रतिशत से कम मतदान वाले क्षेत्रों को इसके अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। 1952 से 1991 तक के नि र्वाचन वर्षों में 1980, 85 को छोड़कर किसी भी निर्वाचन वर्ष में निम्नतम मतदान नहीं हुआ। 1980 के निर्वाचन वर्ष में इलाहाबाद (पश्चिमी); मंझनपुर, सिराथू एवं 1985 में मेजा, इलाहाबाद (उत्तरी) में निम्नतम मतदान हुआ। विश्लेषण से स्पष्ट है कि इलाहाबाद जिले में मतदान जागरूकता पूर्ण रूप से व्याप्त थी। क्योंकि निम्नतम मतदान अत्यल्प क्षेत्रों में हुआ।

5.1.4–विधान सभा मतदान वितरण (जेड लब्धि) 1952–1991 : प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले में 1952–1991 तक सम्पन्न विधान सभा
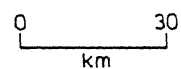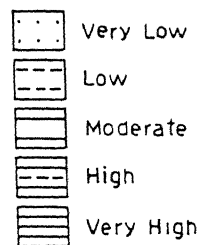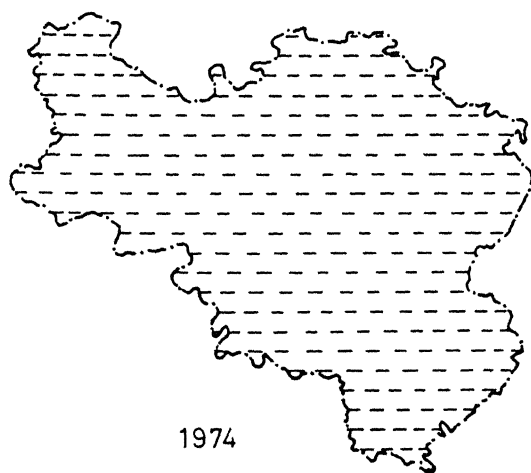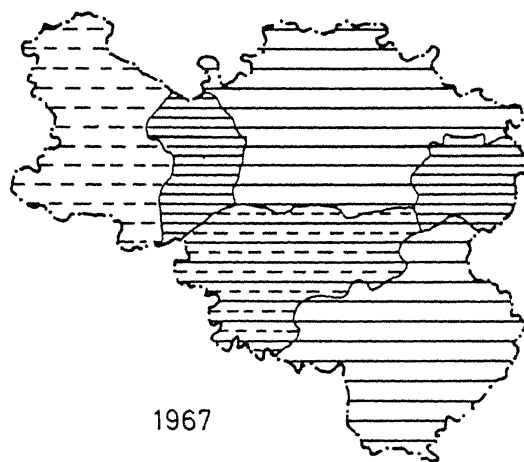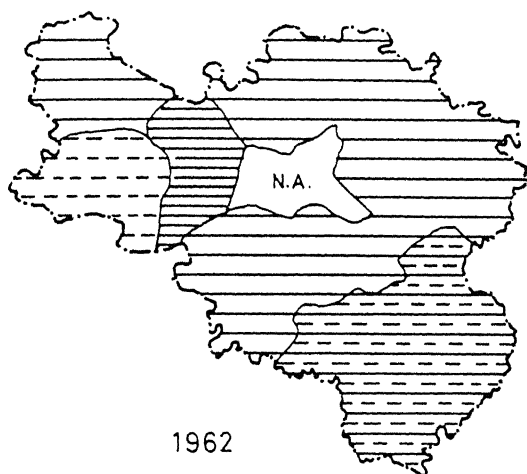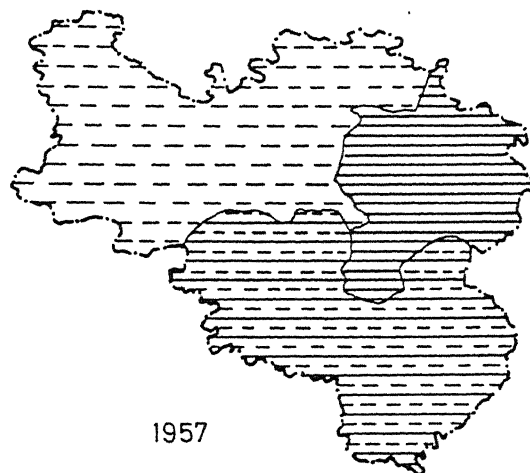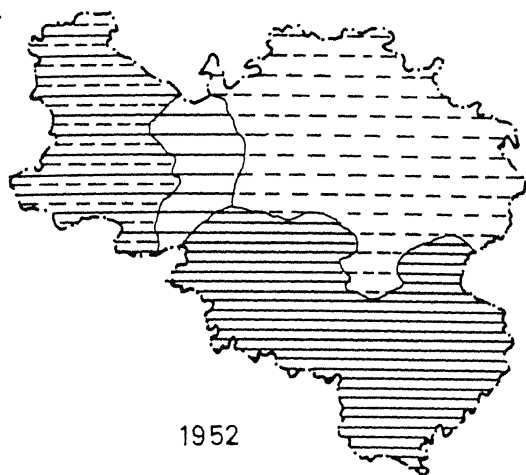
Fig. 5.4.1 Turnout Distribution 1952 to 1974 (Z-Score) Vidhan Sabha
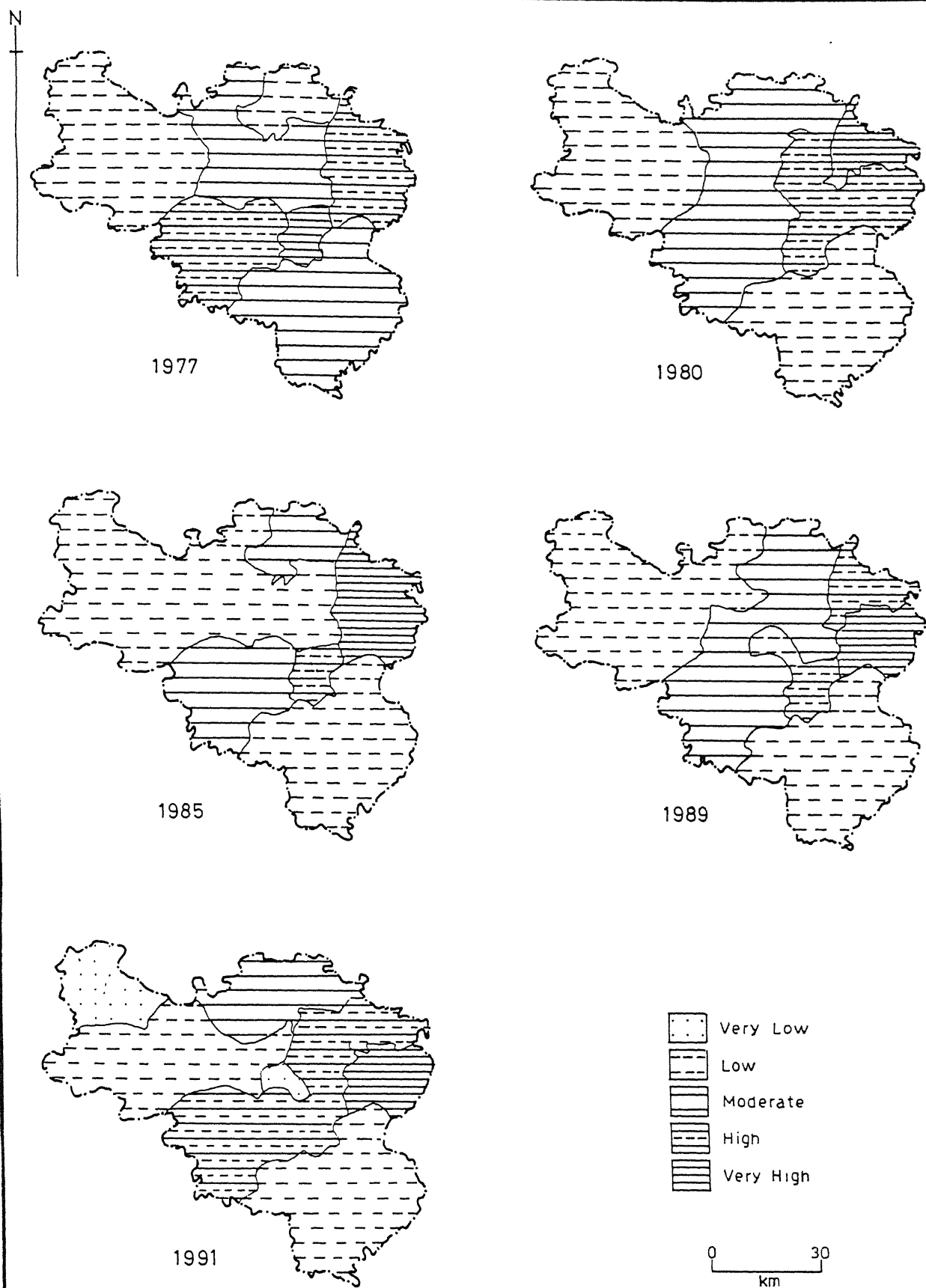
Fig. 5.4.2 Turnout Distribution 1977 to 1991 (Z-Score) Vidhan Sabha

निर्वाचन के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में प्राप्त मतदान को जेडलब्धि के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। प्राप्त परिणामों को मानचित्र 5.4.1 एवं 5.4.2 में प्रदर्शित कर उसका विवेचन किया गया है। मानचित्रानुसार निर्वाचन क्षेत्रों में निम्न जेड लब्धि प्रारूप प्रस्तुत है।

5.1.4.1—उच्चतम मतदान : उच्चतम मतदान जेड लब्धि विभिन्न वर्षों में परिवर्तित होती रही है। 1957 उच्चतम जेड लब्धि फूलपुर, मेजा, करछना, करछना, चायल (S) में रही। जब कि वर्ष 1962 एवं 67 में क्रमशः भरवारी एवं हंडिया विधान सभा क्षेत्रों में उच्चतम जेड लब्धि तल विद्यमान थी। इसी तरह से 1977 में करछना, 1980 में प्रतापपुर, 1985 में, प्रतापपुर, हंडिया, 1989, 1991 में हंडिया उच्चतम जेड लब्धि पायी गयी।

5.1.4.2—उच्च मतदान : इसके अन्तर्गत मानचित्रानुसार निम्नरूप प्रदर्शित होता है। 1952 में सिराथू एवं मंझनपुर, 1957 में मेजा, मंझनपुर, चायल, 1962 मेजा, 1967 में करछना, बारा, 1977 में बारा, हंडिया, प्रतापपुर, 1980 में करछना, झूंसी, हंडिया, 1985 में करछना, 1989 में प्रतापपुर, करछना, 1991 में करछना, बारा, झांसी प्रतापपुर उच्च मतदान जेड लब्धि पायी गयी है।

5.1.4.3—मध्यम मतदान—मध्यम मतदान जिले के लगभग सभी भागों में एवं सभी वर्षों में पाया गया इसके अन्तर्गत निम्नानुसार विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं— 1952 में चायल (उत्तरी) 1962 में बारा, करछना, केवाई, झूंसी, फूलपुर, सोरांव (पू0), सोरांव (प0), चायल, सिराथू। 1967 में मेजा, सोरांव, बहादुरपुर, प्रतापपुर, इलाहाबाद (दक्षिणी) और इलाहाबाद (पश्चिमी)। 1977 में मेजा, झूंसी, नवाबगंज, इलाहाबाद (N) इलाहाबाद (S)। 1980 में सोरांव, बारा, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी, चायल। 1985 में बारा, सोरांव। 1989 में सोरांव, बारा,

झूंसी इलाहाबाद (N & W)। 1991 में सोरांव, नवाबगंज करछना। 1957 में किसी भी विधानसभा क्षेत्र में मध्यम मतदान जेड लब्धि नही पायी गयी।

5.1.4.4–निम्न मतदान–निम्न मतदान जिले के सर्वाधिक विधान सभा क्षेत्रों में पाया गया। इसके अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में विधानसभा क्षेत्रों की स्थिति इस प्रकार रही–1952 में सोरांव और फूलपुर (w); सोरांव (दक्षिणी), फूलपुर, (दक्षिणी); फूलपुर और हंडिया, हंडिया (द), इलाहाबाद (पूर्वी), इलाहाबाद (पश्चिमी) 1957 में इलाहावाद (उ0) इलाहाबाद (दक्षिणी), सोरांव (पूर्वी और पश्चिमी), केवाई, करछना। 1962 करारी 1967 में मंझनपुर, सिराथू, 1974 में इलाहाबाद जिले की सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्रों में निम्न मतदान जेड लब्धि पायी गयी। 1977 में सोरांव, इलाहाबाद (पश्चिमी), मंझनपुर, सिराथू, चायल, 1980 में मेजा, चायल, मंझनपुर, सिराथू, 1985 में मेजा, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी और दक्षिणी), इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू, झूंसी, 1989 में सिराथू, मंझनपुर, चायल, इलाहाबाद (दक्षिणी) नवाबगंज, मेजा। 1991 में इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद (पश्चिमी), चायल, मंझनपुर, मेजा क्षेत्र, सम्मिलित है।

5.1.4.5–निम्नतम मतदान : निम्न मतदान क्षेत्र इलाहाबाद जिले में वास्तव में निम्नतम विधान सभा क्षेत्रों में है इसके अन्तर्गत 1952 से 1991 तक केवल 1991 में सिराथू एवं इलाहाबाद (दक्षिणी) में निम्नतम मतदान पाया गया।

5.2–मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण :

प्रस्तुत अनुभाग में मतदान के सापेक्षिक क्षेत्रीय वितरण का वर्णन प्रस्तुत है। इसमें इलाहाबाद जनपद के औसत मतदान को प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के मतदान से भाग देकर 100 से गुणाकर क्षेत्रीय सकेन्द्रण का निर्धारण किया गया है। इस तरह वास्तविक सापेक्ष स्थिति का निर्धारण हुआ है। सारांशतः मतदानों

के सापेक्ष वितरण का विश्लेषण स्थानिक संकेन्द्रण विधि द्वारा गणना करके प्राप्त किया गया। जिसका सूत्र इस प्रकार है–

$$\text{क्षेत्रीय सकेन्द्रण} = \frac{\text{एक लोकसभा एव विधान सभा मे प्राप्त मत प्रतिशत}}{\text{पूरे जिले मे प्राप्त प्रतिशत का औसत मतदान}} \times 100$$

गणना के उपरान्त लोकसभा एवं विधानसभा के प्राप्त परिणामों को पांच श्रेणीयों में विभक्त किया गया है। यथा–उच्चतम, उच्च, मध्यम, निम्न, निम्नतम। लोकसभा एवं विधानसभा के मतदान का सकेन्द्रण प्रतिशत निम्नवत है–

i) उच्चतम मतदान संकेन्द्रण क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 115 प्रतिशत से अधिक मतदान संकेन्द्रण वाले क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं।

ii) उच्च मतदान संकेन्द्रण क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 100 से 115 प्रतिशत मतदान संकेन्द्रण वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है।

iii) मध्यम मतदान संकेन्द्रण क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 85 से 100 प्रतिशत मतदान संकेन्द्रण वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है

iv) निम्न मतदान संकेन्द्रण क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 70 से 85 प्रतिशत मतदान संकेन्द्रण वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

v) निम्नतम मतदान संकेन्द्रण क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 70 प्रतिशत से कम मतदान संकेन्द्रण वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

5.2.1–लोकसभा मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण : प्रस्तुत अनुभाग में 1952 से 1991 तक लोकसभा निर्वाचन का मतदान संकेन्द्रण प्रस्तुत किया गया है। निर्वाचन में प्राप्त मतदानों का सापेक्ष स्थिति का मानचित्रण चित्र 5.5.1 एवं 5.5.2
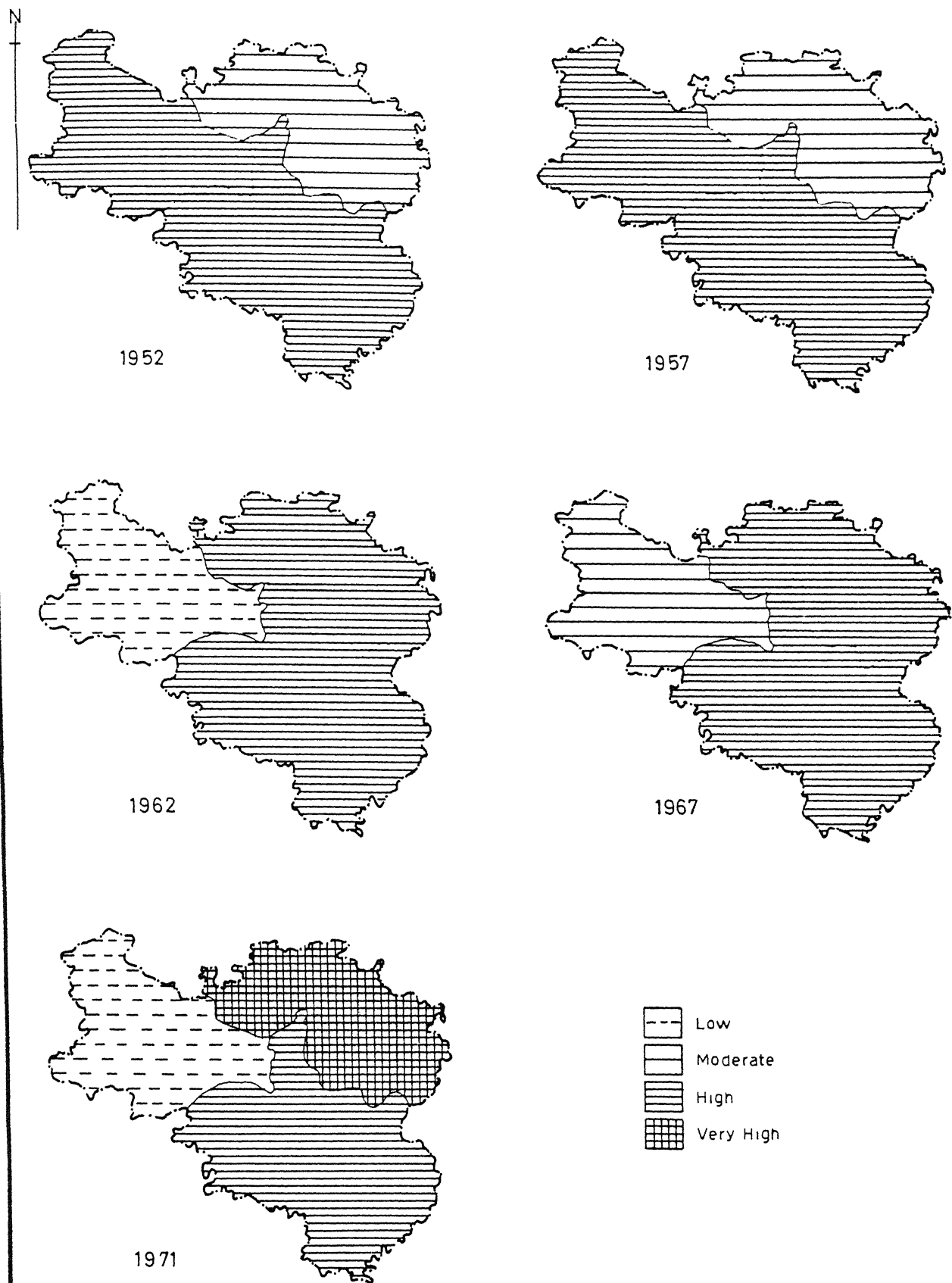
Fig.5 51 Spatial Concentration of Turnout 1952 to 1971 (Per cent) Loke Sabha
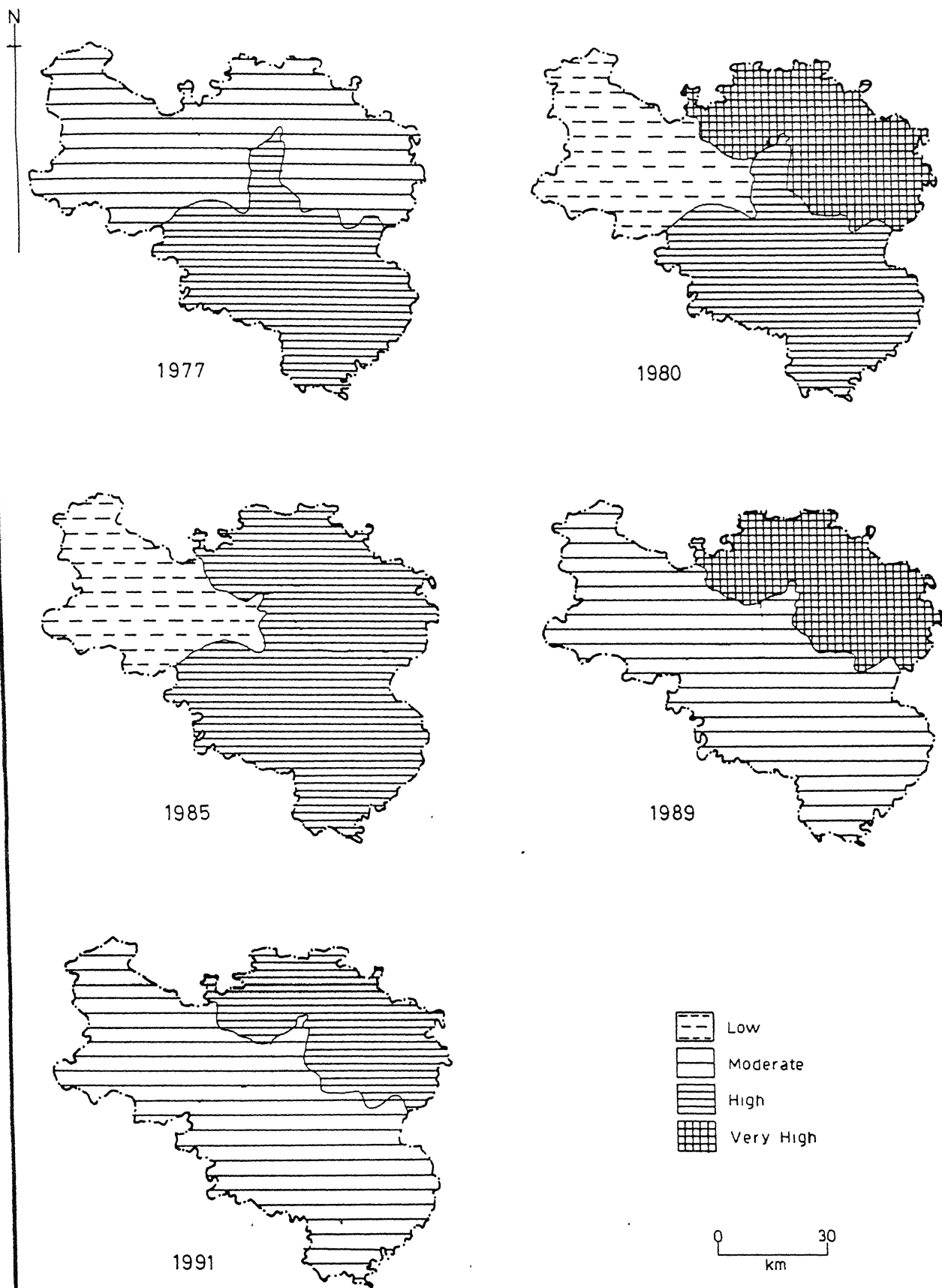
Fig. 5.5.2 Spatial Concentration of Turnout 1977 to 1991 (Per cent) Loke Sabh

में प्रदर्शित किया गया है। गणनानुसार लोकसभा मतदान के संकेन्द्रण का निम्न प्रतिरूप परिलक्षित हुआ है।

5.2.1.1—उच्चतम संकेन्द्रण : इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1971, 1980, 1989 में फूलपुर लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित है। फूलपुर संसदीय क्षेत्र इलाहाबाद जिले का महत्वपूर्ण क्षेत्र था, स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़े राजनीतिज्ञों के कारण यहाँ सकेन्द्रण उच्चतम रहा।

5.2.1.2—उच्च सकेन्द्रण : उच्च मतदान के संकेन्द्रण वाले क्षेत्र के अन्तर्गत इलाहाबाद जिले के निम्न संसदीय क्षेत्र सम्मिलित हैं। 1952 के निर्वाचन में इलाहाबाद (पूरब), 1957 में इलाहाबाद, 1962, 67 के निर्वाचन में इलाहाबाद, फूलपुर; 1977 में इलाहाबाद, फूलपुर, 1980 में इलाहाबाद; 1985 में इलाहाबाद, फूलपुर, 1991 में फूलपुर। मानचित्रानुसार उच्च संकेन्द्रण जिले के मध्य भाग में विभिन्न निर्वाचन वर्षों में विस्तारित था। दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि इलाहाबाद में उच्च संकेन्द्रण लगभग इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में ही रहा।

5.2.1.3—मध्यम संकेन्द्रण : मध्यम मतदान संकेन्द्रण के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1952, 89, 91 में इलाहाबाद लोकसभा, 1957 में फूलपुर लोकसभा, 1977 67, 89, 91 में चायल लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं। मध्यम संकेन्द्रण के अन्तर्गत चायल लोकसभा सभा क्षेत्र सर्वाधिक बार सम्मिलित हुआ है।

5.2.1.4—निम्न संकेन्द्रण : निम्न संकेन्द्रण के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1962, 1971, 80, 85 तीनों वर्षों में चायल लोकसभा सम्मिलित है।

5.2.1.5—निम्नतम संकेन्द्रण : इलाहाबाद जिले के किसी भी संसदीय क्षेत्र में निम्नतम संकेन्द्रण नहीं था। यहाँ की जनता दूसरे शब्दों में जनमत लोकसभा चुनावों के लिए पूर्णतः जागरूक था।
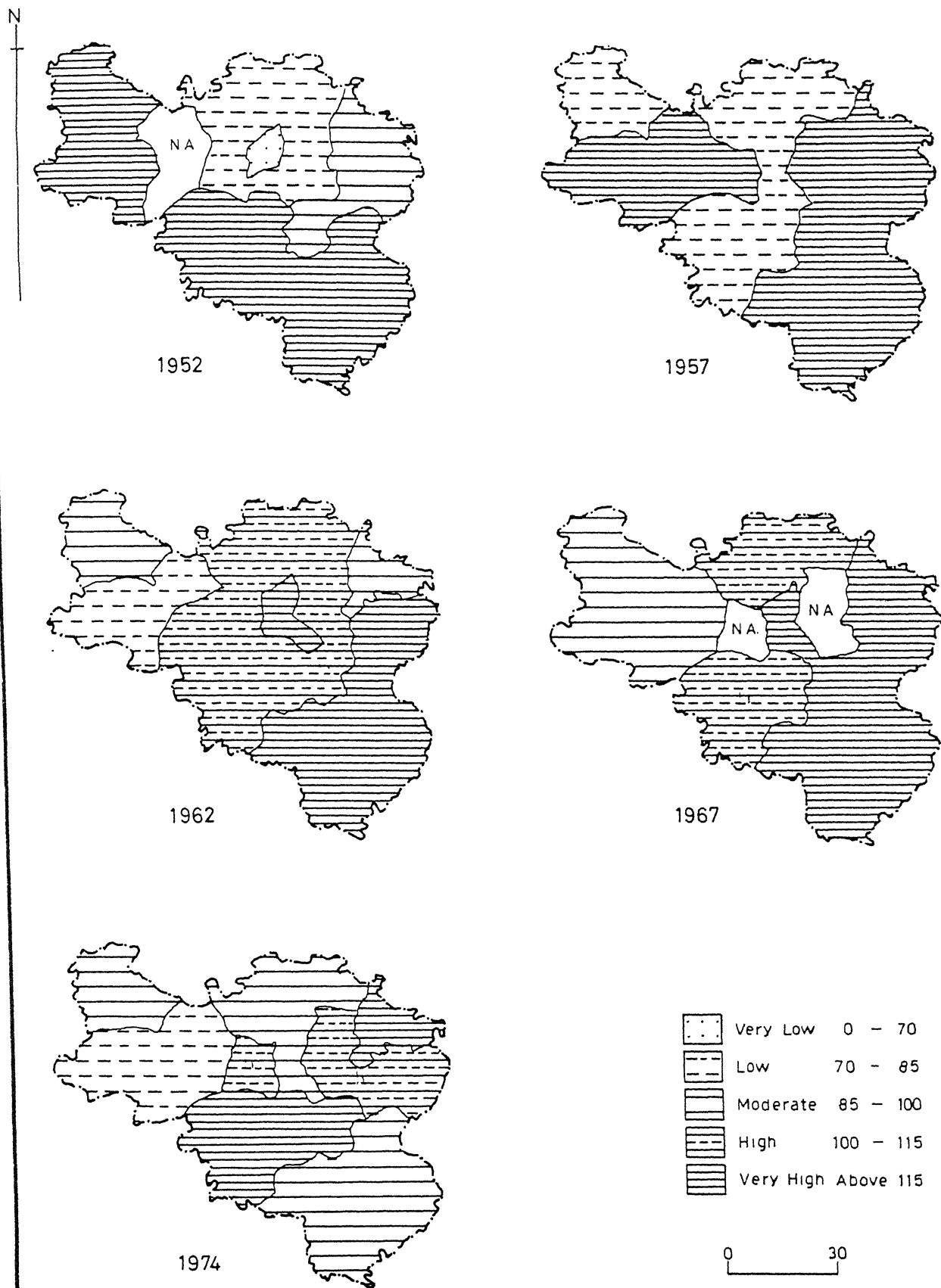
Fig. 5.6.1 Spatial Concentration of Turnout 1952 to 1974 (Per cent) Vidhan Sabha
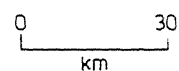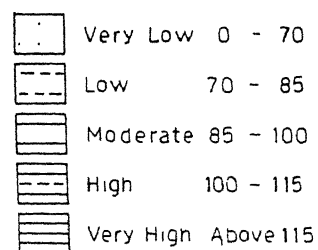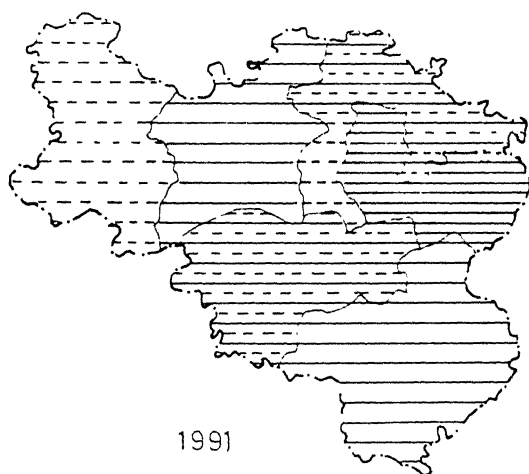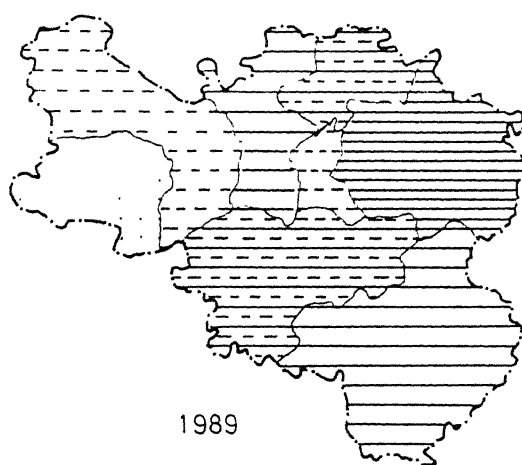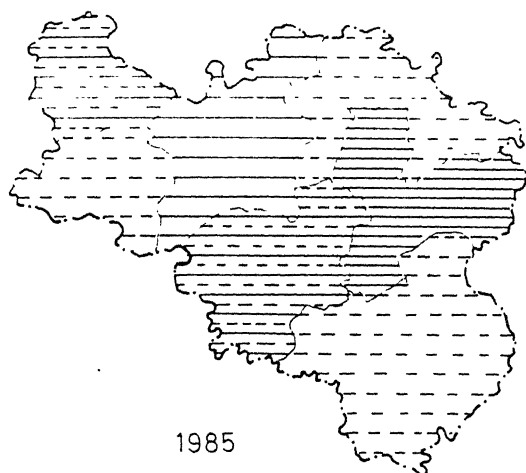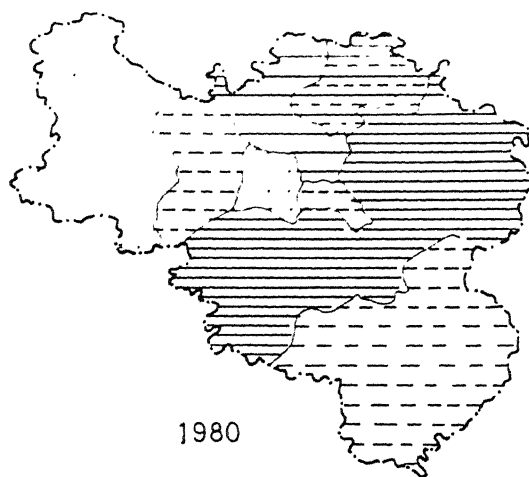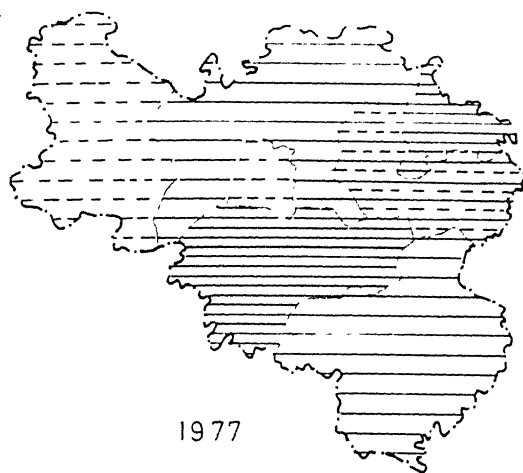
Fig. 5.6.2 Spatial Concentration of Tournout 1977 to 1991 (Percent) Vidhan Sa:

5.2.2—विधान सभा मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण (1952—1991) :

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जनपद के विधानसभाओं का क्षेत्रीय संकेन्द्रण 1952—91 तक प्रस्तुत किया गया है। विधान सभा निर्वाचन में प्राप्त मतों की सापेक्ष स्थिति का निरूपण मानचित्र 5.6.1 एवं 5.6.2 में प्रदर्शित किया गया है। क्षेत्रीय संकेन्द्रण गणना के उपरान्त निम्न रूपों में उभरा है। सर्वाधिक विधान सभाओं में उच्चतम सकेन्द्रण था जबकि निम्नतम संकेन्द्रण सीमित मात्र विधानसभा क्षेत्रों में स्थापित है। सम्पूर्ण संकेन्द्रण का प्रतिरूप निम्नानुसार है।

5.2.2.1—उच्चतम संकेन्द्रण : इलाहाबाद जिले के निम्न विधान सभा क्षेत्रों में उच्चतम संकेन्द्रण विद्यमान था। वर्ष 1952 में मेजा और करछना दक्षिणी, करछना उत्तरी और चायल दक्षिणी, मंझनपुर और सिराथू वर्ष 1957 में मेजा, फूलपुर, चायल, मंझनपुर, केवाई वर्ष 1962 में मेजा, केवाई, इलाहाबाद (उ0), इलाहाबाद (द0) वर्ष 1967 में मेजा, करछना, हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद (दक्षिणी) इलाहाबाद (उत्तरी), वर्ष 1974 में करछना, बारा, प्रतापपुर वर्ष 1977 में बारा करछना, प्रतापपुर, वर्ष 1980 के निर्वाचन में करछना, बारा, झूंसी, हंडिया, प्रतापपुर। वर्ष 1985 में करछना, झूंसी, हंडिया, वर्ष 1989 में झूंसी, हंडिया, प्रतापपुर, वर्ष 1991 के निर्वाचन में झूसी, हंडिया।

उच्चतम संकेन्द्रण मेजा विधानसभा क्षेत्र में निर्वाचन वर्ष 1952 से 1967 के निर्वाचन तक सतत बिद्यमान था, जबकि 1980 के निर्वाचन से 1991 तक के निर्वाचन में सतत् झूंसी एवं हंडिया विधान सभा में उच्चतम संकेन्द्रण था।

5.2.2.2—उच्च संकेन्द्रण : निर्वाचन वर्ष 1952, 1957 में इलाहाबाद जिले के किसी भी विधान सभा में उच्च संकेन्द्रण नही था। उच्च संकेन्द्रण प्रथमतः 1962 से प्रारम्भ हुआ। 1962 के निर्वाचन में करछना, बारा, झूंसी, सोरांव, सोरांव

(पश्चिमी), चायल विधान सभा क्षेत्र में सकेन्द्रण उच्च था जबकि निर्वाचन वर्ष 67 में बारा, सोरांव, नवाबगंज, 1974 में झूंसी, हंडिया, इलाहाबाद पश्चिमी, 1977 में झूंसी हंडिया, 1980 में सोरांव, 1985 में बारा, इलाहाबाद (दक्षिणी), सिराथू, 1989 में करछना, बारा, सोरांव, 1991 के निर्वाचन में करछना, प्रतापपुर, सोरांव बारा में उच्च संकेन्द्रण था।

5.2.2.3—मध्यम संकेन्द्रण : मध्यम संक्रेन्द्रण इलाहाबाद जिले के उत्तर पश्चिम में सर्वाधिक वर्षो में रहा। इसके अन्तर्गत वर्ष 1952 में फूलपुर पूर्व एवं हंडिया (उत्तर, पश्चिम), हंडिया (दक्षिण) वर्ष 1962 में फूलपुर, सिराथू, 1967 में चायल, मंझनपुर, सिराथू, 1974 में मेजा, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी); इलाहाबाद (दक्षिणी) सिराथू, 1977 में मेजा, सोरांव नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद दक्षिणी, चायल, 1980 में नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी); 1985 में नवाबगंज इलाहाबाद (पश्चिमी), चायल, 1989 में इलाहाबाद पश्चिमी, नवाबगंज, मेजा,; 1991 में मेजा, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल सम्मिलित है। मानचित्र से स्पष्ट है कि नवाबगंज, एवं इलाहाबाद में प्रायः मध्यम संकेन्द्रण था।

5.2.2.4—निम्न संकेन्द्रण : इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न विधान क्षेत्र विभिन्न वर्षों में सम्मिलित है। वर्ष 1952 के निर्वाचन में फूलपुर दक्षिणी, फूलपुर, सोरांव, सोरांव दक्षिणी, इलाहाबाद पूर्व एवं चायल विधानसभा निम्न संकेन्द्रण के अन्तर्गत सम्मिलित थे। इसी प्रकार वर्ष 1957 में इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद दक्षिणी, सोरांव (पूर्व), सोरांव पश्चिम, करछना, केवाई, 1962 में भरवारी, करारी; 1974 में चायल, मंझनपुर, वर्ष 1977 में इलाहाबाद पश्चिम, मंझनपुर, सिराथू, 1980 में इलाहाबाद (दक्षिणी), चायल, मेजा, 1985 में मेजा, प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद (उत्तरी); मंझनपुर, 1989 में सिराथू चायल, इलाहाबाद (उ0) इलाहाबाद (दक्षिणी)

1991 में सिराथू, मंझनपुर, इलाहाबाद (उत्तरी), इलाहाबाद (दक्षिणी) विधानसभा निम्न सकेन्द्रण के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

5.2.2.5–निम्नतम संकेन्द्रण : निम्नतम संकेन्द्रण इलाहाबाद जिले में विभिन्न वर्षों में विभिन्न भागों में व्याप्त था। इस वर्ग के अन्तर्गत निम्न संकेन्द्रण 10 निर्वाचनों में मात्र 5 विधानसभाओं में रहा। वर्ष 1952 में इलाहाबाद पश्चिमी, मंझनपुर, सिराथू, 1989 में मंझनपुर भी निम्नतम संकेन्द्रण था।

षष्ठम् अध्याय

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) समर्थन

6. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) समर्थन

लोकतन्त्र के लिए राजनीतिक दल आवश्यक तन्त्र है क्योंकि इन्ही के द्वारा जनमत की बात ऊपर तक पहुँचती है सरकार की किसी भी नीति से जन साधारण असंतुष्ट है तो इन्ही के माध्यम से जनमत की अभिव्यक्ति होती है जिससे सरकार अपने कार्यो एवं दायित्वों में बदलाव लाती है जो जनता के अनुरूप होता है।

प्रस्तुत अध्याय भारतीय कांग्रेस (आई) के विवेचन एवं विश्लेषण से सम्बन्धित है विश्लेषण में सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्याय को छः अनुभागों में बांटा गया है। प्रथम अनुभाग में लोकसभा के स्थानिक वितरण एवं जेडलब्धि को 1952 से 1991 तक के निर्वाचन का प्रसतुत किया गया है। द्वितीय अनुभाग में 1952–91 तक के निर्वाचन का स्थानिक एवं जेडलब्धि वितरण दर्शाया गया है। तृतीय अनुभाग में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) के क्षेत्रीय संकेन्द्रण को प्रस्तुत किया गया है। क्षेत्रीय संकेन्द्रण के दो भागों से विश्लेषित किया गया है प्रथम भाग में लोकसभा निर्वाचन का संकेन्द्रण (1952–91) एवं द्वितीय भाग में विधान सभा निर्वाचन संकेन्द्रण 1952–91 प्रस्तुत किया गया है। अनुभाग चार ने विजयी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) दल को समीक्षात्मक रूप में दर्शाया गया है। पंचम अनुभाग में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) की जीत के कारण को प्रदर्शित किया गया है। षष्टम् अनुभाग में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) दल के पराजय के कारणों को निरूपित किया गया है।

6.1 लोकसभा चुनाव में समर्थन (1952–91) : प्रस्तुत अनुभाग में लोकसभा चुनाव में विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) का
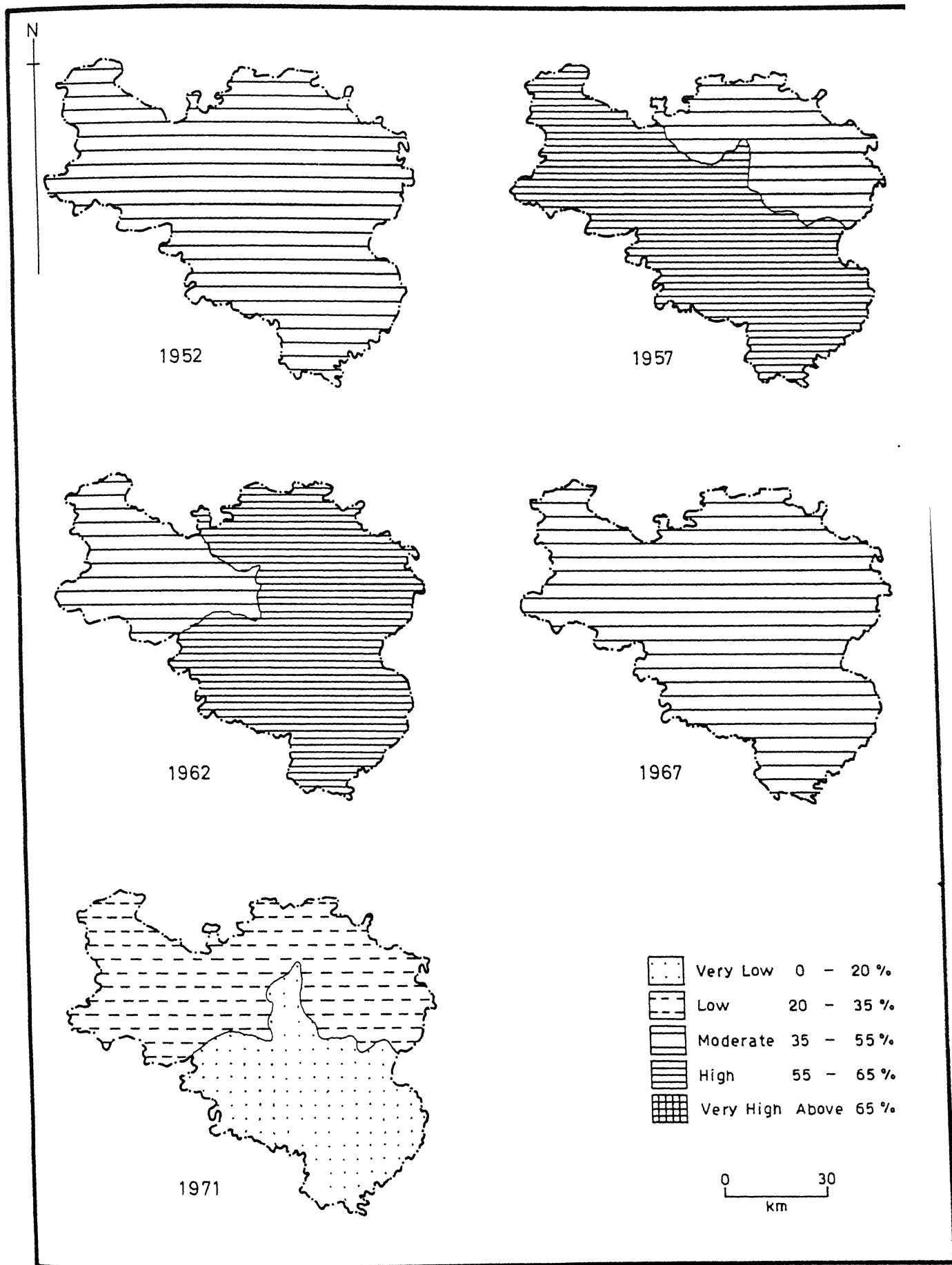
Fig. 6.1.1 Absolute Distribution of Congress(I) Votes 1952 to 1971 (Per cent) Loke Sabha
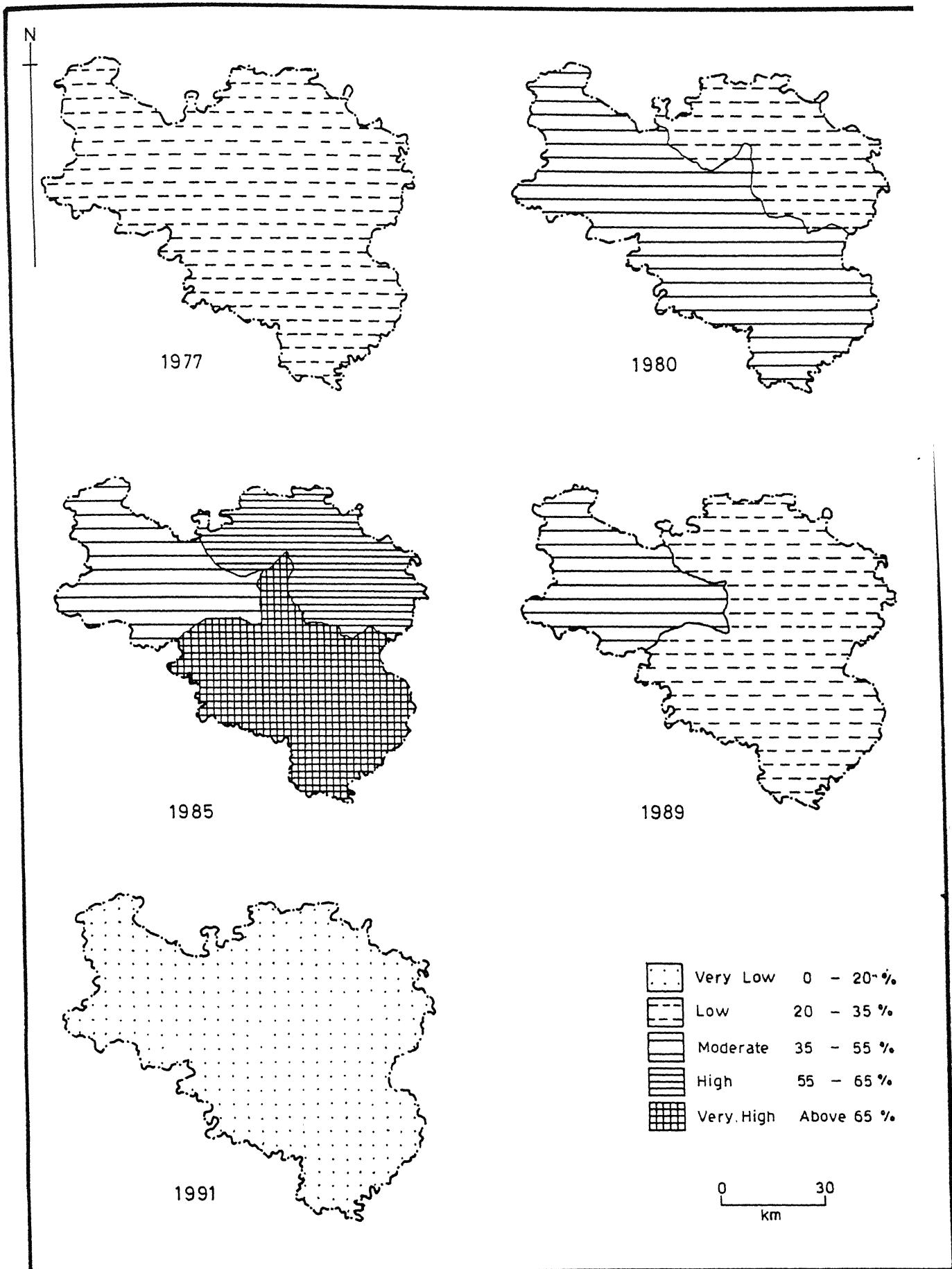
Fig. 6.1.2 Absolute Distribution of Congress(I) Votes 1977 to 1991 (Per cent)
Loke Sabha

समर्थन मानचित्र 6.1.1 एवं 6.1.2 मे निरूपित किया गया है। सांख्यकीय विधि द्वारा समर्थन में स्थानिक वितरण एवं जेड लब्धि को प्रस्तुत किया गया है।

6.1.1 स्थानिक वितरण प्रतिशत में (1952–91) : मानचित्र 6.1.1 एवं 6.1.2 के अनुसार कांग्रेस (आई) के वास्तविक वितरण में असमानता है। किसी–2 निर्वाचन क्षेत्र में कांग्रेस (आई) लगातार निर्वाचन वर्षों में विजयी पार्टी रही है। किसी–2 क्षेत्र में 1952–91 तक के निर्वाचन में एक या दो बार विजय प्राप्त की है। अध्ययन की सुविधानुसार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) के समर्थन को 5 भागों में प्रस्तुत किया गया है।

1. उच्चतम समर्थन क्षेत्र (65 प्रतिशत से अधिक)
2. उच्च समर्थन क्षेत्र (55 से 65 प्रतिशत)
3. मध्यम समर्थन क्षेत्र (35 से 55 प्रतिशत)
4. निम्न समर्थन क्षेत्र (20 से 35 प्रतिशत)
5. निम्नतम समर्थन क्षेत्र (20 से कम)

6.1.1.1 उच्चतम समर्थन क्षेत्र : विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) ने मात्र इलाहाबाद संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से उच्चतम समर्थन 1985 के निवाचन में प्राप्त किया। शेष निर्वाचन वर्षों में अधिकांशतः मध्यम समर्थन प्राप्त की। विभिन्न परिस्थितियों से गुजरने के उपरान्त भी कांग्रेस दल का समर्थन शहरी क्षेत्र में 1985 में भी विद्यमान रहा अर्थात् शिक्षित, नगरीय मतदाता कांग्रेस के प्रति आज भी आकर्षित है। इसका कारण अन्य दलों द्वारा राष्ट्रीय दल की भूमिका को निभाने में अक्षम होना या अपने में एकता को कायम न कर पाना।

6.1.1.2 उच्च समर्थन क्षेत्र : उच्च समर्थन क्षेत्र के अन्तर्गत उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है जहाँ कांग्रेस (आई) ने कुल वैध मतों का 53 से 65 प्रतिशत समर्थन प्राप्त किया। इसके अन्तर्गत इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में निर्वाचन वर्ष 1957, 62, 67, 71 में लगातार उच्च समर्थन प्राप्त किया जब कि 1962 में फूलपुर 1971 में चायल एवं फूलपुर। वर्ष 1977 के निर्वाचन में सम्पूर्ण इलाहाबाद जिले में कांग्रेस ने उच्च समर्थन प्राप्त किया जबकि 85 में मात्र फूलपुर में कांग्रेस को उच्च समर्थन मिला।

विभिन्न निर्वाचन वर्षों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि कांग्रेस का स्थायी एवं निश्चित जन समर्थन है कभी–2 वह पराजित तब हो जाती है जब सभी दल एक साथ हो जाते हैं।

6.1.1.3 मध्यम समर्थन क्षेत्र : इसके अन्तर्गत 35 से 55 प्रतिशत समर्थन वाले क्षेत्र सम्मिलित हैं। निर्वाचन वर्ष 1952 से इलाहाबाद जिला (पश्चिम) इलाहाबाद जिला (पूर्व एवं जौनपुर) सम्मिलित है फुलपुर संसदीय क्षेत्र में निर्वाचन वर्ष 1957, 85 में मध्यम समर्थन था। 1967 में तीनों लोकसभा क्षेत्रों में मध्यम समर्थन था। चायल संसदीय क्षेत्र निर्वाचन वर्ष 1962, 80, 85, 89 में 35 से 53 प्रतिशत के मध्य मतदाताओं का समर्थन था। निर्वाचन वर्ष 80 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में मध्यम समर्थन कांग्रेस को प्राप्त हुआ।

6.1.1.4 निम्न समर्थन क्षेत्र : 20 से 35 प्रतिशत वैध मतों का समर्थन जिन क्षेत्रों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) को प्राप्त हुआ वे निम्न समर्थन क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं निम्न प्रतिशत प्राप्त क्षेत्रों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) पराजित हुई। इसके अन्तर्गत 67 में फूलपुर, चायल, 80 में फूलपुर 1989 में इलाहाबाद एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र सम्मिलित हैं।

6.1.1.5 निम्नतम समर्थन क्षेत्र : 20 प्रतिशत से कम वाले क्षेत्र इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं वर्ष 1991 में निर्वाचन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) निम्न समर्थन इलाहाबाद की तीनों संसदीय क्षेत्र में प्राप्त की है। चायल, इलाहाबाद, फूलपुर में क्रमशः 11.36, 15.90, 6.1 प्रतिशत मत प्रापत कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) ने निम्नतम समर्थन प्राप्त किया। निम्नतम समर्थन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) को नवीनतम चुनावों में प्राप्त हुआ क्योंकि दल में राजनेताओं की अपनी स्वार्थपरता के कारण विभाजन, का होना जिससे दल की छवि गिर गई।

6.1.2 जेडलब्धि : प्रस्तुत अनुभाग में लोकसभा निर्वाचन में कांग्रेस (आई) को प्राप्त कुल मत प्रतिशत को जोडलब्धि के माध्यम से प्रदर्शित कर विश्लेषित किया गया हैं विभिन्न वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) के जेडलब्धि तल के अध्ययन से स्पष्ट होता है इसमें विभिन्न संसदीय क्षेत्र में कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ है। विभिन्न वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) जेडलब्धि तल मानचित्र 6.2.1 एवं 6.2.2 के अनुसार निम्न रूप में प्रकट होता है–

6.1.2.1 उच्चतम क्षेत्र : जनपद इलाहाहाबाद के किसी भी संसदीय क्षेत्र का जेड लब्धि उच्चतम नहीं रहा। क्योंकि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) 1952 से 1991 तक प्रायः मध्यम जनमत से पूर्ण बहुमत में आती थी।

6.1.2.2 उच्च : मानचित्र से स्पष्ट है कि इसके अन्तर्गत विभिगन्न वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) का जेडलब्धि तल इस प्रकार है। इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र में 1991, 1985, 1989, 1980, 1977, 1971, 1967, 62 में उच्च जेड लब्धि तल रिही। अर्थात शहरी क्षेत्र का जेड लब्धितल लगभग वर्षों में उच्च रहा। केवल 1989 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र में उच्च 'Z' लब्धि रही।

6.1.2.3 मध्यम क्षेत्र : इस वर्ग के अन्तर्गत मध्यम 'Z' लब्धितल मात्र की प्रवृत्ति इस प्रकार रही। चायल (1991); चायल (1989) तथा फूलपुर संसदीय क्षेत्र में 1980, 1985, 1979, 1971, 1967, 1962 मध्यम 'Z' लब्धि रही।

6.1.2.4 निम्न क्षेत्र : इस वर्ग में 'Z' लब्धितल विभिन्न वर्षों में निम्नप्रकार थी– वर्ष–1981 में फूलपुर में निम्न 'Z' लब्धितल विद्यमान थी। इसके अतिरिक्त चायल संसदीय क्षेत्र में वर्ष 1980, 1985, 1977, 1971, 1967, 1962 में निम्न 'Z' लब्धितल विधमान रही।

6.1.2.5 निम्नतम : निम्नतम 'Z' लब्धि तल किसी भी संसदीय क्षेत्र में किसी भी वर्ष में नहीं रही।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्नतम 'Z' लब्धि किसी भी क्षेत्र में नहीं रही जबकि उच्च, मध्यम, निम्न 'Z' लब्धि विभिन्न वर्षों में विभिन्न संसदीय क्षेत्रों में विधमान् रही।

6.2 विधान सभा चुनाव में कांग्रेस (आई) समर्थन (1952–91 तक)

प्रस्तुत अनुभाग में विधानसभा निर्वाचन में कांग्रेस (आई) के समर्थन को विभिन्न वर्षों में (1952–91) तक प्रदर्शित किया गया है। विभिन्न निर्वाचन वर्षों में कांग्रेस (आई) के स्थानिक समर्थन एवं 'Z' लब्धि को दर्शित किया गया है। स्वतन्त्रता से लेकर अब तक कांग्रेस (आई) के जनमत समर्थन का सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है क्योंकि स्वतन्त्रता के समय में कांग्रेस (आई) भारत की एक मात्र पार्टी थी। जनमत के पास इसके अलावा कोई विशेष विकल्प नहीं था जो दल थे भी वे विखरे हुए थे एवं जनमत में उनका कोई महत्व नहीं था। विश्लेषण में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि धीरे–धीरे कांग्रेस (आई) का वर्चस्व किस प्रकार खत्म हुआ।
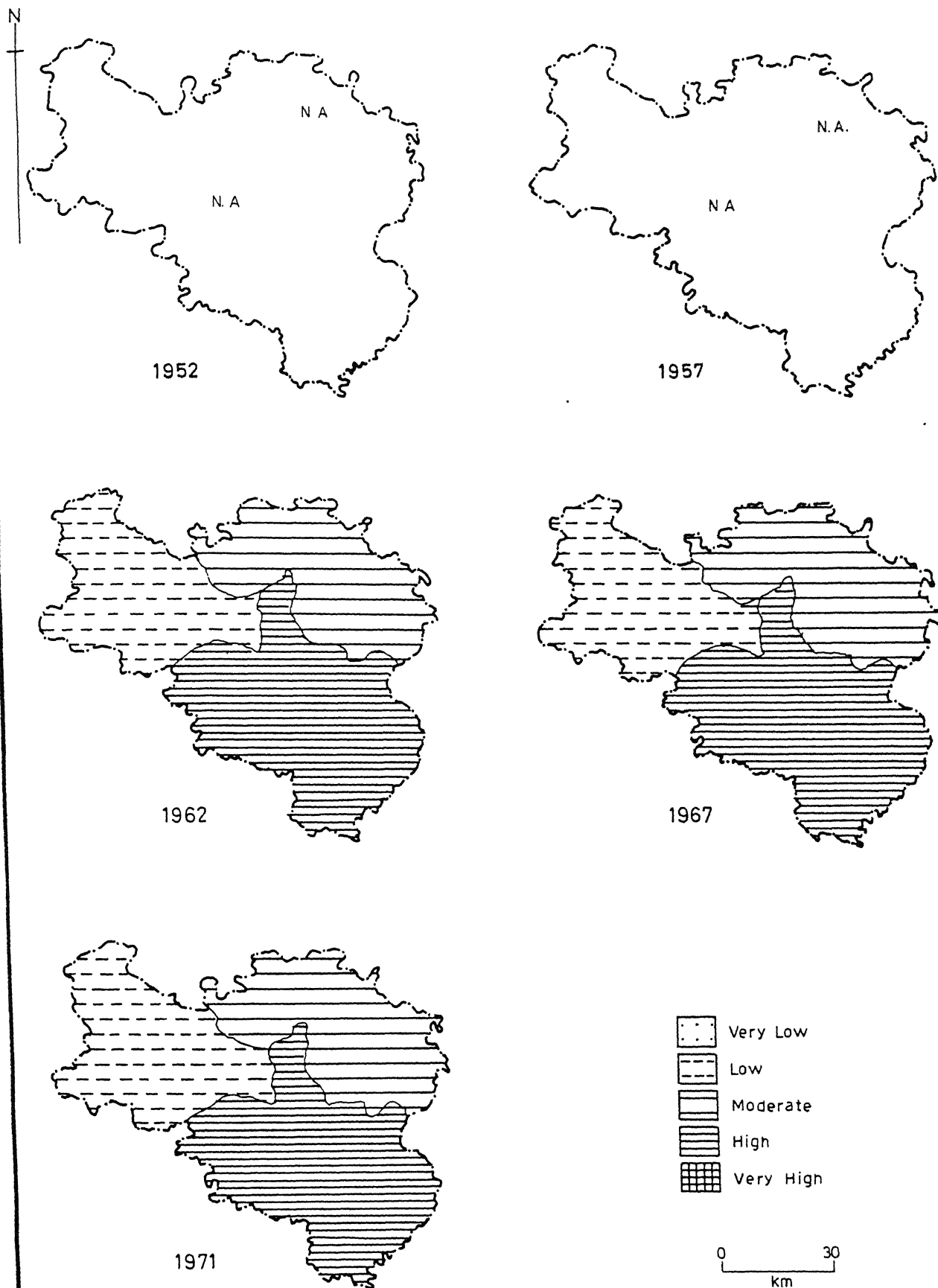
Fig. 6.2.1 Distribution of Congress (I) Votes (Z Score) 1952 to 1971 : Loke Sabha
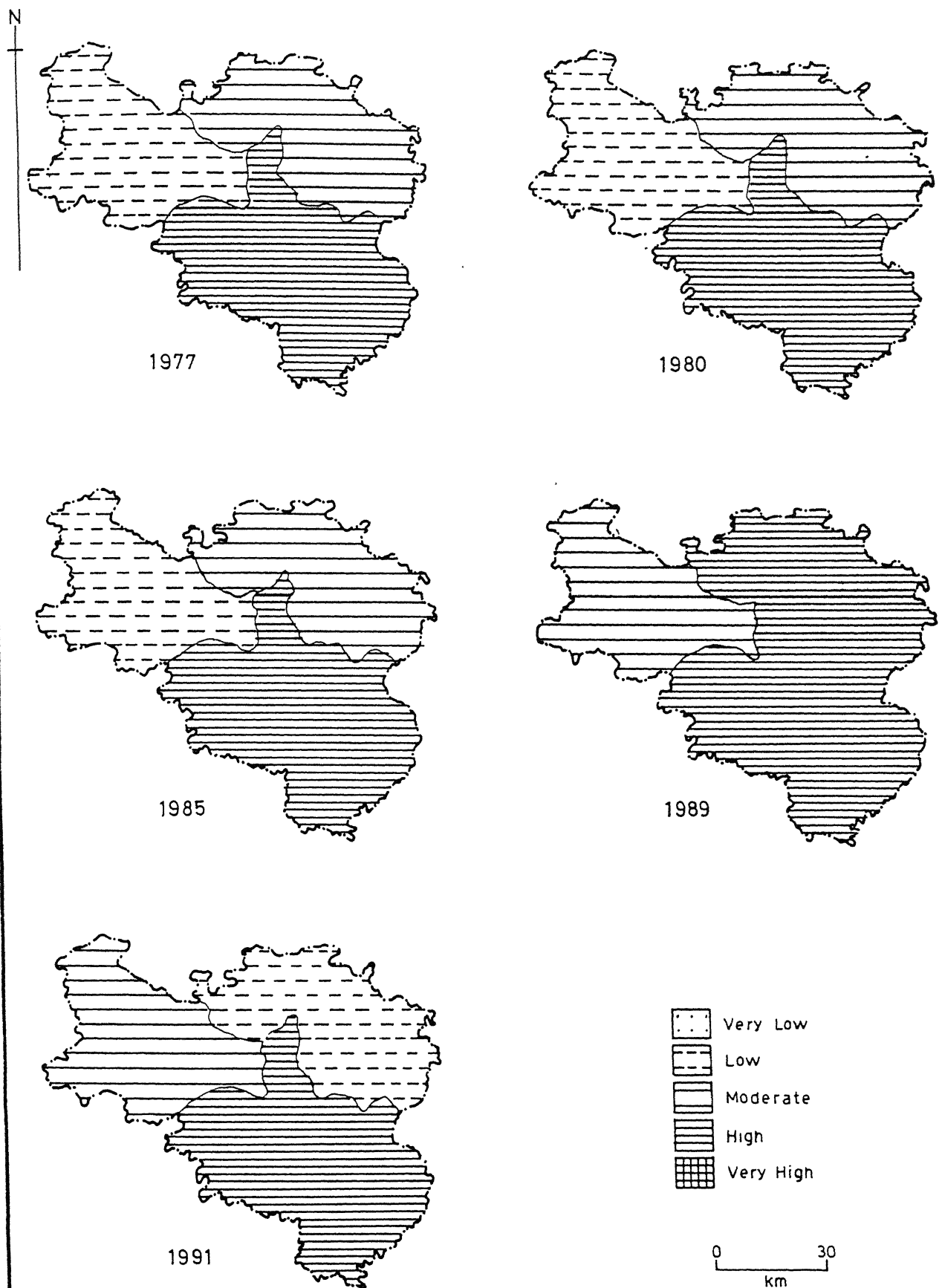
Fig. 6.2.2 Distribution of Congress (I) Votes (Z Score) 1977 to 1991: Loke Sabha

6.2.1 स्थानिक वितरण प्रतिशत में (1952–91) : 1952 से 1991 तक के विधान सभा निर्वाचन में प्राप्त कांग्रेस (आई) के वितरणों को मानचित्र 6.3. 1 एवं 6.3.2 प्रस्तुत किया गया है। मानचित्रानुसार स्थानिक वितरण का प्रतिरूप निम्न रूपों में स्पष्ट होता है। सम्पूर्ण निर्वाचन वर्षों में कांग्रेस (आई) के समर्थन के अवलोकन से स्पष्ट है कि इसका समर्थन निम्न रूपों में है।

6.2.1.1 उच्चतम समर्थन क्षेत्र : इसके अन्तर्गत 65 प्रतिशत से अधिक समर्थन वाले क्षेत्र सम्मिलित हैं। 1952 से 1991 तक के निर्वाचन में मात्र दो क्षेत्रों से कांग्रेस को उच्चतम समर्थन प्राप्त हुआ। 1952 के निर्वाचन में सोरांव उत्तर एवं फूलपुर विधान क्षेत्र से कांग्रेस (आई) ने कुल वैधमतों का 69.32 प्रतिशत मत प्राप्त की। इसी तरह 1962 के निर्वाचन से 69.91 प्रतिशत मत फूलपुर विधानसभा क्षेत्र से प्राप्त की थी। स्पष्ट है कि उक्त दोनों बार मूल रूप से उच्चतम समर्थन फूलपुर एवं उसके आस–पास ही प्राप्त हुआ। जहाँ जनमत पर पंडित नेहरू की छवि स्पष्ट रूप से प्रभावशाली थी।

6.2.1.2 उच्च समर्थन क्षेत्र : उच्च समर्थन क्षेत्र में उच्चतम समर्थन क्षेत्र की आस–पास की विधान सभायें सम्मिलित हैं। इसके अन्तर्गत 1952 में सोरांव दक्षिण, चायल, 1957 में सोरांव (पूर्व), के 1962 में सोरांव पूर्व, 1985 में चायल विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित हैं। मानचित्र से स्पष्ट है कि चायल एवं उसके आस–पास के क्षेत्र में प्रायः कांग्रेस (आई) को उच्च समर्थन प्राप्त होता रहा। उच्च समर्थन के अन्तर्गत 55 से 65 प्रतिशत वोट समर्थन को सम्मिलित किया गया है।

6.2.1.3 मध्यम समर्थन क्षेत्र : इसके अन्तर्गत उन विधान सभा को सम्मिलित किया गया है जिसमें कांग्रेस (आई) को 35 से 55 प्रतिशत मत समर्थन
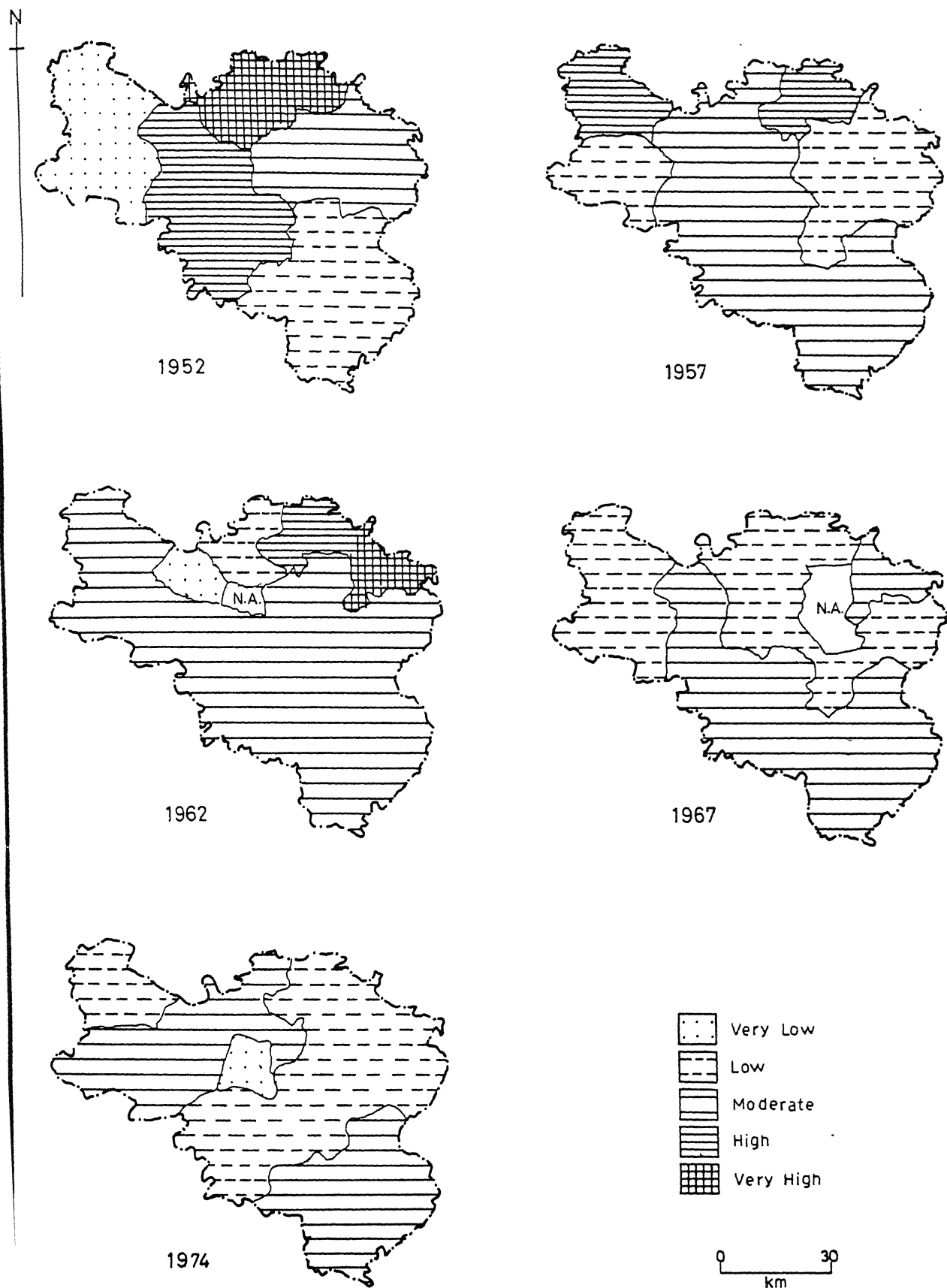
Fig. 6.3.1 Absolute Distribution of Congress (I) Votes 1952 to 1974 (Per cent): Vidhan Sabha
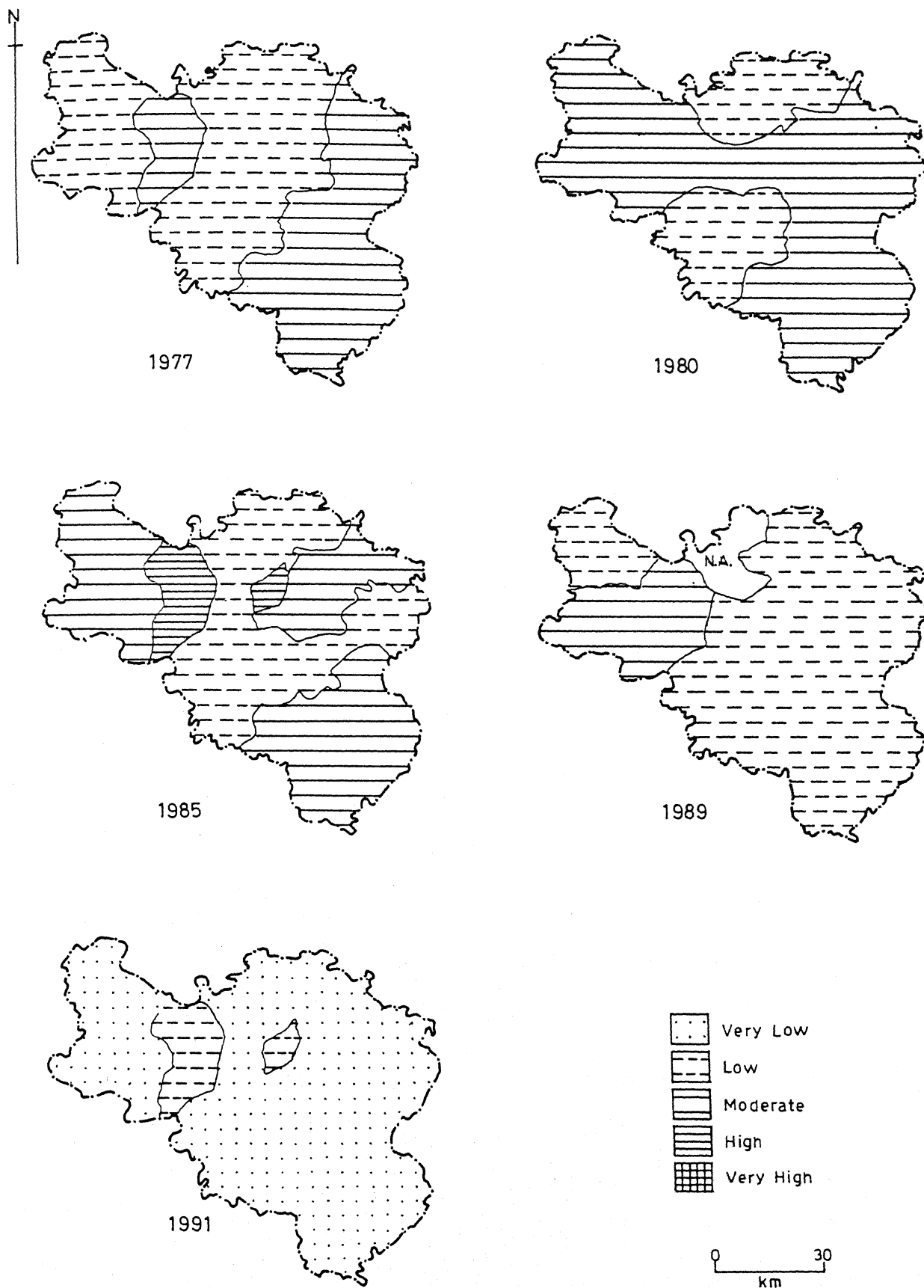
Fig. 6.3.2 Absolute Distribution of Congress (I) Votes 1977 to 1991 (Per cent): Vidhan Sabha

प्राप्त हुआ है। कांग्रेस (आई) को 1952 में फूलपुर पूर्व एवं हंडिया उत्तर, फूलपुर दक्षिण, हंडिया दक्षिण, इलाहाबाद शहर मध्य, इलाहाबाद पूर्व में मध्यम समर्थन प्राप्त हुआ। 1957 में मेजा, करछना, सोरांव पश्चिम, चायल, इलाहाबाद (मध्य), इलाहाबाद शहर (दक्षिण); 1962 में मेजा, करछना; बारा, झूंसी, केवाल, इलाहाबाद शहर (उत्तर), इलाहाबाद दक्षिण, चायल, सिराथू, भरवारी में मध्यम समर्थन प्राप्त हुआ। इसी प्रकार विभिन्न वर्षों में मध्यम समर्थन निम्न क्षेत्रों में रहा–

1967 – मेजा, जसरा, प्रतापपुर, चायल, भरवारी

1974 – मेजा, नवाबगंज, इलाहाबाद (उ0), चायल, मंझनपुर

1977 – मेजा, करछना, हंडिया, प्रतापपुर, चायल

1980 – मेजा, करछना, झूँसी, हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल मंझनपुर, सिराथू।

1985 – मेजा, झूंसी, प्रतापपुर, इलाहाबाद (दक्षिणी) मंझनपुर, सिराथू

1989 – चायल, मंझनपुर।

उपरोक्त विधान सभा क्षेत्र में कांग्रेस को चूंकि मध्यम समर्थन प्राप्त हुआ। इसलिए अधिकांश विधान सभाओं में उसे पराजय का सामना करना पड़ा। जिसमें 1962 में करछना, इलाहाबाद, शहर दक्षिणी, 1977 में मेजा; करछना, हंडिया, प्रतापपुर चायल, 1980 में झूंसी प्रमुख है।

6.2.1.4 निम्न समर्थन क्षेत्र : कांग्रेस (आई) को निम्न समर्थन प्रारम्भ के चुनावों में कम विधान सभाओं में प्राप्त होता था अर्थात् अधिकांश जनमत कांग्रेस के पक्ष में होता था, किन्तु 1974, 77, 80, 89 में विधान सभाओं में इसे निम्न समर्थन मिला। 1991 में पुनः परिस्थिति बदली और इसे मात्र दो विधानसभा में

निम्न समर्थन प्राप्त हुआ। **निम्न** समर्थन के अन्तर्गत **ऐसे** क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है जहॉ पर कांग्रेस (आई) को 20 से 35 प्रतिशत मत समर्थन मिला। इसके अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में कांग्रेस (आई) की स्थिति निम्न प्रकार रही।

वर्ष 1952 के निर्वाचन में निम्न समर्थन क्षेत्र मेजा एवं करछना, करछना उत्तर एवं चायल दक्षिणी 1957 में फूलपुर; मंझनपुर 1962 में सोरांव पश्चिमी, 1967 नवाबगंज, सिराथू था अर्थात् इन वर्षों में 2 या 1 विधान सभा क्षेत्र में निम्न समर्थन रहा किन्तु 1962 के बाद स्थिति में परिवर्तन हुआ और उसे अधिकांश क्षेत्रों में निम्न समर्थन मिला जिसका विवरण निम्ननुसार है–1967 में 14 में से 8 विधानसभा क्षेत्रों–करछना, सोरांव, हंडिया, बहादुरपुर, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद शहर (उत्तर) इलाहाबाद दक्षिण, मंझनपुर निम्न समर्थन था। 1974 में– फिर वही स्थिति रही और उसे करछना, बारा, झूंसी, हंडिया प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद दक्षिणी, सिराथू में निम्न समर्थन मिला। 1967 एवं 74 की भाँति 1977 में उसे 14 में से 9 विधान सभाओं में निम्न समर्थन प्राप्त हुआ जो इसे प्रकार है– बारा, झूंसी, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तर) इलाहाबाद (दक्षिण) इलाहाबाद (पश्चिम), मंझनपुर, सिराथू। 1980 में स्थिति में परिवर्तन हुआ और उसे मात्र तीन–बारा, सोरांव, नवाबगंज में निम्न समर्थन मिला। अन्य वर्षों में स्थिति निम्नानुसार रही। 1985 में निम्न समर्थन क्षेत्र– करछना, बारा, हण्डिया, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी। 1989 में निम्न समर्थन क्षेत्र–मेजा करछना, बारा, झूंसी, हण्डिया, प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी, सिराथू रहा।

1991 में स्थिति पूर्ण रूप से बदल गयी और इसे मात्र दो विधान सभाओं इलाहाबाद उत्तरी; चायल में निम्न समर्थन प्राप्त हुआ।

ज्ञातव्य है कि निम्न समर्थन क्षेत्रों में कांग्रेस अधिकांश विधान सभाओं में पराजित हुई। कांग्रेस (आई) को मात्र ऐसे ही निम्न समर्थन क्षेत्रों में विजय प्राप्त हुई है; जहाँ उम्मीदवारों की संख्या अधिक रही है।

6.2.1.5 निम्नतम् समर्थन क्षेत्र : कांग्रेस (आई) को उच्च, उच्चतम मध्यम समर्थन विभिन्न निर्वाचन वर्षों अधिकांश विधान सभा क्षेत्रों में प्राप्त हुआ। इसे निम्नतम समर्थन कम ही बार मिला है। 1952 में सिराथू एवं मंझनपुर, 1962 में भरवारी, 1974 में इलाहावाद पश्चिमी, मंझनपुर, सिराथू में इसे निम्नतम समर्थन प्राप्त हुआ। मानचित्र से स्पष्ट है कि निम्नतम समर्थन वर्ष 1991 के निर्वाचन में अधिकांश क्षेत्रों से प्राप्त हुआ।

उपरोक्त विश्लेष्ण से स्पष्ट है कि विधान सभा चुनावों में कांग्रेस (आई) को अधिकांश वर्षों में उच्च एवं मध्यम समर्थन प्राप्त हुआ, जब कि सीमित वर्षों में निम्नतम समर्थन प्राप्त हुआ। यह स्थिति कांग्रेस भी जनमत में स्थायित्व का परिचायक है। दल के प्रति लोगों की आस्था का द्योतक है। किन्तु समयानुसार इसमें व्यापक परिवर्तन भी दृष्टिगत है जो पार्टी के जनमत वर्चस्व के धीरे–धीरे टूटने का द्योतक है फिर भी इस दल के प्रति कुछ न कुछ स्थायी, वफादार जनमत मौजूद हैं।

6.2.2 कांग्रेस (आई) जेडलब्धि (1962–91) : 1962–91 विधान सभा निर्वाचन के लिए प्राप्त 'Z' लब्धि को मानचित्र 6.4.1 एवं 6.4.2 में प्रदर्शित किया गया है। मानचित्रानुसार कांग्रेस (आई) 'Z' लब्धि को निम्न पांच भागों में विभाजित किया गया उच्चतम क्षेत्र, उच्च क्षेत्र, मध्यम क्षेत्र, निम्न क्षेत्र, निम्नतम क्षेत्र।

6.2.2.1 उच्चतम क्षेत्र : इसमें उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनकी 'Z' लब्धि + 1.5 से अधिक थी। इसके अन्तर्गत जिले के विभिन्न वर्षों में
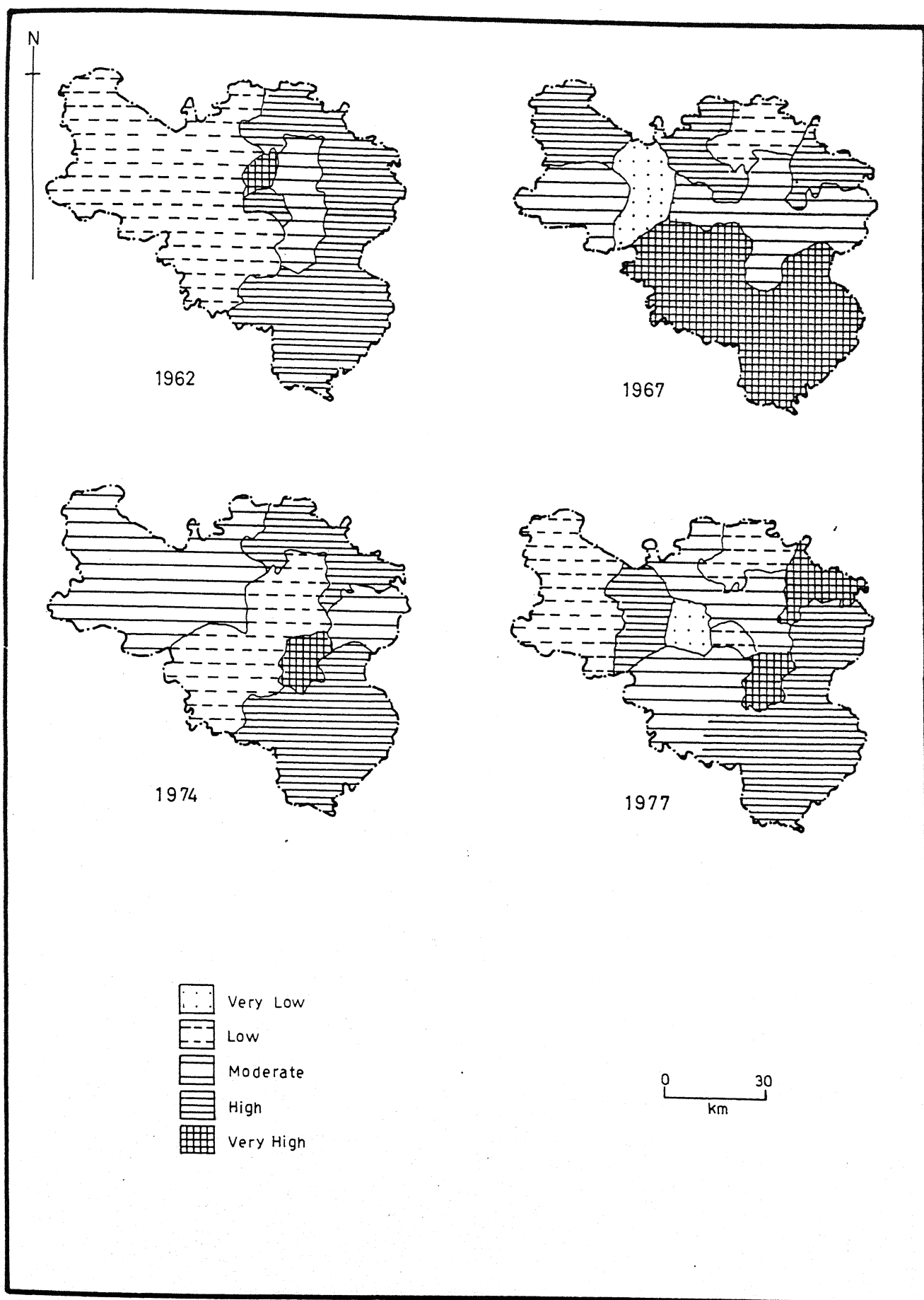
Fig. 6.4.1 Distribution of Congress(I) Votes (Z-Score) 1962 to 1977 : Vidhan Sabha
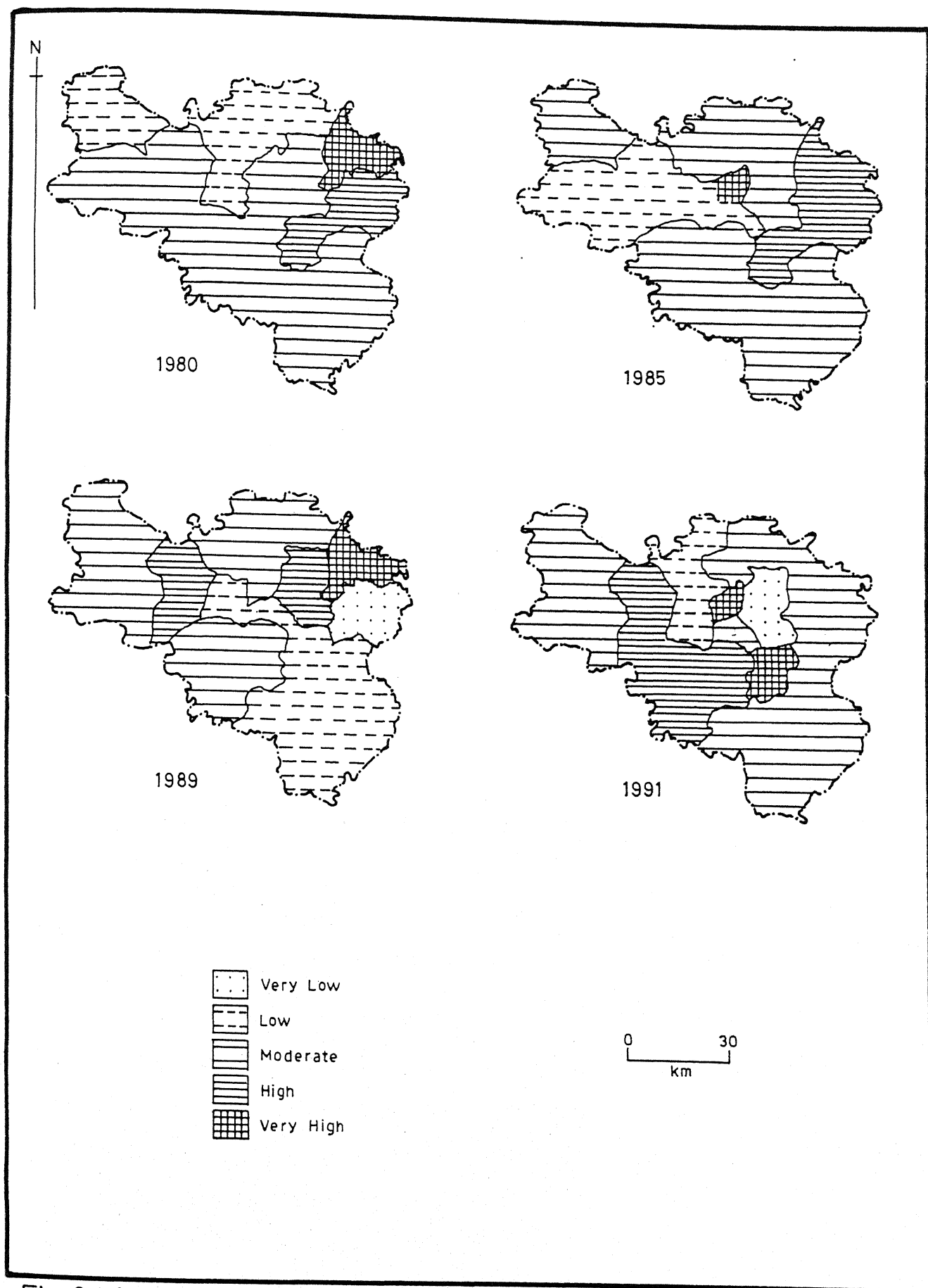
Fig. 6.4.2 Distribution of Congress(I) Votes (Z-Score) 1980 to 1991 : Vidhan Sabha

निम्नवत क्षेत्र सम्मिलित हैं वर्ष 1991 में इलाहाबाद (उ0), करछना, 1989 में प्रतापपुर, 1985 में इलाहाबाद उत्तरी, 1980 में प्रतापपुर, 1977 में करछना, प्रतापपुर 1974 में करछना, 1967 में मेजा, बारा एवं 1962 में इलाहाबाद उत्तरी।

6.2.2.2 उच्च क्षेत्र : इसमें उन निर्वाचन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जिनकी 'Z' लब्धि + 0.5 से + 1.5 के मध्य है। इसका अधिकांश विस्तार शहरी क्षेत्रों में है। इस क्षेत्र में वर्षवार सम्मिलित विधानसभा क्षेत्र निम्नानुसार रही—वर्ष 1991 में चायल, बारा, वर्ष 1989 में चायल झूंसी, 1985 में हंडिया, प्रतापपुर, करछना 1980 हंडिया करछना, 1977 मेजा, हंडिया, चायल, 1974 सोरांव, प्रतापपुर मेजा, 1967 में प्रतापपुर, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तरी) सिराथू, 1962 में मेजा, हंडिया, प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद (दक्षिणी)।

6.2.2.3 मध्यम क्षेत्र : इसके अन्तर्गत जिले के उन विधान सभा क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनकी 'Z' लब्धि +0.5 से –0.5 के बीच पायी गयी। वर्षवार अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश विधानसभा क्षेत्रों का विभिन्न वर्षों में 'Z' लब्धितल मध्यम रहा। विभिन्न वर्षों में जिले के लगभग–2 क्षेत्रों में माध्यम 'Z' लब्धि पायी गयी। इसमें मुख्य रूप से वर्ष 1991, 1980 में जिले की 1/2 विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित थे। मानचित्र में वर्ष 1991 में मेजा, हंडिया प्रतापुर, सोरांव, इलाहाबाद दक्षिणी। मंझनपुर, सिराथू, 1989 में सिराथू, मंझनपुर, इलाहाबाद उत्तरी, नवाबगंज, सोरांव, बारा, 1985 में सिराथू, नवाबगंज, सोरांव , झूंसी, बारा, मेजा; 1980 में मंझनपुर, चायल इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी, झूंसी, बारा, मेजा, 1977 में बारा, झूंसी, इलाहाबाद उ0, नवाबगंज, 1974 में सिराथू मंझनपुर, चायल, इलाहाबाद पश्चिमी, नवाबगंज, हंडिया; 1967 करछना, झूंसी, हंडिया, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी, मंझनपुर; 1962 में करछना, झूंसी विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

6.2.2.4 निम्न क्षेत्र : इस क्षेत्र के अन्तर्गत उन निर्वाचन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जिनकी 'Z' लब्धि–0 5 से –1.5 में मध्य पायी जाती है। मानचित्रानुसार विभिन्न वर्षों जिले की निम्न विधानसभा क्षेत्रों में निम्न 'Z' लब्धि पायी गयी। वर्ष 1991 में नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी, 1989 में इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद दक्षिणी, करछना, मेजा, 1985 में मंझनपुर, चायल, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद दक्षिण, 1980 में सिराथू, इलाहाबाद पश्चिमी, नवाबगंज, सोरांव, 1977 इलाहाबाद दक्षिणी, मंझनपुर, सोरांव, सिराथू, 1974 इलाहाबाद दक्षिणी इलाहाबाद उत्तरी, झूंसी, बारा, 1967 में सोरांव 1962 में बारा, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू।

6.2.2.5 निम्नतम क्षेत्र : इसके अन्तर्गत उन क्षेत्रों की सम्मिलित किया गया है। जिनकी 'Z' लब्धि–1.5 से कम है। जिले में अधिकांश वर्षों में निम्नतम 'Z' लब्धि नहीं पायी गयी इसके अन्तर्गत 1962 से 1991 तक केवल चार वर्षों में चार विधान सभाओं 'Z' लब्धि निम्न रही। 1991 में झूँसी, 1989 में हंडिया, 1977 में इलाहाबाद पश्चिमी, 1967 में चायल।

6.3 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) का क्षेत्रीय संकेन्द्रण

इलाहाबाद जिले के विभिन्न लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस (आई) के निरपेक्ष वितरण स्थानिक वितरण तथा कांग्रेस (आई) 'Z' लब्धि तल के व्याख्यात्मक विवेचन के उपरान्त उसके सापेक्ष वितरण की आवश्यकता समीचीन प्रतीत होती है। क्योंकि सापेक्ष वितरण के द्वारा जिले में औसत कांग्रेस मत विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त कांग्रेस मत की स्थिति का तुलनात्मक स्वरूप स्पष्ट विवेचित हो जाता है।
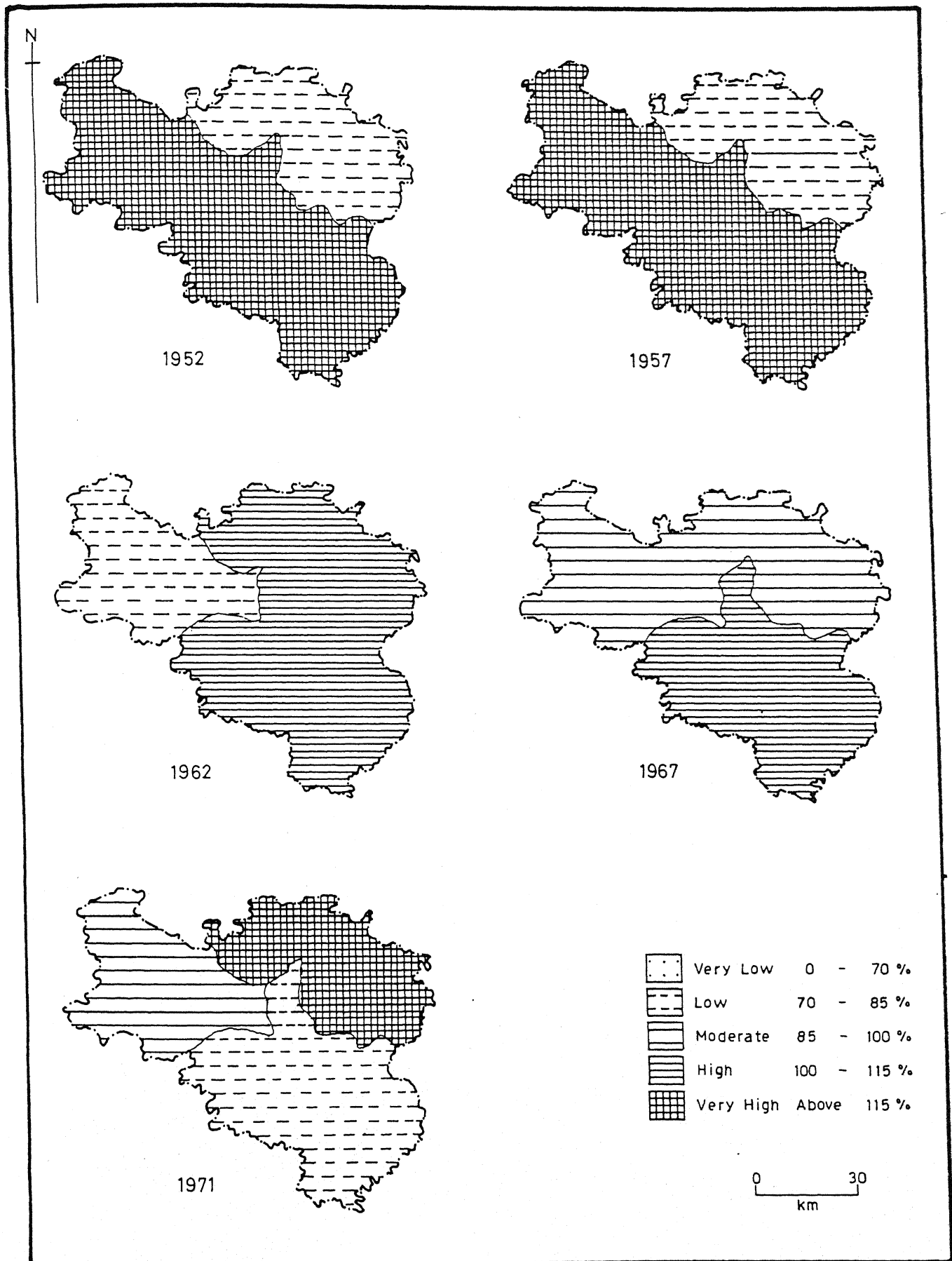
Fig. 6.5.1 Spatial Concentration of Congress(I) Vote 1952 to1971 (Per cent)
Loke Sabha
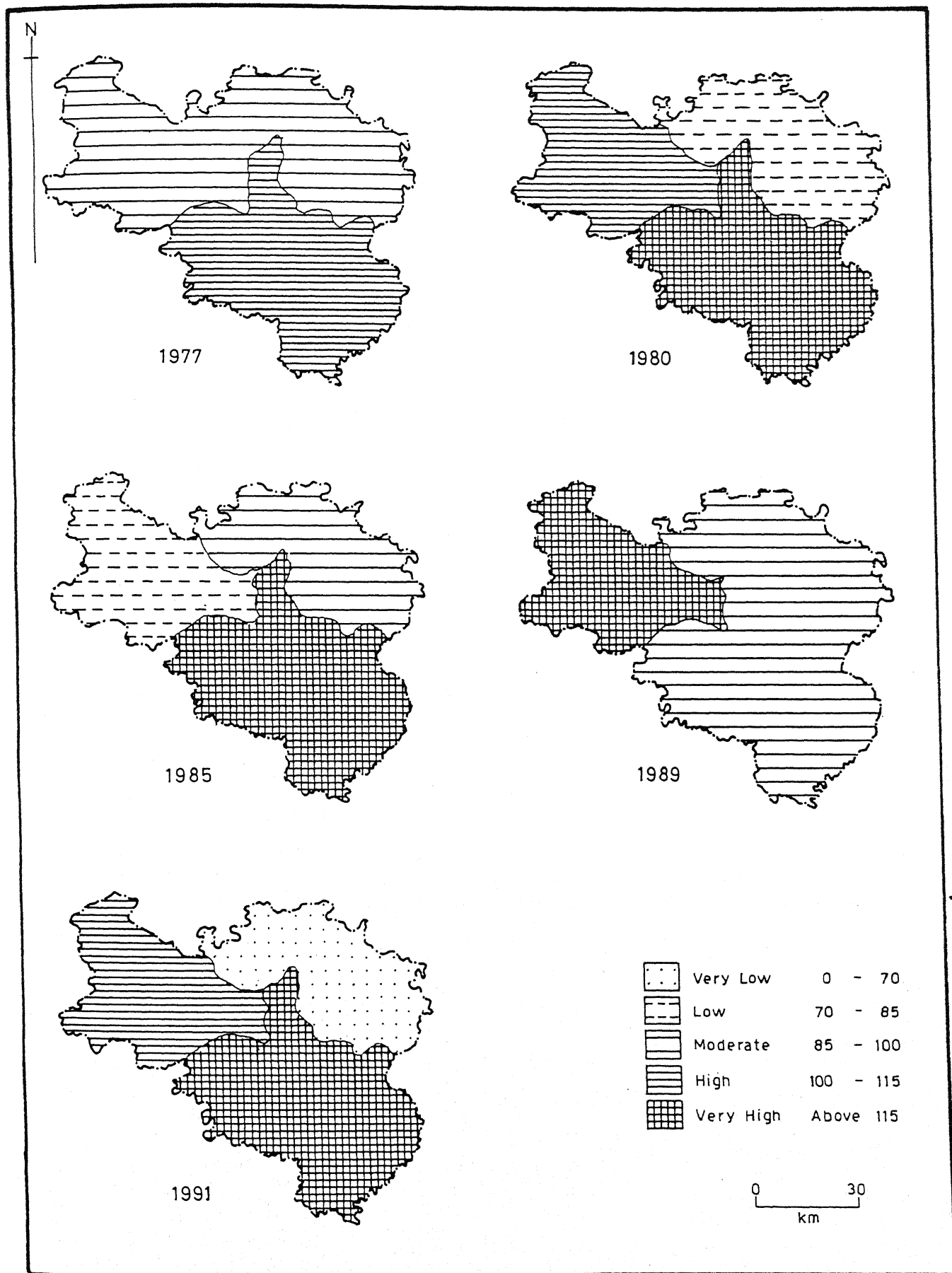
Fig. 6.5.2 Spatial Concentration of Congress (I) Vote (1977 to 1991) Per cent
Loke Sabha

लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों में संकेन्द्रण को स्पष्ट प्रकट करने के लिए निम्न 5 श्रेणियो में विभक्त किया गया–

1) **उच्चतम संकेन्द्रण क्षेत्र**–जिसके अन्तर्गत 115 प्रतिशत से अधिक संकेन्द्रण वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है।

2) **उच्च सकेन्द्रण क्षेत्र**–जिसके अन्तर्गत 100 से 105 प्रतिशत के मध्य आने वाले क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं।

3) **मध्यम संकेन्द्रण**–इस वर्ग के अन्तर्गत 85 से 100 प्रतिशत के मध्य सकेन्द्रण पाये जाने वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

4) **निम्न संकेन्द्रण क्षेत्र**–इसके अन्तर्गत उन लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिसका संकेन्द्रण 70 से 85 प्रतिशत के बीच में है।

5) **निम्नतम संकेन्द्रण वाले क्षेत्र**–इसके अन्तर्गत 70 प्रतिशत से कम संकेन्द्रण वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

6.3.1 लोकसभा निर्वाचन संकेन्द्रण (1952–1991) : लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में कांग्रेस (आई) के मतों का प्रतिशत संकेन्द्रण मानचित्र 6.5.1 एवं 6.5.2 में निरूपित किया गया है। जिसके द्वारा कांग्रेस (आई) की सापेक्ष स्थिति लोकसभा में स्पष्ट रूप से विश्लेषित होती है। तदानुसार लोकसभा क्षेत्रों के संकेन्द्रण का विवरण निम्नानुसार है–

6.3.1.1 उच्चतम सकेन्द्रण क्षेत्र : वर्ष 1952 से वर्ष 1991 तक विभिन्न वर्षों में उच्चतम संकेन्द्रण निम्न लोकसभा क्षेत्रों में पायी गयी। वर्ष 1991 में इलाहाबाद, 1989 में चायल, 1985, 1980, 1957, 1952 में इलाहाबाद, 1977 में

फूलपुर। इस तरह स्पष्ट है कि 1952 से 1991 तक 5 वर्षों के संसदीय चुनाव में उच्चतम संकेन्द्रण इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र मे विद्मान रही।

6.3.1.2 उच्च संकेन्द्रण क्षेत्र : जिले की तीन लोकसभा क्षेत्रों मे एवं दस संसदीय चुनाव के इतिहास में उच्च संकेन्द्रण 6 बार कांग्रेस (आई) को प्रदान हुआ। जिसका विवरण निम्नानुसार है–वर्ष 1991, 1980 में चायल 1977, 67, 62 में इलाहाबाद एवं 1962 में फूलपुर में उच्च संकेन्द्रण प्राप्त हुआ।

6.3.1.3 मध्यम संकेन्द्रण क्षेत्र : कांग्रेस (आई) को अधिकांश संसदीय निर्वाचन वर्षो मे मध्यम संकेन्द्रण प्राप्त हुआ। इसमें मुख्य रूप से वर्ष 1989 में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र एवं वर्ष 1989, 85, 77, 67 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र में मध्यम संकेन्द्रण पाया गया। इसके अतिरिक्त 1977, 71, 67 मे चायल संसदीय क्षेत्र में कांग्रेस (आई) को मध्यम संकेन्द्रण प्राप्त हुआ। अतः स्पष्ट है कि दस वर्ष संसदीय चुनाव में कांग्रेस (आई) को फूलपुर, चायल संसदीय क्षेत्रों से ही मध्यम संकेन्द्रण प्राप्त हुआ है।

6.3.1.4 निम्न संकेन्द्रण क्षेत्र : इसके अन्तर्गत जिले के निम्न संसदीय क्षेत्र सम्मिलित हैं। वर्ष 1985 में चायल, 1980 में फूलपुर, 1971 में इलाहाबाद, 1962 में चायल 1957 में फूलपुर, 1952 में इलाहाबाद (पूर्वी जौनपुर)।

6.3.2 विधानसभा निर्वाचन संकेन्द्रण (1952–91) : विधानसभा निर्वाचन में कांग्रेस (आई) की सापेक्ष स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए संकेन्द्रण को मानचित्र 6.6.1 एवं 6.6.2 में निरूपित किया गया। मानचित्रानुसार विधानसभा में कांग्रेस (आई) संकेन्द्रण निम्नानुसार है–

6.3.2.1 उच्चतम संकेन्द्रण क्षेत्र : कांग्रेस (आई) की सापेक्ष स्थिति अन्य दलों की अपेक्षा विधान सभाओं में बेहतर रही। उसके अन्तर्गत वर्ष 1991 मे

करछना, बारा, इलाहाबाद उत्तरी, चायल, वर्ष 1989 में प्रतापपुर; इलाहाबाद उत्तर, चायल, मंझनपुर, सिराथू, वर्ष 1985 में मेजा, इलाहाबाद दक्षिण, मंझनपुर, सिराथू, वर्ष 1980 में मेजा, चायल, मंझनपुर, वर्ष 1977 में मेजा, प्रतापपुर चायल, वर्ष 1974 में मेजा, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, चायल, मंझनपुर, वर्ष 1967 में मेजा, सोरांव पश्चिमी, इलाहाबाद शहर दक्षिणी, चायल वर्ष 1962 में सोरांवपूर्व, फूलपुर, केवाल वर्ष 1957 में करछना, सोरांव पश्चिमी, सोरांव पूर्वी, केवाल, इलाहाबाद शहर दक्षिणी, इलाहाबाद शहर मध्य, वर्ष 1952 में सोरांव उत्तर एवं फूलपुर, सोरांव दक्षिण, फूलपुर पूर्व एवं हंडिया (उ0); फूलपुर दक्षिण, हंडिया दक्षिण, इलाहाबाद शहर पूर्व; इलाहाबाद शहर मध्य, चायल विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं।

6.3.2.2 उच्च संकेन्द्रण क्षेत्र : जिले से सीमित विधानसभा क्षेत्रों मे उच्च सकेन्द्रण पाया गया। इसके अन्तर्गत वर्ष–1991 में, इलाहाबाद दक्षिण एवं सिराथू, 1989 झूंसी, करछना, 1985 में झूंसी, प्रतापपुर, 1980 में प्रतापपुर, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी एवं सिराथू, 1977 में करछना, हंडिया, नवाबगंज, 1974 में झूंसी, 1967 में बारा, 1962 में इलाहाबाद शहर उत्तरी, में 1957 में चायल, मेजा, विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं।

6.3.2.3 मध्यम संकेन्द्रण क्षेत्र : इसके अन्तर्गत 42 से अधिक विधान सभा क्षेत्र विभिन्न वर्षों के चुनाव में सम्मिलित थे; अर्थात् कांग्रेस (आई) का संकेन्द्रण अधिकांश वर्षों में मध्यम रहा। मानचित्रानुसार विभिन्न वर्षों में निम्न विधानसभाऐं इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं। वर्ष 1991 में मंझनपुर, सोरांव, मेजा, वर्ष 1989 में सोरांव, इलाहाबाद दक्षिण, इलाहाबाद पश्चिमी, बारा, मेजा, वर्ष 1985 में करछना, बारा, हंडिया, वर्ष 1980 में करछना, झूंसी, हंडिया, इलाहाबाद पश्चिमी, वर्ष 1977 में बारा, झूंसी, सोरांव, इलाहाबाद उत्तरी, मंझनपुर, सिराथू वर्ष 1974 में करछना, बारा, प्रतापपुर वर्ष 1967 में सोरांव पूर्व, प्रतापपुर, बहादुरपुर,

इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी वर्ष 1962 में मेजा, करछना, सोरांव पश्चिमी, बारा, झूंसी, इलाहाबाद शहर दक्षिण चायल, भरवारी; वर्ष 1957 मे फूलपुर, मंझनपुर, वर्ष 1952 में मेजा और करछना।

6.3.2.4 निम्न संकेन्द्रण क्षेत्र : निम्न संकेन्द्रण के अन्तर्गत इलाहाबाद जिले के बहुत कम क्षेत्र सम्मिलित हैं इसमें मुख्यतः वर्ष 1991 में प्रतापपुर 1985 में सोरांव, इलाहाबाद पश्चिमी, वर्ष 1980 में बारा, सोरांव, नवाबगंज, 1977 में इलाहाबाद दक्षिणी, 1974 में हंडिया, सोरांव, इलाहाबाद (दक्षिणी), 1967 में करछना, हंडिया, भरवारी, सिराथू; 1962 में सिराथू, 1952 में करछना उ0 एवं चायल दक्षिणी क्षेत्र सम्मिलित है। वर्ष 1989 एवं 1957 में कांग्रेस (आई) का किसी भी विधानसभा मे निम्नसंकेन्द्रण नहीं रहा।

6.3.2.5 निम्नतम संकेन्द्रण क्षेत्र : इसके अन्तर्गत वर्ष 1991 में इलाहाबाद पश्चिंमी, नवाबगंज, हण्डिया, झूंसी, वर्ष 1989 में नवाबगंज, हंडिया, वर्ष 1977 में इलाहाबाद पश्चिमी, वर्ष 1974 इलाहाबाद पश्चिमी, सिराथू एवं मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित थे। वर्ष 1985 में कांग्रेस (आई) का निम्नतम संकेन्द्रण चायल एवं नवाबगंज विधानसभा क्षेत्र में था।

6.4 विजयी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) दल : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) प्रारंभ के निर्वाचन वर्षों में इलाहाबाद जिले के संसदीय एवं विधानसभा क्षेत्रों में अपना एकाधिकार बनाए रखी। जो कि मानचित्र क्रमांक (6.6.1 से 6.6.2 तक) से स्पष्ट है। मानचित्रानुसार निम्न स्थिति उभरकर आई है। लोकसभा चुनाव में 1952 में संपूर्ण संसदीय क्षेत्रों पर कांग्रेस (आई) विजयी हुई। 1957, 1962, 1967 में भी कांग्रेस (आई) को कोई पराजित नहीं कर सका किन्तु 1971 के निर्वाचन वर्ष में कांग्रेस (जे) नामक पार्टी ने कांग्रेस (आई) को भारी
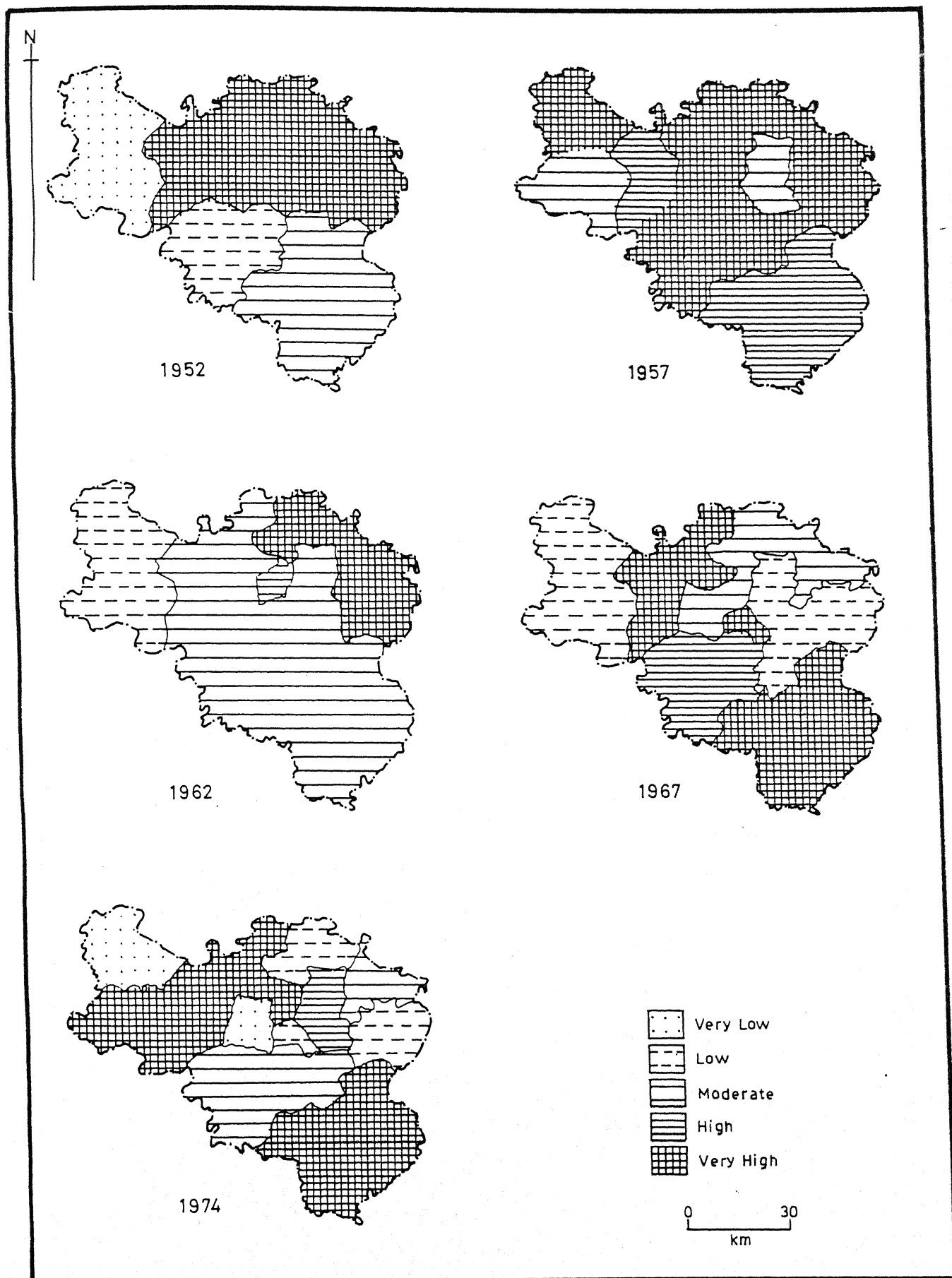
Fig. 6.6.1 Spatial Concentration of Congress (I) Votes 1952 to 1974
Vidhan Sabha
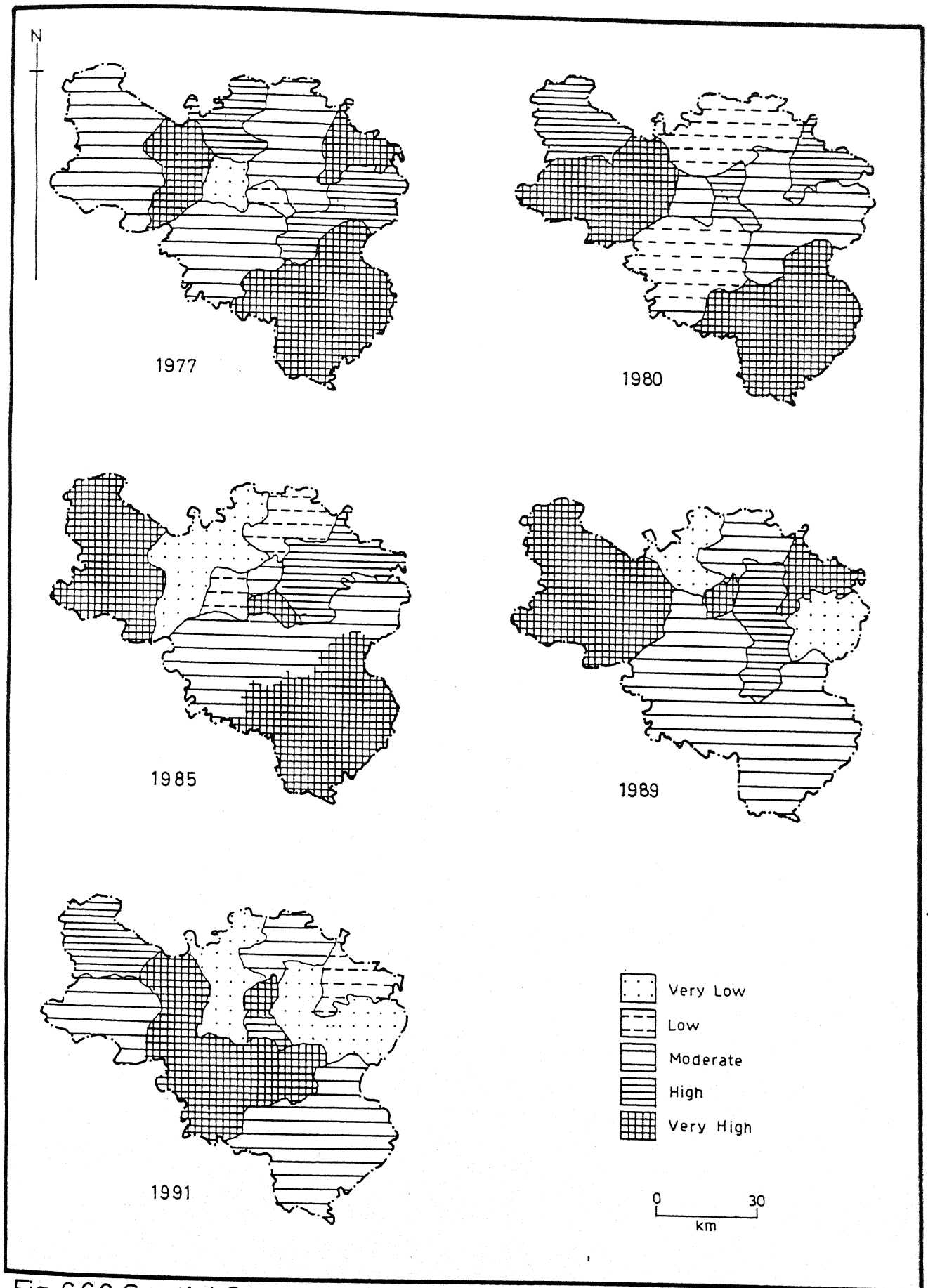
Fig. 6.6.2 Spatial Concentration of Congress(I) Votes 1977 to 1991 Percent: Vidhan Sabha

शिकस्त दी। निर्वाचन वर्ष 1977 में इलाहाबाद के तीनों संसदीय क्षेत्रों में कांग्रेस (आई) को मुँह की खानी पड़ी जबकि 1980 में उसे दो संसदीय क्षेत्रों में विजय प्राप्त हुई। पुनः वर्ष 1985 के निर्वाचन में कांग्रेस (आई) ने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली और जिले के तीनों संसदीय क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर ली किन्तु 1989 के निर्वाचन में कांग्रेस (आई) की स्थिति पुनः दयनीय हो गई क्योंकि उसे मात्र एक ही संसदीय क्षेत्र पर सफलता मिली। वर्ष 1991 के निर्वाचन में कांग्रेस (आई) बुरी तरह पराजित हुई और जिले से उसका वर्चस्व पूरी तरह से समाप्त हो गया। इस तरह यह स्पष्ट हो गया कि 1967 के बाद कांग्रेस (आई) का बलिदानी रूप जनता ने पूर्णतः अस्वीकार कर दिया।

विधानसभा चुनाव का विश्लेषण करें तो मानचित्रानुसार लगभग यही स्थिति उभरकर सामने आ रही है क्योंकि वर्ष 1952 में उसने जिले के संपूर्ण विधानसभा क्षेत्रों पर तो कब्जा कर लिया परंतु 1971 और 1991 में उसे किसी भी विधानसभा क्षेत्र में सफलता नहीं मिली।

6.5 भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस (आई) की जीत के कारण

कांग्रेस (आई) भारत का सबसे प्राचीन राजनैतिक दल है। यह आज भी भारत का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक दल है। पूर्व अध्याय में इसका राजनैतिक इतिहास वर्णित किया गया है। इसलिए पुनः वर्णित करना समीचीन नहीं है। इस अखिल भारतीय राजनैतिक दल के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन करने के बाद इसकी जीत के निम्न कारण स्पष्ट होते हैं–

1) कांग्रेस (आई) का एकछत्र प्रारंभिक वर्षों में औपचारिक या अनौपचारिक नेतृत्व।

2) अन्य राजनीतिक दलों की तुलना में कांग्रेस (आई) का संगठित सुव्यवस्थित संविधान।

3) कांग्रेस (आई) कार्यकर्त्ताओं में सत्याग्रहियों के रूप में अनुशासित संगठित चरित्र का विद्यमान होना।

4) कांग्रेस (आई) का विशाल सामाजिक ढॉचा।

5) प्रारंभ में कांग्रेस (आई) में सद्चरित्र शक्तिशाली पूँजीपति लोगों का सम्मिलित रहना।

6) कांग्रेस (आई) के शीर्ष नेताओं यथा पं0 जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, राजीव गाँधी, के प्रति देश की जनता का विश्वास होना।

7) कांग्रेस (आई) की शहीदी छवि (इंदिरा गांधी, राजीव गांधी की निर्मम हत्या) के कारण जनता का पार्टी के प्रति द्रवित एवं संवेदनशील होकर आस्था व्यक्त करना।

8) कुछ निर्वाचन वर्षों में जनता को यह विश्वास होना कि कांग्रेस (आई) के अलावा देश को अन्य कोई दल नहीं चला सकता है।

9) प्रारंभिक वर्षों में कांग्रेस (आई) की अनुसूचित जाति, जनजाति, अल्पसंख्यक जाति कमजोर वर्ग के विकास हेतु अस्पष्ट एवं सुनिश्चित नीति का पालन किया जाना।

10) राष्ट्रीय सुरक्षा, राष्ट्रीय विकास, राष्ट्रीय आर्थिक नीतियाँ, गरीबी उन्मूलन, बँधुआ मजदूर उन्मूलन महिला विकास जैसी नीतियों पर कांग्रेस (आई) का स्पष्ट मत होना।

6.6 भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस (आई) की पराजय के कारण

एक अखिल भारतीय राजनीतिक दल के रूप मे 1967 के पहले कांग्रेस (आई) एक सुदृढ़ सुव्यवस्थित अनुशासित पार्टी थी किन्तु विभाजन की प्रक्रिया के बाद या दूसरे शब्दों में कहें कि जब भारत में गैर कांग्रेस (आई) वाद की प्रक्रिया प्रारंभ हुई तब से इसका निरंतर पतन होता जा रहा है। विभिन्न वर्षो के निर्वाचन तथ्यों के अध्ययन से इसके पराजय के निम्न कारण स्पष्ट हो रहे हैं।

1) भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में एकाधिकार की स्थिति का समाप्त होना।

2) भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में राष्ट्रीय विकास के चरित्र का समाप्त होना।

3) स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े व्यक्तियों का धीरे–धीरे भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की नीतियों, कार्यक्रमों से मोहभंग होना।

4) भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस में अनैतिक, अलोकप्रिय, दुश्चरित्र राजनीतिज्ञों का प्रवेश।

5) कांग्रेसी नेताओं का भारत के गरीबों, मध्यमवर्ग की विकास नीतियों से मुँह मोड़ लेना।

6) कांग्रेसी शासन में आम आदमी को उदारीकरण की नीति का लाभ न मिलना।

7) कांग्रेस के शासनकाल में घोटालों, भ्रष्टाचारों, अत्याचारों, अव्यवस्थाओं, मँहगाई ने जनता की कमर तोड़ दी जिससे जनता ने कांग्रेस की रीढ़ तोड़ दी।

8) मुस्लिम, अनुसूचित जाति, आदिवासी, पिछडों का वोट बैंक कॉंग्रेस के पास अब नहीं है।

अतः अव कांग्रेरा अपनी पुरानी नीतियों के परित्याग के कारण जनरागर्थन और जनादेश प्राप्त करने में बार–बार असफल हो रही है। संक्षेप में गरीबों के हित और कल्याण का ढोंग रचने वाली यह पार्टी पूर्ण रूप से इधर के निर्वाचन वर्षों में इसी कारण पराजित हो रही है।

सप्तम् अध्याय

प्रमुख दल समर्थन

7. प्रमुख दल समर्थन

भूमिका—लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था वाले देश में राजनीतिक दलों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। राजनीतिक दल केवल उस देश की राजनीतिक परिस्थितियों का ही परिणाम नही होते बल्कि वे उस देश के इतिहास संस्कृति भूगोल तथा अर्थव्यवस्था से प्रभावित होते हैं। लोकतंत्रीय शासन के लिए राजनीति दल अपरिहार्य होते हैं, लोकतन्त्र का चाहे कोई भी स्वरूप क्यों न हो राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति में अकल्पनीय है। इसलिए दलीय व्यवस्था लोकतन्त्र का प्राण कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

प्रारम्भ में भारत की जनता कांग्रेस के स्वार्णिम इतिहास में अभिभूत थी, लेकिन धीरे–धीरे जब विपक्ष ने अपने आप को राष्ट्रीय राजनीति के लिए तैयार कर लिया तो अनेक क्षेत्रीय दलों में अपना प्रभाव स्थापित करना शुरू कर दिया। प्रस्तुत अध्याय में इलाहाबाद जनपद में प्रमुख राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय दलों के समर्थन प्रतिरूप को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शन प्रतिरूप का विश्लेषण करने के लिए जनपद में प्रदर्शन को देखते हुए तीन प्रमुख दलों को चयनित कर उनका वितरण प्रतिरूप प्रस्तुत किया गया है। अध्याय को कुल तीन अनुभगों में बाँटा गया है। जिसके प्रथम अनुभाग में भारतीय जनता पार्टी का विकास, स्थानिक वितरण (लोकसभा एवं विधानसभा) जेडलब्धि तल (लोकसभा एवं विधान सभा), के सन्दर्भ में व्याख्यित है। द्वितीय अनुभाग में जनता दल का विकास, स्थानिक वितरण (लोकसभा एवं विधानसभा); जेड लब्धि तल (लोकसभा एवं विधानसभा) जनतादल का क्षेत्रीय सकेन्द्रण (लोकसभा एवं विधानसभा) प्रस्तुत किया गया है। तृतीय अनुभाग में बहुजन समाज पार्टी का विकास स्थानिक वितरण (लोकसभा एवं

विधानसभा) जेड लब्धि तल (लोकसभा एवं विधानसभा) सकेन्द्रण(लोकसभा एव विधानसभा) वर्णित किया गया है।

7.1 भारतीय जनता पार्टी

7.1.1 भारतीय जनता पार्टी का विकास : भारतीय जनता पार्टी का गठन अप्रैल 1980 में जनता पार्टी की विघटन के बाद हुआ। इस पार्टी के अधिकांश नेता एवं कार्यकर्ता जनसंघ के पुराने अनुभवी राजनेता एवं कुछ जनता पार्टी के सदस्य थे। पार्टी के प्रारंभिक अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्री लाल कृष्ण आठवाणी, सिकन्दर बख्त तथा मुरली मनोहर जोशी को पार्टी का महासचिव नियुक्त किया गया। वर्तमान अध्यक्ष कुशा भाई ठाकरे जी हैं।

विचारधारा, नीति एवं सिद्धान्त में नैतिकता की पुनर्स्थापना का संकल्प प्रमुख हैं। आधारभूत नीतियों में प्रामाणिक एवं निष्कपट गुट निरपेक्ष विदेशनीति, राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय समन्वय, लोकतन्त्र की रक्षा, गांधीवादी, सामाजिक नीति, प्रभावकारी धर्मनिरपेक्ष आन्तरिक नीति के रूप में स्वीकार्य है।

अप्रैल 1980 में स्थापित इस पार्टी ने सर्वप्रथम मई 1980 में हुए विधानसभा चुनावों में भाग लिया जिसमें नौ राज्यों में 190 विधानसभा क्षेत्रों में विजय प्राप्त की। उ0प्र0 राज्य में इसे 11 विधानसभा क्षेत्रों में विजय श्री प्राप्त हुई, किन्तु इलाहाबाद जिले में इसे किसी भी क्षेत्र में विजय नहीं मिली अर्थात् इसका प्रभाव नगण्य रहा। शनैः शनैः पार्टी अपने नीतियों सिद्धान्तों के आधार पर विकसित होती गई। जिस पर 1984 में लोकसभा चुनाव में इसे 2 क्षेत्रों में विजय प्राप्त हुई। नवम्बर 1989 में लोकसभा चुनाव में राष्ट्र में इसे 88 स्थान प्राप्त हुई इसी तरह मई–जून 1991 के चुनाव में 119 लोकसभा क्षेत्रों में विजय प्राप्त की

तथा उ0प्र0 के विधानसभा चुनाव में 211 स्थान प्राप्त कर अपनी सरकार का निर्माण भी किया। अर्थात पार्टी की स्थिति सुदृढ़ हुई।

क्रमशः 1993 में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में हुए पहले विधानसभा चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने उल्लेखनीय विजय प्राप्त की। उत्तरोत्तर विकसित होती हुई यह पार्टी आज प्रमुख राष्ट्रीय दल है। वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार केन्द्र में अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में कुशलता पूर्ण ढंग से स्वच्छ प्रशासन कर रही है तथा राज्य में श्री कल्याण सिंह के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी सत्ता में है। अर्थात् अल्प समय में भाजपा ने अपना उच्च शिखर प्राप्त कर लिया जिसके पीछे पार्टी विचारधारा नीति नैतिक का संकल्प प्रमुख रहा।

भारतीय जनता पार्टी का स्थानिक विरतण : प्रस्तुत भाग में विभिन्न लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में इलाहाबाद जिले की लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों में कुल मतों में भारतीय जनता पार्टी को प्राप्त मत प्रतिशत से स्थानिक वितरण को निरूपित किया गया है। इस स्थानिक वितरण को पाँच वर्गों में विभक्त किया गया है। 7.1 के अनुसार स्थानिक वितरण इस प्रकार है–

7.1.2.1.1 उच्चतम क्षेत्र : उच्चतम समर्थन 65% से अधिक मत जिन क्षेत्रों में भाजपा को प्राप्त हुआ है उन्हें सम्मिलित किया गया है। लोकसभा चुनावों में 1952 से 1989 तक इलाहाबाद जनपद में भाजपा का समर्थन नगण्य था। इसी तरह विधानसभा निर्वाचन में 1952 से 1980 तक पार्टी का समर्थन जनमत में नहीं था चूंकि पार्टी 1980 तक एक विचारधारा के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत ही नहीं हुई थी। 1980 में पार्टी ने सर्वप्रथम एक दल के रूप में अपना प्रदर्शन

किया। किन्तु भाजपा ने 1952 से 1991 तक किसी भी निर्वाचन वर्ष में उच्चतम समर्थन नहीं प्राप्त किया।

7.1.2.1.2 उच्च समर्थन : उच्च समर्थन 55 से 65 प्रतिशत तक प्राप्त मत प्रतिरूप को दर्शाता है। मानचित्रानुसार भाजपा इलाहाबाद के किसी भी लोकसभा क्षेत्र एवं विधानसभा क्षेत्र में उच्च समर्थन नहीं प्राप्त किया।

7.1.2.1.3 मध्यम क्षेत्र : मध्यम समर्थन के अन्तर्गत 35 से 55 प्रतिशत समर्थन वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। वर्ष 1962 से 1991 तक के विभिन्न निर्वाचन वर्षों मे मानचित्र अनुसार इलाहाबाद जनपद के केवल वर्ष 1991 के विधानसभा चुनाव में भा.ज.पा को इलाहाबाद उ0 एवं इलाहाबाद द0 में मध्यम समर्थन प्राप्त हुआ।

7.1.2.1.4 निम्न क्षेत्र : इसके अन्तर्गत 20 से 35 प्रतिशत समर्थन वाले क्षेत्र सम्मिलित है। मानचित्र 7.1 के अनुसार विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भा.ज.पा. का निम्न समर्थन स्थानिक वितरण क्षेत्र इस प्रकार है।

1) वर्ष 1980 के विधानसभा निर्वाचन में इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में निम्न समर्थन प्राप्त किया।

2) 1985 के विधानसभा चुनाव में भा.ज.पा. किसी भी निर्वाचन क्षेत्र से निम्न समर्थन भी हासिल नहीं कर सकी।

3) वर्ष 1989 के निर्वाचन में भा.ज.पा. ने नवाबगंज एवं इलाहाबाद दक्षिण विधानसभा क्षेत्रों से निम्न समर्थन प्राप्त किया।

4) भा.ज.पा. ने धीरे–धीरे अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाया। वर्ष 1991 तक आते–आते भा.ज.पा. का समर्थन थोड़ा सा बढ़ा जिससे वर्ष 1991 के
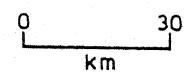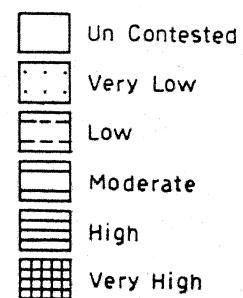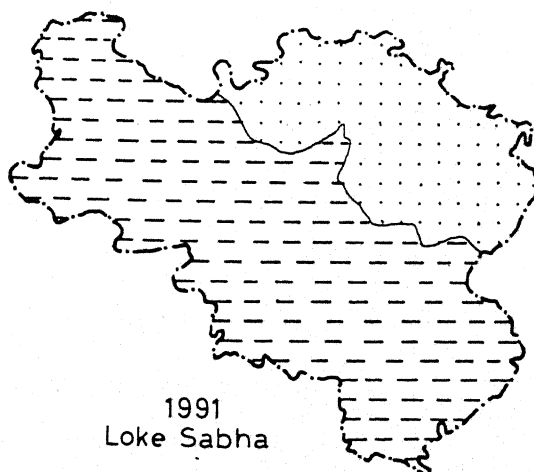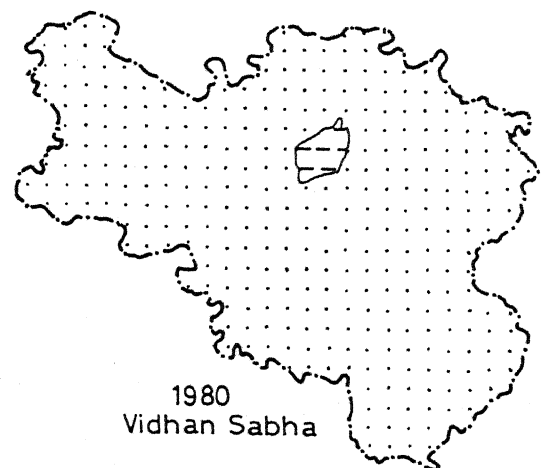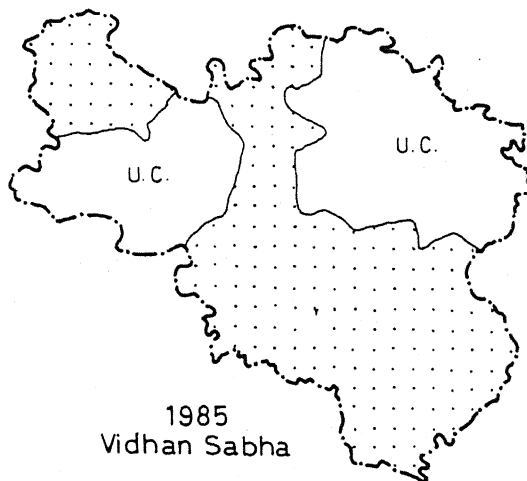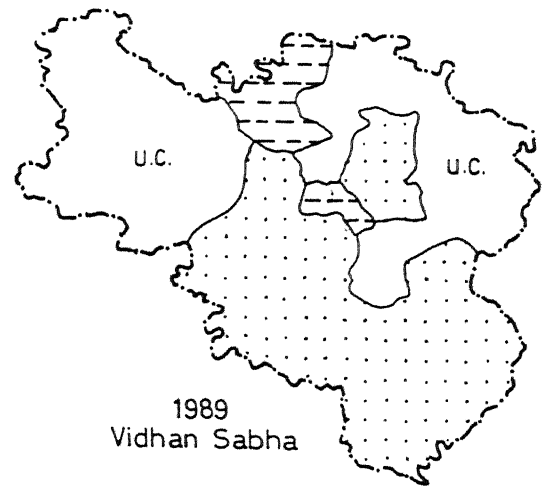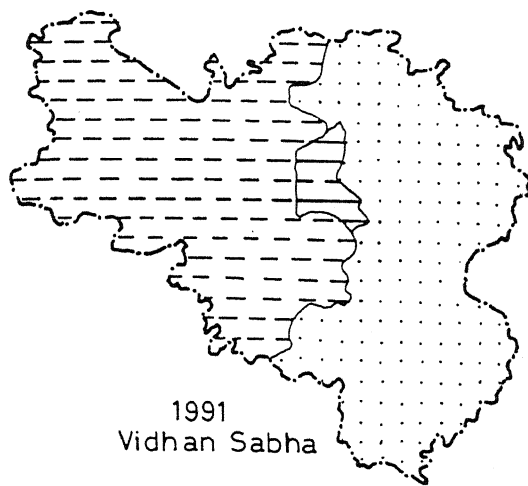
ig. 7.1 Absolute Distribution of B.J.P. Votes 1980 to 1991 (Per cent) : Vidhan Sabha & Loke Sabha

5) संसदीय निर्वाचन में चायल एवं इलाहाबाद संसदीय क्षेत्रों में निम्न समर्थन प्राप्त हुआ। इसी प्रकार 1991 के विधान सभा चुनाव में बारा, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू में भा.ज.पा. को निम्न समर्थन प्राप्त हुआ।

7.1.2.1.5 निम्नतम क्षेत्र : 20 प्रतिशत से कम समर्थन वाले क्षेत्र इसके अन्तर्गत आते हैं। 1980 से 1991 तक के लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में भा. ज.पा. को निम्नानुसार निम्नतम समर्थन प्राप्त हुआ। मानचित्र 7.1 के अनुसार समर्थन प्रतिरूप इस प्रकार है–

1) वर्ष 1980 के विधानसभा चुनाव में भा.ज.पा. ने मेजा, बारा, करछना, हंडिया, झूंसी, प्रतापपुर, सोरांव, नवाबगंज इलाहाबाद द0 इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू में निम्नतम समर्थन प्राप्त किया।

2) वर्ष 1985 के विधानसभा निर्वाचन में मेजा, करछना, बारा, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी, सिराथू में निम्नतम समर्थन प्राप्त किया।

3) वर्ष 1989 के विधानसभा निर्वाचन के मेजा, बारा, झूंसी, इलाहाबाद पश्चिमी में निम्न समर्थन प्राप्त हुआ।

4) वर्ष 1991 के विधानसभा निर्वाचन में भा.ज.पा. ने मेजा, करछना, झूंसी, हण्डिया, प्रतापपुर, सोरांव में निम्नतम समर्थन प्राप्त किया। इसी वर्ष सम्पन्न लोकसभा निर्वाचन में फूलपुर संसदीय क्षेत्र में इसे निम्नतम समर्थन मिला वर्ष 1991 के संसदीय निर्वाचन में फूलपुर लोकसभा क्षेत्र में निम्नतम समर्थन प्राप्त किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भा.ज.पा. ने 1991 तक के निर्वाचन वर्षों में निम्नतम समर्थन ही प्राप्त किया। पार्टी ने विधानसभा चुनावों में अधिकांश स्थानों से अपने उम्मीदवार ही नहीं खडा किये।

7.1.3 भारतीय जनता पार्टी 'जेड' लब्धी तल : प्रस्तुत अनुभाग में भा. ज.पा. का लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में कुल मतों में प्राप्त जन समर्थन को जेडलब्धी में स्थानान्तरित करके प्रस्तुत किया गया है। वर्ष 1952 से 1991 के निर्वाचन वर्षों मे मात्र 4 विधानसभा निर्वाचन (1991, 89, 85, 80) में एवं एक लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी उम्मीदवारी जतायी। निर्वाचन वर्ष 1989 एवं 1985 के कई विधान सभा क्षेत्रों में भारतीय जनता पार्टी ने अपनी उम्मीदवार ही नहीं खड़ा किया। मानचित्र 7.2 के अनुसार भारतीय जनता पार्टी की 'जेड' लब्धि तल विभिन्न वर्षों में निम्नवत था।

7.1.3.1 लोकसभा जेडलब्धितल : वर्ष 1952 से 1991 के लोकसभा चुनावों को विश्लेषित करने पर स्पष्ट होता है कि 1989 के लोकसभा चुनाव तक भारतीय जनता पार्टी को जनता के बीच में मात्र धार्मिक, सेठ साहूकार, सवर्णो के पार्टी की छवि बनी थी। किन्तु धीरे–धीरे पार्टी ने अपनी विचार धारा से जनमत को अवगत कराया जिससे जनमत इनकी ओर अकृष्ट हुआ। तदोपरान्त मानचित्रानुसार वर्ष 1991 के संसदीय चुनाव ने भारतीय जनता पार्टी ने इलाहाबाद एवं चायल संसदीय क्षेत्रों में उच्च जेड लब्धि एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र में निम्न 'जेड' लब्ध प्राप्त किया।

7.1.3.2 विधानसभा जेड लब्धि तल : वर्ष 1952 से 1977 तक के निर्वाचन वर्षों में भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव ही नहीं लड़ा इसलिए 1980 से 1991 तक के विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी ने चुनाव में अपने
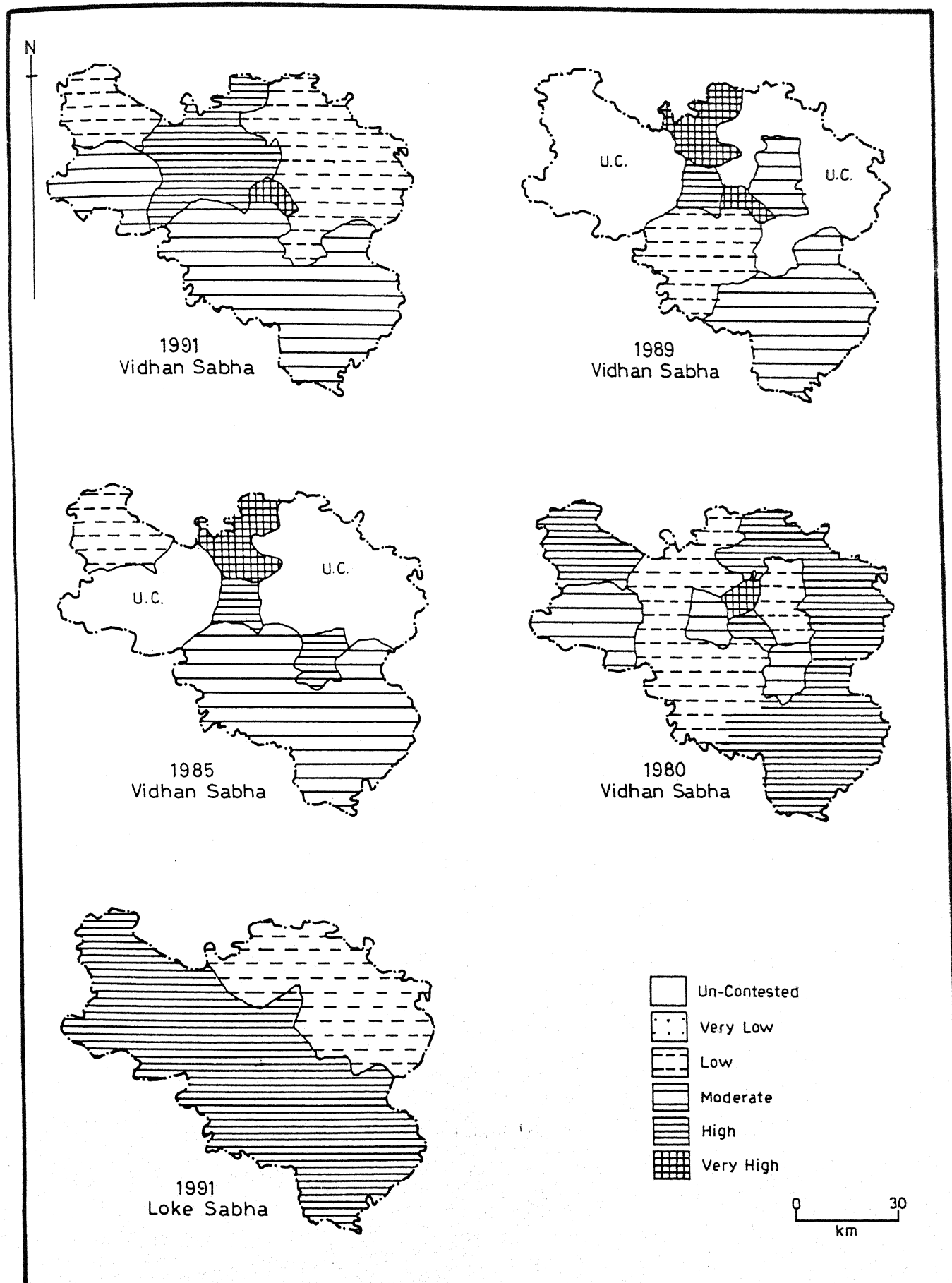
Fig. 7.2 Distribution of B.J.P. Votes Loke Sabha & Vidhan Sabha: 1989
1991 (Z-Score)

उम्मीदवार खड़े किये जिनका प्रदर्शन मानचित्र 7.2 में निरूपित किया गया है। मानचित्रानुसार भारतीय जनता पार्टी जेड लब्धि को निम्न पाँच भागों में विभाजित किया गया है। उच्चतम क्षेत्र, उच्च क्षेत्र, मध्यम क्षेत्र निम्न क्षेत्र, निम्नतम क्षेत्र।

उच्चतम जेड लब्धितल : इसके अन्तर्गत +1.5 से अधिक 'जेड' लब्धि तल वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इस वर्ग के अन्तर्गत वर्ष 1991 में इलाहावाद दक्षिणी, वर्ष 1989 में इलाहाबाद दक्षिणी, नवाबगंज, वर्ष 1985 में नवाबगंज, वर्ष 1980 में इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

उच्च जेड लब्धि तल : इसके अन्तर्गत +0.5 से +1.5 'जेड' लब्धि तल वाली विधान सभायें सम्मिलित है। मानचित्र 7.2 के अनुसार 1991 में इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, नवाबगंज, विधानसभायें, वर्ष 1989 इलाहाबाद पश्चिमी, वर्ष 1985 में इलाहाबाद पश्चिमी एवं करछना, वर्ष 1980 में मेजा, हण्डिया, प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद दक्षिणी, सिराथू विधानसभायें इसके अन्तर्गत आती हैं।

मध्यम जेड लब्धि तल : इस वर्ग के अन्तर्गत +0.5 से −0.5 'जेड' लब्धी प्राप्त विधानसभायें सम्मिलित हैं। मानचित्रानुसार इलाहाबाद जनपद की विभिन्न विधान सभाओं में मध्यम 'जेड' लब्धि का विवरण निम्नानुसार है।

वर्ष 1991 के निर्वाचन में बारा, मेजा, 1989 में मेजा, झूंसी, 1985 में मेजा, बारा, 1980 में करछना, इलाहाबाद पश्चिमी, मंझनपुर विधान सभाओं में मध्यम 'जेड' लब्धि तल पायी गयी।

निम्न जेड लब्धि तल : निम्न 'जेड' लब्धि तल के अनतर्गत −0.5 से −1.5 तक प्राप्त 'जेड' लब्धि वाली विधान सभायें आती हैं। मानचित्रानुसार इसमे वर्ष 1991 में करछना, झूंसी, हंडिया, प्रतापपुर, सोरांव, सिराथू, 1989 में बारा,

1985 में सिराथू, 1980 में बारा, झूंसी, नवाबगंज, चायल विधानसभायें सम्मिलित हैं।

निम्नतम 'जेड' लब्धि तल : इस वर्ग के अन्तर्गत –1.5 से कम 'जेड' लब्धि तल वाली विधानसभायें सम्मिलित हैं। मानचित्रानुसार इलाहाबाद के किसी भी विधानसभा क्षेत्र में निम्नतम 'जेड' लब्धि नही पायी गयी। कारण कम से कम विधानसभाओं में प्रतियोगिता क्षेत्र में भा.ज.पा. ने भाग लिया।

7.1.4 भारतीय जनता पार्टी क्षेत्रीय संकेन्द्रण : प्रस्तुत अनुभाग में भारतीय जनता पार्टी का क्षेत्रीय संकेन्द्रण लोकसभा एवं विधानसभा मानचित्र 7.3 में निरूपित किया गया है। क्षेत्रीय संकेन्द्रण को मुख्य रूप से 5 वर्गों में विभाजित किया गया है। उच्चतम संकेन्द्रण क्षेत्र, उच्च सकेन्द्रण क्षेत्र, मध्यम सकेंद्रण क्षेत्र, निम्न सकेन्द्रण क्षेत्र एवं निम्नतम सकेन्द्रण क्षेत्र। इस वितरण के द्वारा लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन वर्षों में भारतीय जनता पार्टी के सापेक्ष वितरण को विश्लेषित किया गया है।

7.1.4.1 लोकसभा क्षेत्रीय सकेन्द्रण : विभिन्न निर्वाचन वर्षों के लोकसभा चुनावों का व्यवस्थित अध्ययन करने से यह निश्चित हुआ कि लोकसभा निर्वाचन के वर्ष 1991 में मात्र भारतीय जनता पार्टी ने एक राष्ट्रीय दल के रूप में अपनी उपस्थिति का एहसास कराया। यद्यपि इस निर्वाचन वर्ष 1991 में भारतीय जनता पार्टी का तीनों लोकसभा क्षेत्रों में सकेन्द्रण निम्नतम रहा। निम्नतम सकेन्द्रण वर्ग के अन्तर्गत 70 प्रतिशत से कम सकेन्द्रण वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया। संकेन्द्रण विश्लेषण तालिका के अनुसार इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र का सकेन्द्रण 36.56, चायल संसदीय क्षेत्र का सकेन्द्रण 36.11 प्रतिशत, एवं फूलपुर संसदीय क्षेत्र का संकेन्द्रण 26.31 प्रतिशत है।
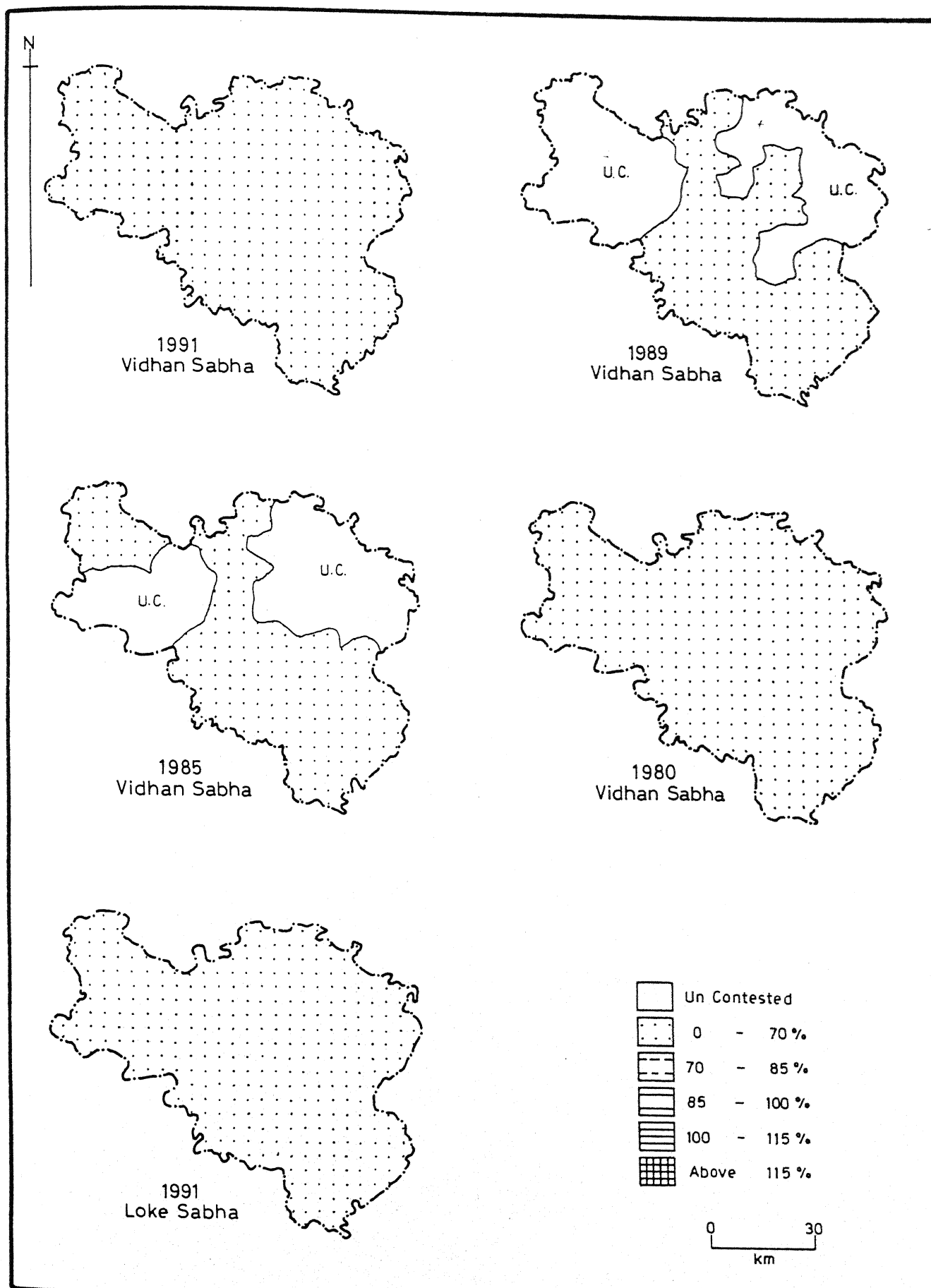
Eig. 7.3 Spatial Concentration of B.J.P. Votes : 1980 85 89 91 (Per cent) Loke & Vidhan Sabha

7.1.4.3 विधानसभा का क्षेत्रीय सकेन्द्रण : इलाहाबाद जनपद में 1952 से 1991 तक सम्पन्न विधानसभा निर्वाचन के लिए प्राप्त मतों का मानचित्रण एव विश्लेषण किया गया, किन्तु चूँकि भारतीय जनता पार्टी 1980 के निर्वाचन से ही एक प्रमुख दल के रूप में ऊभरी इसलिए विवेचन विश्लेषण निर्वाचन वर्ष 1980 से किया गया। निर्वाचन वर्ष 1980 से 1991 तक भारतीय जनता पार्टी का सकेन्द्रण प्रतिरूप इस प्रकार रहा।

मानचित्र 7.3 के अन्तर्गत निरूपित प्रतिरूपों से स्पष्ट है कि सकेन्द्रण भारतीय जनता पार्टी का निर्वाचन वर्ष 1980, 85, 89, 91 में लगातार निम्नतम था। इसका कारण जनमत का धीरे–2 पार्टी की स्थिति को स्वीकारना साथ में विवेचन में उच्चतम सकेन्द्रण की सीमा का उच्च स्तर होना यह स्तर विभिन्न स्थितियों में इस प्रकार है उच्चतम सकेन्द्रण की सीमा 115 प्रतिशत से ऊपर उच्च सकेन्द्रण की सीमा 100 से 115 प्रतिशत, मध्यम सकेन्द्रण की सीमा 85 से 100 प्रतिशत निम्न सकेन्द्रण की सीमा 20 से 85 प्रतिशत एवं निम्नतम सीमा 70 प्रतिशत से कम निर्धारित है। यह मानदण्ड समस्त दलों के सकेन्द्रण पर समान रूप से लागू किया गया है।

भारतीय जनता पार्टी का विभिन्न निर्वाचन वर्षों में सकेन्द्रण प्रतिरूप संक्षेप में निम्न रहा है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में भारतीय जनता पार्टी का सर्वाधिक सकेन्द्रण इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा में 14.76 प्रतिशत एवं अल्पतम सकेन्द्रण 2.31 प्रतिशत हण्डिया विधानसभा में पाया गया। कुल मिलाकर वर्ष 1991 में भारतीय जनता पार्टी का संकेन्द्रण समस्त विधानसभाओं में निम्नतम रहा।

1989 के निर्वाचन वर्ष में भारतीय जनता पार्टी की स्थिति अत्यन्त कमजोर रही क्योंकि 14 विधानसभाओं में से मात्र 6 स्थान पर भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवार भाग लिये जिसमें सर्वाधिक सकेन्द्रण इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा में 32–86 प्रतिशत एवं निम्नतम सकेन्द्रण मेजा विधानसभा में 4.50 प्रतिशत था।

निर्वाचन वर्ष 1985 में 1989 जैसी ही स्थिति रही इसी वर्ष भी भारतीय जनता पार्टी ने केवल 6 स्थानों पर चुनाव लड़ी। जिसमें सर्वाधिक संकेन्द्रण नवाबगंज विधानसभा में 40.27 प्रतिशत एवं निम्नतम सकेन्द्रण बारा विधानसभा क्षेत्र में 2.32 प्रतिशत रहा।

1980 के निर्वाचन वर्ष में समस्त विधान सभाओं में सर्वाधिक सकेन्द्रण इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में 31.75 प्रतिशत एवं सबसे कम सकेन्द्रण 1.19 प्रतिशत प्रतापपुर विधान सभा क्षेत्र में थी।

सारांशतः 1991 से 1980 के चारों निर्वाचन वर्षों में निम्नतम सकेन्द्रण भारतीय जनता पार्टी का समस्त विधानसभा क्षेत्रों में था।

7.2 जनता दल

7.2.1 जनता दल का विकास : परिवर्तन प्रकृति का नियम है; यह सिलसिला सदियों से चला आ रहा है; और रहती दुनियां तक यों ही चलता रहेगा। जिस प्रकार सभी क्षेत्रों परिवर्तन अपरिहार्य है, उसी प्रकार से राजनीति में भी निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। इसी राजनीतिक परिवर्तन का एक अंग है जनता दल।

1987 से 1989 के मध्य कांग्रेस (आई) और उसके नेता राजीव गांधी की तेजी से गिरती लोकप्रियता को देखकर कतिपय कांग्रेसी नेताओं ने अपने आदर्शों

में परिवर्तन किया। इसी परिवर्तन ने जनतादल के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। 1980 में जनता पार्टी, लोकदल (बहुगुणा) और जनमोर्चा (कांग्रेस को छोडकर अलग हुआ गुट) के विलय से जनतादल को चुनाव आयोग से विधिवत मान्यता मिली। मूलरूप से जनतापार्टी एवं लोकदल (अ) से इस दल का गठन हुआ। इस दल के प्रारम्भिक अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी बनाये गये। श्री देवी लाल को संसदीय बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया।

जनतादल ने अपने त्वरित विकास के लिए व्यापक आन्दोलन चलाया जिसका तात्कालिक प्रभाव जनमत पर पड़ा, विशेषकर इलाहाबाद जिले में क्योंकि विश्वनाथ प्रताप सिंह जी यहीं के निवासी थे। दल का संचालन यहीं से होता था।

अन्य दलों के साथ ताल–मेल करके नवम्बर 1989 के चुनाव में जनता दल को 141 स्थान प्राप्त हुआ एवं केन्द्र में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार बनी।

1989 के विधानसभा चुनाव में भी जनता दल ने विहार, उ0 प्र0, उड़ीसा और गुजरात में सरकार का गठन किया। यद्यपि इन सरकारों का गठन अन्य दलों के समर्थन से ही हुआ।

जिस तीव्र गति से इस दल का विकास हुआ, उसी तीव्रगति से पतन भी 1990 में जनता दल के विभाजन के साथ ही जनता दल की सरकार गिर गयी थी। और चन्द्रशेखर,देवीलाल जी ने मिलकर जनता दल (S) का गठन किया।

लोकप्रियता का गिरता ग्राफ मई–जून 1991 के लोकसभा निर्वाचन में स्पष्ट दिखाई दिया क्योंकि श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह के नेतृत्व वाले जनता दल को केवल 56 स्थान प्राप्त हुए। 1991 के बाद न तो इस दल ने व्यापक समर्थन

प्राप्त किया और न ही अपने अस्तित्व को कायम रख सकी। अब राष्ट्रीय राजनीति में यह दल केवल राजनीतिक दबाव समूह का कार्य करता है।

उत्तर प्रदेश के अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा इलाहाबाद जनपद में जनतादल का प्रदर्शन वर्ष 1991 एवं 1989 में गुणात्मक था। इसी को ध्यान में रखकर जनपद में इसके विभिन्न प्रतिरूपों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया।

7.2.2.1 जनता दल का स्थानिक वितरण : प्रस्तुत अनुभाग में जनता दल का निर्वाचन वर्ष 1991 एवं 1989 में प्राप्त मत प्रतिशत का स्थानिक वितरण लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन के परिपेक्ष्य में निरूपित किया गया है। मानचित्र 7.4 के अनुसार स्थनिक वितरण प्रतिरूप लोकसभा एवं विधानसभा निम्नानुसार रहा है–

इलाहाबाद जनपद में जनतादल को प्राप्त मत प्रतिशत को 5 भागों में विभक्त किया है। जो इस प्रकार है–

1) उच्चतम क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 65 प्रतिशत से अधिक मत वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

2) उच्च क्षेत्र में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जहाँ कुल मतों का 55 प्रतिशत से 65 प्रतिशत मत जनता दल को प्राप्त है।

3) मध्यम क्षेत्र में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है, जहाँ कुल मतों का 35 प्रतिशत से 55 प्रतिशत मत जनता दल को प्राप्त है।

4) निम्न क्षेत्र में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जहाँ 20 प्रतिशत से 35 प्रतिशत मत जनता दल ने प्राप्त किया है।
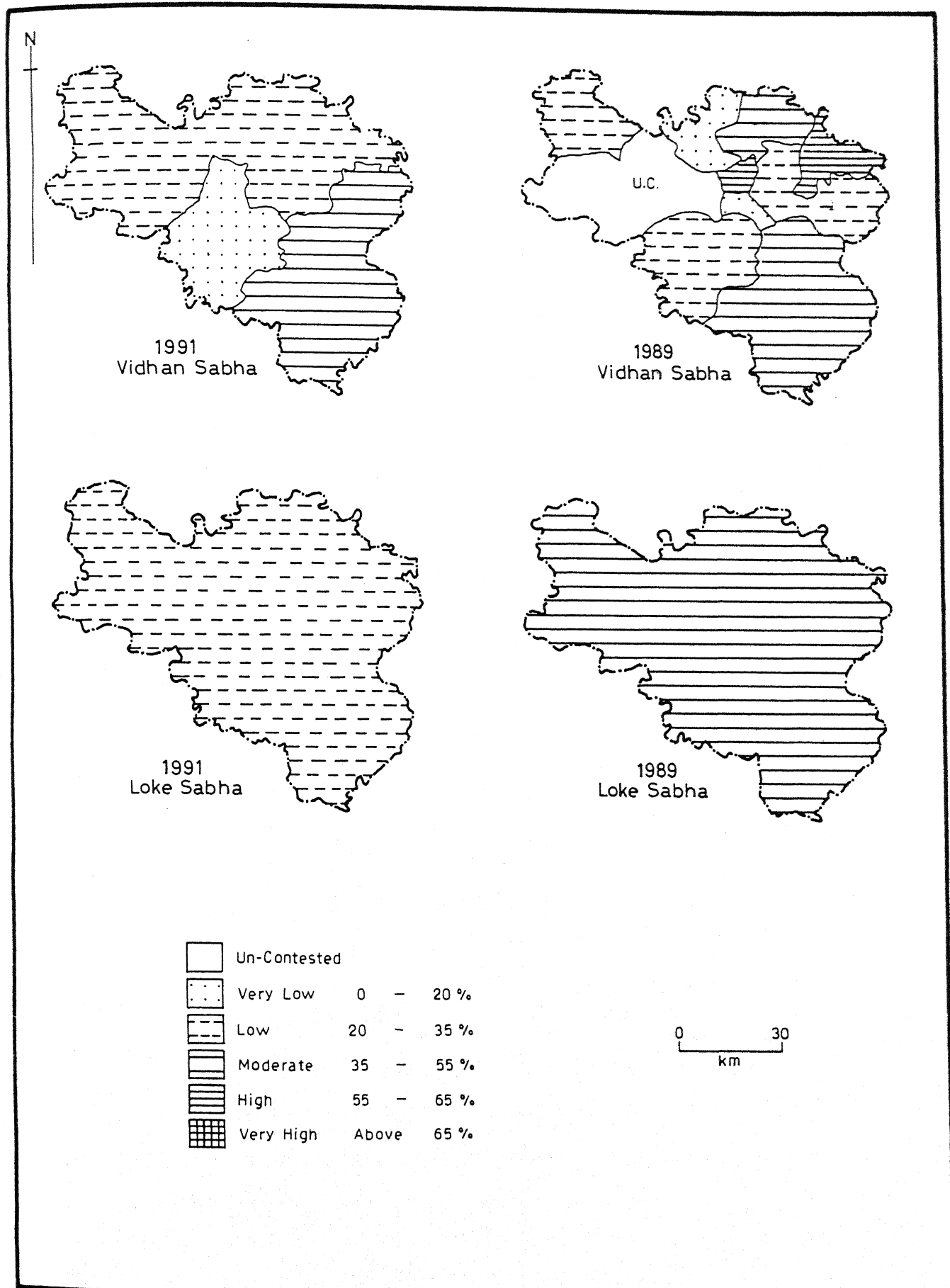
Fig. 7.4 Absolute Distribution of Janta Dal Votes Loke Sabha & Vidhan Sabha : 1991, 1989 (Per cent)

5) निम्नतम क्षेत्र में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जहाँ कुल मतों का 20 प्रतिशत से कम जनता दल को मिला है।

7.2.2.1.1 उच्चतम क्षेत्र : उच्चतम क्षेत्र के अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद का कोई भी लोकसभा या विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र सम्मिलित नहीं है क्योंकि कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ जनता दल को 65 प्रतिशत से अधिक मत कुल मतों का प्राप्त हुआ हो।

7.2.1.1.2 उच्च क्षेत्र : उच्च जनता दल क्षेत्र इलाहाबाद जनपद में उत्तरी पूर्वी भाग में व्याप्त है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1989 में प्रतापपुर एवं इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित हैं। निर्वाचन वर्ष 1991 में कोई विधान सभा या लोकसभा क्षेत्र इसमें सम्मिलित नहीं है।

7.2.2.1.3 मध्यम क्षेत्र : मानचित्रानुसार मध्यम समर्थन क्षेत्र निर्वाचन वर्ष 1989 के लोकसभा निर्वाचन में सम्पूर्ण जिला था। जबकि विधान सभा निर्वाचन में स्थिति बदल गयी क्योंकि मध्यम समर्थन क्षेत्र जिले के दक्षिणी भाग में पाया गया जिसमें प्रमुख विधनसभा क्षेत्र मेजा, करछना, सोरांव है।

वर्ष 1991 के निर्वाचन में जनता दल को लोकसभा में किसी भी क्षेत्र में मध्यम समर्थन नहीं मिला, जबकि विधानसभा निर्वाचन में मेजा, करछना, हंडिया में मध्यम समर्थन प्राप्त हुआ।

7.2.2.1.4 निम्न क्षेत्र : जनता दल को निम्न समर्थन वर्ष 1989 के निर्वाचन में बारा, झूंसी, हण्डिया, सिराथू विधानसभा क्षेत्र में प्राप्त हुआ। जबकि वर्ष 1991 के निर्वाचन में इलाहाबाद, फूलपुर; चायल तीनों लोकसभा एवं झूंसी, प्रतापपुर, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद (उत्तर); इलाहाबाद दक्षिण, चायल, मंझनपुर, सिराथू विधानसभा क्षेत्र में निम्न समर्थन प्राप्त हुआ।

7.2.2.1.5 निम्नतम क्षेत्र : इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद का कोई भी लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित नही है। विधान क्षेत्रों में जनता दल को वर्ष 1989 में नवागंज, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा क्षेत्र एवं वर्ष 1991 में बारा, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी क्षेत्र हैं जहाँ जनता दल ने चुनाव ही नहीं लड़ा जैसे वर्ष 1989 के निर्वाचन वर्ष में इलाहाबाद पश्चिमी, चायल मंझनपुर।

7.2.3 जनता दल जेड लब्धि तल : प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जनपद की लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव के निर्वाचन क्षेत्रों में कुल मतों का जनतादल के प्राप्त मत को 'जेड' लब्धि के माध्यम से रूपान्तरण कर प्रस्तुत किया गया है। रूपान्तरण की प्रक्रिया से प्राप्त तल को उच्चावचीय दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया। विश्लेषण उपरान्त सम्पूर्ण जनपद में जनता दल 'जेड' लब्धि लोकसभा एवं विधानसभा में निम्न प्रकार प्रदर्शित हुई।

7.2.3.1 लोकसभा 'जेड' लब्धि' तल : लोकसभा निर्वाचन में जनता दल ने 1952 से 1991 तक मात्र दो वर्षों 1989 एवं 1991 में इलाहाबाद जनपद में हिस्सा लिया। वर्ष 1989 एवं 1991 में प्राप्त 'जेड' लब्धि तल को मानचित्र 7.5 में प्रदर्शित किया जिसका प्रतिरूप निम्नानुसार है।

उच्चतम तल में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया जिनकी 'जेड' लब्धि तल +1.5 से अधिक है। इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद का कोई भी लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

उच्च तल में जनतादल के उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया जिनकी 'जेड' लब्धि +0.5 से +1.5 के मध्य है इसके अन्तर्गत जिले में वर्ष 1991 में फूलपुर एवं 1989 में चायल संसदीय क्षेत्र सम्मिलित हैं।
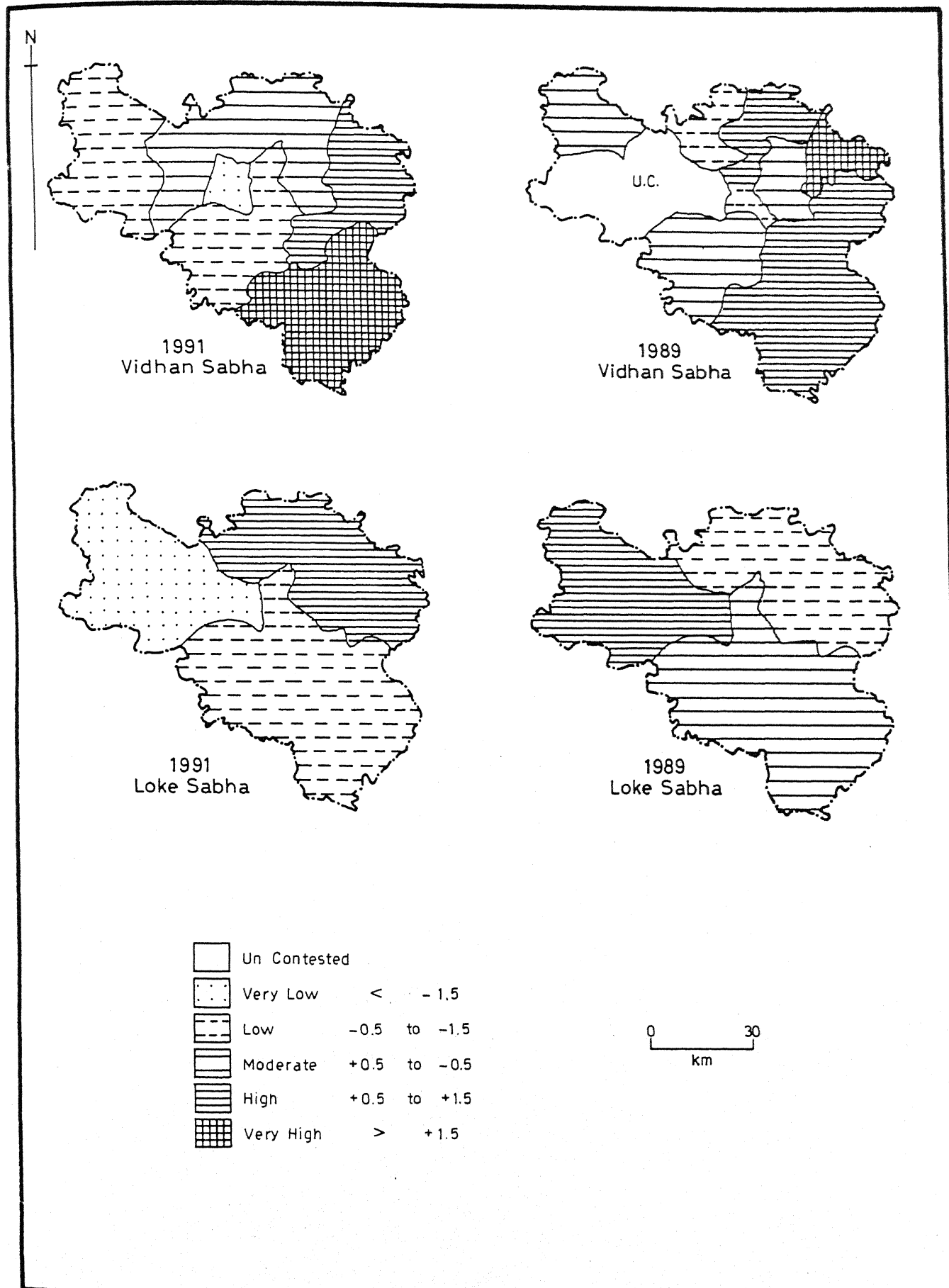
Fig. 7.5 Distribution of Janta Dal Votes (Z Score) Loke Sabha & Vidhan Sabha: 1991, 1989

मध्यम तल में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनकी 'जेड' लब्धि+0.5 से –0.5 के मध्य है; इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जिले की 1991 में चायल 1989 में इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निम्न तल के अन्तर्गत 'जेड' लब्धि–0.5 से –1.5 के मध्य वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जिले में 1991 में इलाहाबाद एवं 1989 में फूलपुर संसदीय क्षेत्र सम्मिलित है।

इलाहाबाद जिले की जिले की किसी भी लोकसभा क्षेत्र में किसी भी वर्ष में जनता दल ने निम्नतम 'जेड' लब्धि नहीं प्राप्त की है। इसकी सीमा –1.5 से कम निर्धारित की गयी है।

7.2.3.2 विधान सभा 'जेड' लब्धि तल : प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों में कुल मतों में जनता दल को प्राप्त मत को 'जेड' लब्धि में परिवर्तित किया गया है। प्राप्त परिणामों को उच्चावचीय दृष्टिकोण में विभक्त कर वर्णन किया गया है।

मानचित्र 7.5 में निर्वाचन वर्ष 1991 एवं 1989 में प्राप्त 'जेड' लब्धि को प्रदर्शित किया गया।

मानचित्रानुसार उच्चतम तल के अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद में 1991 में मेजा एवं 1989 में प्रतापपुर विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है। इस तरह जनपद के दक्षिणी एवं उत्तरी पूर्वी भाग उच्च 'जेड' लब्धि तल उभरी है।

उच्च जनता दल तल के अन्तर्गत उनको सम्मिलित किया गया है जिनकी 'जेड' लब्धि 0.5 से 1.5 के मध्य है इसके अन्तर्गत जिले की पूर्वी विधानसभा क्षेत्र

एवं दक्षिणी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित हैं। मानचित्रानुसार वर्ष 1991 में करछना, हंडिया, प्रतापपुर, 1989 में मेजा, करछना, हंडिया, सोरांव, इलाहाबाद उत्तरी हैं।

मध्यम जनतादल तल के अन्तर्गत +0.5 से –0.5 के मध्य 'जेड' लब्धि वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में झूँसी, सोरांव, नवाबगंज, चायल एवं 1989 में बारा, झूंसी, सिराथू सम्मिलित है।

निम्न जनता दल तल के अन्तर्गत उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनकी 'जेड' लब्धि तल –0.5 से –15 के मध्य है। इसके अन्तर्गत 1991 में इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, बारा, मंझनपुर, सिराथू एवं 1989 में नवाबगंज, इलाहाबाद दक्षिणी सम्मिलित हैं।

निम्नतम जनतादल तल के अन्तर्गत जिनकी 'जेड' लब्धि –1.5 से कम हो उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है इसके अन्तर्गत वर्ष 1991 में इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं।

7.2.4 जनता दल का क्षेत्रीय सकेन्द्रण : प्रस्तुत अनुभाग में जनतादल का सापेक्ष तुलनात्मक स्वरूप स्पष्ट किया गया। जनतादल की कुल मातों में प्राप्त मत प्रतिशत को सकेन्द्रण में परिवर्तित कर सापेक्ष स्थिति का निरूपण किया गया है।

7.2.4.1 लोकसभा क्षेत्रीय सकेन्द्रण : इस भाग में इलाहाबाद जनपद में लोकदल वितरण के सापेक्ष स्थिति पर विवरण प्रस्तुत किया गया है। सापेक्ष वितरण इलाहाबाद जनपद में 1991 एवं 1989 में सम्पन्न लोकसभा निर्वाचन का निरूपण किया गया है। मानचित्र 7.6 के अनुसार जनता दल का प्रदर्शन प्रतिरूप निम्नानुसार रहा।

उच्चतम सकेन्द्रण जिसकी सीमा 115 प्रतिशत से अधिक है; इसमें कोई भी लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

उच्च सकेन्द्रण 100 से 115 के मध्य है। फिर भी इसमें इलाहाबाद जनपद में जनता दल को कहीं भी उच्च सकेन्द्रण प्राप्त नहीं हुआ है।

मध्यम एवं निम्न सकेन्द्रण में क्रमशः 80 से 100 एवं 70 से 80 प्रतिशत वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। किन्तु इसमें भी कोई लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित नही है। जहाँ जनता दल ने सकेन्द्रण इस स्तर का प्राप्त किया हो।

निम्नतम सकेन्द्रण की सीमा 70 प्रतिशत से कम है; इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद का सम्पूर्ण लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित है। इस तरह स्पष्ट है कि लोकसभा निर्वाचन में वर्ष 1991 एवं 1989 में जनता दल का सकेन्द्रण निम्नतम रहा।

7.2.4.2 विधान सभा क्षेत्रीय सकेन्द्रण : इलाहाबाद जिले में निर्वाचन वर्ष 1991 एवं 1985 में सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन के लिए प्राप्त जनता दल सकेन्द्रण को मानचित्र 7.6 में प्रस्तुत किया गया है। मानचित्रानुसार सम्पूर्ण जिले में उत्पन्न प्रतिरूप निम्नवत है।

उच्चतम सकेन्द्रण क्षेत्र के अन्तर्गत 115 प्रतिशत से अधिक सकेन्द्रण वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। मानचित्रानुसार इसमें किसी भी वर्ष में कोई भी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

उच्च सकेन्द्रण क्षेत्र के अन्तर्गत जिले के उन क्षेत्रों को रखा गया है जिनका सकेन्द्रण 100 से 115 प्रतिशत के बीच था। मानचित्रानुसार इसमें कोई भी क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।
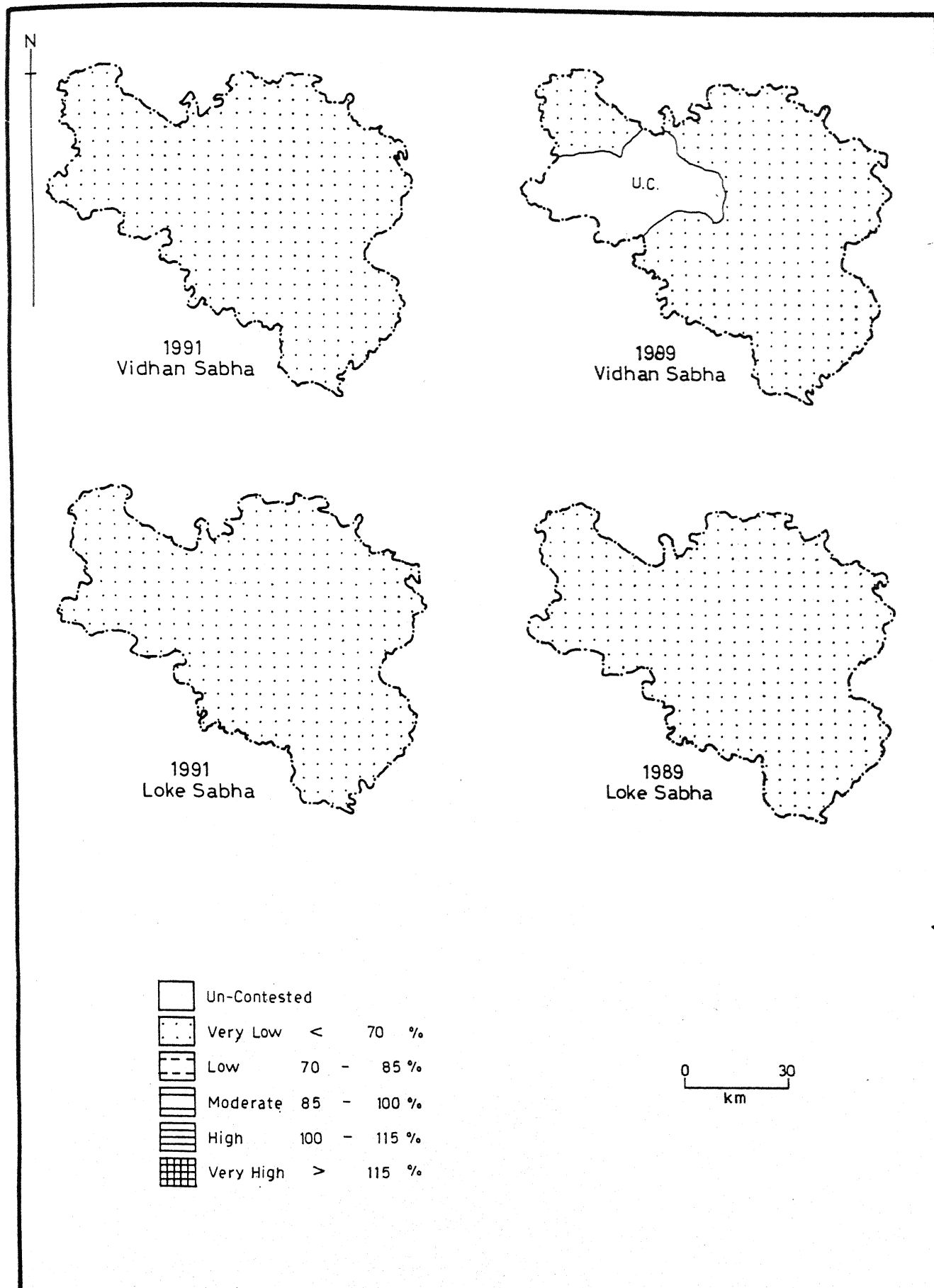
Fig. 7.6 Spatial Concentration of Janta Dal Votes (Per cent) Loke Sabha & Vidhan Sabha : 1991, 1989

मध्यम सकेन्द्रण में उन क्षेत्रों की निरूपित किया गया है। जिनका सकेन्द्रण 85 से 100 प्रतिशत के मध्य था। इसके अन्तर्गत भी जनतादल किसी भी विधान सभा में मध्यम सकेन्द्रण नहीं प्राप्त किया।

निम्न सकेन्द्रण के अन्तर्गत उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनका सकेन्द्रण 70 से 85 प्रतिशत के मध्य था; इसके अन्तर्गत भी कोई क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

निम्नतम संकेन्द्रण क्षेत्र के अन्तर्गत उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिसका सकेन्द्रण 70 प्रतिशत से कम है इसका विस्तार इलाहाबाद जिले के सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्रों में वर्ष 1991 एवं 1989 में पाया गया।

इसके अतिरिक्त कुछ विधानसभा क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ जनतादल ने निर्वाचन के लिए अपना उम्मीदवार ही नहीं खड़ा किया।

7.3 बहुजन समाज पार्टी

7.3.1 बहुजन समाज पार्टी का विकास : बहुजन समाज पार्टी अपने उदय के प्रारम्भिक काल में एक क्षेत्रीय दल के रूप में स्थापित हुई। इस दल की स्थापना 14 अप्रैल 1980 को अम्बेडकर जन्म दिवस पर किया गया। इस क्षेत्रीय दल के उदय का प्रमुख कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जनता पार्टी, लोकदल जैसे दलों के अखिल भारतीय स्वरूप में कमी आना, बड़े राजनीतिक दलों का अनुसूचित जाति, जनजाति, दलित जैसी जातियों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आना। इन जातियों ने अपनी सुरक्षा, मांग, अधिकारों के लिए सर्वप्रथम दबाव समूहों का गठन किया, धीरे यही दबाव समूह मिलकर इस क्षेत्रीय दल का गठन किया। वास्तव में यह दल दलित समाज, शोषित संघर्ष समिति (DS_4) तथा

पिछड़ी जाति, अल्पसंख्य समुदाय, कर्मचारी संघ (BAMCEF) का परिवर्तित संशोधित स्वरूप है। इस दल से अनुसूचित जाति, जनजाति, का लगाव एवं समर्थन अधिक है। किन्तु वर्तमान में पिछड़ावर्ग मुस्लिम समुदाय भी इस दल से जुड़ गया है। वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष कांशीराम जी हैं एवं राज्य स्तरीय नेतृत्व सुश्री मायावती के हाथ में है।

प्रारम्भ में यह दल केवल उ0प्र0 में सक्रिय था; किन्तु वर्तमान में अन्य राज्यों पंजाब, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली, राजस्थान में सक्रिय है। उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी ने 6 महीने के लिए भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से सरकार का भी गठन किया। निर्वाचन वर्ष 1989 में बहुजन समाज पार्टी ने लोकसभा की तीन सीटों में विजय प्राप्त कर संसद में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी किन्तु 1991 के निर्वाचन में लोकसभा में बहुजन समाज पार्टी की स्थिति शून्य रही। वर्तमान 12वीं लोकसभा निर्वाचन में बहुजन समाज पार्टी एक प्रमुख राष्ट्रीय दल के रूप में प्रतिस्थपित है इसके कुल 5 सांसद लोक सभा में है। वर्तमान राजनैतिक महौल में जिसमें दलों की भूमिका बढ़ी है बहुजन समाज पार्टी का प्रमुख स्थान है। विधानसभा चुनावों में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेशमें बहुजन समाज पार्टी एक प्रमुख दल है जो अन्य दलों की राजनीति को पूरी तरह प्रभावित करती है। किन्तु उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी में हुए विभाजन से जनता मे इसकी लोकप्रियता घटी है। इसका प्रमुख कारण बहुजन समाज पार्टी नेताओं की अपनी हटधर्मिता, वर्चस्ववाद है। फिर भी आज बहुजन समाज पार्टी अनुसूचित जाति, जन जाति, अल्पसंख्यकों की प्रमुख पार्टी है और उनका नैतिक समर्थन इस पार्टी को प्राप्त है।

7.3.2.1 बहुजन समाज पार्टी का स्थानिक वितरण : प्रस्तुत अनुभाग में बहुजन समाज पार्टी का इलाहाबाद जिले के विभिन्न लोकसभा एवं विधानसभा
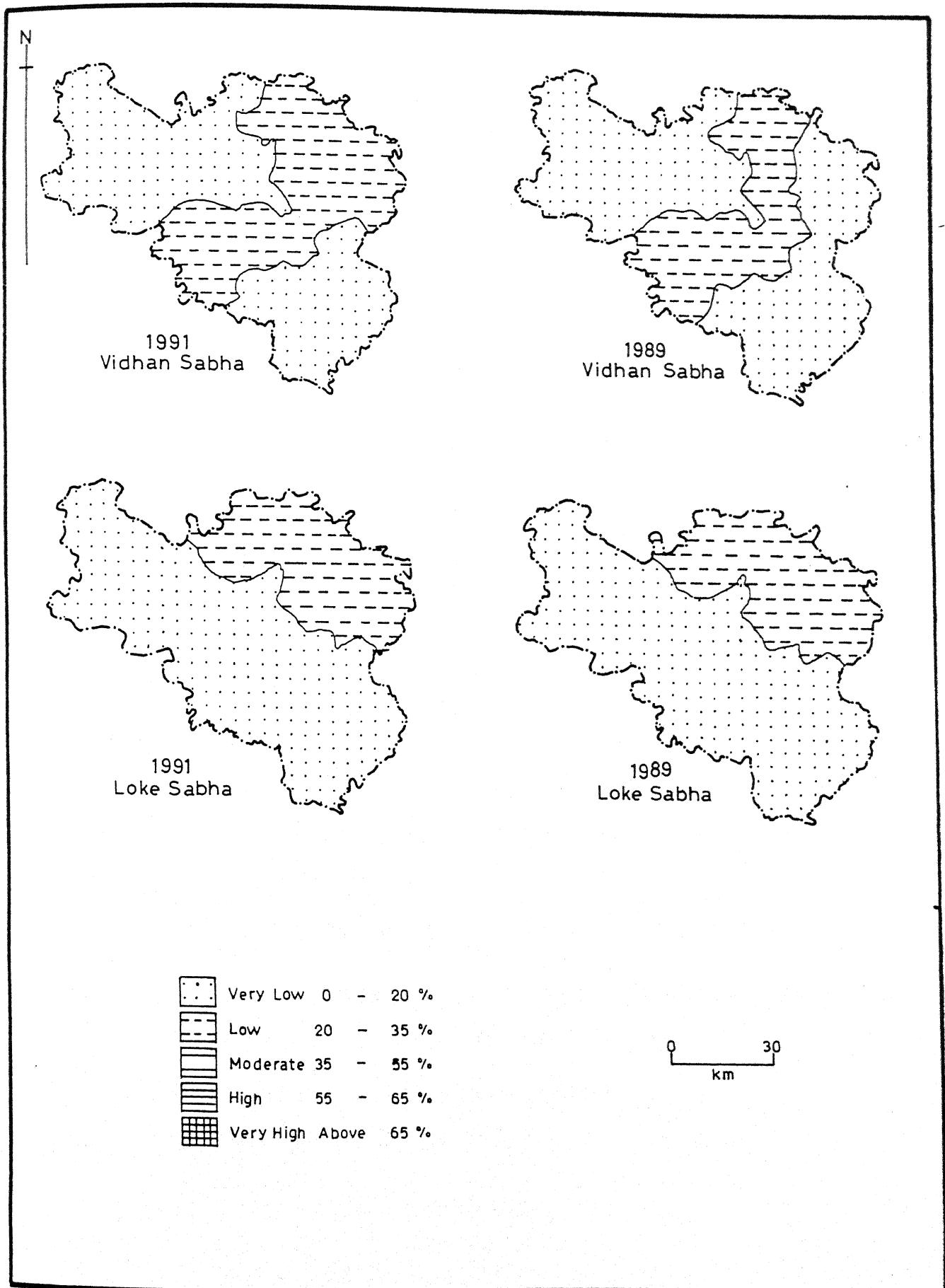
Fig. 7.7 Absolute Distribution of B.S.P. Votes (Percent) Loke Sabha & Vidhan Sabha : 1991, 1989

निर्वाचन क्षेत्रों में वास्तविक वितरण मानचित्र 7.7 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। यह मानचित्रण इलाहाबाद जिले में लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन 1991, 1989 द्वारा प्राप्त मतदान परिणामों के आधार पर किया गया है। बहुजन समाज पार्टी के प्रतिशत को पाँच भागों में विभक्त किया गया है–

1) उच्चतम प्रतिशत वाले बहुजन समाज पार्टी क्षेत्र, जिसके अन्तर्गत 65 प्रतिशत से अधिक वाले क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं।

2) उच्च प्रतिशत वाले बहुजन समाज पार्टी वाले क्षेत्र, जिसके अन्तर्गत 55 से 65 प्रतिशत वाले क्षेत्र सम्मिलित हैं।

3) मध्यम प्रतिशत वाले बहुजन समाज पार्टी क्षेत्र, जिसके अन्तर्गत 35 से 55 प्रतिशत वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

4) निम्न प्रतिशत वाले बहुजन समाज पार्टी क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 20 से 35 प्रतिशत वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

5) निम्नतम प्रतिशत वाले बहुजन समाज पार्टी क्षेत्र जिसके अन्तर्गत 0–20 प्रतिशत वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। उपरोक्त वर्गीकरण के आधार पर इलाहाबाद जिले के 1991 एवं 1989 में सम्पन्न लोकसभा एवं विधान सभा निर्वाचन के अनुसार बहुजन समाज पार्टी का स्थानिक वितरण प्रतिरूप निम्नवत प्रस्तुत किया जा रहा है–

7.3.2.1.1 उच्चतम क्षेत्र : मानचित्रानुसार उच्चतम प्रतिशत क्षेत्र के अन्तर्गत इलाहाबाद जिले का कोई भी लोकसभा क्षेत्र एवं विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है। अर्थात् किसी भी क्षेत्र में बहुजन समाज पार्टी ने 65 प्रतिशत से अधिक मत नहीं प्राप्त किया है इस तथ्य का प्रतीक है कि बहुजन समाज

पार्टी का प्रभुत्व शिक्षित, नगरीय, व्यावसायिक जनसंख्या में नहीं है बल्कि अशिक्षित, अल्पसंख्यक, अनुसूचित जाति एवं जनजाति में है।

7.3.2.1.2 उच्च क्षेत्र : इस 55 से 65 प्रतिशत वाले क्षेत्र के अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद का कोई भी संसदीय या विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

7.3.2.1.3 मध्यम क्षेत्र : मानचित्र 7.7 के अनुसार बहुजन समाज पार्टी इलाहाबाद जिले के किसी भी लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्र में 35 से 55 प्रतिशत मत नहीं प्राप्त किया है। अर्थात् जनपद का कोई भी क्षेत्र इसके अन्तर्गत सम्मिलित नहीं है।

7.3.2.1.4 निम्न क्षेत्र : निम्न प्रतिशत वाले क्षेत्रों में उन निर्वाचन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जहाँ बहुजन समाज पार्टी को कुल मतों का 20 से 35 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। इसके अन्तर्गत वर्ष 1991 निर्वाचन में फूलपुर (लोकसभा क्षेत्र); करछना, बारा, झूंसी, हण्डिया, प्रतापपुर, सोरांव (विधानसभा क्षेत्र) सम्मिलित हैं। अर्थात् बहुजन समाज पार्टी का प्रभुत्व ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है।

7.3.2.1.5 निम्नतम क्षेत्र : इसके अन्तर्गत 0 से 20 प्रतिशत वाले क्षेत्र सम्मिलित किये गये हैं। इसके अन्तर्गत 1991 में इलाहाबाद, चायल (लोकसभा क्षेत्र); मेजा नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबादं पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू (विधान सभा) क्षेत्र एवं 1989 में इलाहाबाद, चायल (लोकसभा क्षेत्र), मेजा, हण्डिया, प्रतापपुर; नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू (विधान सभा क्षेत्र) सम्मिलित हैं।

उपरोक्त निम्नतम समर्थन शहरी क्षेत्रों में विद्मान है इसका कारण शहरी अनुसूचित जाति, पिछड़ा, अशिक्षित का दल की नीतियों से कुछ मायनें में सहमत होना।

7.3.3 बहुजन समाजवादी पार्टी जेड लब्धि तल : प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जनपद के निर्वाचन वर्ष 1991, 1989 के लोकसभा एवं विधान सभा क्षेत्रों में प्राप्त कुल मतों में बहुजन समाज पार्टी को प्राप्त मतों की जेडलब्धि के माध्यम से मानचित्र 7.8 में प्रदर्शित किया गया है।

7.3.3.1 लोकसभा जेड लब्धि तल : 1991 एवं 1989 लोकसभा निर्वाचन के लिए प्राप्त जेडलब्धि को मानचित्र 7.8 में प्रदर्शित किया गया है। जिसे पाँच भागों में विभक्त किया गया है। उच्चतम, उच्च, मध्यम, निम्न निम्नतम तल।

उच्चतम तल : में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया हे। जिनकी जेड लब्धि +1.5 से अधिक थी। इसके अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद का कोई संसदीय क्षेत्र सम्मिलित नहीं है।

उच्च तल : के अन्तर्गत +0.5 से +1.5 के बीच लोकसभा क्षेत्रों को सम्मिलित किया है। इसके अन्तर्गत वर्ष 1991 में चायल लोकसभा क्षेत्र एवं 1989 में फूलपुर लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

मध्यम तल : में उन निर्वाचन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जिनकी जेड लब्धि +0.5 से –0.5 के मध्य है। इसके अन्तर्गत 1991 निर्वाचन वर्ष में इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र सम्मिलित है। जब 1989 के निर्वाचन में कोई क्षेत्र सम्मिलित नहीं है
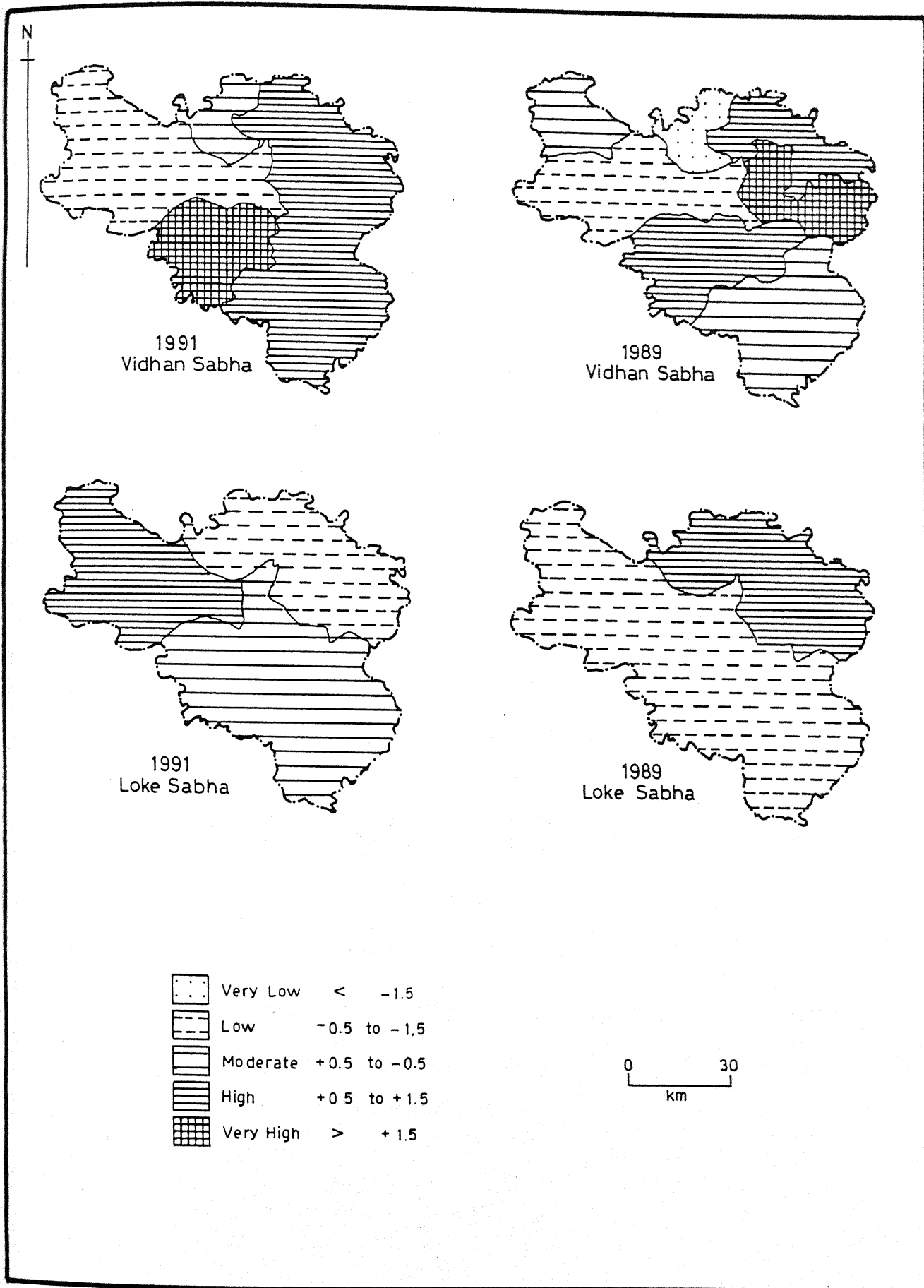
Fig. 7.8 Distribution of B.S.P. Votes Loke Sabha & Vidhan Sabha (Z-Score) :1991,1989

निम्न तल : में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जिनकी जेडलब्धि –0.5 से –1.5 के मध्य पाई गयी है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में फूलपुर लोकसभा क्षेत्र एवं 1989 में फूलपुर, इलाहाबाद लोकसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं।

निम्नतम तल : के अन्तर्गत उन निर्वाचन क्षेत्रों को सम्गिलित किया गया है जिनकी जेड लब्धि –1.5 से कम है इलाहाबाद जनपद के किसी भी लोकसभा क्षेत्र में बहुजन समाज पार्टी निम्नतम जेड लब्धि नहीं प्राप्त की है।

7.3.3.2 विधानसभा जेड लब्धि तल : इलाहाबाद जनपद मे 1991,1989 विधानसभा निर्वाचन के लिए प्राप्त जेड लब्धि का मानचित्र 7.8 में प्रदर्शित किया गया है। जिसमें उत्पन्न प्रतिरूप निम्नवत है।

उच्चतम तल में उन क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जिनकी जेड लब्धि +1.5 से अधिक है। इस प्रकार से इसके अन्तर्गत वर्ष्ज्ञ 1991 में बारा विधानसभा क्षेत्र एवं 1989 में झूंसी, हंडिया विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

उच्चतल में बहुजन समाज पार्टी के उन विधान सभा क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है, जिनकी जेड लब्धि +0.5 से +1.5 के मध्यम है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में मेजा, करछना, झूंसी, हंडिया, प्रतापपुरि, सोरांव एवं 1989 में करछा, बारा, प्रतापपुर, सोरांव विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं।

मध्यम तल के अन्तर्गत +0.5 से –0.5 के जेड लब्धि वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में नवाबगंज एवं 1989 में मेजा, सिराथू विधानसभा सम्मिलित है।

निम्नतल के अन्तर्गत –0.5 से –1.5 के मध्य जेड लब्धि वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी, चायल, मंझनपुर, सिराथू विधान सभा क्षेत्र एवं 1989 में इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित हैं जिन क्षेत्रों की जेड लब्धि तल –1.5 से कम रही उन्हें निम्नतम के अन्तर्गत रखा गया है निर्वाचन वर्ष 1989 में मात्र नवाबगंज विधान सभा निम्नतम जेड लब्धि प्राप्त हुई। 1991 में किसी विधानसभा की जेड लब्धि निम्नतम नहीं रही।

7.3.4 बहुजन समाज पार्टी का क्षेत्रीय संकेन्द्रण : इस अनुभाग में बहुजन समाज पार्टी के सापेक्ष वितरण को लोकसभा एवं विधान सभा निर्वाचन के परिपेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। सापेक्ष वितरण के फलस्वरूप इलाहाबाद जिले के औसत बहुजन समाज पार्टी मत से विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों की बहुजन समाज पार्टी की स्थिति का तुलनात्मक स्वरूप लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्रों को मानचित्र 7.9 में स्पष्ट किया गया है।

7.3.4.1 लोकसभा क्षेत्रीय संकेन्द्रण : इलाहाबाद जनपद में 1991, 1989 लोकसभा निर्वाचन की सापेक्ष स्थिति को मानचित्र 7.9 में प्रदर्शित किया गया। जिससे उत्पन्न प्रतिरूप निम्नवत है।

इलाहाबाद जिले के संकेन्द्रण प्रतिरूप को उच्चतम, उच्च, मध्यम, निम्न निम्नतम पाँच भागों में बाँटा गया, जिसमें उच्चतम की सीमा 115 प्रतिशत के ऊपर, उच्च की सीमा 100 से 115 प्रतिशत मध्यम की सीमा 85 से 100 प्रतिशत निम्न की सीमा 70 से 85 प्रतिशत एवं निम्नतम की सीमा 70 प्रतिशत से कम निर्धारित की गई। तद्नुसार मानचित्र 7.9 में निरूपण किया गया।
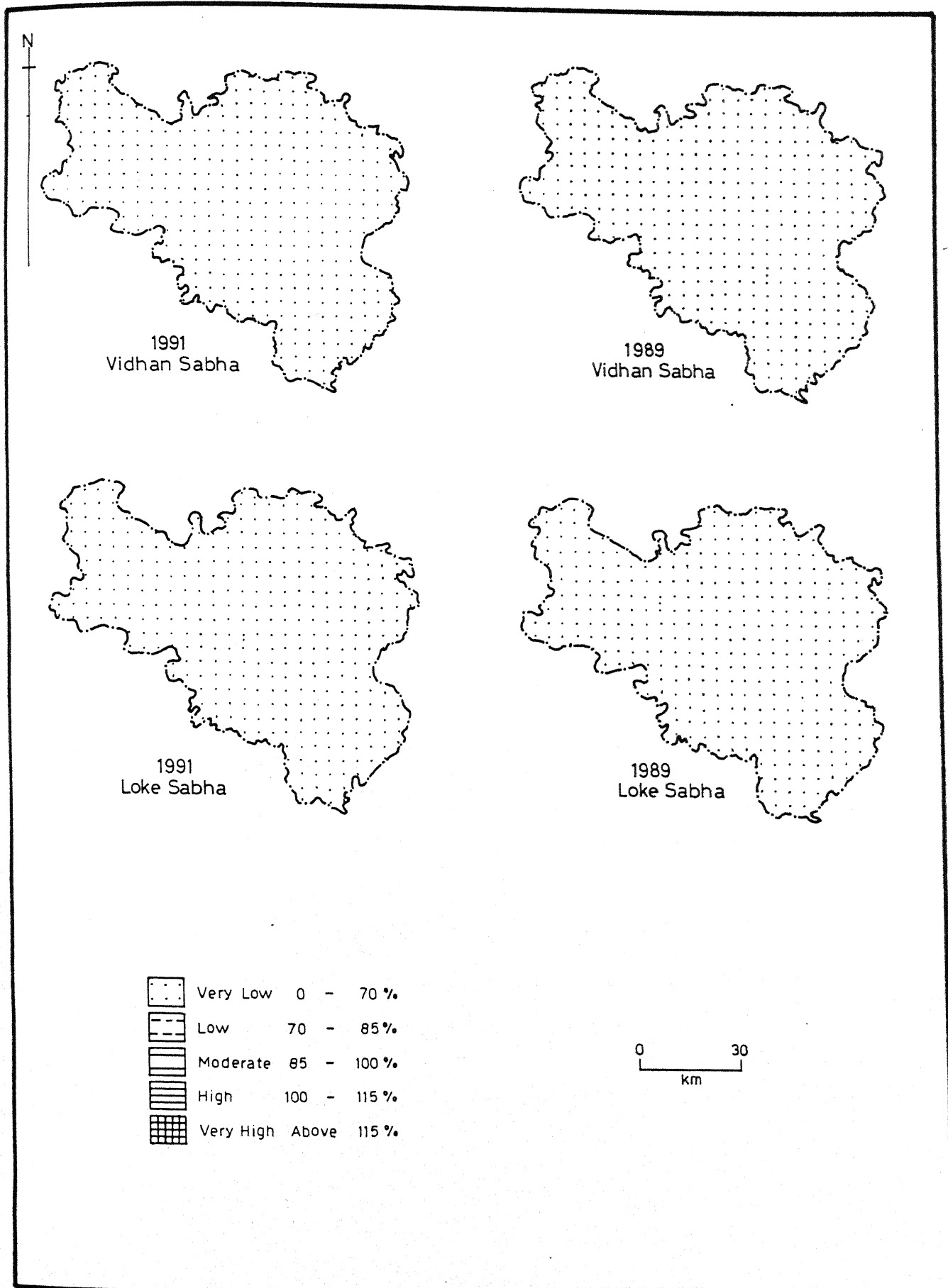
Fig. 7.9. Spatial Concentration of B.S.P. Votes Loke Sabha & Vidhan Sabha (Per cent) : 1991, 1989

मानचित्रानुसार इलाहाबाद जनपद में बहुजन समाज पार्टी उच्चतम, उच्च, मध्यम, निम्न संकेन्द्रण की स्थिति कभी नहीं प्राप्त की। जनमत कभी भी पूर्ण बहुमत से बहुजन समाज पार्टी की मदद नहीं किया।

निम्नतम संकेन्द्रण क्षेत्र के अन्तर्गत 70 प्रतिशत से कम संकेन्द्रण को सम्मिलित किया गया। इसका विस्तार निर्वाचन 1991 एवं 1989 में सम्पूर्ण जनपद में पाया गया।

7.3.4.2 विधानसभा का क्षेत्रीय सकेन्द्रण : इलाहाबाद जनपद में 1991; 1989 विधानसभा निर्वाचन की सापेक्ष स्थिति को मानचित्र 7.9 में प्रदर्शित किया गया है। जिससे उत्पन्न प्रतिरूिप निम्नानुसार है।

संकेन्द्रण प्रतिरूप को लोकसभा निर्वाचन की तरह विधानसभा निर्वाचन के निर्धरित किया गया, अर्थात् सम्पूर्ण संकेन्द्रण को उच्चतम (115 प्रतिशत से अधिक) उच्च 100 से 115 प्रतिशत के मध्य, मध्यम 85 से 100 के मध्य, निम्न 70 से 85 के मध्य, निम्नतम 70 प्रतिशत से कम 5 वर्गों में विभाजित किया गया।

मानचित्र 7.9 के अनुसार इलाहाबाद जनपद में बहुजन समाज पार्टी का सकेन्द्रण प्रतिरूप दोनों निर्वाचन वर्षों 1991, 1989 में कभी भी उच्चतम, उच्च, मध्यम, निम्न नही रहा। बहुजन समाज पार्टी का संकेन्द्रण प्रतिरूप दोनों वर्षों में विधानसभा क्षेत्रों में निम्नतम था। निर्वाचन वर्ष 1991 एवं 1989 के सन्दर्भ में सम्पूर्ण जिले में बहुजन समाज पार्टी निम्नतम दल समर्थन प्राप्त किया, अर्थात् संकेन्द्रण सभी विधान सभाओं में 70 प्रतिशत से कम पाया गया।

निम्नतम दल समर्थन प्राप्त करने का प्रमुख कारण बहुजन समाज पार्टी का वर्चस्व सीमित जनसमुदाय में होना, जातिगत समीकरणों की प्रधानता, पार्टी के प्रशासनिक ढांचे का कमजोर होना, दल में व्यक्तिवाद को बढ़ावा, जमीनी

नेताओं की कमी, जन कल्याण कार्यक्रमों का अभाव; कार्यकर्ताओं की कमी, अशिक्षित व्यक्तियों का दल से जुड़ा होना जो पार्टी की नीतियों, क्रार्यक्रमों की जानकारी सही ढंग से जनमत को नहीं समझा पाते हैं।

विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि पार्टी अपनी छवि, कार्यक्रम, नीति सीमित लोगों तक ही रखना चाहती है। उपरोक्त परिस्थितियों के होते हुए भी भविष्य में इस दल के विकास की सम्भावनायें अन्य दलों यथा, समाजवादी पार्टी, मार्क्सवादी पार्टी, समता पार्टी से सर्वाधिक है।

अष्टम् अध्याय

मतदान एवं सामाजिक चरों के बीच सह–सम्बन्ध

8. मतदान एवं सामाजिक चरों के बीच सह–सम्बन्ध

सामाजिक विचार मानव चेतना एवं भावनाओं को स्वयं संगठित एवं विकसित करते हैं। विचार भावना आचरण, के परिष्करण से ही सृजनात्मक प्रवृत्ति का निर्माण होता है। यह परिवर्तन सामाजिक संरचना को सुदृढ़ करता है क्योंकि व्यक्ति अपने से ऊपर उठकर सामाजिक विकास को महत्व देता है। इस तरह सामाजिक और राजनैतिक चिन्तन, मनन से व्यावध्हारिक उपयोगिता और सुन्दरता दोनों का समावेश होता है। यह सत्य है कि मानव का बहुमुखी विकास प्रकृति से प्रभावित और नियन्त्रित है परन्तु सामाजिक संरचना का विकास वातावरण के आधार पर होता है।

प्रारम्भ से ही भारत में राजनैतिक व्यवहारों में व्यापक परिवर्तन होता रहा है। फिर भी यहाँ की सामाजिक संरचना में अनेकता में एकता का दर्शन है। उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर चरों का चयन इलाहाबाद जनपद की राजनैतिक परिस्थिति के अनुसार किया गया है इसके मूलरूप से राजनैतिक प्रासंगिकता को ध्यान में रखा गया है।

कुल जनंसख्या, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, साक्षर जनसंख्या हिन्दू एवं मुस्लिम जनसंख्या का निर्वाचन व्यवहार, मतदान में उनकी अभिरूचि के माध्यम में निर्धारित करने का प्रयास प्रस्तुत अध्याय में किया गया है। प्रस्तुत अध्याय को सुविधा की दृष्टि से आठ अनुभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम अनुभाग 8.1 में सामाजिक चरों में सह–सम्बन्ध निरूपित करने के लिए द्विचरीय एवं बहुचरीय समाश्रयण परिणामों का विश्लेषण किया गया है। द्वितीय अनुभाग 8.

2 में मतदान एवं कुल जनसंख्या के मध्य सह–सम्बन्ध निरूपित किया गया हैं। तृतीय अनुभाग 8.3 में मतदान एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के मध्य सह–सम्बन्ध निरूपित कर स्थानिक वितरण प्रस्तुत किया गया हैं। चतुर्थ अनुभाग 8.4 में मतदान एवं जनजाति जनसंख्या, 8.5 में मतदान एवं साक्षर जनसंख्या तथा 8.6 में मतदान एवं हिन्दू संख्या 8.7 में मतदान एवं मुस्लिम जनंसख्या के मध्य सह–सम्बन्ध निरूपित कर स्थानिक वितरण प्रस्तुत किया गया है। अन्त में अनुभाग 8.8 में मतदान एवं संयुक्त चरों के मध्य स्थापित सम्बन्ध का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

8.1 समाश्रयण प्रतिमान

रैखिक समाश्रयण प्रतिमान (द्विचरीय एवं बहुचरीय) के द्वारा मतदान एवं सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषण क्रमबद्ध ढंग से किया जा रहा है। मतदान एवं सामाजिक चरों के मध्य रैखिक सह–सम्बन्ध प्रतिमान निम्न सूत्र द्वारा स्पष्ट होता है।

$Y = a + bx$ (द्विचरीय)

$Y = a + b_1x_1+b_2x_2+b_3x_3+b_4x_4+b_5x_5+b_6x_6$ (बहुचरीय)

Y = मतदान

a = मतदान के उस परिणाम को बताता है जब मतदान पर सामाजिक–आर्थिक चरों का प्रभाव शून्य हो। b = सामाजिक आर्थिक चरों में परिवर्तन के फलस्वरूप मतदान में परिवर्तन की दर को बताता है।

X_1 = प्रथम चर (कुल जनसंख्या)

X_2 = द्वितीय चर (अनुसूचित जाति जनंसख्या)

X_3 = तृतीय चर (जनजाति जनसंख्या)

X_4 = चर्तुथ चर (साक्षर जनसंख्या)

X_5 = पंचम चर (हिन्दू जनंसख्या)

X_6 = षष्टम् चर (मुस्लिम जनंसख्या)

इस प्रकार X_1 से X_6 का अभिप्राय सामाजिक आर्थिक चरों से है।

समाभ्रमण प्रतिमान के द्वारा सामाजिक आर्थिक चरों के मध्य सम्बन्धों की प्रकृति मात्रा एवं सम्वन्धों का प्रसरण प्राप्त हुआ है जिसका विवरण निम्नानुसार है–

8.1.1 सम्बन्धों की प्रकृति : इलाहाबाद जिले में 1962 से 1991 तक सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन के लिए समाश्रयण प्रतिमानों का गणितीय अध्ययन किया गया जिसका विवरण तालिक 8.1.1 से 8.1.8 तक दिया गया है।

तालिका–8.1

सम्बन्धों की प्रकृति समाश्रयण प्रतिमान (1991)

द्विचरीय

प्रथम चर – 12871.73–5.717 x_1

द्वितीय चर – 12871.73–0.015 x_2

तृतीय चर – 12871.73–.0119 x_3

चतुर्थ चर – 12871.73–4.578 x_4

बहुचरीय

संयुक्तचर

$12871.73 - 5.717\ x_1 - 0.015\ x_2 - .00119\ x_3 - 4.578\ x_4$

तालिका 8.1.2

सम्बन्धों की प्रकृति समाश्रयण प्रतिमान 1989

द्विचरीय–

प्रथम चर – $33937.92 - .0190\ x_1$

द्वितीय चर – $33937.92 - .01940\ x_2$

तृतीय चर – $33937.92 - .0302\ x_3$

चर्तुथ चर – $33937.92 - .0502\ x_4$

पंचम चर – $33937.92 + 1.919\ x_5$

षष्ट्म चर – $33937.92 - 1.526\ x_6$

बहुचरीय–

संयुक्त चर–

$33937.92 - .0190\ x_1 - .1940\ x_2 - .0302\ x_3 - .0502\ x_4 + 1.919\ x_5 - 1.526\ x_6$

तालिका 8.1.3

सम्बन्धों की प्रकृति समाश्रयण प्रतिमान (1985)

द्विचरीय–

प्रथम चर – $15895.78 + .019\ x_1$

द्वितीय चर – 15895.78 + .089 x_2

तृतीय चर – 15895.78 + .032 x_3

चर्तुथ चर – 15895.78 + .024 x_4

पंचम चर – 15895.78 + .022 x_5

षष्ट्म चर – 15895.78 + .083 x_6

बहुचरीय–

15895.78 + .019 x_1+.089 x_2+ .032 x_3+ .024 x_4+ .022 x_5+ .083 x_6

तालिका 8.1.4

सम्बन्धों की प्रकृति समाभ्रमण प्रतिमान (1980)

द्विचरीय–

प्रथम चर – 14497.13 – .0303 x_1

द्वितीय चर – 14497.13 – .01360 x_2

तृतीय चर – 14497.13 – .1021 x_3

चर्तुथ चर – 14497.13 – .0427 x_4

पंचम चर – 14497.13 – .0125 x_5

षष्ट्म चर – 14497.13 – .0510 x_6

बहुचरीय– 14497.13 – .0303 x_1– .01360 x_2– .1021 x_3– .0427 x_4– .0125 x_5– .0510 x_6

तालिका 8.1.5

सम्बन्धों की प्रकृति समाश्रयण प्रतिमान (1977)

द्विचरीय–

प्रथम चर – 85522.43 – .007 x_1

द्वितीय चर – 85522.43 – .0624 x_2

तृतीय चर – 85522.43 – 2.168 x_3

चर्तुथ चर – 85522.43 – .0256 x_4

पंचम चर – 85522.43 – .0097 x_5

षष्ट्म चर – 85522.43 – .0506 x_6

बहुचरीय–

85522.43 – .007 x_1– .0624 x_2– 2.168 x_3– .0256 x_4– .0097 x_5– .
0506 x_6

तालिका 8.1.6

सम्बन्धों की प्रकृति समाश्रयण प्रतिमान (1974)

द्विचरीय–

प्रथम चर – 8513.42 – .0031 x_1

द्वितीय चर – 8513.42 – .0515 x_2

तृतीय चर – 8513.42 – .0416 X_3

चर्तुथ चर – 8513.42 – .0224 X_4

पंचम चर – 8513.42 – .0091 X_5

षष्ट्म चर – 8513.42 – .0572 X_6

बहुचरीय–

8513.42 – .0031 X_1– .0515 X_2– .0416 X_3– .0224 X_4– .0091 X_5– .0572 X_6

तालिका 8.1.7

सम्बन्धों की प्रकृति समाश्रयण प्रतिमान (1967)

द्विचरीय–

प्रथम चर – 6004.73 – .0111 X_1

द्वितीय चर – 6004.73 + .0831 X_2

तृतीय चर – 6004.73 – .0052 X_3

चर्तुथ चर – 6004.73 – .0054 X_4

पंचम चर – 6004.73 – .0341 X_5

षष्ट्म चर – 6004.73 – .0251 X_6

बहुचरीय–

6004.73 − .0111 x_1 + .0831 x_2 − .0052 x_3 − .0054 x_4 − .0341 x_5.
0251 x_6

तालिका 8.1.8

सम्बन्धों की प्रकृति समाभ्रमण प्रतिमान (1962)

द्विचरीय–

प्रथम चर − 68908.18 + .176 x_1

द्वितीय चर − 68908.18 + 1.592 x_2

तृतीय चर − 68908.18 + .792 x_3

चर्तुथ चर − 68908.18 − .2570 x_4

बहुचरीय–

68908.18 + .176 x_1 + 1.592 x_2 + .792 x_3 − .2570 x_4

तालिका 8.1.1 से 8.1.8 का अध्ययन करने के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष निकलता है–

1. निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक अधिकांश चरों के साथ सम्बन्ध ऋणात्मक पाया गया है।
2. निर्वाचन वर्ष 1992, 1977, 1974 के सम्पूर्ण चर ऋणात्मक है।
3. निर्वाचन वर्ष 1989 में पंचम चर में धनात्मक सम्बन्ध है, बाकी सभी चरों में ऋणात्मक सम्बन्ध है।
4. निर्वाचन वर्ष 1985 सभी चरों में धनात्मक सम्बन्ध है।

5. निर्वाचन वर्ष 1980 में षष्टम् चर में धनात्मक सम्बन्ध है।

6. निर्वाचन वर्ष 1967 में द्वितीय चर में धनात्मक सम्बन्ध है।

7. निर्वाचन वर्ष 1962 में प्रथम, द्वितीय, तृतीय चरों में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जब कि चर्तुथ चर में ऋणात्मक सम्बन्ध है।

8.1.2 सम्बन्धों की मात्रा

इस अनुभाग में 1962 से 1992 तक के निर्वाचन में चरों के सम्बन्धों की मात्रा या डिग्री का वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है। पाँचों चरों के साथ मतदान का सह–सम्बन्ध गुणांक निरूपित किया जा रहा है। सह–सम्बन्ध तालिका 8.1.2.1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका– 8.1.2.1

सम्बन्धों की मात्रा (सह : सम्बन्ध गुणांक) 1962–1991

क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर (कुल जनसख्या)	+.473	-.295	-.075	-.160	-.428	+.282	-.130	-.005
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित जाति जन.)	+.342	-.095	-.212	-.257	-.336	+.246	-.250	-.077
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसंख्या)	N.A.	-.075	-.288	-.332	-.321	+.255	N.A.	-.1150
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जन.)	-.046	-.076	-.288	-.335	-.331	+.024	.208	-.187
5.	पचम चर (हिन्दू जन.)	N.A.	-.036	-.232	-.248	-.195	+.293	+.001	N.A.
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसंख्या)	N.A.	.042	-.098	-.085	-.151	+.304	-.264	N.A.
7.	संयुक्त चर	-.473	-.295	-.075	-.160	-.428	+.282	-.130	-.005

तालिका 8.1.2.1 के अध्ययन से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं–

1. निर्वाचन वर्ष 1991 में मतदान के साथ सभी चरों का सह सम्बन्ध निम्न ऋणात्मक पाया गया।

2. निर्वाचन वर्ष 1989 में पंचम चर का धनात्मक सह–सम्बन्ध का बाकी सभी में ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

3. निर्वाचन वर्ष 1985 में संयुक्त चर ऋणात्मक सह–सम्बन्ध धारण किये है, बाकी सभी का मतदान के साथ धनात्मक सह–सम्बन्ध है।

4. निर्वाचन वर्ष 1980 में संयुक्त चर का मतदान के साथ सह–सम्बन्ध धनात्मक है बाकी सभी का ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

5. निर्वाचन वर्ष 1977, 1974 में मतदान के साथ समस्त चरों का सम्बन्ध ऋणात्मक है किन्तु अन्तर के साथ।

6. निर्वाचन वर्ष 1967 में समस्त चरों का मतदान के साथ निम्न ऋणात्मक सम्बन्ध है।

7. निर्वाचन वर्ष 1962 में मतदान के साथ प्रथम, द्वितीय एवं संयुक्त चर में धनात्मक सम्बन्ध है; बाकी सभी में ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है।

8.1.3 समाश्रयण अवशेष

समाश्रयण प्रतिमान से सामाजिक चरों के आधार पर अनुमानित मतदान तथा वास्तविक मतदान के अन्तर (विचलन) को मतदान का समाश्रयण अवशेष कहा गया है। इस समाश्रयण अवशेष को मानचित्रण के लिए मानक लाब्धि में

परिवर्तित किया गया है। तदोपरान्त इन अवशेषों को विभिन्न वर्गो में विभक्त किया गया ये वर्ग तालिका–8.1.3 1 में वर्णित है।

तालिका 8.1.3.1

समाश्रयण से प्राप्त अवशेषों के वर्ग

वर्ग	सीमायें मानकलब्धि	दिशा एवं स्तर	क्षेत्र विवरण
1	1.5 से ऊपर	उच्चतम धनात्मक	सामान्य से अधिक उच्चतम
2	1.0 से 1.5	उच्च धनात्मक	सामान्य से अधिक (उच्च)
3	0.5 से 1.0	उच्च मध्यम	सामान्य से अधिक (मध्यम)
4	0.5 से –0.5	मध्यम	सामान्य
5	–0.5 से –1.0	ऋणात्मक मध्यम	सामान्य से निम्न (मध्यम)
6	–1.0 से –1.5	ऋणात्मक उच्च	सामान्य से निम्न (उच्च)
7	–1.5 से ऊपर	ऋणात्मक उच्चतम	सामान्य से निम्न (उच्चतम)

समाभ्रमण अवशेषों के माध्यम से सफल एवं असफल क्षेत्रों का निर्धारण किया गया। मतदान के साथ पृथक–पृथक चरों एवं संयुक्त चरों के सफल क्षेत्र वे है जहाँ इनके मध्य सम्बन्ध सम्पूर्ण रूप में पाया गया। वास्तविक रूप से मध्यम वर्ग वाले क्षेत्रों से ही परिकल्पना पूर्ण हुई है।

तालिका– 8.1.3.1

मानक त्रुटि (1962–1991)

क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर	.094	.010	.011	.0131	.0185	.0188	.041	.0031
2.	द्वितीय चर	1.26	.249	.068	.067	.110	.101	.216	.057

3.	तृतीय चर	N.A.	N.A.	.066	.087	.151	N.A.	.021	11.41
4.	चतुर्थ चर	1.57	.0197	.021	.020	.035	.0312	.067	.011
5.	पंचम चर	N.A.	N.A.	.011	.0110	.0184	.0207	.046	N.A.
6.	षष्टम् चर	N.A.	N.A.	.167	.171	.0191	.075	.160	N.A.
7.	संयुक्त चर	.094	.0103	.0117	.0131	.0094	.0188	.041	.0031

तालिका– 8.1.3.3

एफ0 अनुपात

क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर	3.47	1.14	.069	.318	2.69	1.044	.209	3.5
2.	द्वितीय चर	1.59	.111	.567	.855	1.529	.773	.801	.072
3.	तृतीय चर	N.A.	N.A.	.651	1.27	.89	N.A.	.65	.161
4.	चतुर्थ चर	.026	.070	1.091	1.53	1.485	.609	.546	.43
5.	पंचम चर	N.A.	N.A.	.687	.789	.476	1.131	1.68	N.A.
6.	षष्टम् चर	N.A.	N.A.	.116	.088	.861	1.223	.899	N.A.
7.	संयुक्त चर	3.473	1.148	.069	.318	.794	.107	.209	3.50

तालिका– 8.1.3.4

मान की मानक त्रुटि 1962–1991

क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर	63161.52	5970.79	8835.80	8755.18	13637.21	15868.84	35020.27	13397.12
2.	द्वितीय चर	67391.13	6221.31	8658.75	8570.39	14211.10	16036.35	34200.82	13357.04
3.	तृतीय चर	N.A.	N.A.	8325.10	8460.30	12210.80	N.A.	3418.20	13308.42
4.	चतुर्थ चर	71642.90	6231.70	8483.83	8353.81	14223.92	16140.31	34546.24	13160.95
5.	पंचम चर	N.A.	N.A.	8617.68	8592.43	14798.72	15816.13	35323.68	N.A.

6.	पष्टम् चर	N.A.	N.A.	8818.37	8838.21	14601.32	15761.27	34070.61	N.A.
7.	सयुक्त चर	63161.52	5970.79	8835.80	8755.18	6353.80	16471.76	35020.27	13397

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना निर्धारित थी कि क्या मतदान पर अन्य चरों एवं संयुक्त चरों का प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि कुछ चरों का प्रभाव व्यापक रूप से मतदान पर पड़ा यद्यपि कुछ चरों का प्रभाव निम्नतम रहा लेकिन संयुक्त चर के द्वारा अध्ययन करने पर परिकल्पना पूर्ण सिद्ध हुई। जिसका पूर्ण विवरण अध्याय के अगले अनुभागों में वर्णित है।

अध्ययन से यह बात भी स्पष्ट हुई की जनसंख्या का कुछ वर्ग मतदान के प्रति अधिक जागरूक है जब कि कुछ वर्ग में जागरूकता मध्यम है। राजनैतिक जागरूकता मुख्य रूप से शिक्षित वर्ग में अधिक है जबकि अन्य वर्ग में मध्यम। इस तरह अपनी परिकल्पना पूर्णतः सिद्ध हुई।

तालिका 8.1.3.1 के आधार पर समाश्रयण अवशेषों को तीन भागों में रखा गया, सामान्य क्षेत्र, सामान्य से अधिक, सामान्य से निम्न। सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत वे चर है जहां मतदान एवं चरों के मध्य सम्बन्ध मध्यम है सामान्य से अधिक एवं सामान्य निम्न को असफल क्षेत्रों के रूप में प्रदर्शित किया गया। अर्थात् इन क्षेत्रों में मतदान एवं घटकों के मध्य रैखिक सम्बन्ध नहीं पाया गया।

8.2 मतदान एवं कुल जनसंख्या सह–सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले में 1962 से 1991 में सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन में मतदान प्रतिशत तथा प्रथम चर के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों वाले क्षेत्रों एवं असम्बन्ध क्षेत्रों का वर्णन किया गया है। इन समाश्रयण अवशेषों
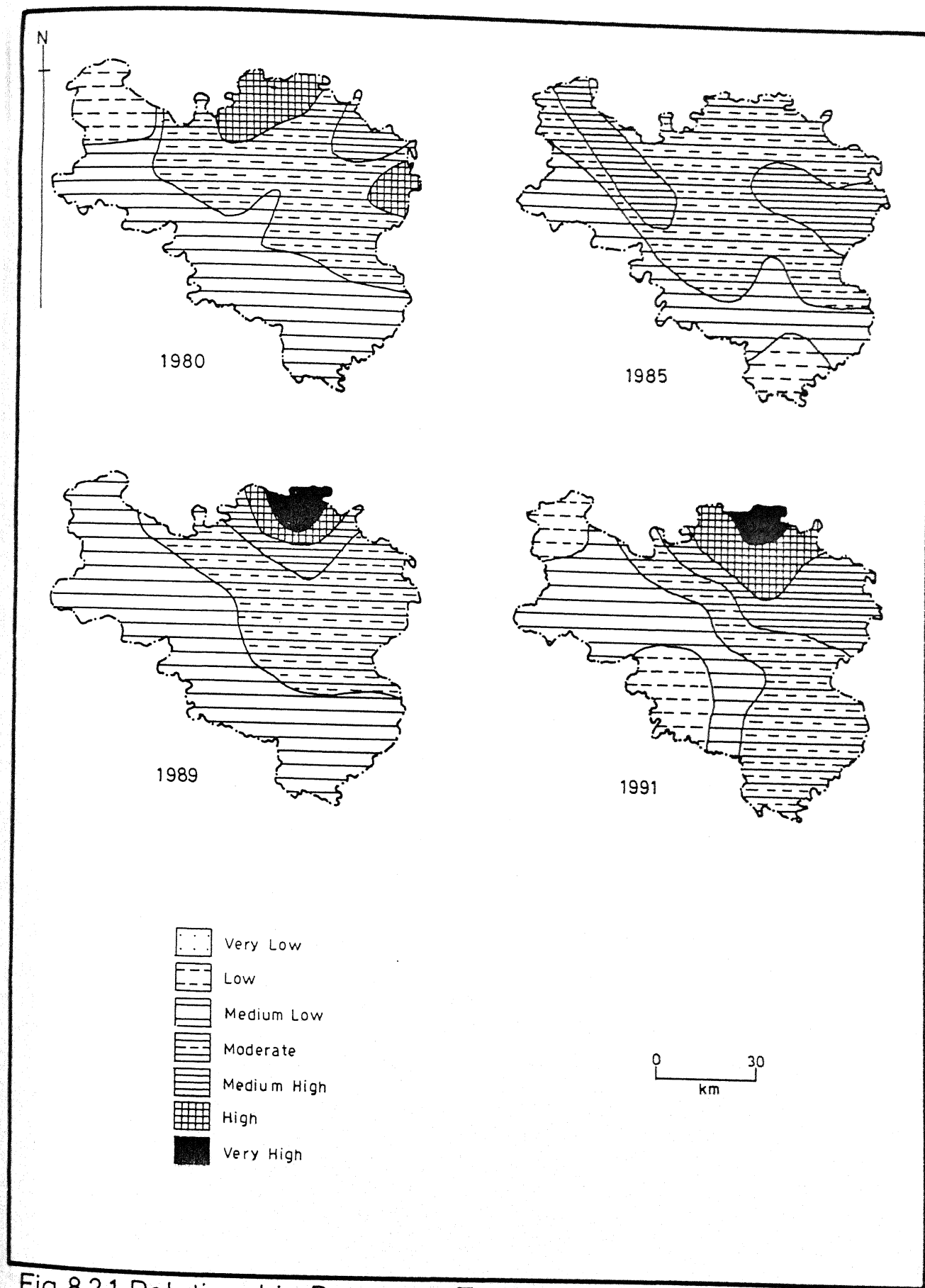
Fig. 8.2.1 Relationship Between Turnout and Population 1980-91 :Bivariate Regression
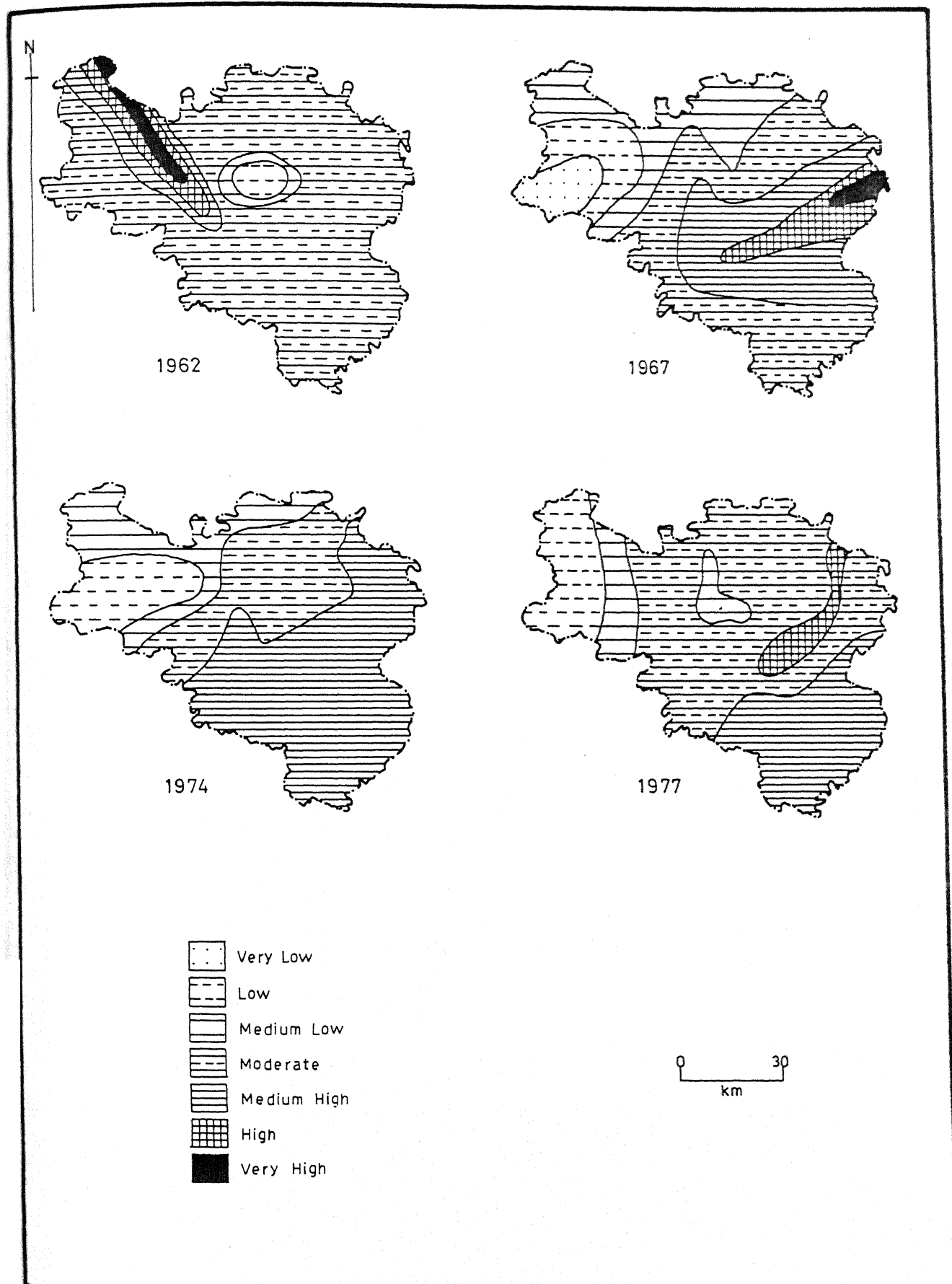
Fig. 8.2.2 Relationship Between Turnout and Population 1962 - 77
:Bivariate Regression

को मानचित्र 8.2.1 एवं 8.2.2 में प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार के क्षेत्रों का प्रदर्शन निम्नानुसार निरूपित है।

8.2.1 सामान्य क्षेत्र

1962 से 1991 तक सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन के मतदान एवं कुल जनसंख्या चर के मध्य रैखिक सम्बन्ध वाले क्षेत्र इलाहाबाद जनपद में निम्नानुसार विद्यमान है। इसके अन्तर्गत 1991 में मेजा, करछना विधान सभा का 80 प्रतिशत से अधिक भाग सम्मिलित है अर्थात् मेजा करछना का पश्चि० भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत है। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद दक्षिणी का दक्षिणी पश्चि० उत्तरी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का उत्तर पूर्व भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा एवं चायल विधान सभा उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी भाग; नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1989 में मेजा का उत्तरी पूर्वी भाग, सम्पूर्ण करछना, हंडिया, इलाहाबाद दक्षिणी, उत्तरी विधान, प्रतापपुर का दक्षिणी पूर्वी भाग, नवाबगंज का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी, विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में मेजा का उत्तरी पूर्वी भाग करछना, बारा का अधिकांश भाग, सम्मिलित हैं इसके अतिरिक्त लगभग सम्पूर्ण जिले में सामान्य मतदान प्रतिरूप प्रदर्शित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1980 में मेजा का उत्तरी पूर्वी, करछना, इलाहाबाद उत्तरी पश्चिमी, चायल सम्पूर्ण विधान सभा, प्रतापपुर का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मेजा, नवाबगंज, सोरांव, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्र, मेजा का दक्षिणी, दक्षिणी पश्चिमी एवं पूर्वी भाग, बारा विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1974 में मेजा का दक्षिणी, पश्चिमी, पूर्वी भाग, झूंसी का उत्तरी पूर्वी, पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी एवं इलाहाबाद पश्चिमी का उत्तरी भाग, सम्पूर्ण इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा क्षेत्र, नवाबगंज, सोरांव का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में मेजा का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद (उ. द. प.) का क्रमशः उत्तरी, दक्षिणी एवं उत्तरी पूर्वी पश्चिमी भाग चायल का उत्तरी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग, नवाबगंज का दक्षिणी भाग, झूंसी, प्रतापपुर का उत्तरी, भाग इसके अन्तर्गत सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में करारी, चायल, सिराथू का अल्पतम भाग सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

8.2.2 सामान्य से अधिक

इस वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न निर्वाचन वर्षो में जिले के अन्तर्गत निम्न स्थिति विद्यमान थी।

वर्ष 1991 के निर्वाचन में जिले की दक्षिणी पश्चिमी उत्तरी पश्चिमी, उत्तरी पूर्वी विधान सभाऐं सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1989 में उत्तरी पूर्वी विधान का छिट–पुट क्षेत्र सम्मिलित हैं।

वर्ष 1985 में पूर्वी विधानसभा, एवं उत्तरी पश्चिमी विधान सभा का थोड़ा भाग इसके अन्तर्गत सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में हंडिया विधान सभा का पूर्वी भाग, सिराथू विधान सभा का सम्पूर्ण भाग एवं नवाबगंज, सोरांव विधान सभा का उत्तरी भाग इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इलाहाबाद जनपद का छिट–पुट भाग इसके अन्तर्गत सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इलाहाबाद जिले का दक्षिणी मध्य भाग सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1967 में इलाहाबाद जनपद के पूर्वी में मेजा हंडिया करछना का छिट–पुट भाग सम्मिलित हैं।

1962 में इलाहाबाद जनपद के उत्तरी पश्चिमी भाग में सिराथू करारी, सोरांव पश्चिमी एवं भरवारी का थोड़ा सा भाग सम्मिलित है।

8.2.3 सामान्य से निम्न

इस वर्ग के अन्तर्गत असम्बद्ध क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है इसके अन्तर्गत जनपद के विभिन्न निर्वाचन वर्षों में स्थिति निम्नानुसार रही।

निर्वाचन वर्ष 1991 एवं 1989 में सम्पूर्ण जिले का दक्षिणी पश्चिमी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985–80 में जनपद का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 19 77 में चायल, मंझनपुर का पश्चिमी भाग, ही इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1974 एवं 1967 में इलाहाबाद जनपद की पश्चिमी विधान सभा इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इलाहाबाद जनपद की दक्षिणी पश्चिमी विधान सभा बारा मुख्य रूप से सम्मिलित है इसके अतिरिक्त चायल भरवारी विधान सभायें भी सम्मिलित हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि कुल जनसंख्या ने नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर सामान्य मतदान किया। नगरीय क्षेत्रों की जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक जागरूक है।

8.3 मतदान एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में 1962 से 1991 तक इलाहाबाद जिले के राज्य विधान सभा निर्वाचन से प्राप्त कुल मतदान एवं अनुसूचित जाति के बीच स्थापित रैखिक संबंध वाले क्षेत्रों एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इन समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 8.3.2 में निरूपित किया गया है। सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य एवं सामान्य से अधिक तथा सामान्य से निम्न है। उनका वर्णन तार्किक ढंग से किया जा रहा है।

8.3.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्रानुसार कुल मतदान एवं अनुसूचित जाति के मध्य रैखिक सम्बद्ध वाले अधिकांश भाग जिले के पूर्वी एवं उत्तरी भागों में विद्यमान है। विभिन्न वर्षो में इस स्थिति में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित है।

मानचित्र 8.3.1 एवं 8.3.2 के अनुसार वर्ष 1991 में सामान्य क्षेत्र जिले में केवल बारा विधान सभा में रहा।
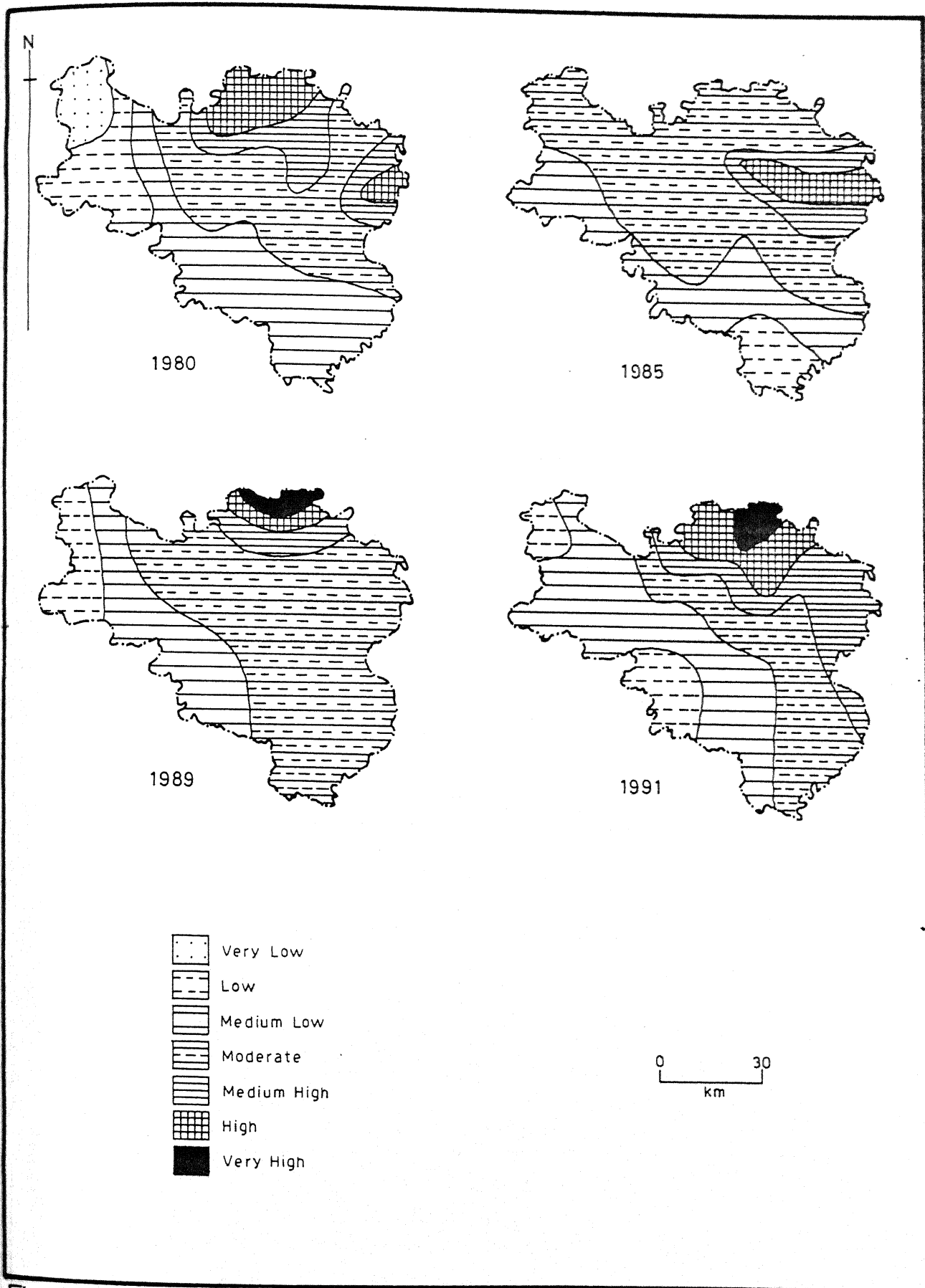
Fig. 8.3.1 Relationship Between Turnout and S.C Population 1980-91 :Bivariate Regression
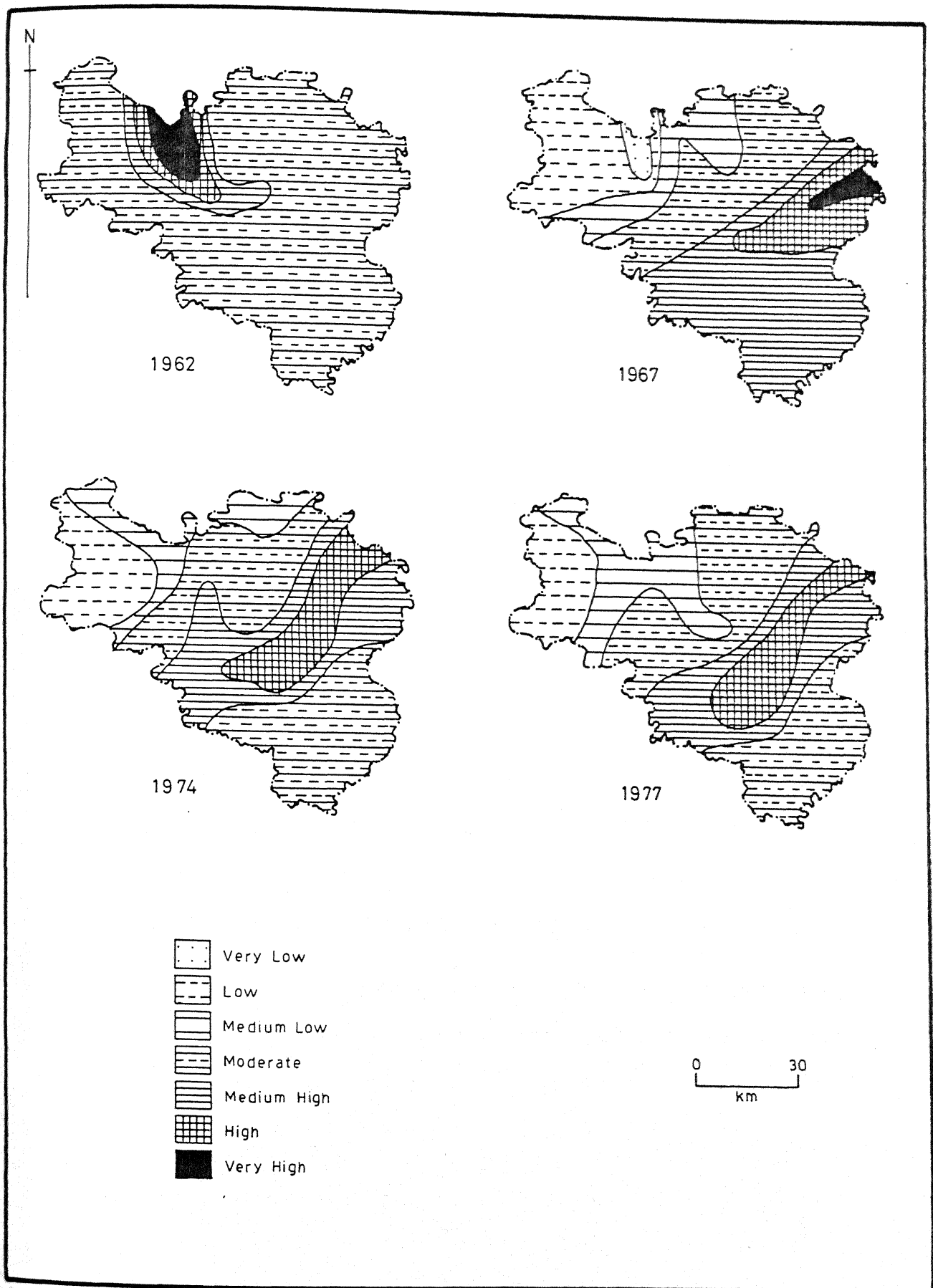
Fig. 8.3.2 Relationship Between Turnout and S.C. Population 1962–77 :Bivariate Regression

वर्ष 1989 के निर्वाचन में स्थित कुछ भिन्न रही इसमें मेजा, करछना, हंडिया, इलाहाबाद दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी विधानसभा, झूसी का उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त बारा का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज दक्षिणी, दक्षिणी पश्चिमी दक्षिणी पूर्वी एवं सिराथू का पूर्वी किनारा भी सम्मिलित है।

वर्ष 1985 में इसके अन्तर्गत मेजा उत्तरी पूर्वी, करछना उत्तरी पूर्वी, बारा, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी, मंझनपुर, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज पूर्वी, सोरांव, प्रतापपुर उत्तरी पूर्वी एवं उत्तरी पश्चिमी सम्मिलित हैं।

मानचित्रानुसार वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत मेजा उत्तरी पूर्वी, करछना, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, बारा उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी, प्रतापपुर मध्यवर्ती, हंडिया पश्चिमी, झूंसी दक्षिणी, चायल का दक्षिण पश्चिम भाग छोड़ कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है।

वर्ष 1977 में मेजा का उत्तरी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, बारा का पूर्वी उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू, मंझनपुर का पश्चिमी भाग, झूंसी का दक्षिणी पश्चिमी भाग, करछना का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा का दक्षिणी एवं उत्तरी विधानसभा का पश्चिमी भाग, प्रतापपुर का उत्तरी पश्चिमी किनारा, सोरांव, नवाबगंज पूर्वी उत्तरी भाग में सामान्य सह–सम्बन्ध था।

वर्ष 1974 के निर्वाचन में इसके अन्तर्गत मेजा, बारा का पश्चिमी भाग, चायल का दक्षिणी पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी का पश्चिमी भाग, नवाबगंज सोरांव का दक्षिणी भाग, झूंसी का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में बारा उत्तरी पश्चिमी; इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी भाग एवं इलाहाबाद दक्षिणी का मध्य उत्तरी भाग झूंसी का मध्य

उत्तरी भाग, सोरांव पूर्वी, प्रतापपुर उत्तरी पूर्वी भाग सामान्य सह सम्बन्ध के अन्तर्गत आते हैं।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, बारा, करछना केवाई, फूलपुर सोरांव पूर्व एवं सोरांव पश्चिमी, झूंसी, सिराथू का पश्चिमी भाग, करारी का पश्चिमी भाग इलाहाबाद शहर उत्तरी का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक के विश्लेषण से स्पष्ट हो कि सामान्य क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ है अर्थात अनुसूचित जाति जनसंख्या के मतव्यवहार में आंशिक परिवर्तन ही दृष्टिगत है। 1962 की अपेक्षा 1985, 1989, 1991 के निर्वाचन में मतदान व्यवहार में अनुसूचित जाति जनंसख्या मे जागरूकता दृष्टिगत होती है अर्थात सामान्य क्षेत्रों की संख्या में वृद्धि हुई है।

8.3.2 सामान्य से अधिक

मानचित्र 8.3.1 एवं 8.3.2 के अन ुसार विभिन्न निर्वाचन वर्षों में अनुसूचित जाति जनसंख्या का मतदान व्यवहार सामान्य से अधिक निम्नानुसार है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में ह ंडिया मध्य उत्तरी पूर्वी दक्षिपी पूर्वी भाग, प्रतापपुर, झूंसी का उत्तरी भाग, सोरांव का दक्षिणी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज मध्य उत्तरी, उत्तरी पूर्वी, दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

1989 के निर्वाचन में इसके अन्तर्गत सोरांव, नवाबगंज उत्तरी पूर्वी, झूंसी उत्तरी, प्रतापपुर उत्तरी पश्चिमी सम्मिलित हैं।

1985 में इस वर्ग में हंडिया, झूंसी मध्यवर्ती भाग, प्रतापपुर का दक्षिणी भाग, नवाबगंज का मध्य भाग इलाहाबादइ पश्चिमी का मध्य भाग, चायल का दक्षिणी पश्चिमी भाग, सिराथू सम्मिलित है।

1980 के निर्वाचन में हंडिया, झूंसी उत्तरी, सोरांव, नवावगंज मं सामान्य से अधिक सम्बन्ध स्थापित हुआ।

1977 में हंडिया का उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, करछना, नैनी का दक्षिणी भाग, प्रतापपुर मध्य, बारा, मध्य में सामान्य से अधिक प्रभाव है।

1974 में सामान्य से अधिक प्रभाव हंडिया, प्रतापपुर, झूंसी, द0 पूर्वी, करछना, बारा मध्य, इलाहाबाद पश्चिमी दक्षिणी में था।

1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, करछना मध्य, मेजा, बारा पूर्वी, प्रतापपुर पूर्वी, झूंसी दक्षिणी सम्मिलित था।

1962 में इस वर्ग के अनतर्गत चायल, करारी सिराथू पूर्वी, भरवारी, सोरांव का पश्चिमी भाग सम्मिलित था।

8.3.3 सामान्य से निम्न

मानचित्रानुसार सामान्य से निम्न के अन्तर्गत विभिन्न निर्वाचन वर्षों में स्थिति निम्नानुसार रही–

1991 में निर्वाचन में इस वर्ग में–मेजा का पश्चिमी भाग, बारा, करछना का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी का दक्षिणी पश्चिमी भाग, चायल का मध्य भाग एवं मंझनपुर सिराथू सम्मिलित थे।

वर्ष 1989 के निर्वाचन में सिराथू सम्पूर्ण पश्चिमी किनारा छोड़कर, मंझनपुर, बारा का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित था।

इसी तरह वर्ष 1985 में मध्य मेजा, दक्षिणी मेजा, दक्षिणी पश्चिमी मंझनपुर एवं 1980 में बारा का मध्यवर्ती भाग, मंझनपुर, सिराथू चायल सम्मिलित है।

वर्ष 1977 में मंझनपुर, सिराथू का पश्चिमी भाग एवं 1974 में मंझनपुर, सिराथू–चायल उत्तरी पश्चिमी, सोरांव उत्तरी इसके अन्तगर्त सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में सिराथू, मंझनपुर, नवाबगंज उत्तरी एवं दक्षिणी पूर्वी, सोरांव सम्मिलित था किन्तु 1962 में इस वर्ग में झुकाव शून्य रहा।

8.4 मतदान एवं जन जाति जनसंख्या सहः सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले में 1962 से 1991 तक सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन से प्राप्त मत एवं जनजाति जनसंख्या के बीच स्थापित रैखिक सम्बन्ध वाले क्षेत्रों एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का वर्णन निरूपित किया गया है। इसके समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 8.4.1 में प्रदर्शित किया गया है। सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों को क्रमशः तीन भागों में बांटकर वर्णन प्रदर्शित किया गया है। मानचित्रानुसार सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र सामान्य, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न है। प्रस्तुत मानचित्र में कुल मतदान में जनजाति के सम्बन्ध को सुव्यवस्थित ढंग से निरूपित किया गया है। मानचित्रानुसार विश्लेषण से निम्नवत स्थिति विद्यमान है।

8.4.1 सामान्य क्षेत्र : अनुसूचित जाति की अपेक्षा जनजाति चर का विस्तार ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है मानचित्रानुसार जनजाति सामान्य क्षेत्र की स्थिति विभिन्न वर्षों में निम्नवत है–

वर्ष 1991 में सामान्य क्षेत्र जिले में मेजा मध्यवर्ती पूर्वी भाग, करछना उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, हंडिया पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा सम्पूर्ण भाग, झूंसी का दक्षिणी भाग, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का उत्तरी पूर्व- एवं पश्चिमी भाग सम्मिलित है जिले की अधिकांश विधान सभाओं में रैखिक समाभ्रमण सम्बद्ध सामान्य है।
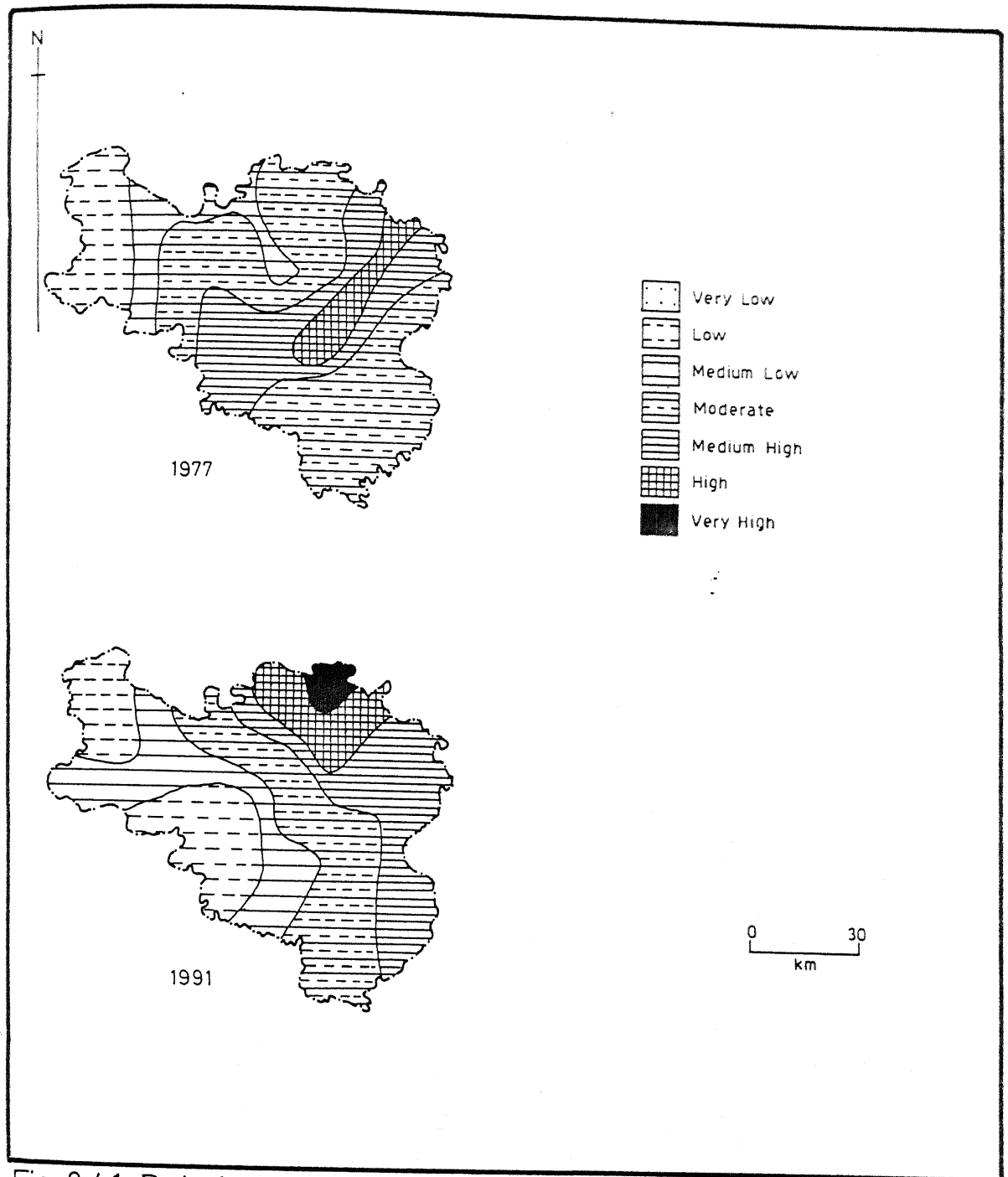
Fig. 8.4.1 Relationship Between Turnout and S.T. Population: 1977, 1991 Bivariate Regression

वर्ष 1989, 1985, 80, 74 निर्वाचन में जनजाति का सम्बद्ध अव्यवस्थित पाया गया। अधिकांश भागों मे समाभ्रमण स्थित ऋणात्मक शून्य रही।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इसके अन्तर्गत मंझनपुर, सिराथू का पूर्वी भाग, प्रतापपुर दक्षिणी हंडिया पूर्वी, नवाबगंज पूर्वी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 एवं 62 में भी जनजाति सम्बन्ध ऋणात्मक शून्य है।

सारांशतः स्पष्ट है कि निर्वाचन वर्ष 1991 एवं 1977 छोड़कर बाकी कुल मतदान में जनजातियों का ऋणात्मक शून्य सम्बन्ध रहा।

8.4.2 सामान्य से अधिक : मानचित्र 8.4.1 के अनुसार जन जातियों का मतदान के प्रति सम्बन्ध मात्र दो वर्षों 1991 एवं 1977 में रहा, जो निम्नानुसार है।

प्रतिमान के अनुसार असम्बद्ध क्षेत्रों में वर्ष 1991 में मेजा का पूर्वी भाग, हंडिया का दक्षिणी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, प्रतापपुर का सम्पूर्ण भाग, झूंसी मध्य, उत्तरी पश्चिमी, दक्षिणी पूर्वी भाग, सोरांव सम्पूर्ण भाग, नवाबगंज का मध्य उत्तरी पूर्वी भाग एवं 1977 में बारा मध्य, करछना, हंडिया पश्चिमी, प्रतापपुर का उत्तरी पश्चिम भाग सम्मिलित है।

8.4.3 सामान्य से निम्न : समाभ्रमण प्रतिमान के द्वारा असम्बद्ध क्षेत्रों में सामान्य से निम्न मान वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जिसके अन्तर्गत वर्ष 1991 में बारा, मंझनपुर सिराथू सम्पूर्ण विधानसभा चायल का मध्य दक्षिणी, उत्तरी पश्चिमी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, सिराथू विधानसभा का पश्चिमी भाग, नवाबगंज का मध्य एवं पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी

विधानसभा का पश्चिमी भाग इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा का उत्तरी भाग इसके अन्तर्गत सम्मिलित हैं इसके अलावा कुछ विधानसभाओं के किनारे भी सम्मिलित हैं।

8.5 मतदान एवं साक्षर जनसंख्या सह सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जनपद में 1962 से 1991 में सम्पन्न विधान सभा चुनावों मे मतदान एवं साक्षर जनसंख्या के मध्य स्थापित सह–सम्वन्ध को रैखिक समाश्रयण से सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों में बांट कर अध्ययन किया गया है। इन समाभ्रमण अवशेषों को मानचित्र (8.5.1 एवं 8.5.2) में प्रदर्शित किया गया है। मानचित्रानुसार साक्षर जनसंख्या ए वं मतदान के बीच निम्नवत् प्रदर्शन निरूपित हुआ है।

8.5.1 सामान्य क्षेत्र

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक सम्पन्न विधान सभा निर्वाचनों में मतदान एवं साक्षर जनसंख्या के बीच सम्बद्ध क्षेत्रों के अन्तर्गत विभिन्न वर्षो में निम्नानुसार विधानसभायें सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इसके अन्तर्गत मेजा का मध्यवर्ती पूर्वी भाग, करछना का उत्तरी पूर्वी भाग, हंडिया का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी सम्पूर्ण, झूंसी का दक्षिणी भाग, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का उत्तरीपूर्वी भाग छोड़कर समस्त भाग इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिमी भाग सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना हंडिया, इलाहाबाद दक्षिणी इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद पश्चिम का उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी भाग, झूंसी विधान सभा का ऊपरी उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, प्रतापपुर विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, बारा
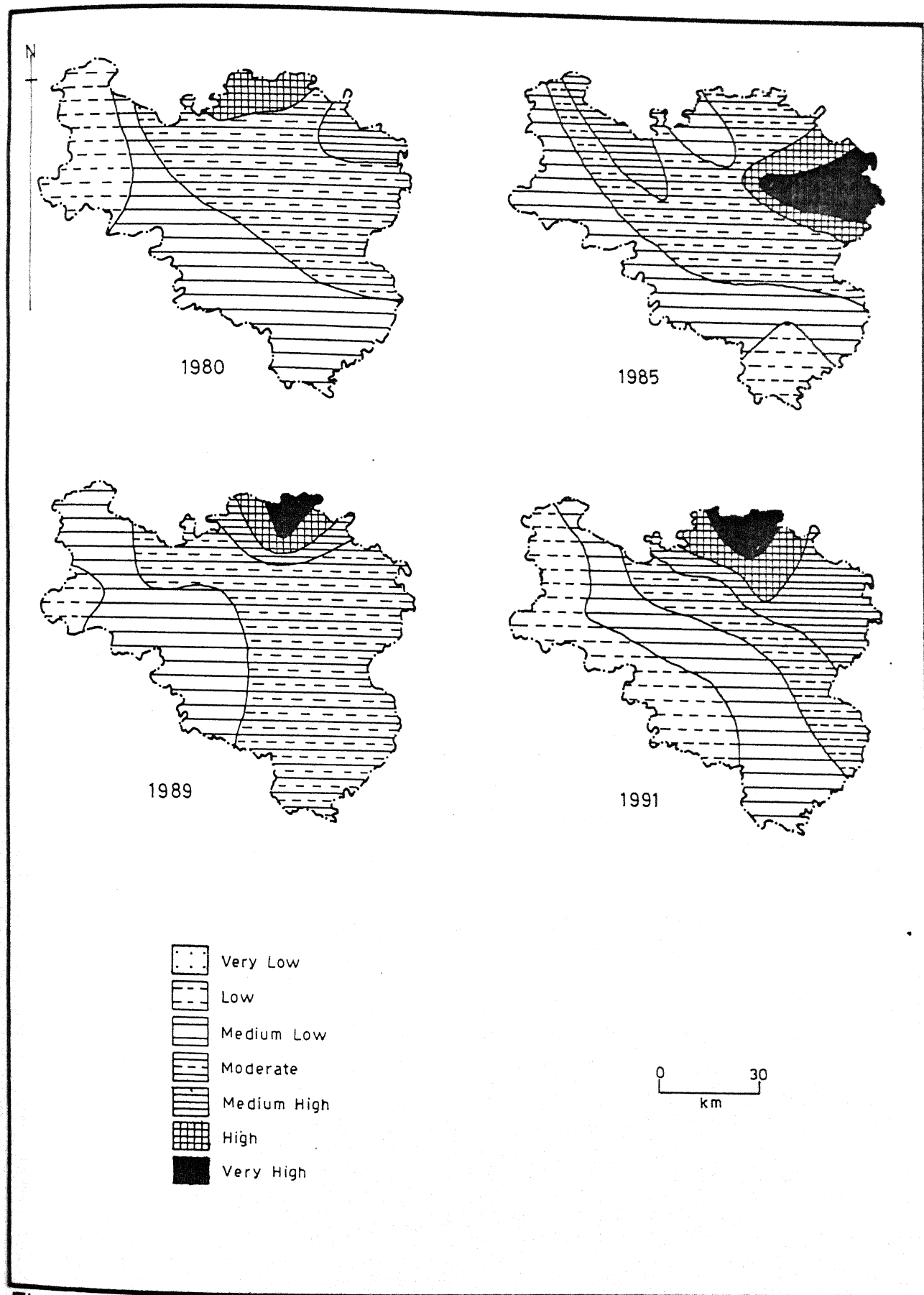
Fig. 8.5.1 Relationship Between Turnout and Literate Population 1980-9
:Bivariate Regression
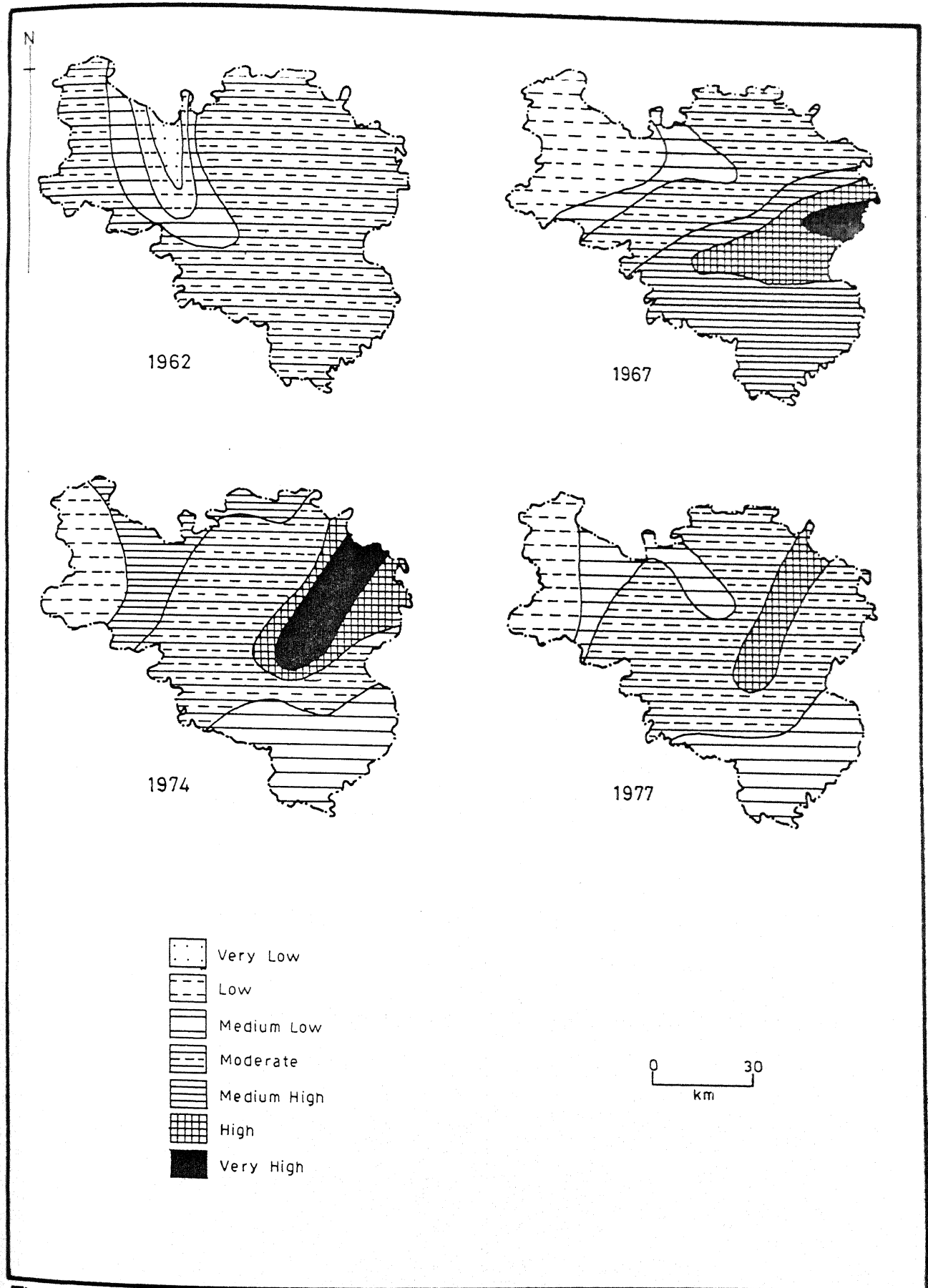
Fig. 8.5.2 Relationship Between Turnout and Literate Population 1962-77 :Bivariate Regression

विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है। साक्षर जनसंख्या का मतदान के साथ सह–सम्बन्ध सामान्य है अर्थात् अधिकांश भाग इलाहाबाद जिले का सामान्य के अन्तर्गत समाहित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इसके अन्तर्गत मेजा का उत्तरी पूर्वी भाग, करछना का उत्तरी पूर्वी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, बारा, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी विधान सभा, मंझनपुर, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज पूर्वी, सोरांव, प्रतापपुर का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है इसी तरह निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस कोटि में निम्नविधानसभायें हैं–मेजा उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी, करछना, प्रतापपुर, बारा का उत्तरी किनारा, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी एवं पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, चायल दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इसके अन्तर्गत मेजा का उत्तरी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, बारा का पूर्वी उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू; मंझनपुर का पश्चिमी भाग, झूंसी का दक्षिणी भाग, करछना का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का दक्षिणी एवं उत्तरी विधान सभा का पश्चिमी भाग, प्रतापपुर का उत्तरी किनारा, सोरांव, नवाबगंज का पूर्वी उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इसके अन्तर्गत बारा का उत्तरी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी का मध्य एवं दक्षिणी भाग, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी पूर्वी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी भाग, झूंसी उत्तरी, प्रतापपुर उत्तरी, सोरांव विधानसभा का पूर्वी एवं दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में चायल, विधान सभा एवं करारी विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग, सिराथू, भरवारी विधानसभा इसके अन्तर्गत सम्मिलित है।

8.5.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र

धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्रों के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में हंडिया का मध्य एवं उत्तरी पूर्वी, दक्षिणी पूर्वी भाग, प्रतापपुर झूंसी का उत्तरी भाग, सोरांव का दक्षिणी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज का मध्य भाग, उत्तरी पूर्वी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव; प्रतापपुर विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग, झूंसी का उत्तरी ऊपरी भाग, नवाबगंज विधानसभा का उत्तरी भाग एवं पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा का उत्तरी पूर्वी भाग, करछना का उत्तरी पूर्वी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, बारा, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी मंझनपुर, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज पूर्वी, सोरांव, प्रतापपुर का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 को इसके अन्तर्गत हंडिया, झूंसी विधान सभा का उत्तरी भाग, सोरांव नवाबगंज विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इसके अनतर्गत मेजा, बारा, करछना, प्रतापपुर विधानसभा दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है निर्वाचन वर्ष 1974 में हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद पश्चिमी, झूंसी दक्षिणी करछना मेंजा दक्षिणी विधान सभा धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र में सम्मिलित थी।

निर्वाचन वर्ष 1967 में धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत मेजा, करछना हंडिया, प्रतापपुर एवं झूंसी का दक्षिणी भाग था। निर्वाचन वर्ष 1962 में इसके अन्तर्गत चायल, भरवारी, करारी, एवं सिराथू पूर्वी विधान सभा सम्मिलित थी।

8.5.3 सामान्य से निम्न

ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्रों के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में मेजा का पश्चिमी भाग, सम्पूर्ण बारा, करछना का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, चायल का मध्य दक्षिणी पश्चिमी एवं उत्तरी भाग, मंझनपुर, सिराथू सम्पूर्ण विधान सभा इसके अन्तर्गत सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इसके अनतर्गत बारा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण सिराथू मंझनपुर, चायल का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में बारा का मध्यवर्ती, पश्चिमी पूर्वी भाग, मंझनपुर सिराथू, चायल विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है। इसी तरह निर्वाचन वर्ष 1977 में असम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत मंझनपुर सिराथू का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इसके अन्तर्गत मंझनपुर, सिराथू, चायल का उत्तरी पश्चिमी भाग एवं सोरांव सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इसके अन्तर्गत सिराथू, मंझनपुर, चायल मध्य एवं उत्तरी, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का उत्तरी भाग एवं नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इसके अन्तर्गत कोई विधानसभा सम्मिलित नही है।

8.6 मतदान एवं हिन्दू जनसंख्या सह–सम्बन्ध

वर्तमान राजनीति में धर्म एक अपरिहार्य अंग बन गया है। इस दृष्टि को ध्यान में रखकर मतदान में हिन्दू मतदाताओं की भूमिका को विश्लेषित किया गया है। प्रस्तुत अनुभाग में उन क्षत्रों का वर्णन किया गया है जिन क्षेत्रों में मतदान एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्ध है चाहे वे सामान्य हो, या सामान्य से अधिक और निम्न।
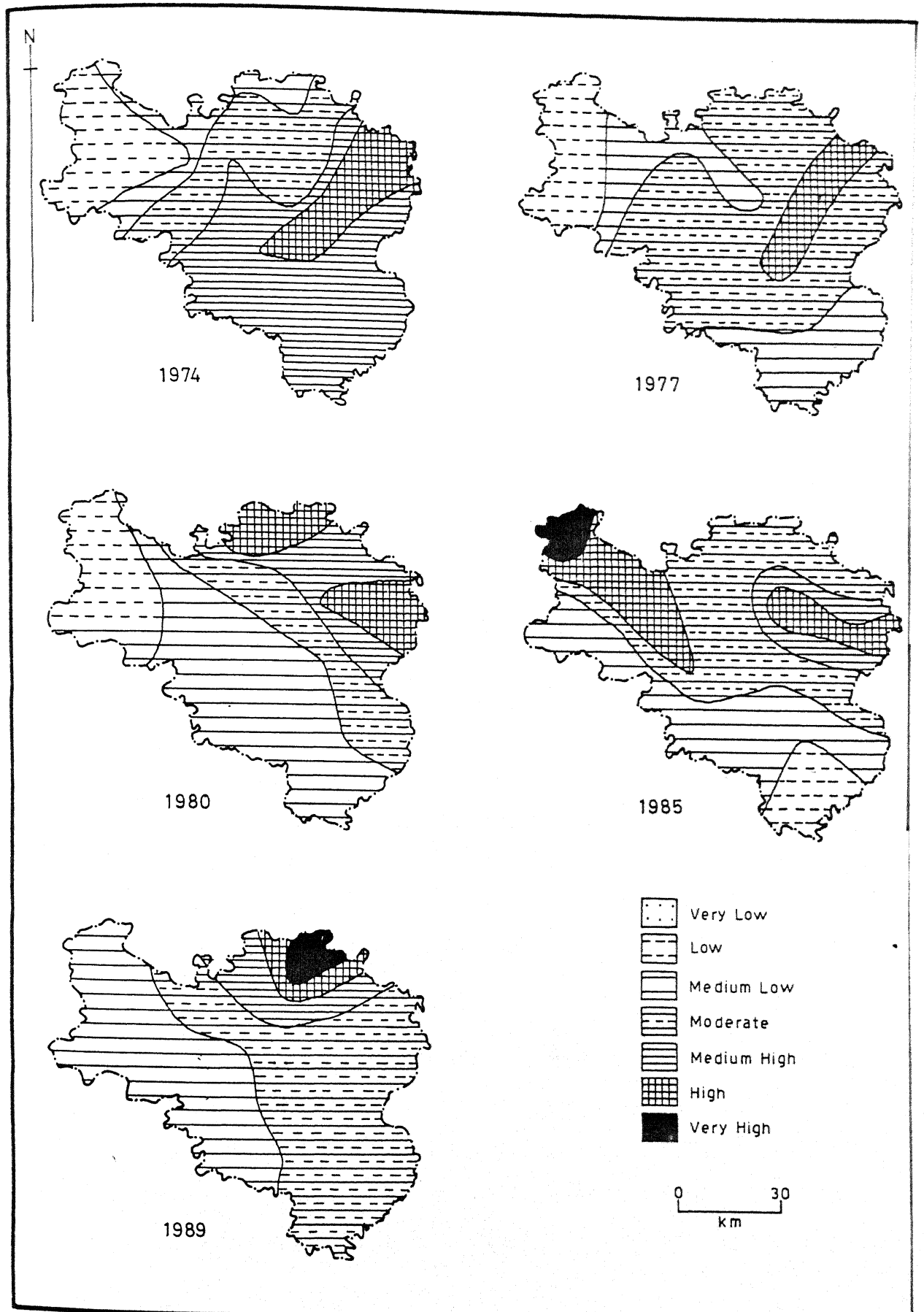
Fig. 8.6.1 Relationship Between Tournout and Hindu Population 1974 :Bivariate Regression

समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र (8.6.1) में वर्ष 1962 से 1992 के निर्वाचन वर्षों को प्रदर्शित किया गया है। मानचित्रानुसार सम्वद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य सामान्य से अधिक सामान्य से निम्न है उनका वर्णन निम्नदत है–

8.5.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्रानुसार सामान्य क्षेत्र का विस्तार विभिन्न निर्वाचन वर्षो में निम्नानुसार है–

निर्वाचन वर्ष 1989 में अधिकांश क्षेत्रों में सामान्य क्षेत्र का विस्तार पाया गया। इस वर्ष इसके अन्तर्गत हंडिया, करछना, इलाहाबाद दक्षिणी, प्रतापपुर विधान सभा का उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी विधानसभा का उत्तरी ऊपरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा सम्पूर्ण ऊपरी भाग छोड़कर नवाबगंज का दक्षिणी भाग एवं चायल का उत्तरी भाग सम्मिलित है। अर्थात् सम्बद्ध क्षेत्र में जिले की 80 % भाग सम्मिलित है। इस वर्ष हिन्दू जनसंख्या का मतदान के प्रति उच्च स्तरीय दृष्टिकोण रहा।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा उत्तरी पूर्वी करछना उत्तरीपूर्वी एवं उत्तरी पश्चिमी, बारा, इलाहाबाद उत्तरी एवं इलाहाबाद दक्षिणी, मंझनपुर, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज पूर्वी, सोरांव, प्रतापपुर उत्तरी पूर्वी एवं उत्तरी पश्चिमी सम्मिलित है। विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि निर्वाचन वर्ष 1989 एवं 1985 की स्थिति लगभग एक जैसी है अर्थात् हिन्दू मतदाता का मतदान के प्रति दृष्टिकोण अपरिवर्तित रहा।

निर्वाचन वर्ष 1980 में मतदान एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्ध वाले सामान्य क्षेत्र इलाहाबाद मध्य पाया गया। मानचित्रानुसार वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत मेजा का उत्तरी भाग, करछना उत्तरी पूर्वी, इलाहाबाद दक्षिणी का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का उत्तरी भाग, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इसके अन्तर्गत मेजा का उत्तरी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, बारा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू, मंझनपुर का पश्चिमी भाग, झूंसी का दक्षिणी भाग, करछना का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा एवं इलाहाबाद उत्तरी का पश्चिमी भाग, प्रतापपुर का उत्तरी किनारा, सोरांव, नवाबगंज का पूर्वी उत्तरी भाग सम्मिलित है। सम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत इस वर्ष अधिकांश विधान सभायें सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इसके अन्तर्गत मेजा, बारा पश्चिमी एवं पूर्वी भाग, चायल का दक्षिणी पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी विधानसभा क्षेत्र, सोरांव, नवाबगंज, झूंसी विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

8.6.2 सामान्य से अधिक

सामान्य से अधिक क्षेत्र के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1989 में सोरावं सम्पूर्ण विधान सभा, प्रतापपुर उत्तरी पश्चिमी झूंसी का उत्तरी ऊपरी भाग, नवाबगंज का उत्तरी पूर्वी भाग, 1985 में हंडिया, झूंसी का मध्यवर्ती भाग, प्रतापपुर का दक्षिणी भाग, नवाबगंज का मध्यभाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का मध्य भाग, चायल का दक्षिणी पश्चिमी भाग, सिराथू सम्मिलित है। उपरोक्त तथ्य से स्पष्ट है कि 1985 एवं 1989 में असम्बद्ध क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुआ है। अर्थात् असम्बद्ध क्षेत्र अस्थिर रहे हैं।

धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्रों के अन्तर्गत 1980 के निर्वाचन में इलाहाबाद जिले की मेजा विधान सभा का मध्य भाग, करछना का पश्चिमी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त कुछ छुटपुट भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत करछना, मेजा, हंडिया, प्रतापपुर, झूंसी का द0 पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का मध्य भाग एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का मध्यभाग सम्मिलित है।

सामान्य से अधिक के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1974 मे मेजा, बारा का पश्चिम भाग चायल का द0 पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिम का पश्चिमी भाग इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी विधान सभा, सोरांव नवावगंज एवं झूंसी का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

8.6.3 सामान्य से निम्न क्षेत्र

असम्बद्ध क्षेत्रों में ऋणात्मक मानवाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1989 में बारा विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू, मंझनपुर, चायल का दक्षिणी भग इलाहाबाद पश्चिमी का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं झूंसी विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में मेजा का दक्षिणी भाग, मंझनपुर का दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी, दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1980 में मंजा का दिक्षिणी भाग, बारा सम्पूर्ण विधानसभा, इलाहाबाद पश्चिमी का दक्षिणी पश्चिमी भाग, चायल का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग, मंझनपुर सिराथू इस वर्ग में सम्मिलित थी। निर्वाचन वर्ष 1977 में मात्र दो विधान सभाओं का अत्यल्प भाग सम्मिलित है इसमें प्रमुख है मंझनपुर एवं सिराथू का पश्चिमी भाग। इस प्रकार हिन्दू जनसंख्या 1977 में ऋणात्मक मतदान व्यवहार नहीं किया।

1977 की अपेक्षा 1974 में हिन्दू जनसंख्या ने ऋणात्मक असम्वद्ध अधिकांश विधान सभाओं में किया। इस वर्ष इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर सिराथू, चायल का उत्तरी पश्चिमी भाग, सोरांव उत्तरी विधान सभा सम्मिलित है।

8.7 मतदान एवं मुस्लिम जनसंख्या सह–सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जनपद के 1962 से 1991 तक सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन में प्राप्त मतदान एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों को प्रतिपादित किया गया है, क्योंकि धर्म के दूसरे आचारमूलक स्वरूप के अनुसार मतदाता धर्मानुसार आचरण करते हैं, का परीक्षण अनिवार्य था।
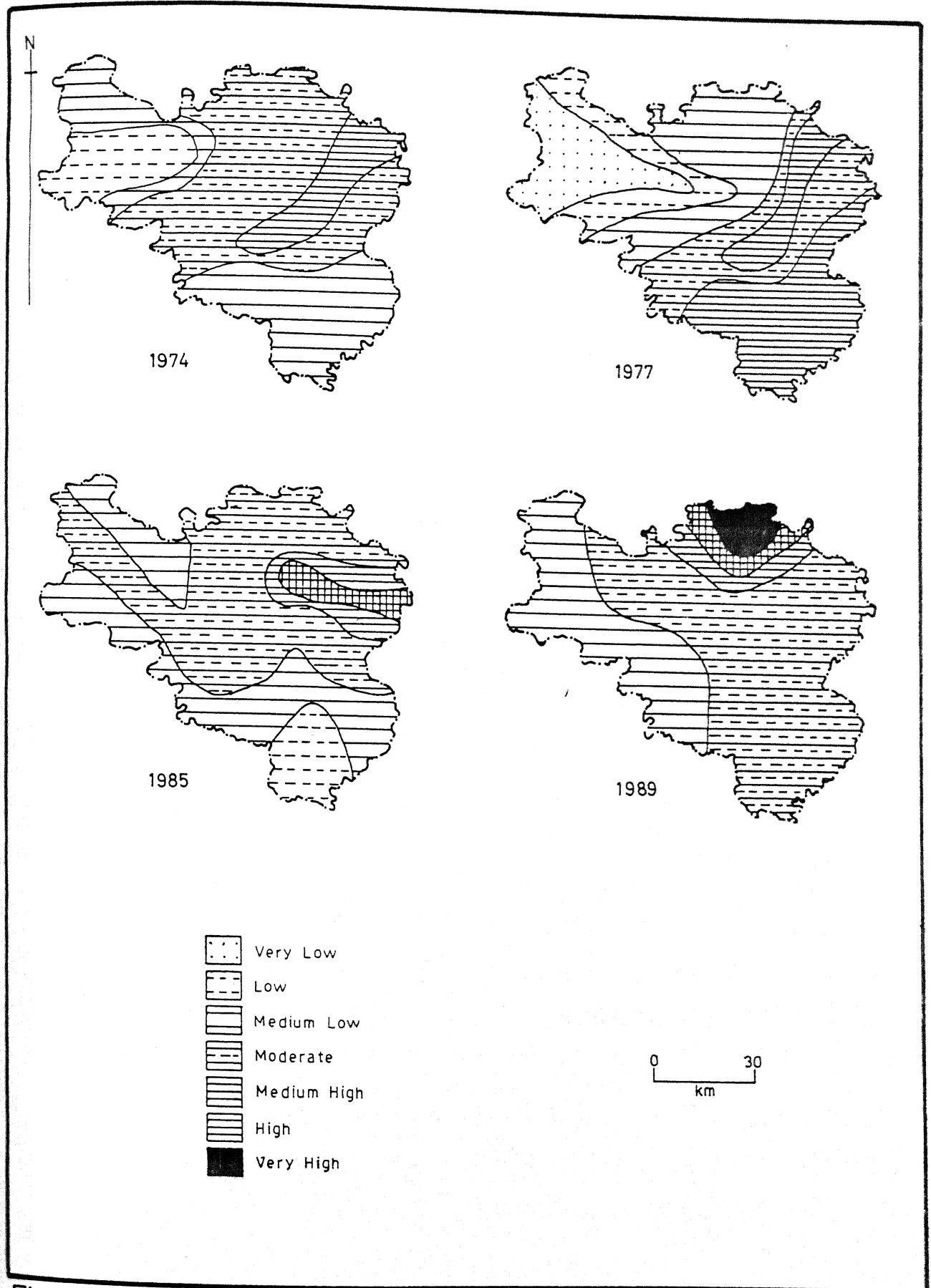
Fig. 8.7.1 Relationship Between Turnout and Muslim Population 1974-89 :Bivariate Regression

विश्लेषण से इसके अन्तर्गत भी तीन क्षेत्रों का उद्भव हुआ प्रथम सामान्य क्षेत्र द्वितीय सामान्य से अधिक तृतीय सामान्य से निम्न क्षेत्र। तदानुसार मानचित्र 8.7.1 में इन क्षेत्रों को मानचित्रित किया गया। मानचित्रानुसार इनका विवरण निम्नवत रहा–

8.7.1 सामान्य क्षेत्र

मतदान एवं मुस्लिम चर के मध्य रैखिक सम्बद्ध वाले सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में निम्नवत क्षेत्र सम्मिलित हैं :–

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना, हंडिया, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी, प्रतापपुर विधान सभा का उत्तर पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी का उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण; नवाबगंज का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में मेजा उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी , उत्तरी पश्चिमी, बारा, करछना चायल का दक्षिणी भाग; नवाबगंज सोरांव, प्रतापपुर उत्तर एवं उत्तरी पूर्वी झूंसी उत्तरी, मंझनपुर सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा इस वर्ग में सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1980 में कोई भी विधान सभा सम्बद्ध क्षेत्र में सम्मिलित नहीं है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का उत्तरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, बारा उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी, चायल दक्षिणी, मंझनपुर दक्षिणी पूर्वी, सोरांव, नवाबगंज, झूंसी उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का उत्तरी भाग एवं दक्षिणी विधानसभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

सम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत 1974 के निर्वाचन में मेजा, बारा पश्चिम, झूंसी द0 पूर्वी सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधानसभा सम्मिलित हैं।

8.7.2 सामान्य से अधिक

असम्बद्ध क्षेत्रों में सामान्य से अधिक मान वाले क्षेत्रों में विभिन्न वर्षो मे स्थिति भिन्न–भिन्न है। मानचित्रानुसार विभिन्न निर्वाचन वर्षो में सामान्य से अधिक असम्बद्ध क्षेत्रों की संख्या कम रही है। असम्बद्ध क्षेत्रों में समरूपता अधिक विद्यमान है। निर्वाचन वर्ष 1989 में इसके अन्तर्गत सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी का उत्तरी पश्चिमी किनारा, बारा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में हंडिया, झूंसी मध्य, प्रतापपुर दक्षिण, चायल उत्तरपश्चिम सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में हंडिया, प्रतापपुर करछना, झूंसी का दक्षिणी पूर्वी भाग, बारा का मध्य भाग इस वर्ग में सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस कोटि के अन्तर्गत हंडिया, करछना, प्रतापपुर, बारा मध्य, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

8.7.3 सामान्य से निम्न

इस वर्ग के अन्तर्गत इलाहाबाद जिले में बहुत कम विधानसभायें सम्मिलित है। असम्बद्ध ऋणात्मक मान के अनुसार इस क्षेत्र में विभिन्न वर्षों में निम्नलिखित विधान सभायें सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इसके अन्तर्गत बारा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी का दक्षिणी भाग, सिराथू, मंझनपुर सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में मेजा दक्षिणी एवं मंझनपुर का एवं दक्षिणी पूर्वी, दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, सिराथू, इलाहाबाद पश्चिमी का पश्चिमी भाग, झूंसी का मध्य भाग सम्मिलित है।

सामान्य से निम्न वर्ग के अन्तर्गत 1974 में मंझनपुर, सिराथू, चायल विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि असम्बद्ध क्षेत्रों की संख्या प्रत्येक निर्वाचन वर्ष में निम्नतम है अधिकांश असम्बद्ध क्षेत्र जिले के पश्चिमी भागों में स्थित हैं।

8.8 मतदान एवं कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति; जनजाति, साक्षर, हिन्दू, मुस्लिम जनसंख्या का समग्र सह–सम्बन्ध

पिछले अनुभागों में मतदान के साथ पृथक–पृथक चरों के परिणामो को सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों में बांटकर वर्णन किया गया है। प्रस्तुत अनुभाग में पांचों चरों का संयुक्त रूप से मतदान से संबन्धित एवं असम्बन्धित क्षेत्रों का वर्णन किया जा रहा है। अलग–2 चरों का प्रभाव एवं संयुक्त चरों के प्रभाव में प्राप्त परिणाम समान नही हो सकते। इस प्रकार के अध्ययन से अपनी परिकल्पना और सार्थक सिद्ध होती है।

समाश्रयण अवशेषों का मानचित्रण चित्र क्रमांक 8.8.1 एवं 8.8.2 में प्रस्तुत किया गया है।

मानचित्रानुसार संयुक्त चरों से निम्न स्वरूप स्पष्ट होता है–

8.8.1 सामान्य क्षेत्र

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक मतदान एवं संयुक्त चर कुल जनसंख्या अनुसूचित जाति जनसंख्या, साक्षर, हिन्दू, मुस्लिम जनंसख्या के मध्य रैखिक सम्बद्ध वाले क्षेत्रों को सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। इसके अन्तर्गत विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भिन्न–भिन्न क्षेत्र सम्मिलित हैं।
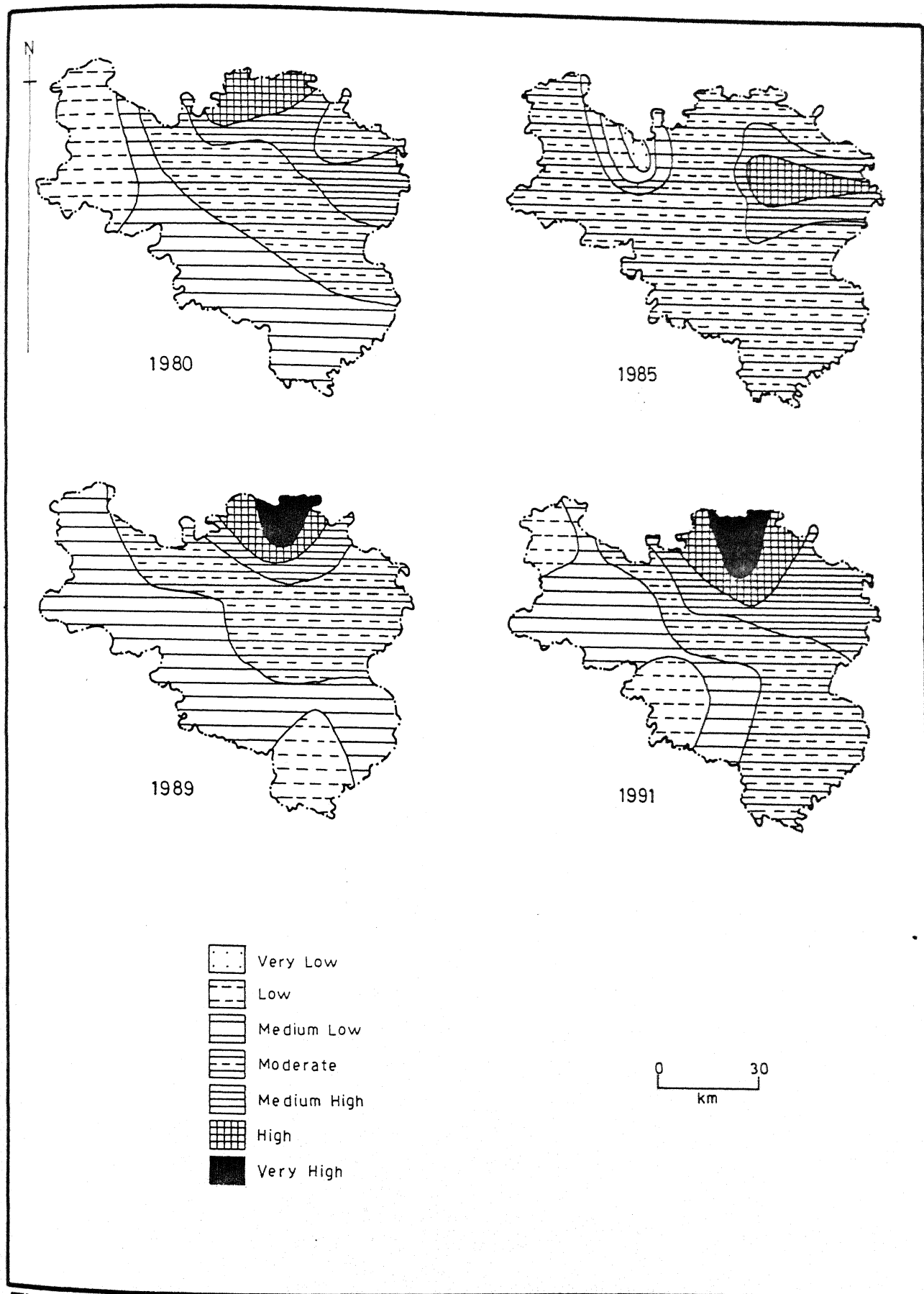
Fig. 8.8.1 Relationship Between Turnout and All Variables 1980-91 :Multivariable Regression
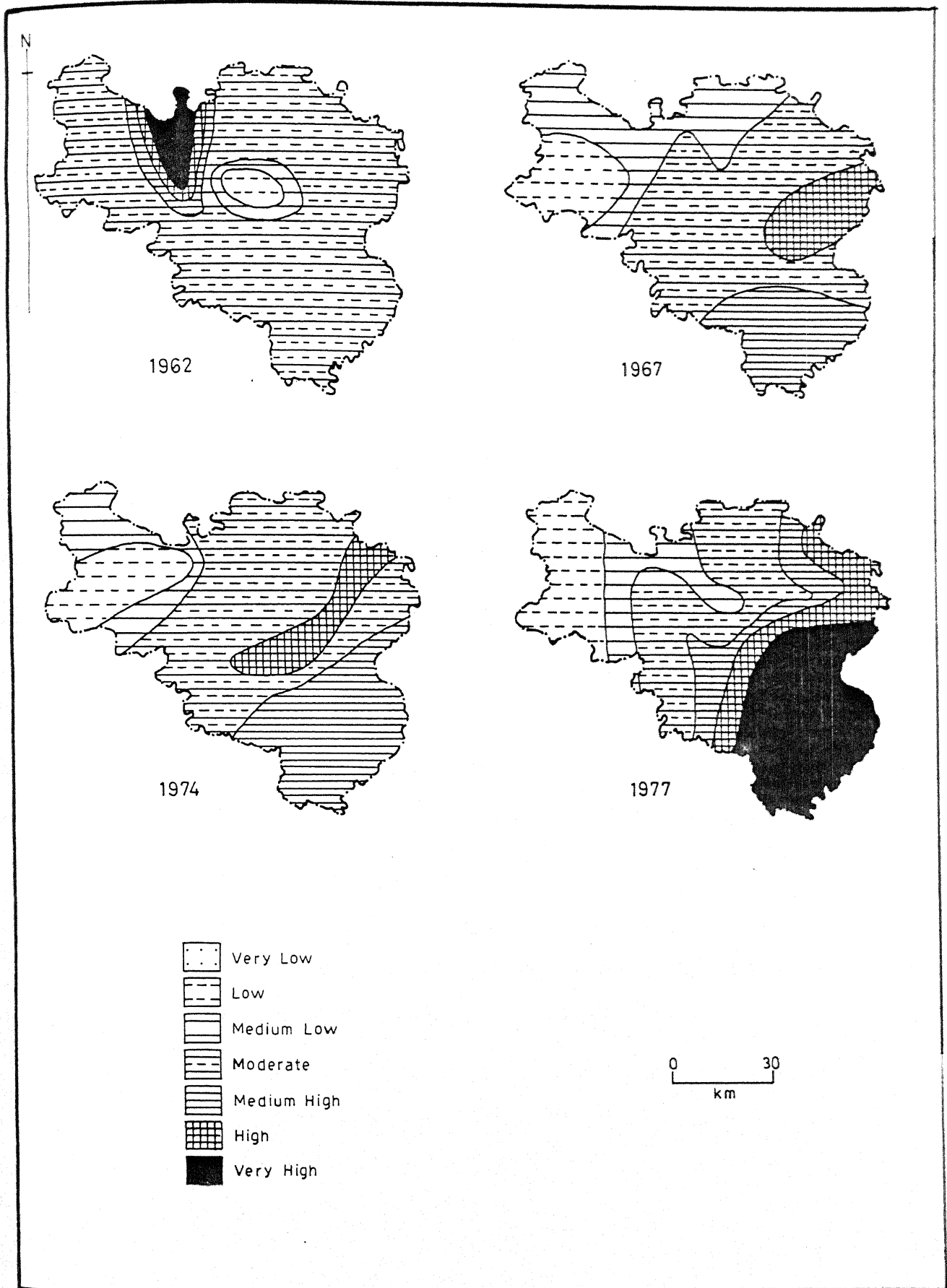
Fig. 8.8.2 Relationship Between Turnout and All Variables 1962-77 :Multivariate Regression

निर्वाचन वर्ष 1991 में इसके अन्तर्गत मेजा मध्य, दक्षिणी, दक्षिणी पूर्वी, करछना उत्तरी, उत्तरी पूर्वी, बारा का उत्तरी किनारा, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा चायल का उत्तरी पूर्वी भाग, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा, मेजा का उत्तरी पूर्वी भाग, करछना विधान सभा, झूंसी एवं इलाहाबाद उत्तरी का ऊपरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी एवं दक्षिण पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस कोटि के अन्तर्गत मेजा मध्य, बारा, करछना का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी, उत्तरी एवं पश्चिमी, नवाबगंज सोरांव प्रतापपुर उत्तरी, सिराथू पश्चिमी चायल दक्षिणी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत मेजा उत्तरी पूर्वी, उत्तरी, करछना, प्रतापपुर, बारा उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, पश्चिमी चायल का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इसके अन्तर्गत बारा का पश्चिमी भाग, झूंसी दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी का पूर्वी भाग इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा सम्पूर्ण, नवाबगंज सोरांव, झूंसी सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1974 में मेजा, हंडिया का दक्षिणी पूर्वी किनारा, बारा पश्चिम, झूंसी दक्षिणी, नवाबगंज, सोरांव, इलाहाबाद पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी विधान सभा में सामान्य समाभ्रमण रहा अर्थात् इन विधानसभाओं से सम्बद्ध क्षेत्र रहे।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा का पश्चिमी भाग, चायल पूर्वी, इलाहाबाद पश्चिमी का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उतारी, झूंसी मध्य, प्रतापपुर विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में मेजा, करछना, केवाई, बारा, झूंसी, सोरांव पूर्व सोरांव पश्चिम का पूर्वी भाग, करारी, सिराथू का मध्य एवं पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

संयुक्त चरों में अधिकांश विधानसभा क्षेत्र सामान्य के अन्तर्गत रहे।

8.8.2 सामान्य से अधिक

मानचित्रानुसार सामान्य से अधिक असम्बद्ध क्षेत्रों के अन्तर्गत सम्बन्ध कम विधानसभाओं का है। असम्बद्ध क्षेत्रों की स्थिति विभिन्न निर्वाचन वर्षों में इस प्रकार है।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इसके अन्तर्गत सोरांव, प्रतापपुर, हंडिया सम्पूर्ण विधानसभा, नवाबगंज दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण विधान सभा सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस कोटि में प्रतापपुर का पश्चिमी किनारा, सोरांव सम्पूर्ण, झूंसी का ऊपरी भाग, नवाबगंज विधान सभा का मध्य, उत्तर पश्चिम उत्तर पूर्व भाग, इलाहाबाद उत्तरी का ऊपरी भाग आता है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू पूर्वी, चायल का उत्तरी एवं मध्य भाग, झूंसी, हंडिया, मेजा उत्तरी एवं प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत बारा का उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, मेजा, सिराथू; चायल, उत्तरी, मंझनपुर सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इसके अन्तर्गत करछना, मेजा का उत्तरी भाग; हंडिया, प्रतापपुर, बारा पूर्वी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1974 में बारा, करछना, हंडिया, प्रतापपुर मध्य, झूंसी दक्षिणी में असम्बद्ध धनात्मक क्षेत्र विद्यमान रहा। निर्वाचन वर्ष 1967 में सामान्य से अधिक क्षेत्र के अन्तर्गत मात्र तीन विधान सभायें हंडिया, करछना, बारा पश्चिम सम्मिलित हैं। इसी तरह 1962

में भरवारी करारी एवं सिराथू पूर्वी विधान सभा सामान्य से अधिक क्षेत्र में सम्मिलित थी।

8.8.3 सामान्य से निम्न

मानचित्रानुसार सामान्य से निम्न के अन्तर्गत 1991 में सिराथू विधान सभा का पश्चिमी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग; मंझनपुर सम्पूर्ण विधान सभा, बारा का मध्य दक्षिणी पश्चिमी भाग, चायल का मध्य दक्षिण पश्चिमी भाग एवं में जो विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में प्रतापपुर विधान सभा का पश्चिमी किनारा, सोरांव सम्पूर्ण विधान सभा, झूंसी का ऊपरी भाग, नवाबगंज का मध्य उत्तरीपश्चिमी एवं उत्तरी पूर्वी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा के ऊपरी भाग में सामान्य से निम्न अर्थात् ऋणात्मक रैखिक सम्बद्धता विद्यमान थी।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा का मध्य एवं दक्षिणी भाग एवं मंझनपुर विधान सभा का दक्षिणी, पश्चिमी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव, नवाबगंज, झूंसी, हंडिया सम्मिलित है इसके अतिरिक्त कुछ छिट–पुट विधान सभायें सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर सिराथू उत्तरी, चायल, नवाबगंज पश्चिम, इलाहाबाद पश्चिमी का उत्तरी भाग एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, मंझनपुर का मध्य उत्तरपूर्व एवं उत्तर पश्चिम क्षेत्र सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1967 में मंझनपुर, सिराथू, चायल पश्चिमी, नवाबगंज एवं सोरांव उत्तरी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत इलाहाबाद शहर दक्षिणी का उत्तरी भाग एवं चायल विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

उपरोक्त विश्लेषण से मतदान एवं समस्त चरों के मध्य समाश्रयण प्रतिमान से निम्न निष्कर्ष निकलता है।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश मतदाता सामान्य रूप से जागरूक हैं।
2. नगरीय मतदाताओं में उच्च जागरूकता है।
3. ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में विभिन्न वर्षों में इस जागरुकता में व्यापक परिवर्तन हुआ है।

नवम् अध्याय

विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध

9. विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध

लोकतंत्र में राजनीतिक दल सरकार एवं जनता के मध्य कड़ी हैं। इन्हीं के माध्यम से जनता को सहभागिता प्राप्त होती है। विजयी दल जनता का प्रतिनिधित्व करता है। पिछले अध्याय छः एवं सात में 1962 से 1991 तक इलाहाबाद जिले में सम्पन्न निर्वाचनों में विभिन्न दलों का विस्तृत विवेचन किया गया है। प्रस्तुत अध्याय में विजयी दल मत एवं सामाजिक चरों कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति जनसंख्या, साक्षर जनसंख्या; जनजाति जनसंख्या, हिन्दू जनसंख्या, मुस्लिम जनसंख्या का पृथक–पृथक एवं संयुक्त रूप से विश्लेषण प्रदर्शित किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकतानुसार प्रस्तुत अध्याय को आठ अनुभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम अनुभाग 9.1 में समाश्रयण प्रतिमान, सम्बन्धों की प्रकृति, समाश्रयण अवशेष की विवेचना की गयी है। अनुभाग 9.2 में विजयी दल एवं कुल जनसंख्या, अनुभाग 9.3 विजयी दल अनुसूचित जाति जनसंख्या, अनुभाग 9.4 में विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या, अनुभाग 9.5 में विजयी दल एवं साक्षर जनसंख्या, 9.6 में विजयी दल एवं हिन्दू जनसंख्या, 9.7 में विजयी दल एवं मुस्लिम जन संख्या, अन्तिम अनुभाग 9.8 से सभी चरों का समग्र प्रदर्शन वर्णित किया गया है। उपरोक्त विश्लेषण में विजयी दल एवं समस्त चरों के मध्य निर्मित सम्वन्धित एवं असम्वन्धित क्षेत्रों का स्थानिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इस विश्लेषण का मुख्य कारण विजयी दल के साथ किस चर का सम्बन्ध किस परिस्थिति में जुड़ा है वर्णित किया गया है।

9.1 समाश्रयण प्रतिमान

अध्याय आठ की तरह प्रस्तुत अनुभाग मे विजयी दल मत एव सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषण करने के लिए रैखिक समाश्रयण प्रतिमान (द्विचरीय एवं बहुचरीय) का प्रयोग किया गया है। इलाहाबाद जनपद में विजयी दल मत एवं सामाजिक चरों के मध्य रैखिक सह सम्बन्ध प्रतिमान निम्न सूत्र द्वारा विश्लेषित किया गया है–

$Y = a + bx$ (द्विचरीय)

$Y = a + b_1x_1+b_2x_2+b_3x_3+b_4x_4+b_5x_5+b_6x_6$ (बहुचरीय)

Y = विजयी दल मत

a = विजयी दल मत के उस परिणाम को इंगित करता है जब विजयी दल पर चरों का प्रभाव शून्य हो।

b = सामाजिक चरों में परिवर्तन के समय विजयी दल मत में परिवर्तन की दर को बतलाता है।

X_1 = प्रथम चर

X_2 = द्वितीय चर

X_3 = तृतीय चर

X_4 = चर्तुथ चर

X_5 = पंचम चर

X_6 = षष्टम् चर

उपरोक्त समाश्रयण प्रतिभाव के द्वारा विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्धों की प्रकृति, मात्रा एवं सम्बन्धों का समाश्रयण अवशेष प्राप्त हुआ है। जिसका विश्लेषण निम्नवत है–

9.1.1 सम्बन्धों की प्रकृति

इलाहाबाद जिले में 1962 से 1991 तक सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन के लिए विजयी दल एवं समस्त चरों के मध्य समाश्रयण प्रतिमान का गणितीय विश्लेषण किया गया जिसका वर्णन क्रमशः तालिक 9.1.1, 9.1.2, 9.1.3, 9.1.4, 9.1.5, 9.1.6, 9.1.7, 9.1.8 में किया गया है।

तालिका 9.1.1

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1991

द्विचरीय

प्रथम चर –	51097.87 $-.0395\ x_1$
द्वितीय चर –	51097.87 $-.1736\ x_2$
तृतीय चर –	51097.87 $+13.764\ x_3$
चतुर्थ चर –	51097.87 $-.0439\ x_4$
पंचम चर –	51097.87 $+.000\ x_5$
षष्टम् चर –	51097.87 $-.000\ x_6$

बहुचरीय

संयुक्तचर 51097.87 $-.0395\ x_1$ $-.1736\ x_2$ $+13.764\ x_3$ $-.0439\ x_4$ $+.000\ x_5$ $-.000\ x_6$

तालिका 9.1.2

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1989

द्विचरीय–

प्रथम चर –	17172.25 $-\ .0060\ x_1$
द्वितीय चर –	17172.25 $-\ .0713\ x_2$
तृतीय चर –	17172.25 $-\ .0812\ x_3$
चतुर्थ चर –	17172.25 $-\ .0159\ x_4$
पंचम चर –	17172.25 $+\ 1.675\ x_5$
षष्टम् चर –	17172.25 $-\ .0433\ x_6$

बहुचरीय :

संयुक्त चर – 17172.25 $-\ .0060\ x_1$ $-.0713\ x_2$ $-.0812\ x_3$ $-.0159\ x_4$ $+1.675\ x_5$ $-.0433\ x_6$

तालिका 9.1.3

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1985

द्विचरीय–

प्रथम चर –	6890.93 $+\ .0121\ x_1$

द्वितीय चर –	6890.93 + .0481 x_2
तृतीय चर –	6890.93 + .0000 x_3
चतुर्थ चर –	6890.93 + .0133 x_4
पंचम चर –	6890.93 + .0083 x_5
षष्टम् चर –	6890.93 + .0364 x_6

बहुचरीय :

संयुक्त चर – 6890.93 + .0121 x_1 + .0481 x_2 + .0000 x_3 + .0133 x_4 + .0083 x_5 + .0364 x_6

तालिका 9.1.4

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1977

द्विचरीय–

प्रथम चर –	5950.20 + .0036 x_1
द्वितीय चर –	5950.20 + .0123 x_2
तृतीय चर –	5950.20 + .6307 x_3
चतुर्थ चर –	5950.20 – 6.593 x_4
पंचम चर –	5950.20 – .0019 x_5
षष्टम् चर –	5950.20 – .1091 x_6

बहुचरीय :

संयुक्त चर – 5950.20 + .0036 x_1 + .0123 x_2 + .6307 x_3 – 6.593 x_4 – .0019 x_5 – .1091 x_6

तालिका 9.1.5

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1980

द्विचरीय–

प्रथम चर –	6305.27 – .0083 x_1
द्वितीय चर –	6305.27 – .0502 x_2
तृतीय चर –	6305.27 + .0531 x_3
चतुर्थ चर –	6305.27 – .0156 x_4
पंचम चर –	6305.27 – .0053 x_5
षष्टम् चर –	6305.27 – .0423 x_6

बहुचरीय :

संयुक्त चर – 6305.27 –.0083 x_1 –.0502 x_2 +.0531x_3 –.0156 x_4 – .0423 x_6

तालिका 9.1.6

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1974

द्विचरीय–

प्रथम चर –	8283.79 – 2.071 x_1

द्वितीय चर –	8283.79 – .0238 x_2
तृतीय चर –	8283.79 – .0124 x_3
चतुर्थ चर –	8283.79 – .0194 x_4
पंचम चर –	8283.79 – .0117 x_5
षष्टम् चर –	8283.79 – .0164 x_6

बहुचरीय :

संयुक्त चर –8283.79 – 2.071x_1 – .0238x_2 – .0124x_3 –.0194x_4 – .0117 x_5 – .0164 x_6

तालिका 9.1.7

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1967

द्विचरीय–

प्रथम चर –	3220.94 + .0049 x_1
द्वितीय चर –	3220.94 + .0603 x_2
तृतीय चर –	3220.94 + .0601 x_3
चतुर्थ चर –	3220.94 + .0079 x_4
पंचम चर –	3220.94 + .0086 x_5
षष्टम् चर –	3220.94 + .0076 x_6

बहुचरीय :

संयुक्त चर – 3220.94 + .0049 x_1 + .0603 x_2 + .0601 x_3 +.0079x_4 + .0086 x_5 + .0076 x_6

तालिका 9.1.8

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1962

द्विचरीय–

प्रथम चर –	33255.74 + .0946 x_1
द्वितीय चर –	33255.74 + .6066 x_2
तृतीय चर –	33255.74 + .0000 x_3
चतुर्थ चर –	33255.74 + .0533 x_4
पंचम चर –	33255.74 + .0000 x_5
षष्टम् चर –	33255.74 + .0000 x_6

बहुचरीय :

संयुक्त चर – 33255.74 + .0946 x_1 + .6066 x_2 + .0000 x_3 +.0533 x_4 + .0000 x_5 + .0000 x_6

तालिका 9.1.1 से 9.1.8 के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलता है:

1. निर्वाचन वर्ष 1991 में तृतीय, पंचम, षष्टम् चर में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जब कि प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ में ऋणात्मक।
2. निर्वाचन वर्ष 1989 में पंचम चर में धनात्मक सम्बन्ध निर्मित है जब कि शेष चरों में ऋणात्मक सम्बन्ध।

3 निर्वाचन वर्ष 1985 में प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पचम षष्टम् समस्त चरों में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।

4. निर्वाचन वर्ष 1980 में मात्र तृतीय चर में धनात्मक सम्वन्ध है।

5. निर्वाचन वर्ष 1977 में प्रथम, द्वितीय, तृतीय चर सम्वन्ध धनात्मक हैं जबकि चतुर्थ, पंचम, षष्टम् चर ऋणात्मक है।

6. निर्वाचन वर्ष 1974 में समस्त चर सम्वन्ध ऋणात्मक है।

7. निर्वाचन वर्ष 1967 में भी ऋणात्मक सम्वन्ध है।

8. निर्वाचन वर्ष 1962 में प्रथम, द्वितीय, तृतीय चर में धनात्मक सम्वनध है जब कि चतुर्थ, पंचम, षष्टम् चर में ऋणात्मक सम्बन्ध है।

उपरोक्तत विश्लेषण से स्पष्ट है कि निर्वाचन वर्ष 1977 एवं 62 में साम्य प्रभाव है जब 1985 के निर्वाचन वर्ष में अन्य सभी निर्वाचन वर्षों से विपरीत क्योंकि इस वर्ष सभी चरों में धनात्मक सम्बन्ध निर्मित है।

9.1.2 सम्बन्धों की मात्रा

प्रस्तुत अनुभाग में चरों के सम्बन्धों की मात्रा या डिग्री का वर्णन किया जा रहा है। छः चरों एवं संयुक्त चर के साथ विजयी दल का सहःसम्बन्ध गुणांक के द्वारा निरूपित किया जा रहा है।

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक विजयी दल मत एवं चरों का पृथक–पृथक संयुक्त सह–सम्बन्ध गुणांक तालिका 9.2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 9.2

सम्बन्धों की मात्रा (सहः सम्बन्ध गुणांक) 1962 से 91

क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर	+.525	-.243	-.005	+.112	-.249	+.345	-.081	+.914
2.	द्वितीय चर	+.270	+.129	-.100	+.072	-.279	+.305	-.181	-.218
3.	तृतीय चर	+.002	-.212	N.A	+.013	N.A.	N.A.	-.121	+.087
4.	चतुर्थ चर	-.020	-.214	-.2568	-.012	-.276	+.277	-.130	-.174
5.	पंचम चर	-.031	-.028	-.3061	-.069	-.183	+.256	+.002	N.A.
6.	षष्टम् चर	-.053	-.065	-.028	-.262	-.097	+.304	-.148	N.A.
7.	संयुक्त चर	+.525	-.2439	-.0052	+.112	-.24	+.345	.081	+.941

9.1.3 समाश्रयण अवशेष

प्रस्तुत अनुभाग में विजयी दल के अनुमानित मत एवं वास्तविक मत के अन्तर (विचलन) को प्रदर्शित किया गया है। जिसे विजयी दल का समाश्रयण अवशेष कहा गया है। इस समाश्रयण अवशेष को मानक लब्धि में परिवर्तित करके मानचित्र में प्रदर्शित किया गया, किन्तु प्रदर्शन के पूर्व इन अवशेषों को विभिन्न वर्गों में विभक्त किया गया है। यह वर्ग तालिक (9.1.3.1) प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 9.1.3.1

समाश्रयण से प्राप्त अवशेषों के वर्ग

समाश्रयण अवशेषों के माध्यम से उन क्षेत्रों को निर्धारित किया गया जिसमें विजयी दल मत एवं पृथक–पृथक चरों के बीच समाभ्रमण प्रतिमान सफल

है। सफल क्षेत्रों के अतिरिक्त उन क्षेत्रों का निर्धारण भी किया गया जहाँ विजयी दल एवं चरों के बीच समाश्रयण प्रतिमान सफल सिद्ध नहीं हुआ इसे असफल क्षेत्र की संज्ञा दी गयी।

वर्ग	सीमायें मानकलब्धि	दिशा एवं स्तर	क्षेत्र विवरण
1	1.5 से ऊपर	उच्चतम धनात्मक	सामान्य से अधिक उच्चतम
2	1.0 से 1.5	उच्च धनात्मक	सामान्य से अधिक (उच्च)
3	0.5 से 1.0	उच्च मध्यम	सामान्य से अधिक (मध्यम)
4	0.5 से −0.5	मध्यम	सामान्य
5	−0.5 से −1.0	ऋणात्मक मध्यम	सामान्य से निम्न (मध्यम)
6	−1.0 से −1.5	ऋणात्मक उच्च	सामान्य से निम्न (उच्च)
7	−1.5 से ऊपर	ऋणात्मक उच्चतम	सामान्य से निम्न (उच्चतम)

तालिका (9.1.3.1) दिशा एवं स्तर के आधार पर समाश्रयण अवशेषों को मुख्यतः तीन क्षेत्रों में बांटा गया। प्रथम क्षेत्र को सामानय क्षेत्र कहा गया, द्वितीय को सामान्य से अधिक (धनात्मक), तृतीय को सामान्य से निम्न (ऋणात्मक) क्षेत्र की संज्ञा दी गयी। धनात्मक (सामान्य से अधिक) ऋणात्मक (सामान्य से निम्न) क्षेत्रों के अन्तर्गत असफल क्षेत्रों को निरूपित किया गया है जब कि सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत वे क्षेत्र हैं जहाँ प्रतिमान के द्वारा विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य रैखिक सम्बन्ध पूर्व रूप से पाया गया अर्थात् सम्बन्ध सफल सिद्ध हुआ।

तालिका (9.1.3 2, 9.1.3.3 एवं 9.1.3.4) में क्रमशः मानक त्रुटि (1962 से 1991), एफ. अनुपात (1962 से 1991), 'b' मान की मानक वृति (1962 से 1991) का वर्णन प्रस्तुत किया गया हैं।

तालिका 9.1.3.2

मानक त्रुटि (1962–1991)

		वर्ष							
क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर (कुल जनसख्या)	.044	.005	.011	009	009	.0080	.021	004
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित जनसख्या)	.624	.133	.067	.048	.049	.0433	.111	224
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसख्या)	--	--	--	--	--	--	--	45 44
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जनसंख्या)	.762	.010	.021	.015	.015	.0133	.0348	.071
5.	पचम चर (हिन्दू जनसख्या)	--	--	.010	.007	.008	.009	.023	--
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसख्या)	--	--	.163	115	.124	.0329	.0835	--
7.	संयुक्त चर (उपरोक्त सभी)	.044	.005	.011	.009	.009	.0080	.0211	.0041

तालिका 9.1.3.3

एफ0 अनुपात (1962–1991)

		वर्ष							
क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर (कुल जनसख्या)	4.56	.759	3.29	.152	.794	1 62	.081	93 5
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित जनसख्या)	.945	.204	.123	.064	1.015	1.237	.409	601
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसख्या)	--	--	--	--	--	--	--	092
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जनसख्या)	4.88	579	.847	1.84	991	1.00	0 209	.375
5.	पचम चर (हिन्दू जनसख्या)	--	--	1.24	.059	.420	.844	5.00	--
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसख्या)	--	--	.010	.890	.116	1.22	269	--
7.	सयुक्त चर (उपरोक्त सभी)	4.56	.759	3.29	.152	.794	1.62	.081	93 55

तालिका 9.1.3.4

'b' मान की मानक त्रुटि (1962–1991)

		वर्ष							
क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर (कुल जनसख्या)	29458.42	3251.25	8621.93	6154.21	6353.80	6731.82	17813.63	17932.72
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित	33326.07	3324.55	8578.27	6176.72	6301.61	6828.93	17576.08	51901.47

	जनसख्या)								
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसख्या)	—	—	—	—	—	—	—	5208 22
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जनसख्या)	34606 62	3274.43	8332 00	6192 69	6307.54	6890.10	17719 95	52372 47
5.	पचम चर (हिन्दू जनसख्या)	-	-	8208 10	6178 04	6450 83	6932 61	17873 40	-
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसख्या)	-	-	8618.45	5975 46	6531.19	6832 54	17676 69	-
7.	सयुक्त चर (उपरोक्त सभी)	29458 48	3251 85	8621.63	6154 21	6353.80	6731 82	17813.63	17932 72

'b' = सामाजिक चरों में परिवर्तन के दौरान विजयी दल के मत मे परिवर्तन की दर को प्रदर्शित करता है।

9.2 विजयी दल एवं कुल जनसंख्या सह सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक सम्पन्न चुनाव में इलाहाबाद जिले की समस्त विधान सभाओं में निर्वाचन से विजयी दल को प्राप्त मत एवं प्रथम चर (जनसंख्या) के बीच स्थापित रैखिक सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का वर्णन प्रस्तुत किया है। इनके समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 9.2.1 एवं 9.2.2 में प्रदर्शित किया गया है। सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न है। उनका विश्लेषण इस प्रकार है।

9.2.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र 9.2.1 एवं 9.2.2 के अनुसार सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न विधान सभा सम्मिलित है।
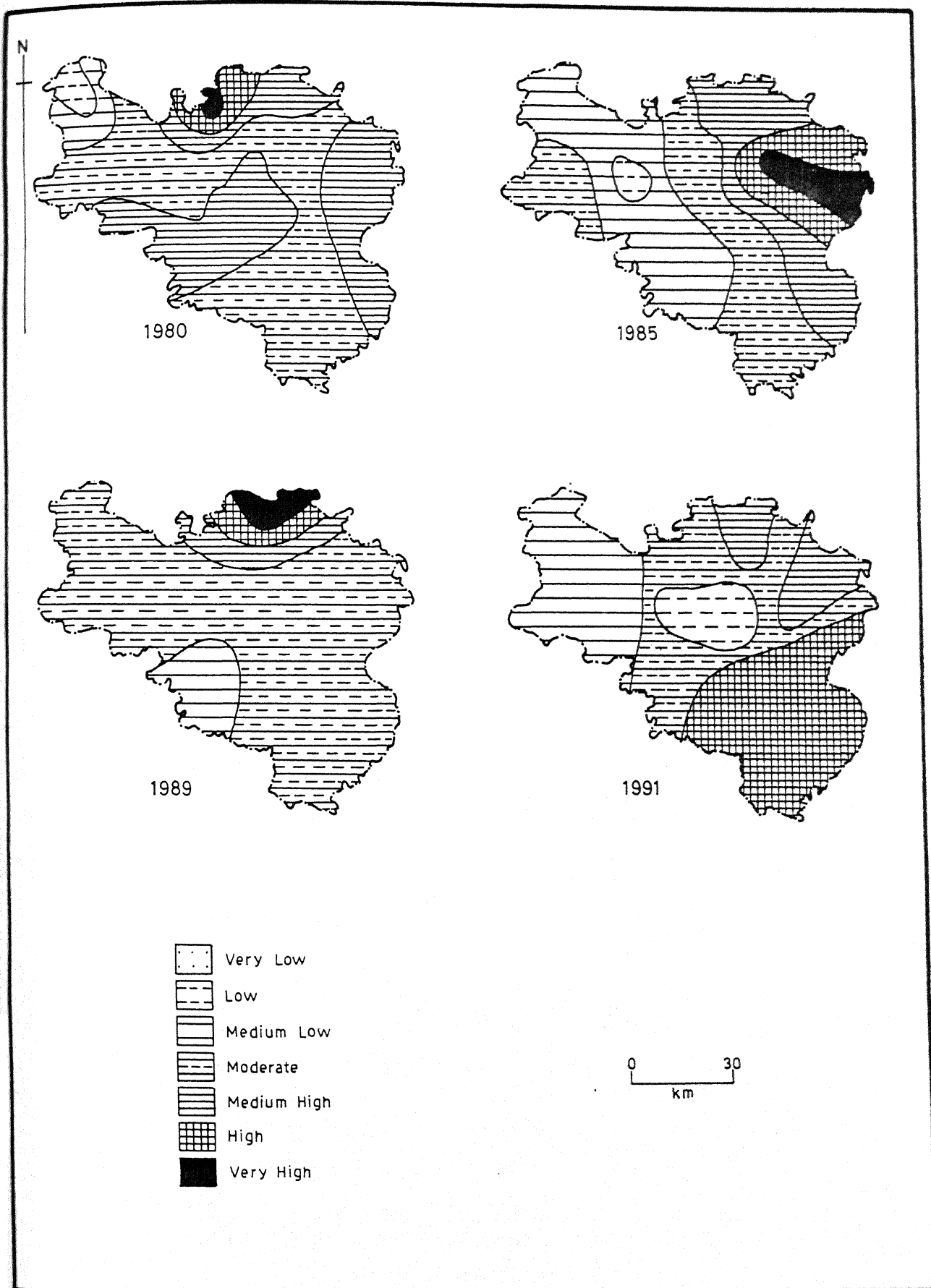
Fig. 9.2.1 Relationship Between Winner and Population: 1980 to 1991 :Bivariate Regression
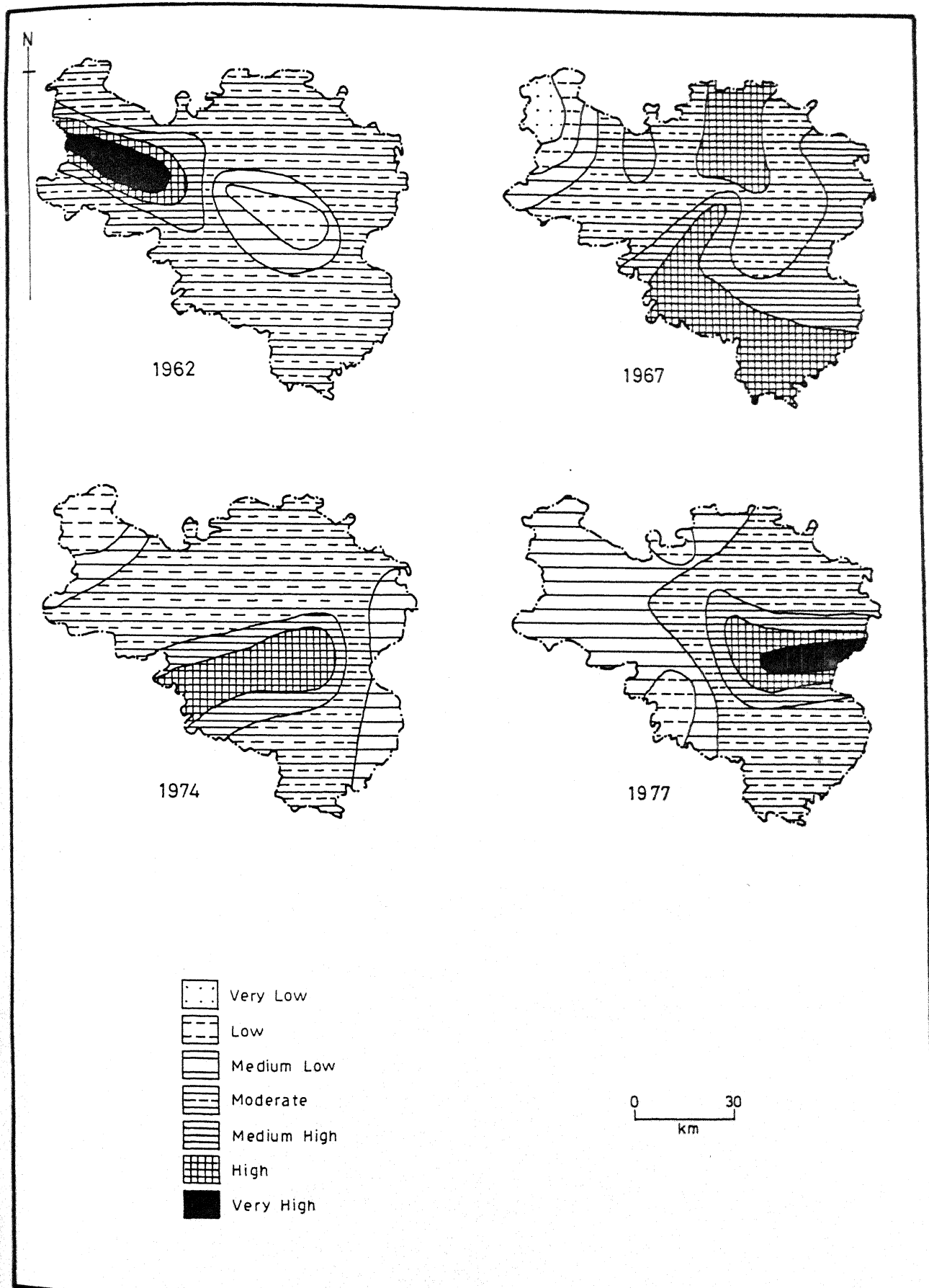
Fig. 9.2.2 Relationship Between Winner and Population : 1962 to 1977
:Bivariate Regression

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत प्रतापपुर, झूंसी उत्तरी, सोरांव पूर्वी, सिराथू; मंझनपुर, चायल पश्चिमी, सोरांव; नवाबगंज सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त छिट–पुट भाग सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना, हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधानसभा सम्पूर्ण, मंझनपुर, सिराथू, चायल, बारा का उत्तरी भाग एवं उत्तरी पूर्वी भाग, झूंसी विधानसभा का ऊपरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है। इस वर्ष में विजयी पार्टी के प्रति कुल जनंसख्या का झुकाव सामान्य रहा है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का उत्तरी पूर्वी भाग, करछना उत्तरी, झूंसी का पश्चिमी किनारा, प्रतापपुर उत्तरी, सोरांव नबाबगंज का उत्तरी पूर्वी भाग चायल उत्तरी विधान सभा एवं बारा दक्षिणी विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत प्रतापपुर मध्य, मेजा मध्य एव पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी पश्चिमी विधान सभा, मंझनपुर चायल सम्मिलित है इसके अतिरिक्त छिट पुट विधान सभा क्षेत्र भी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का दक्षिणी एवं पूर्वी भाग बारा का मध्य एवं उत्तरी पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी सम्पूर्ण, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग, झूंसी उत्तरी, प्रतापपुर पूर्वी, हंडिया विधान सभा का दक्षिणी भाग, मंझनपुर एवं चायल विधान सभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा मध्य, प्रतापपुर, सोरांव, झूंसी का उत्तरी भाग इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग एवं उत्तरी एवं इलाहाबाद पश्चिमी, चायल मंझनपुर का मध्य भाग एवं दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर विधान सभा का मध्य एवं दक्षिणी भाग चायल, नवाबगंज, हंडिया विधान सभा का पश्चिमी भाग करछना, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा केवाई, फूलपुर, सोरांव पूर्व एवं सोरांव पश्चिमी विधानसभा, इलाहाबाद शहर उत्तरी विधान सभा का उत्तरी भाग एवं बारा सम्मिलित है।

9.2.2 सामान्य से अधिक

मानचित्र 9.2.1 एवं 9.2.2 के अनुसार 'असम्बद्ध क्षेत्रों के अन्तर्गत स्थिति इस प्रकार है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, मेजा का पूर्वी भाग, करछना का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इसके अन्तर्गत सोरांव विधान सभा सम्पूर्ण, नवाबगंज सम्पूर्ण झूंसी विधान सभा का ऊपरी उत्तरी किनारा सम्मिलित हैं। इसी तरह निर्वाचन वर्ष 1985 में हंडिया, झूंसी का पूर्वी भाग, चायल मध्य एवं प्रतापपुर दक्षिणी विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत नवाबगंज, मेजा, उत्तरपूर्व, हंडिया मध्य पूर्व सोरांव सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधान सभा का दक्षिणी भाग, मेजा उत्तरी करछना, बारा उत्तरपूर्व, इलाहाबाद दक्षिणी एवं इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा करछना विधान सभा, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, झूंसी का दक्षिणी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा, बारा विधान सभा का दक्षिणी भाग हंडिया प्रतापपुर विधानसभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत करारी, सिराथू, चायल विधान सभा भरवारी विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

9.2.3 सामान्य से निम्न

मानचित्रानुसार सामान्य से निम्न के अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्रों की स्थिति निम्नवत है।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग में इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी एवं पश्चिमी विधान सभा क्षेत्र एवं 1989 में बारा विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का मध्य भाग, करछना विधान सभा का दक्षिणी भाग, बारा का उत्तरी पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी का पश्चिमी भाग, नवाबगंज विधान सभा का मध्य भाग सम्मिलित है। किन्तु निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के मात्र एक विधान सभा सिराथू सम्मिलित थी।

निर्वाचन वर्ष 1977 में सिराथू, नवाबगंज का उत्तरी भाग, सोरांव उत्तर पश्चिमी एवं बारा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है निर्वाचन वर्ष 1974 में 1977 से स्थिति भिन्न रही इस वर्ष ऋणात्मक असम्बद्धता मंझनपुर विधानसभा के उत्तरी पश्चिमी भाग, हंडिया, मेजा के पूर्वी किनारे में एवं सिराथू विधान सभा का पूर्वी किनारा छोड़ सम्पूर्ण में थी।

निर्वाचन वर्ष 1967 में सिराथू विधानसभा तथा मंझनपुर विधानसभा के उत्तरी किनारे में सामान्य से निम्न क्षेत्र था। निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत करछना, इलाहाबाद शहर दक्षिणी, इलाहाबाद शहर उत्तरी का दक्षिणी भाग एवं चायल विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित था।

9.3 विजयी दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या सह सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में विजयी दल मत एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या चर के साथ सम्वन्ध स्थापित किया गया है। जिसकी प्रकृति एवं मात्रा का वर्णन 9.1.1 एवं 9.1.2 में किया गया है। इस अनुभाग में उन क्षेत्रों का वर्णन किया जा रहा जिन क्षेत्रों में विजयी दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के बीच स्थापित रेखिक सम्बन्ध है।

समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 9.3.1 एवं 9.3.2 में प्रदर्शित किया गया है। मानचित्रानुसार प्रदर्शित अवशेष सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य, सामान्य से अधिक, सामान्य से निम्न है, उनका विश्लेषण निम्नवत है।

9.3.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र 9.3.1 एवं 9.3.2 के विश्लेषण से इलाहाबाद जिले में सामान्य क्षेत्रों का विस्तार विभिन्न वर्षों में निम्नानुसार है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा करछना, बारा, हंडिया, प्रतापपुर, फूंसी, सोरांव, नवाबगंज सिराथू, मंझनपुर, चायल विधान सभा के सम्मिलित छिट पुट क्षेत्र भी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस सम्बद्ध क्षेत्र में प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण झूंसी का उत्तरी भाग, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तर भाग, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल का दक्षिणी भाग छोड़कर
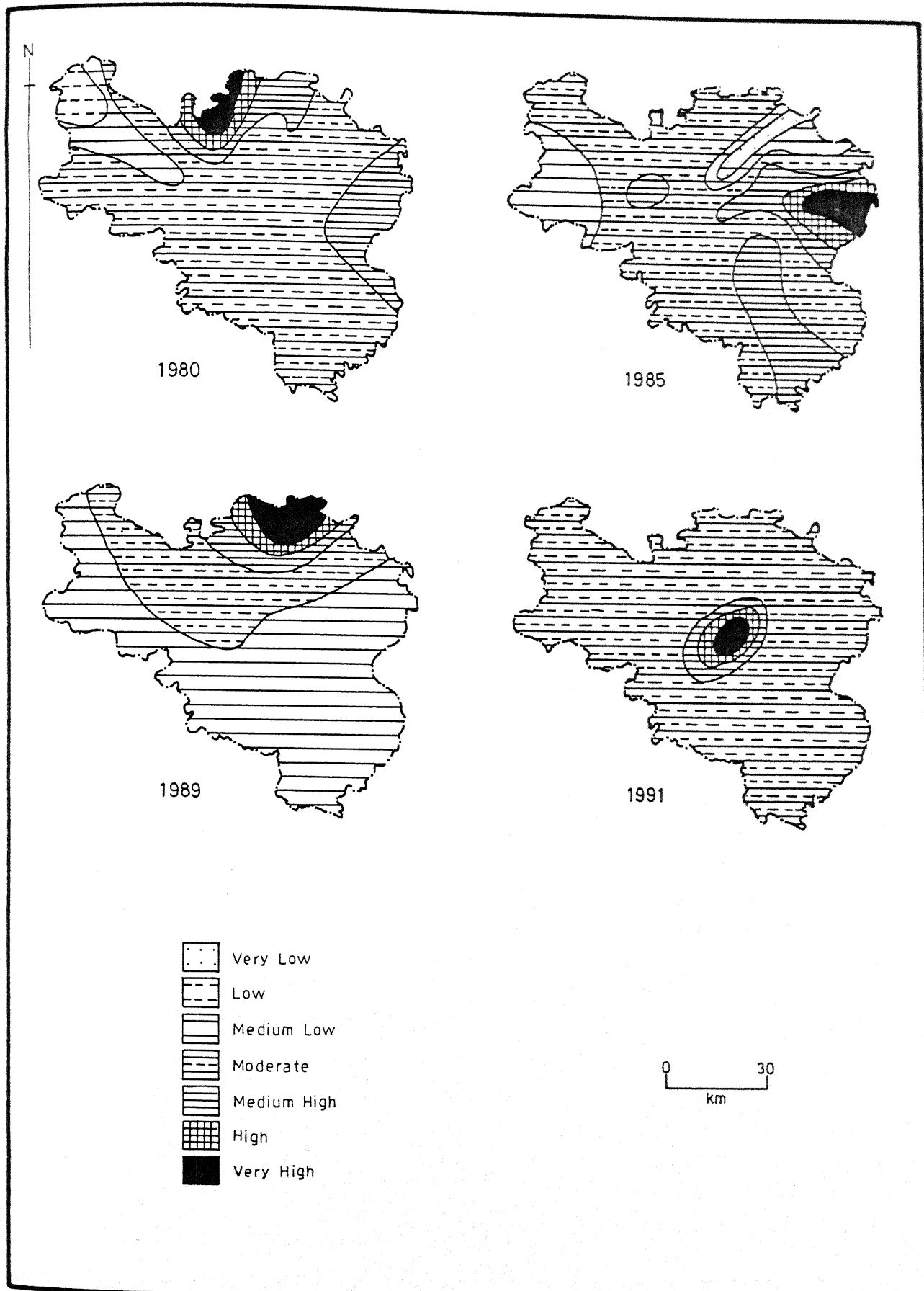
Fig. 9.3.1 Relationship Between Winner and S.C. Population 1980-1991 :Bivariate Regression
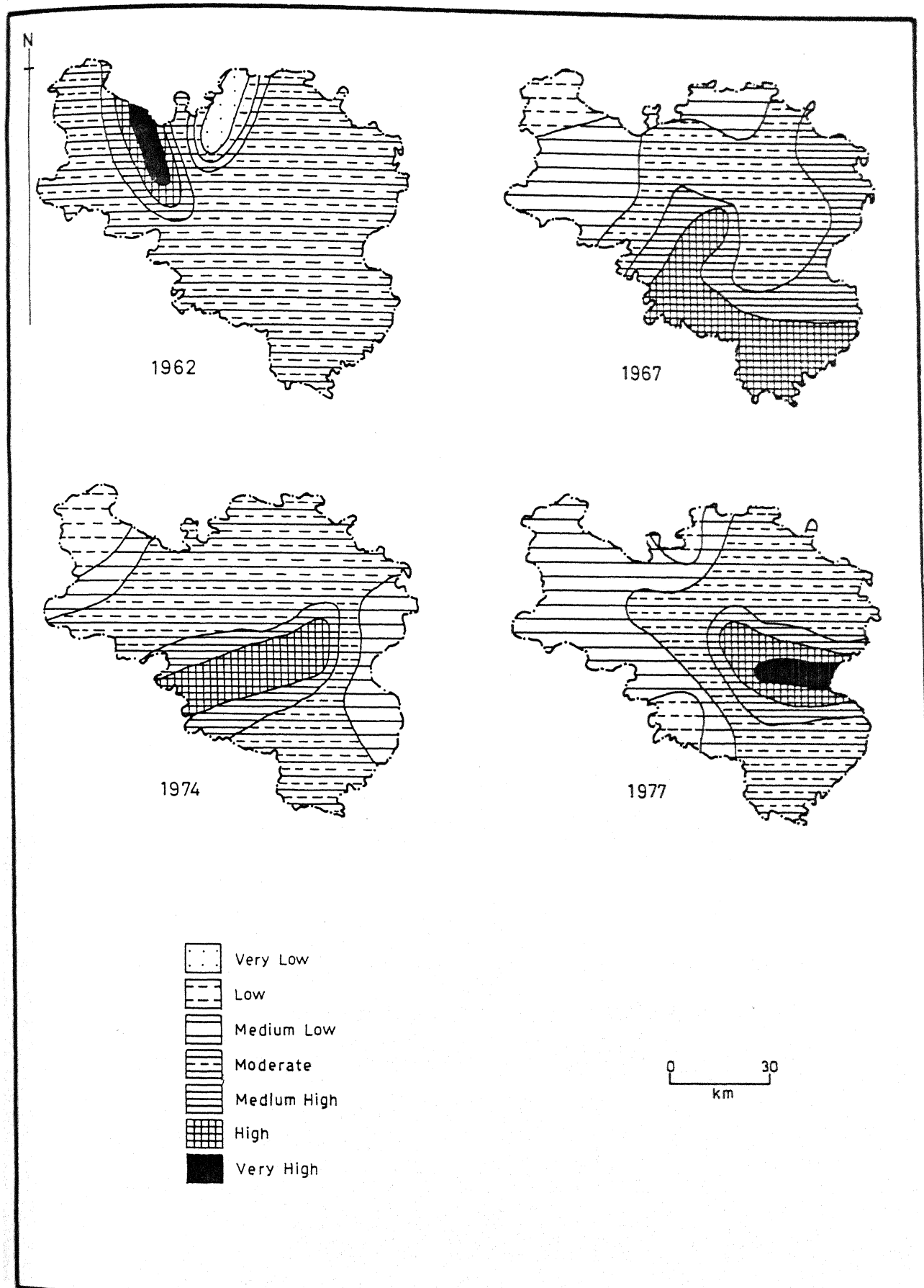
Fig. 9.3.2 Relationship Between Winner and S.C. Population 1962-1977 :Bivariate Regression

सम्पूर्ण, मंझनपुर का उत्तरी पूर्वी भाग, सिराथू का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा का उत्तरी, उत्तरीपूर्वी एवं पश्चिमी भाग, बारा, सिराथू; चायल का मध्य भाग छोड़कर सम्पूर्ण, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का पश्चिमी भाग, प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी किनारा, मंझनपुर विधान सभा का उत्तरी पूर्वी किनारा, एवं नवाबगंज विधान सभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अनतर्गत मेजा, करछना, बारा, झूंसी पूर्वी, चायल, प्रतापपुर, सोरांव पूर्वी, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त कुछ छिट–पुट क्षेत्र भी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस सम्बद्ध क्षेत्र में मेजा दक्षिणी एवं पूर्वी, मध्य, बारा मध्य एवं उत्तरी पूर्वी, इलाहाबाद पश्चिमी सम्पूर्ण, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी भाग, झूंसी उत्तरी, प्रतापपुर पूर्वी, चायल मध्य एवं कुछ छिटपुट विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, चायल, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा, झूंसी विधान सभा का उत्तरी भाग, प्रतापपुर, मेजा विधान सभा का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के के अन्तर्गत हंडिया, प्रतापपुर, झूंसी विधान सभा, सोरांव विधान सभा का दक्षिणी, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी, इलाहाबाद का उत्तरी भाग इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का ऊपरी भाग एवं झूंसी विधान सभा का पूर्वी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना, बारा, कधाई, फूलपुर, झूंसी सोरांव पूर्व इलाहाबाद शहर उत्तर एवं दक्षिणी भाग, सोरांव पश्चिमी विधान सभा का पश्चिमी भग सम्मिलित है।

उपरोक्त विश्लेषण से यह परिणाम प्राप्त हुआ की अनुसूचित जाति जनसंख्या एवं विजयी दल के बीच 1962 से 1991 तक अधिकांश भागो मे सामान्य सम्बन्ध स्थापित है। विभिन्न निर्वाचन वर्षो में यद्यपि विभिन्नता प्रदर्शित है तथा कुछ–2 वर्षो में आपसी समानता भी विद्यमान है। संक्षेपतः सम्बद्ध क्षेत्रो मे अनुसूचित जाति चर का विस्तार अधिक पाया गया है।

9.3.2 सामान्य से अधिक

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक इस कोटि में इलाहाबाद जिले की सीमित विधानसभायें सम्मिलित हैं मानचित्र 9.3.1 एवं 9.3.2 के अनुसार इसके अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में निम्नवत क्षेत्र सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इसके अन्तर्गत इलाहाबाद दक्षिणी, उत्तरी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव, प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, नवाबगंज का उत्तरी भाग, झूंसी विधान सभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इसके अन्तर्गत हंडिया एवं चायल विधान सभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया पश्चिमी, नवाबगंज का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधान सभा का दक्षिणी भाग, मेजा विधान सभा का उत्तरी भाग, करछना, बारा विधान सभा का उत्तरी

पूर्वी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी एवं इलाहावाद उत्तरी विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, करछना विधान सभा, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में मेजा, बारा विधान सभा का मध्य एवं दक्षिणी पूर्वी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी का दक्षिणी भाग, हंडिया, प्रतापपुर विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 मे इस कोटि में करारी विधन सभा सिराथू विधान सभा का पूर्वी भाग, चायल भरवारी विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

9.3.3 सामान्य से निम्न

मानचित्र 9.3.1 एवं 9.3.2 के अनुसार निर्वाचन वर्ष 1991 में असम्बद्ध ऋणात्मक क्षेत्र में कोई विधान सभा सम्मिलित नही हैं।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी किनारा, मंझनपुर विधान सभ उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू का पश्चिमी भाग एवं चायल विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा एवं चायल विधान सभा का मध्य भाग, मंझनपुर विधान सभा का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का उत्तरी एवं मध्य भाग, सोरांव पूर्वी सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1980 मे मात्र एक विधान सभा सिराथू इस वर्ग में सम्मिलित थी।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी भाग, सोरांव उत्तर पश्चिम, बारा विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग

सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1974 में इस कोटि में मेजा, हंडिया विधान सभा का पूर्वी किनारा, सिराथू विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, सिराथू, चायल विधान सभा का पश्चिमी किनारा, नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी भाग एवं सोरांव विधान सभा का उत्तर पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव पश्चिमी विधान सभा का मध्य एवं उत्तर पूर्व भाग, सोरांव पूर्वी विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

9.4 विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या सह सम्बन्ध

इलाहाबाद जिले में सम्पन्न विधान सभा निर्वाचन में प्राप्त विजयी दल एवं जनजाति चर के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों की मात्रा, एफ. अनुपात एवं दिशा का वर्णन 9.1.3.2, 9.1.3.3, 9.1.3.4, में किया जा चुका है। प्रस्तुत अनुभाग में विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या चर के मध्य रैखिक सम्बन्ध वाले क्षेत्रों एवं असम्बद्ध धनात्मक ऋणात्मक क्षेत्रों का वर्णन किया गया है।

इस समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 9.4.1 में प्रदर्शित किया गया है। सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य एवं सामान्य से अधिक तथा सामान्य से निम्न है उनका विश्लेषण निम्नवत है।

9.4.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र 9.4.1 के अनुसार इलाहाबाद जनपद में रैखिक सम्बन्ध वाले क्षेत्र विभिन्न वर्षों 1962 से 1991 तक निम्नानुसार है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, मेजा, करछना, हंडिया, सिराथू, मंझनपुर, नवाबगंज, सोरांव, चायल, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का पश्चिमी भाग, झूंसी, प्रतापपुर सम्मिलित है।
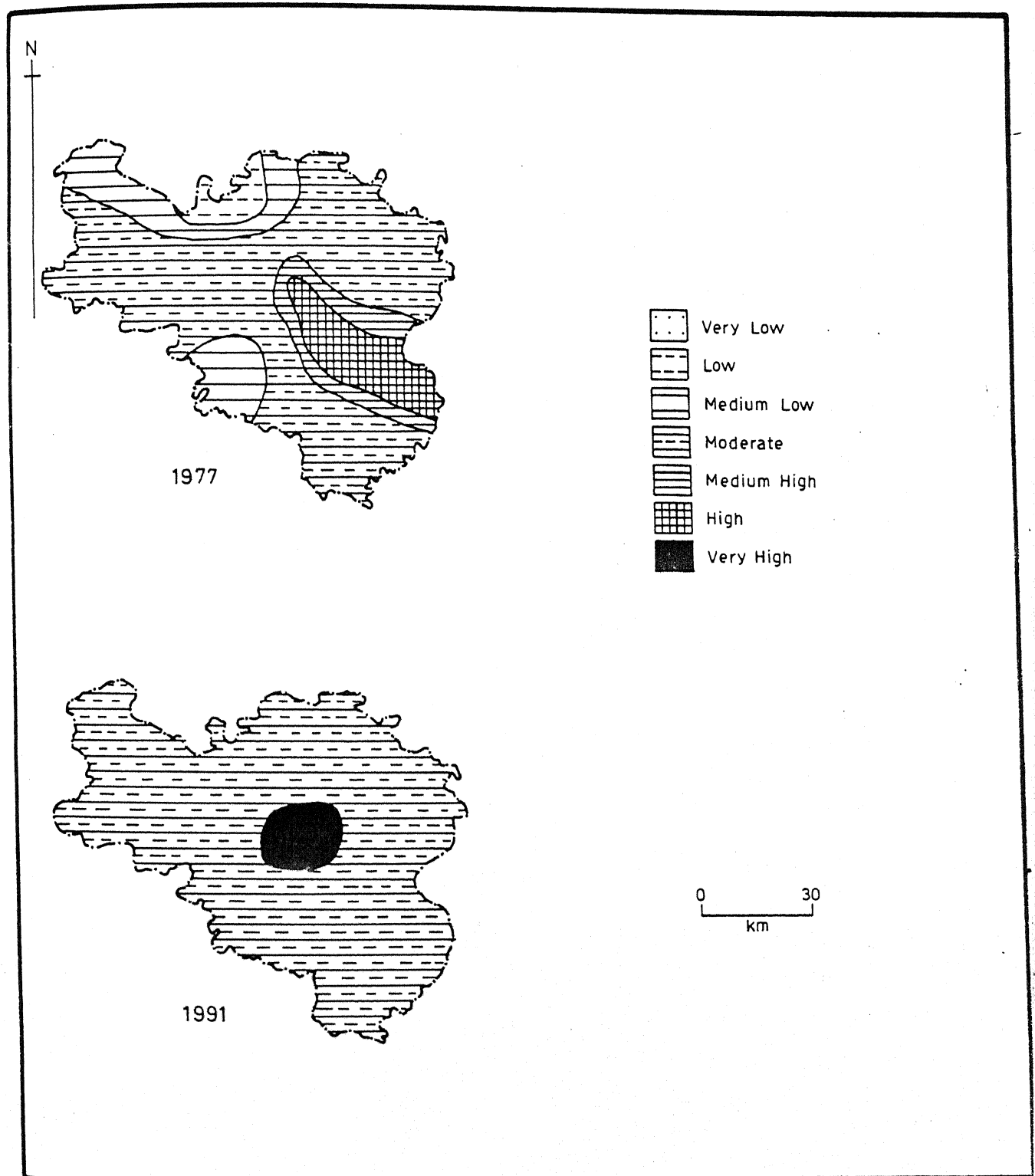
Fig. 9.4.1 Relationship Between Winner and S.T. Population 1977,199
:Bivariate Regression

निर्वाचन वर्ष 1989, 1985, 1980 में विजयी दल के साथ जन जाति जनसंख्या का प्राप्त सम्बन्ध शून्य रहा।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, हंडिया विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, बारा का पश्चिमी एवं उत्तरी किनारा, चायल, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का पश्चिमी भाग एवं सोरांव विधान सभा सम्मिलित है।

9.4.2 सामान्य से अधिक

मानचित्रानुसार असम्बद्ध क्षेत्रों में सामान्य से अधिक मान वाले क्षेत्र इलाहाबाद जिले में अत्यन्त कम है। निर्वाचन वर्ष 1991 में इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989, 85, 80 में विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या के मध्य असम्बद्ध निर्मित ही नही हुए। जनजाति जनसंख्या का सम्बन्ध निरूपित ही नही हो सका। किन्तु निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग का प्रभाव निरूपित हुआ है। इस वर्ग मे मेजा विधान सभा का उत्तरी भाग, करछना का दक्षिणी भाग, मंझनपुर विधान सभा, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, बारा विधान सभा का उत्तरी पूर्वी कोना सम्मिलित है।

9.4.3 सामान्य से निम्न

इस कोटि के अन्तर्गत विजय दल एवं जनजाति के मध्य रैखिक सम्बन्ध ऋणात्मक है। जनजाति जनसंख्या का विजयी दल मत से प्राप्त परिणाम व्याख्यायित करना असम्भव है। इसलिए इसमें उन्हीं वर्षों के परिणामों को व्याख्यायित किया गया है जिनमें इनके मध्य सम्बन्ध निरूपित हुआ है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या के मध्य ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र सिराथू विधानसभा का उत्तरी भाग, बारा विधान सभा का दक्षिणी भाग, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी भाग, नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी भाग रहा।

9.5 विजयी दल एवं साक्षर जनसंख्या सह–सम्बन्ध

उत्तर प्रदेश का इलाहाबाद जिला साक्षरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिला है, किसी भी दल के विजयी होने में साक्षर जनसंख्या व्यापक प्रभाव डालती है। जिले की लगभग 5 विधान सभाओं में साक्षर जनसंख्या अधिक है इसलिए इसका प्रभाव मतदान पर पड़ता है। इस दृष्टि को ध्यान में रखकर विधान सभा निर्वाचन में विजयी दल के प्राप्त मत एवं साक्षर जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों का विश्लेषण किया जा रहा है।

प्रस्तुत अनुभाग में मानचित्र 9.5.1 एवं 9.5.2 विजयी दल एवं साक्षर जनसंख्या के समाश्रयण अवशेषों को प्रदर्शित किया गया है। सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों को सामान्य, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न में वर्णित किया जा रहा है।

9.5.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्रानुसार रैखिक सम्बद्ध वाले क्षेत्र विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भिन्न–भिन्न रहे। जिसका वर्णन निम्नवत है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में सम्पूर्ण जिले में विजयी पार्टी एवं साक्षर जनसंख्या में असम्बद्ध सह सम्बन्ध है। असम्बद्ध सह–सम्बन्ध धनात्मक एवं ऋणात्मक रहा।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण झूंसी का उत्तरी भाग, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल का दक्षिणी भाग
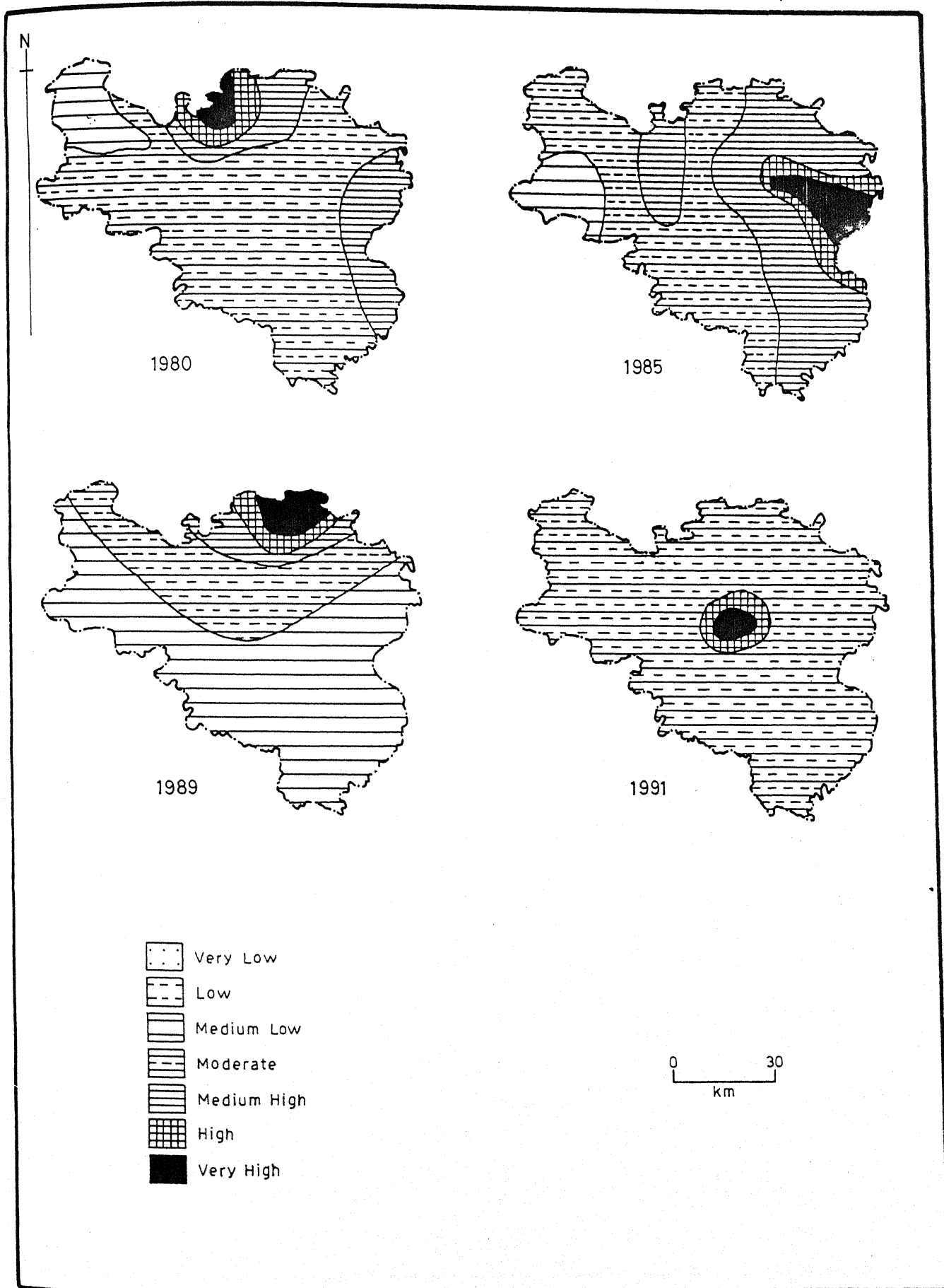
Fig. 9.5.1 Relationship Between Winner and Literate Population 1980-91 : Bivariate Regression
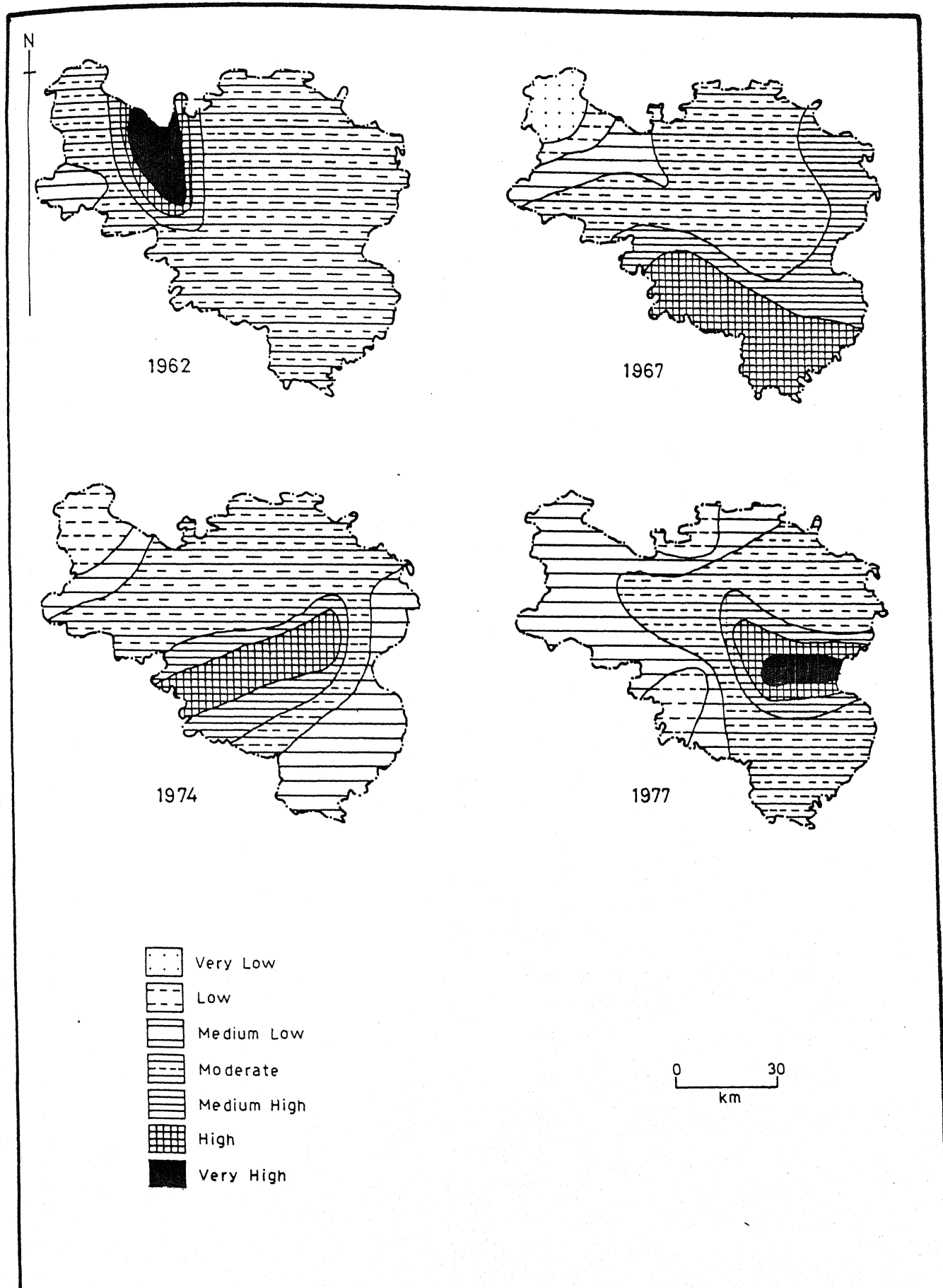
Fig. 9.5.2 Relationship Between Winner and Literate Population 1962-67
:Bivariate Regression

छोड़कर सम्पूर्ण, मंझनपुर विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग, सिराथू का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा मध्यपूर्व एवं पश्चिमी, करछना उत्तरी पूर्वी, झूंसी पश्चिमी, प्रतापपुर का दक्षिणी किनारा, बारा, सिराथू इलाहाबाद पश्चिमी, मंझनपुर विधानसभा का पूर्वी उत्तरी किनारा एवं नवाबगंज का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, हंडिया विधान सभा का पूर्वी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, करछना बारा, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, झूंसी, प्रतापपुर, सोरांव पूर्वी, चायल दक्षिणी, मंझनपुर, सिराथू विधान सभा का उत्तर पूर्वी किनारा सम्मिलित है। अर्थात स्पष्ट है साक्षर जनसंख्या का अधिकांश मत विजयी दल के साथ रहा। सम्बद्ध रैखिक सम्बन्ध सर्वाधिक विधान सभाओं में था।

निर्वाचन वर्ष 1977 में सम्बद्ध क्षेत्र में मेजा दक्षिणी एवं पूर्वी, बारा मध्य एवं उत्तरी पूर्वी, इलाहाबाद पश्चिमी, सम्पूर्ण, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी भाग, झूंसी उत्तरी, प्रतापपुर पूर्व, हंडिया उत्तरी, मंझनपुर, चायल का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर विधान सभा का मध्य पूर्व भाग, झूंसी, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी सम्पूर्ण विधान सभा, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग, सोरांव, नवाबगंज, प्रतापपुर हंडिया विधान सभा एवं मेजा विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस कोटि में मंझनपुर मध्य चायल, बारा विधान सभा का ऊपरी किनारा, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी, नवाबगंज सोरांव झूंसी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना, बारा, केवाई, फूलपुर, झूंसी विधान सभा सोरांव पश्चिमी विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

9.5.2 सामान्य से अधिक

असम्बद्ध क्षेत्रों में समान्य से अधिक धनात्मक मान वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इसके अन्तर्गत इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव, प्रतापपुर का दक्षिणी पूर्वी भाग नवाबगंज उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी भाग, झूंसी का उत्तरी भाग एवं छिट–पुट क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, झूंसी, का पश्चिम भाग, प्रतापपुर का दक्षिणी किनारा, मेजा उत्तरी पूर्वी एवं चायल विधान सभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव मध्य, नवाबगंज, चायल उत्तरी विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया दक्षिणी, मेजा उत्तरी, करछना, बारा उत्तर पूर्व, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

इस कोटि के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1974 में बारा, करछना, इलाहाबाद दक्षिणी का दक्षिणी पूर्वी भाग, झूंसी दक्षिणी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इसके अन्तर्गत मेजा विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग, हंडिया, करछना का उत्तरी पूर्वी, मंझनपुर का दक्षिणी भाग एवं प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग में करारी, सिराथू विधान सभा का पूर्वी भाग एवं भरवारी का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

9.5.3 सामान्य से निम्न

असम्बद्ध ऋणात्मक क्षेत्रों के अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में इसमें निम्नलिखित विधान सभायें सम्मिलित हैं–

मानचित्रानुसार निर्वाचन वर्ष 1991 में धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र की एक विधान सभा छोड़कर सम्पूर्ण जिला सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में बारा का उत्तरी पश्चिमी किनारा, मंझनपुर का उत्तरी पूर्वी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण सिराथू का पश्चिमी भाग एवं चायल का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इसके अन्तर्गत मेजा विधान सभा का मध्य भाग इलाहाबाद दक्षिणी उत्तरी, सोरांव मध्य, हंडिया झूंसी का पूर्वी भाग, प्रतापपुर उत्तरी पश्चिमी एवं मंझनपुर विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में सिराथू विधान सभा एवं मंझनपुर विधान सभा का ऊपरी किनारा इस वर्ग में सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, नवाबगंज उत्तरी, सोरांव उतारी पश्चिम, बारा विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है। इसी तरह निर्वाचन वर्ष 1974 में सिराथू विधान सभा का पश्चिमी भाग एवं हंडिया मेजा, विधान का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, मंझनपुर उत्तरी एवं चायल विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत कोई विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित नही है।

9.6 विजयी दल एवं हिन्दू जनसंख्या सह–सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले में सम्पन्न निर्वाचन वर्ष 1974 से 1989 के मध्य विजयी दल एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्ध क्षेत्रों का वर्णन किया गया है। समाश्रयण अवशेषों को मानचित्रित कर सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है।

मानचित्र 9.6.1 में सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का विभाजन स्पष्ट है तदानुसार तीन प्रकार के क्षेत्र परिलक्षित है सामान्य क्षेत्र, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न क्षेत्र–

9.6.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र 9.6.1 को अवलोकन करने से सामान्य क्षेत्र का विभिन्न वर्षों में विस्तार निम्नप्रकार से है–

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग छोड़कर समस्त, झूंसी का उत्तरी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग, इलाहाबाद पश्चिम, चायल का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, मंझनपुर उत्तरी पूर्वी, सिराथू का उत्तरी पूर्वी भाग तथा नवाबगंज विधानसभा का दक्षिणी पश्चिमी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस कोटि के अन्तर्गत करछना, बारा, मेजा उत्तरी एवं पश्चिम, प्रतापपुर उत्तरी, सोरांव, झूंसी का उत्तरी भाग, नवाबगंज, सिराथू मंझनपुर पूर्वी एवं चायल का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत मेजा मध्य एवं पश्चिमी, बारा, चायल दक्षिणी, मंझनपुर दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, हंडिया पश्चिमी, करछना, प्रतापपुर मध्य एवं पश्चिमी, झूंसी विधान सभा सम्मिलित है।
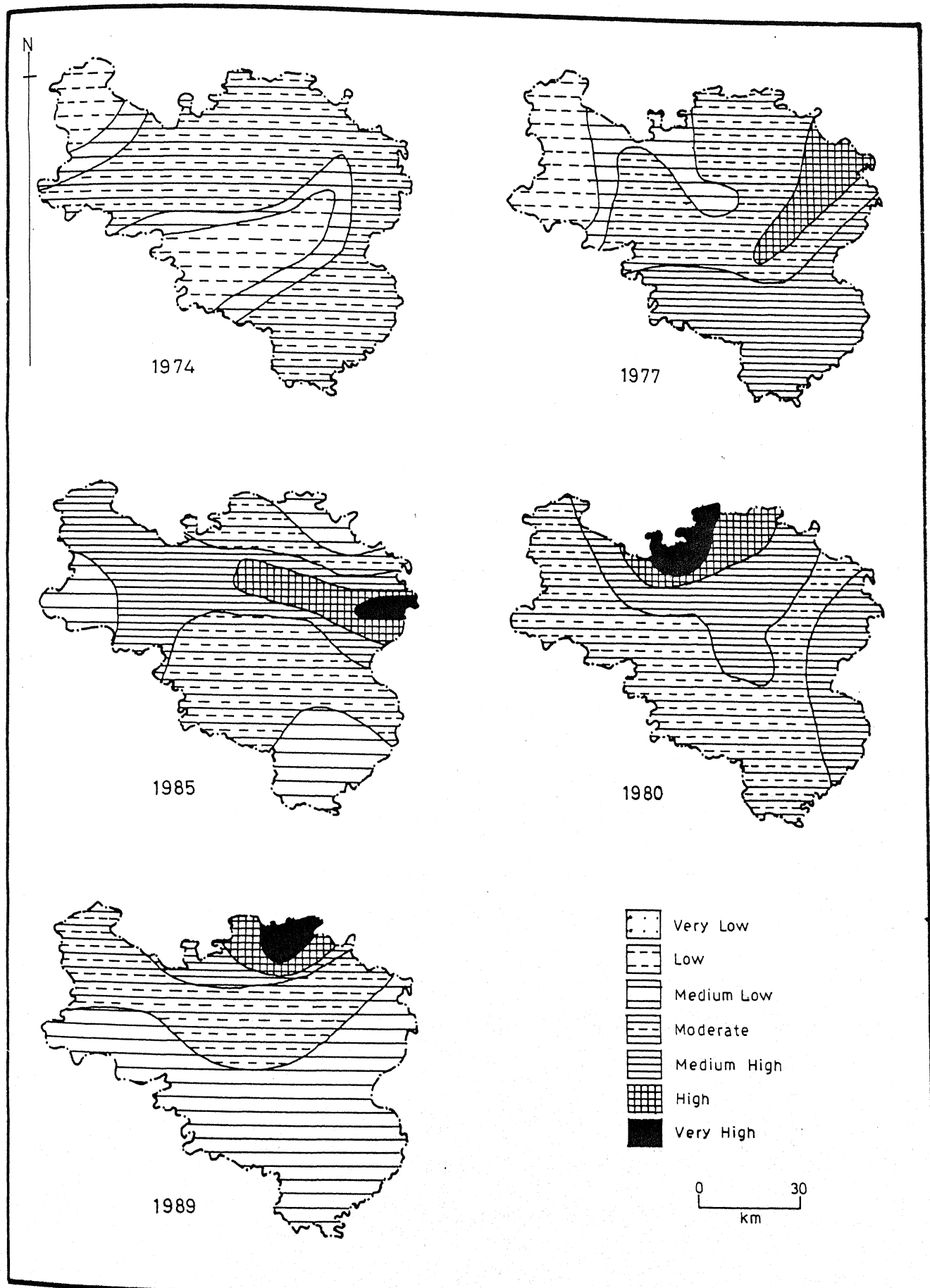
Fig. 9.6.1 Relationship Between Winner and Hindu Population 1974-89 :Bivariate Regression

इस सम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1977 में मेजा दक्षिणी एवं पूर्वी, बारा मध्य एवं उत्तर पूर्व इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी भाग, झूंसी उत्तरी, प्रतापपुर पूर्व, हंडिया उत्तर एवं मंझनपुर चायल का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर विधान सभा का मध्य पूर्व भाग, झूंसी, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी भाग, सोरांव, नवाबगंज, प्रतापपुर हंडिया, एवं मेजा का पश्चिमी भाग समाहित है।

9.6.2 सामान्य से अधिक

मानचित्र 9.6.1 के अनुसार इलाहाबाद जिले के निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव, प्रतापपुर विधानसभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, नवाबगंज उत्तरी, झूंसी का उत्तरी किनारा 1985 में हंडिया विधान सभा झूंसी का मध्य भाग, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी का उत्तरी पश्चिमी भाग एवं चायल मध्य सम्मिलित है।

इसी प्रकार निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत नवाबगंज, चायल का उत्तरी पूर्वी भाग एवं सोरांव का मध्य पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा का उत्तरी भाग, करछना, बारा पूर्वी एवं उत्तरी, झूंसी दक्षिणी एवं हंडिया विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग में बारा, करछना, झूंसी दक्षिणी, हंडिया पश्चिमी, प्रतापपुर दक्षिणी पश्चिमी सम्मिलित है।

9.6.3 सामान्य से निम्न

इस ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र में मानचित्रानुसार विभिन्न वर्षों में भिन्न–भिन्न रही है। जिसका वर्णन निम्नवत है–

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा विधान सभा का उत्तरी एवं पश्चिमी किनारा, मंझनपुर विधान सभा का उत्तरी पूर्वी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू विधान सभा का पश्चिमी भाग एवं चायल विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इसके अन्तर्गत मेजा विधान का दक्षिणी भाग एवं मंझनपुर विधानसभा का दक्षिणी एवं पश्चिमी भाग सम्मिलित है। किन्तु निर्वाचन वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत मात्र एक विधान सभा सिराथू का मध्य एवं पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधान सभा, बारा विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, नवाबगंज उत्तरी, सोरांव उत्तरी सम्मिलित है। किन्तु निर्वाचन वर्ष 1974 में मात्र दो विधान सभा सिराथू एवं मंझनपुर का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

9.7 विजयी दल एवं मुस्लिम जनसंख्या सह–सम्बन्ध

प्रस्तुत अनुभाग में विजयी दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों की मात्रा एवं दिशा का वर्णन मानचित्रानरुसार विजयी दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य रैखिक सम्बन्धी क्षेत्र सामान्य, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न तीन प्रकारों में विभक्त है–

मानचित्र 9.6.1 के अनुसार निर्वाचन वर्ष 1962 से 99 तक सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र निम्नवत है–

9.7.1 सामान्य क्षेत्र : सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत इलाहाबाद जनपद की अधिकांश विधान सभायें सम्मिलित है। जो मानचित्र से ही स्पष्ट ही मानचित्र
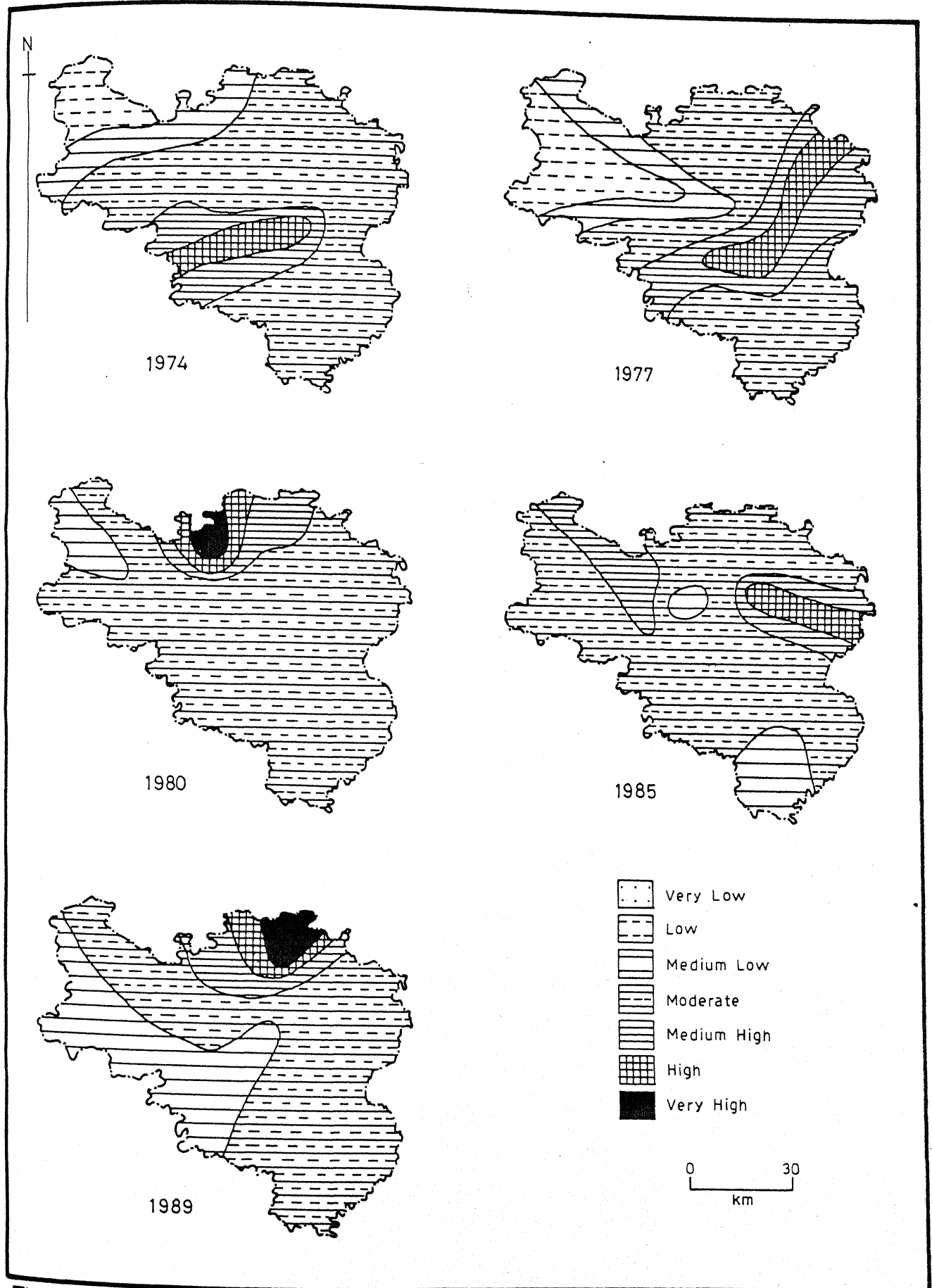
Fig. 9.7.1 Relationship Between Winner and Muslim Population : 1974-89 : Bivariate Regression

9.6.1 के अनुसार निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा बारा पूर्वी, करछना, हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद उत्तरी झूंसी का उत्तरी पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, इलाहाबाद पश्चिमी, चायल का दक्षिणी पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, मंझनपुर का पूर्वी किनारा एवं सिराथू का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा पश्चिमी, मंझनपुर सिराथू का पूर्वी भाग, चायल का पश्चिमी किनारा, बारा, करछना का उत्तरी भाग, प्रतापपुर का मध्य भाग, सोरांव, नवाबगंज इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इसके अन्तर्गत मेजा का मध्य एवं पश्चिमी भाग, करछना, बारा, मंझनपुर, सिराथू, इलाहाबाद पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी विधान सभा, झूंसी, प्रतापपुर, सोरांव का पूर्वी, हंडिया का पश्चिमी किनारा, चायल का मध्य दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का मध्य भाग, बारा का मध्य एवं उत्तरी भाग, चायल का पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी एवं इलाहाबाद उत्तरी सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्र, झूंसी का उत्तरी भाग, सोरांव, प्रतापपुर, हंडिया उत्तरी सम्मिलित है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि निर्वाचन वर्ष 1980 एवं 1977 के मध्य रैखिक सम्बन्धों में विशेष परिवर्तन नही हुआ है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा, प्रतापपुर, हंडिया, झूंसी विधान सभा, सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद उत्तरी, पश्चिमी विधानसभा एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग, मंझनपुर विधानसभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

9.7.2 सामान्य से अधिक

सामान्य से अधिक क्षेत्र के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1989 में सोरांव विधान सभा, झूंसी विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी किनारा, नवाबगंज सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधान सभा, प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी भाग, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा उत्तर पूर्व, हंडिया पश्चिमी, नवाबगंज, चायल उत्तरी पूर्वी किनारा, सोरांव विधान सभा का मध्य एवं पश्चिमी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत मेजा का उत्तरी भाग बारा पूर्वी, झूंसी का दक्षिणी भाग एवं हंडिया विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, करछना विधान सभा सम्पूर्ण एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

विश्लेषण से स्पष्ट है कि असम्बद्ध धनात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत छिट पुट विधान सभायें ही सम्मिलित हैं।

9.7.3 सामान्य से निम्न

मानचित्र 9.6.1 के अनुसार इस ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न निर्वाचन वर्षों में निम्नवत विधान सभायें सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर विधान सभा का उत्तरी पूर्वी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, चायल का दक्षिणी भाग एवं बारा विधान सभा का पूर्वी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इसके अन्तर्गत सिराथू एवं मंझनपुर विधान सभा का पश्चिमी भाग, करछना विधान सभा, मेजा विधान सभा, इलाहाबाद उत्तरी विधान राभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मात्र एक विधान सभा सिराथू सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर विधानसभा, सिराथू विधान सभा एवं बारा विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधान सभा एवं मंझनपुर विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

विजयी दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य रैखिक सह–सम्बन्धों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम यह निरूपित करता है कि मुस्लिम चर का विजयी दल के साथ सम्बन्ध सामान्य या सम्बद्ध है; बहुत कम ही विधान सभायें ऐसी है जहां धनात्मक एवं ऋणात्मक असम्बद्धता विद्यमान है।

9.8 विजयी दल एवं कुल जनंसख्या, अनुसूचित जाति, जनजाति, साक्षर, हिन्दू मुस्लिम जनसंख्या का समग्र सह–सम्बन्ध :

पिछले अनुभागों में पृथक–पृथक समस्त चरों का विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अनुभाग मे इन छः चरों का संयुक्त विश्लेषण किया जा रहा है। समाश्रयण अवशेषों को विश्लेषण के लिए मानचित्र 9.8.1 एवं 9.8.2 में प्रदर्शित किया गया। मानचित्रानुसार विजयी दल एवं संयुक्त चरों के मध्य निम्न परिणाम प्राप्त है। अन्य चरों की तरह इसमें भी सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र उभरे हैं। तदानुसार वर्णन निम्नवत् है–

9.8.1 सामान्य क्षेत्र : इलाहाबाद जिले में विजयी दल को प्राप्त मत एवं संयुक्त चरों के मध्य रैखिक सम्बद्ध वाले क्षेत्रों को सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत रखा गया। विश्लेषण निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 है इसलिए परिस्थितयों के अनुसार
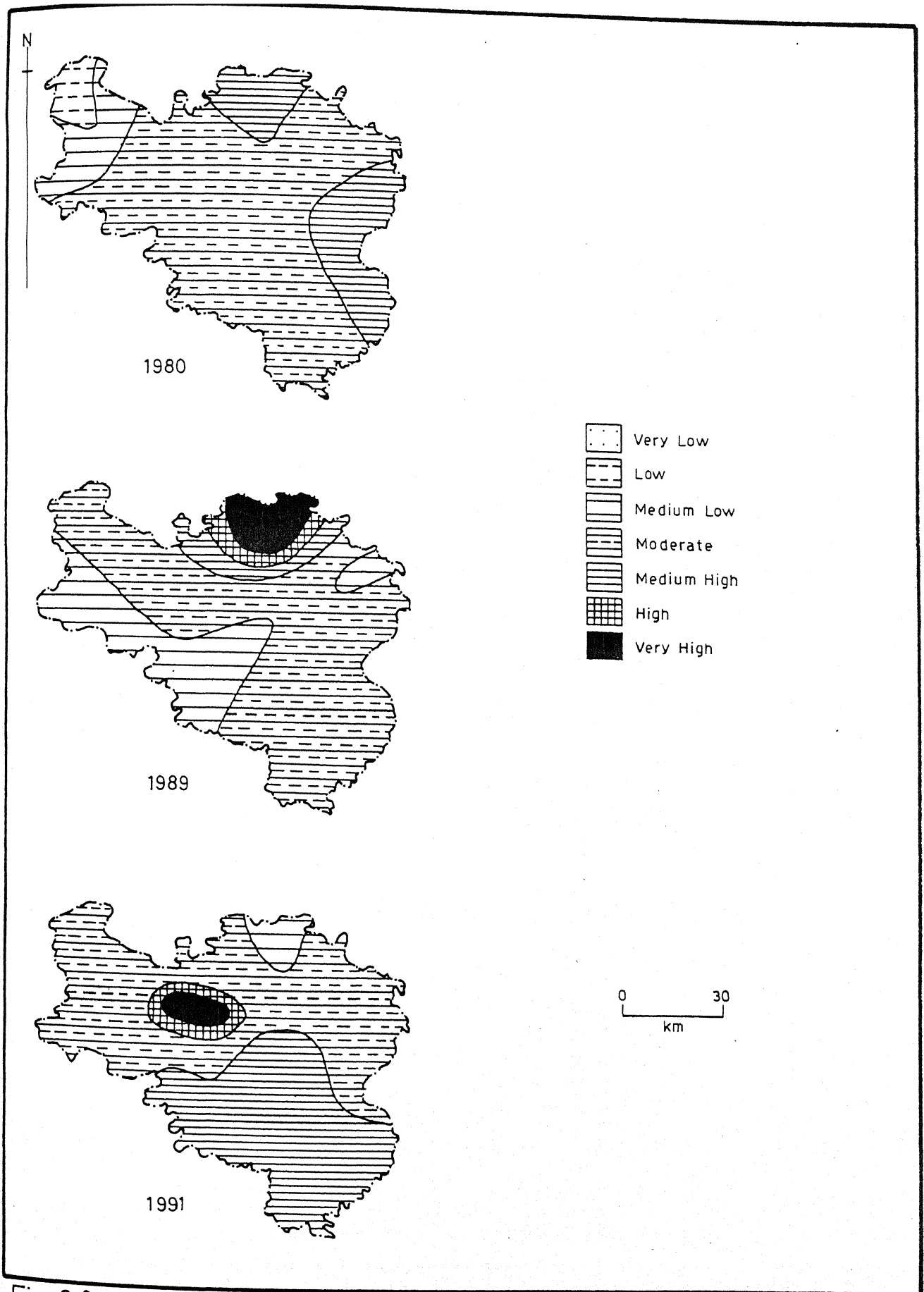
Fig. 9.8.1 Relationship Between Winner and All Variable 1980 to 1991 :Multivariate Regression
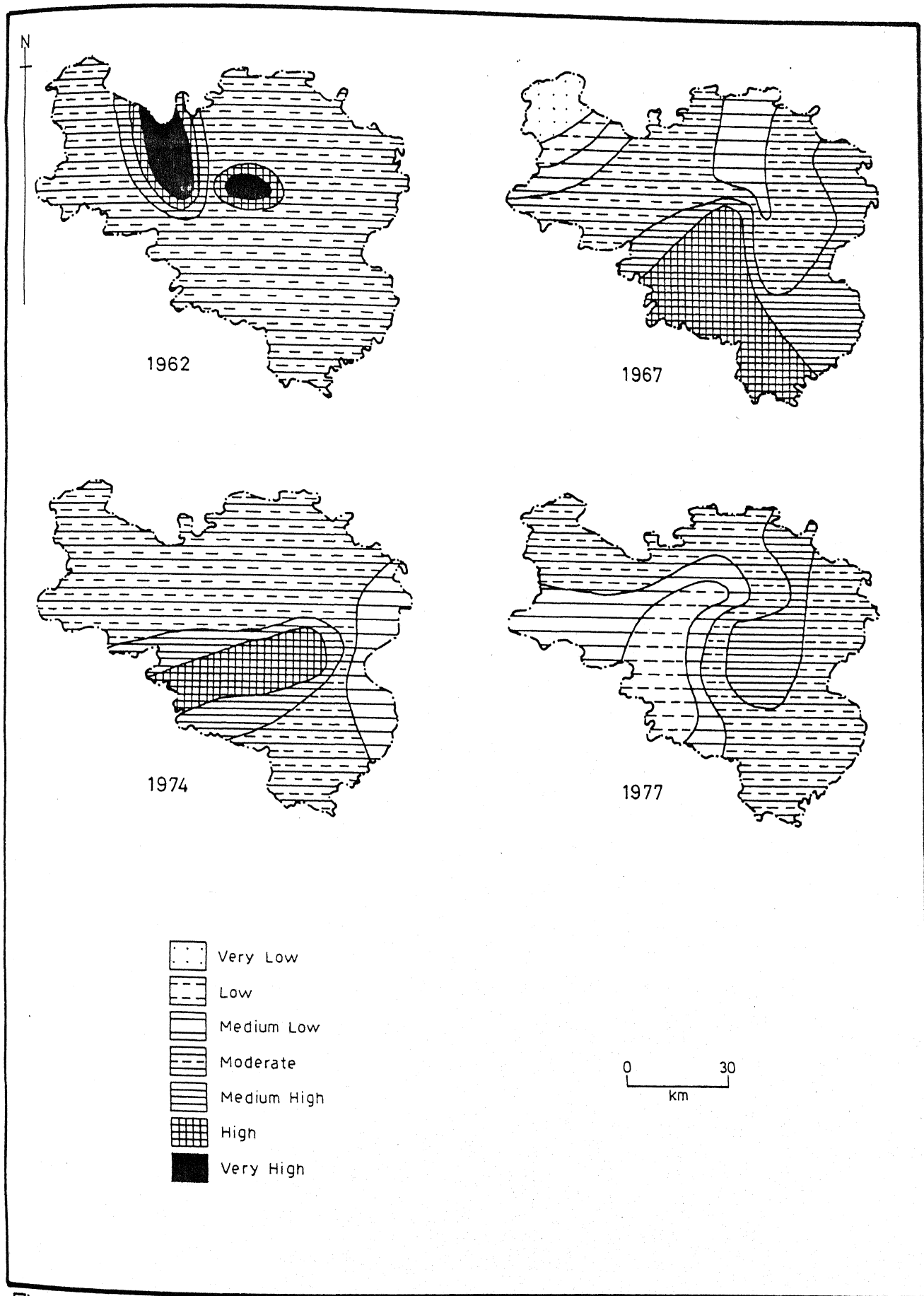
Fig. 9.8.2 Relationship Between Winner and All Variable 1962 to 1977 :Multivariate Regression

इसमें व्यापक परिवर्तन हुआ है। विभिन्न वर्षो में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न विधान सभायें सम्मिलित हैं।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, मंझनपुर, चायल का दक्षिणी एवं उत्तरी भाग, नवाबगंज का मध्य भाग एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, हंडिया, करछना, सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, हंडिया, करछना, झूंसी का उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा एवं पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, चायल का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधान सभा, करछना, प्रतापपुर, चायल, झूंसी सम्पूर्ण विधान सभा क्षेत्र एवं निवागंज विधान सभा मध्य पश्चिमी, सोरांव का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

इस सम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत 1977 में सिराथू, झूंसी उत्तरी, नवाबगंज उत्तरी, सोरांव पश्चिमी, बारा मध्य, मेजा हंडिया सम्मिलित था।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इसके अन्तर्गत मेजा का मध्य भाग, हंडिया विधान सभा का पश्चिमी भाग, झूंसी, प्रतापपुर, सोरांव, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधान सभा एवं मंझनपुर विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस कोटि में नवाबगंज, चायल, मंझनपुर मध्यपूर्व, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी का पश्चिमी भाग, झूंसी दक्षिणी, हंडिया, प्रतापपुर पश्चिमी, करछना उत्तरी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इसके अन्तर्गत मेजा, करछना, केवाई, बारा झूंसी विधान सभा सम्पूर्ण एवं करारी, सिराथू विधान सभा का मध्य एवं पश्चिमी भाग, सोरांव पूर्व, सोरांव पश्चिम का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

9.8.2 सामान्य से अधिक

असम्बद्ध क्षेत्रों में सामान्य से अधिक मानवाले क्षेत्रों के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में मेजा, करछना विधान सभा, झूंसी विधान का दक्षिणी भाग, सोरांव विधान सभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव पूर्व, झूंसी विधान सभा का ऊपरी उत्तरी किनारा, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण इसके अन्तर्गत सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, विधान सभा का पूर्वी किनारा, हंडिया मध्य एवं पूर्वी, नवाबगंज उत्तरपूर्व, सोरांव का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत करछना विधान सभा, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी भाग, एवं बारा विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है। इसी तरह निर्वाचन वर्ष 1974 में मात्र दो विधान सभा क्षेत्र बारा, करछना सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, बारा विधान सभा, करछना विधान सभा का पश्चिमी भाग एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत भरवारी, करारी, सिराथू पूर्वी विधान सभा, सोरांव पश्चिमी का पश्चिमी किनारा सम्मिलित है।

9.8.3 सामान्य से निम्न

ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र सामान्य से निम्न के अनतर्गत निम्नवत विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत चायल का मध्य भाग इलाहाबाद पश्चिमी एवं इलाहाबाद उत्तरी, 1989 में बारा का पूर्वी उत्तरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, मंझनपुर पूर्वी विधान सभा, चायल का दक्षिणी भाग, सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू एवं मंझनपुर विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत बारा विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, मंझनपुर चायल दक्षिणी विधान सभा, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद उत्तरी, विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, चायल उत्तर पश्चिमी मेजा एवं हंडिया विधान सभा पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, सोरांव, झूंसी उत्तरी, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत इलाहाबाद शहर दक्षिणी, शहर उत्तरी का दक्षिणी भाग एवं चायल का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

दशम् अध्याय

पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध

10. पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध

आज राजनीति जीवन का अभिन्न अंग है। कोई भी व्यक्ति जो सामाजिक प्राणी है; वह एक राजनीतिक प्राणी भी है; अस्तु उसका सम्बन्ध राजनीति के समस्त पहलुओं से है आज के सन्दर्भ में जहां व्यक्ति अपने मत का प्रयोग राजनीतिक दलों को विजयी बनाने में करता है, वहीं कभी–कभी वह अपने मत का प्रयोग राजनीतिक दलों को पराजित करने में भी करता है। पिछले अध्यायों में कुल मतदान, विजयी दल मत एवं सामाजिक चरों के मध्य स्थापित सह–सम्बन्धों को विश्लेषित किया गया; वहीं इस अध्याय में पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सह–सम्बन्ध प्रस्तुत किया गया है। यह सम्बन्ध सह–सम्बन्ध एवं समाश्रयण विधि द्वारा संगठित करने के उपरान्त प्राप्त किया गया।

प्रस्तुत अध्याय को आवश्यकतानकुसार एवं परिणामों के आधार पर 8 (आठ) अनुभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम अनुभाग 10.1 में समाश्रयण प्रतिमान सम्बन्धों की प्रकृति, सम्बन्धों की मात्रा समाश्रयण अवशेष को विभिन्न समीकरणों से विश्लेषित किया गया है। द्वितीय अनुभाग 10.2 पराजित दल एवं कुल जनसंख्या, तृतीय अनुभाग 10.3 पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या, चर्तुथ अनुभाग पराजित दल एवं जनजाति जनसंख्या, पंचम अनुभाग पराजित दल एवं साक्षर जनसंख्या षष्टम् अनुभाग पराजित दल एवं हिन्दू जनसंख्या सप्तम् अनुभाग पराजित दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य स्थापित सह–सम्बन्ध को प्रस्तुत किया गया है। अन्तिम अनुभाग 10.8 में पराजित दल एवं समस्त चरों के मध्य स्थापित सम्बन्ध का स्थानिक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

10.1 समाश्रयण प्रतिमान

रैखिक समाश्रयण प्रतिमान (द्विचरीय एवं बहुचरीय) के माध्यम से पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य स्थापित सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है। पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य रैखिक सह–सम्बन्ध प्रतिमान निम्न सूत्र द्वारा विवेचित किया गया है।

$Y = a + b\,x$ (द्विचरीय)

$Y = a + b_1 x_1 + b_2 x_2 + b_3 x_3 + b_4 x_4 + b_5 x_5 + b_6 x_6$ (बहुचरीय)

Y = पराजित दल मत

a = पराजित दल के उस परिणाम का संकेत है जब पराजित दल मत पर सामाजिक चरों का प्रभाव शून्य हो

b = सामाजिक चरों में परिवर्तन के दौरान पराजित दल मत में परिवर्तन की दर को बतलाता है।

X_1 = प्रथम चर (कुल जनसंख्या)

X_2 = द्वितीय चर (अनुसूचित जाति जनंसख्या)

X_3 = तृतीय चर (जनजाति जनसंख्या)

X_4 = चर्तुथ चर (साक्षर जनसंख्या)

X_5 = पंचम चर (हिन्दू जनंसख्या)

X_6 = षष्टम् चर (मुस्लिम जनंसख्या)

इस प्रकार X_1 से X_6 का अभिप्राय सामाजिक चरों से है।

समाश्रयण प्रतिमान के द्वारा ही पराजित दल मत एवं सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्धों की प्रकृति, मात्रा एवं प्रसरण प्राप्त हुआ है। इन परिणामों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत है।

10.1.1 सम्बन्धों की प्रकृति

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक सम्पन्न राज्य विधान सभा निर्वाचन के लिए प्राप्त मतों को समाश्रयण प्रतिमान के द्वारा गणितीय विधि से विश्लेषित किया गया है।

विश्लेषण से प्राप्त परिणों को क्रमश : 10.1.1, 10.1.2, 10.1.3, 10.1.4, 10.1.5, 10.1.6, 10.1.7, 10.1.8, में क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया है–

तालिका 10.1.1

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1991

द्विचरीय

प्रथम चर	$2678.39 + 2.491 x_1$
द्वितीय चर	$2678.39 + .0012 x_2$
तृतीय चर	$2678.39 - .319 x_3$
चतुर्थ चर	$2678.39 - 6.098 x_4$
पंचम चर	$2678.39 + .0123 x_5$
षष्टम् चर	$2678.39 - .346 x_6$

बहुचरीय

संयुक्त चर– $2678.39 + 2.491 x_1 + .0012 x_2 - .319 x_3 - 6.098 x_4 +.0123 x_5 - .346 x_6$

तालिका 10.1.2

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1989

द्विचरीय

प्रथम चर	$9013.46 - .0064 x_1$
द्वितीय चर	$9013.46 - .0614 x_2$
तृतीय चर	$9013.46 - .0431 x_3$
चतुर्थ चर	$9013.46 - .0151 x_4$
पंचम चर	$9013.46 - .0016 x_5$
षष्टम् चर	$9013.46 - .0402 x_6$

बहुचरीय

संयुक्त चर– $9013.46 - .0064 x_1 - .0614 x_2 - .0431 x_3 - .0151 x_4 - .0016 x_5 - .0402 x_6$

तालिका 10.1.3

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1985

द्विचरीय

प्रथम चर	8161.93 - .0046 x_1
द्वितीय चर	8161.93 - .0199 x_2
तृतीय चर	8161.93 - .0156 x_3
चतुर्थ चर	8161.93 - .0033 x_4
पंचम चर	8161.93 - .0135 x_5
षष्टम् चर	8161.93 - .0149 x_6

बहुचरीय

संयुक्त चर– 8161.93 - .0199 x_2 - .0156 x_3 - .0033 x_4 - .0135 x_5 -.0149 x_6

तालिका 10.1.4

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1980

द्विचरीय

प्रथम चर	7514.72 - .0047 x_1
द्वितीय चर	7514.72 - .0376 x_2
तृतीय चर	7514.72 - .0358 x_3
चतुर्थ चर	7514.72 - .0141 x_4
पंचम चर	7514.72 - 8.137 x_5

षष्टम् चर	7514.72 - .0518 x_6

बहुचरीय

संयुक्त चर– 7514.72 - .0047 x_1 - .0376 x_2 - .0358 x_3 - .0141 x_4 - 8.137 x_5 - .0518 x_6

तालिका 10.1.5

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1977

द्विचरीय

प्रथम चर	5038.93 - .0029 x_1
द्वितीय चर	5038.93 - .0232 x_2
तृतीय चर	5038.93 - .0421 x_3
चतुर्थ चर	5038.93 - .0087 x_4
पंचम चर	5038.93 - .0015 x_5
षष्टम् चर	5038.93 - .0248 x_6

बहुचरीय

संयुक्त चर–5038.93 - .0029 x_1 - .0232 x_2 - .0421 x_3 - .0087 x_4 -.0015 x_5 - .0248 x_6

तालिका 10.1.6

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1974

द्विचरीय

प्रथम चर	4571.21 - .0061 x_1
द्वितीय चर	4571.21 - .0291 x_2
तृतीय चर	4571.21 - .0332 x_3
चतुर्थ चर	4571.21 - .0102 x_4
पंचम चर	4571.21 - .0048 x_5
षष्टम् चर	4571.21 - .0631 x_6

बहुचरीय

संयुक्त चर–4571.21 - .0061 x_1 - .0291 x_2 - .0332 x_3 - .0102 x_4 - .0048 x_5 - .0631 x_6

तालिका 10.1.7

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1967

द्विचरीय

प्रथम चर	4631.16 - .0088 x_1
द्वितीय चर	4631.16 - .1154 x_2
तृतीय चर	4631.16 - .1031 x_3

चतुर्थ चर	4631.16 - .0066 x_4
पंचम चर	4631.16 - .0126 x_5
षष्टम् चर	4631.16 - .761 x_6

बहुचरीय

संयुक्त चर–4631.16 - .0088 x_1 - .1154 x_2 - .1031 x_3 - .0066 x_4 - .0126 x_5 - .761 x_6

तालिका 10.1.8

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1962

द्विचरीय

प्रथम चर	5303.44	+ .0092 x_1
द्वितीय चर	5303.44	- .0820 x_2
तृतीय चर	5303.44	- .0021 x_3
चतुर्थ चर	5303.44	+ .0852 x_4
पंचम चर	5303.44	- .0002 x_5
षष्टम् चर	5303.44	- .0041 x_6

बहुचरीय

संयुक्त चर–5303.44 + .0092 x_1 - .0820 x_2 - .0021 x_3 + .0852 x_4 - .0002 x_5 - .0041 x_6

उपरोक्त तालिकाओं के अवलोकन करने के उपरान्त निम्न निष्कर्ष पाया गया।

1. तालिका क्रमांक 10.1.1 के अनुसार पराजित दल मत का प्रथम द्वितीय एवं पंचम चर के साथ धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जब कि अन्य चरों तृतीय, चतुर्थ, षष्टम् के साथ ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया।
2. तालिका क्रमांक 10.1.2 में पराजित दल मत एवं चरों के मध्य ऋणात्मक सम्बन्ध प्रदर्शित है।
3. तालिका क्रमांक 10.1.3 में भी पराजित दल मत एवं समस्त चरों के मध्य सम्बन्ध ऋणात्मक ही रहा।
4. तालिका क्रमांक 10.1.4 एवं 10.1.5 में पराजित दल मत एवं समस्त चरों के मध्य ऋणात्मक सम्बन्ध निरूपित हुआ।
5. निर्वाचन वर्ष 1974 में उपरांत वर्षों से विपरीत प्रभाव रहा क्योंकि तालिका क्रमांक 10.1.6 से स्पष्ट है कि इस वर्ष पराजित दल एवं चरों के मध्य षष्टम् चर को छोड़कर समस्त में धनात्मक रहा।
6. तालिका क्रमांक 10.1.7 से निर्वाचन वर्ष 1967 का विश्लेषण होता है तदानुसार चतुर्थ एवं षष्टम् चर में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जब प्रथम, द्वितीय, तृतीय, पंचम चर में ऋणात्मक सम्बन्ध है।
7. तालिका क्रमांक 10.1.8 के अनुसार निर्वाचन वर्ष 1962 में पराजित दल मत का प्रथम एवं चतुर्थ चर के साथ धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जब कि द्वितीय, तृतीय, पंचम, षष्टम् चर के साथ ऋणात्मक सम्बन्ध।

10.1.2 सम्बन्धों की मात्रा : प्रस्तुत अनुभाग में इलाहाबाद जिले में राज्य विधान सभा निर्वाचन में पराजित दल को प्राप्त मतों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधि से किया गया है। इस भाग में सम्बन्धों की मात्रा या डिग्री का वर्णन प्रस्तुत किया गया। पराजित दल एवं छः चरों, संयुक्त चर के साथ मतों का सहःसम्बन्ध गुणांक प्रदर्शित किया जा रहा है। तालिका क्रमांक 10.1.2.1 में निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 के निर्वाचनों का सहःसम्बन्ध गुणांक प्रदर्शित है।

तालिका 10.1.2.1

सम्बन्धों की प्रकृति (समाश्रयण प्रतिमान) 1962—1991

क्रम	चर	वर्ष							
		1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर	+.32	-.303	+.268	-.106	-.116	+.132	-.164	+.113
2.	द्वितीय चर	-.22	-.172	+.223	-.161	-.175	+.106	-.297	+.02
3.	तृतीय चर	+.121	-.171	+.212	-.075	+.100	+.101	-.265	-.385
4.	चतुर्थ चर	+.2021	+.125	+.245	-.193	-.209	+.05	-.236	-.046
5.	पंचम चर	N.A.	N.A.	+.226	-.064	-.023	+.308	-.036	N.A.
6.	षष्टम् चर	N.A.	N.A.	-.201	+.070	+.100	+.095	-.262	N.A.
7.	संयुक्त चर	.32	-.303	+.268	-.106	-.116	+.132	-.164	+.113

तालिका क्रमांक 10.1.2.1 के विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष निकलता है।

1. इलाहाबाद जनपद में निर्वाचन वर्ष 1991 में प्रथम एवं संयुक्त चर के पराजित दल का सहःसम्बन्ध गुणांक पूर्ण धनात्मक पाया गया अर्थात इसका सहसम्बन्ध पूर्ण सहःसम्बन्ध (PERFECT CORELATION) था अन्य चरों के साथ निम्न ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया।

2. निर्वाचन वर्ष 1989 में पराजित दल एवं प्रथम चर संयुक्त चर के साथ ऋणात्मक पूर्ण सहःसम्बन्ध पाया गया। सम्पूर्ण चरों के साथ सहःसम्बन्ध ऋणात्मक ही रहा।

3. निर्वाचन वर्ष 1985 में प्रथम चर द्वितीय चर तृतीय चर एवं संयुक्त चर के साथ पराजित दल मत का सह सम्बन्ध पूर्ण धनात्मक पाया गया जब कि चतुर्थ एवं पंचम चर के साथ सहः सम्बन्ध निम्न धनात्मक पाया गया। इस निर्वाचन वर्ष में समस्त चर धनात्मक ही पाये गये।

4. निर्वाचन वर्ष 1980 में पूर्ण ऋणात्मक सहःसम्बन्ध की स्थिति प्रथम चर, द्वितीय चर एवं संयुक्त चर के साथ पायी गयी। जब कि तृतीय चर एवं षष्टम् चर के साथ पराजित दल का सहःसम्बन्ध पूर्णधनात्मक पाया गया।

5. निर्वाचन वर्ष 1977 में पराजित दल एवं प्रथम चर, द्वितीय चर, चतुर्थ चर, संयुक्त चर के साथ सहःसम्बन्ध पूर्ण ऋणात्मक पाया गया। तृतीय, पंचम षष्टम् चर के साथ सहः सम्बन्ध निम्न ऋणात्मक पाया गया।

6. निर्वाचन वर्ष 1974 में समस्त चरों के साथ लगभग एक जैसी स्थिति पायी गयी अर्थात् निम्न धनात्मक सहः समबन्ध पाया गया किन्तु पराजित दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के बीच सहःसम्बन्ध निम्न ऋणात्मक पाया गया।

7. निर्वाचन वर्ष 1967 प्रथम चर एवं संयुक्त चर के साथ सहः सम्बन्ध निम्न ऋणात्मक है। जब कि द्वितीय, तृतीय चर के साथ पूर्ण ऋणात्मक एवं चतुर्थ के साथ पूर्ण धनात्मक सह सम्बन्ध है।

8. निर्वाचन वर्ष 1962 मे प्रथम चर चतुर्थ चर एवं संयुक्त चर के साथ निम्न धनात्मक तृतीय चर के साथ पूर्ण धनात्मक सहः सम्बन्ध है।

उपरोक्त विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि सहःसम्बन्ध स्थायी नहीं है समय परिस्थिति एवं वातावरण के साथ उसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है।

10.3.1 समाश्रयण अवशेष

समाश्रयण प्रतिमान से समाश्रयण अवशेष की परिगणना की जाती है। समाश्रयण प्रतिमान से सामाजिक चरों के आधार पर अनुमानित पराजित दल मत तथा वास्तविक पराजित दल मत के अन्तर (विचलन) को पराजित दल का समाश्रयण अवशेष कहा गया है। इन समाश्रयण अवशेषो को अध्ययन की आवश्यकतानुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है। विभाजन के उपरान्त उनको तालिका क्रमांक 10.1.3.1 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 10.1.3.1

समाश्रयण से प्राप्त अवशेषों के वर्ग

वर्ग	सीमायें मानकलब्धि	दिशा एवं स्तर	क्षेत्र विवरण
1	1.5 से ऊपर	उच्चतम धनात्मक	सामान्य से अधिक उच्चतम
2	1.0 से 1.5	उच्च धनात्मक	सामान्य से अधिक (उच्च)
3	0.5 से 1.0	उच्च मध्यम	सामान्य से अधिक (मध्यम)
4	0.5 से –0.5	मध्यम	सामान्य
5	–0.5 से –1.0	ऋणात्मक मध्यम	सामान्य से निम्न (मध्यम)
6	–1.0 से –1.5	ऋणात्मक उच्च	सामान्य से निम्न (उच्च)
7	–1.5 से ऊपर	ऋणात्मक उच्चतम	सामान्य से निम्न (उच्चतम)

तालिका 10.1.3.2

मानक त्रुटि (1962–1991)

क्रम	चर	वर्ष							
		1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर	.0079	.008	.006	.007	.011	.010	.011	6.31

	(कुल जनसख्या)								
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित जनसख्या)	100	.190	.036	040	.060	053	056	012
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसंख्या)	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	2.20
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जनसख्या)	.119	.015	.116	.012	.019	.016	.017	.003
5.	पंचम चर (हिन्दू जनसख्या)	N.A.	N.A.	.0059	.006	.010	.010	.012	N.A.
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसंख्या)	N.A.	N.A.	.088	.101	.147	.0407	.042	N.A.
7.	सयुक्त चर (उपरोक्त सभी)	.0079	.008	.006	.007	.011	.010	.011	6.31

तालिका 10.1.3.3

एफ0 अनुपात (1962–1991)

		वर्ष							
क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर (कुल जनसख्या)	1.37	1.21	.929	.138	.166	.213	.335	.156
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित जनसंख्या)	.66	.366	.632	.323	.382	.138	1.16	9.72
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसंख्या)	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	N.A.	2.09
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जनसंख्या)	.511	.191	.766	.466	.550	.040	.710	.026
5.	पंचम चर (हिन्दू जनसख्या)	N.A.	N.A.	647	.049	6.64	2.10	.016	N.A.
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसंख्या)	N.A.	N.A.	.508	.060	.123	.110	.886	N.A.
7.	संयुक्त चर (उपरोक्त सभी)	1.37	1.21	.929	.138	.166	.213	.335	.156

तालिका 10.1.3.4

'b' मान की मानक त्रुटि 1962–1991

		वर्ष							
क्रम	चर	1962	1967	1974	1977	1980	1985	1989	1991
1.	प्रथम चर (कुल जनसंख्या)	5229.37	1392.8	4583 71	5214.73	7768 10	15438.34	9253.29	2769.84
2.	द्वितीय चर (अनुसूचित जनसख्या)	5373.44	4748 32	4637 40	5175 55	7699 86	8446.76	8953 42	2786.63
3.	तृतीय चर (जनजाति जनसख्या)	N.A.	N.A.	N.A.	N.A	N A.	N A.	N.A.	2572.55
4.	चतुर्थ चर (साक्षर जनसंख्या)	5406.09	4882.42	4612 87	5145.80	7648.16	8481.04	9115.80	2784.75
5.	पंचम चर (हिन्दू जनसख्या)	N.A	N.A.	4634.64	5233.90	7819 40	7834.77	9375 36	N.A.
6.	षष्टम् चर (मुस्लिम जनसंख्या)	N A.	N.A.	4660.21	5231 60	7781.91	8456.61	9053.40	N.A.
7.	संयुक्त चर (उपरोक्त सभी)	5229.37	13912.8	4583.71	5214.73	7768.10	15438.34	9253.29	2769.84

समाश्रयण अवशेषों के द्वारा सफल समाश्रयण प्रतिमान एवं असफल समाश्रयण प्रतिमान क्षेत्रों को निर्धारण पराजित दल मत एवं पृथक–2 चरों के बीच किया गया है।

तालिका 10.3.1.1 के आधार पर समाश्रयण अवशेषों के निम्न वर्ग निरूपित होते हैं। प्रथम वर्ग जिसे सामान्य क्षेत्र नामकरण किया गया है उसके अन्तर्गत वे क्षेत्र आते हैं जहां प्रतिमान के द्वारा पराजित दल मत एवं सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्ध सम्पूर्ण रूप से पाया गया है। द्वितीय वर्ग सामान्य से अधिक (धनात्मक) मान वाले क्षेत्रों का एवं तृतीय वर्ग सामान्य से अधिक (ऋणात्मक) मान वाले क्षेत्रों

का है। द्वितीय वर्ग, तृतीय वर्ग के क्षेत्रों का असफल क्षेत्र के रूप में प्रदर्शित किया गया है।

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक की विभिन्न गणनाओं को क्रमशः तालिका क्रमांक 10.1.3.2, 10.1.3.3, 10.1.3.4 में प्रदर्शित किया गया है। तालिका 10.1.3.2 में मानक त्रुटि तालिका 10.1.3.3 एफ0 अनुपात एवं तालिका 10.1.3.4 में 'b' मान की मानक त्रुटि का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

10.2 पराजित दल एवं कुल जनसंख्या सह–सम्बन्ध

निर्वाचन मे विजयी दल के साथ कुल जनसंख्या का सम्बन्ध पिछले अध्याय में विश्लेषित किया गया है। इस अनुभाग में विजयी दल मत एवं सामाजिक चर एवं कुल जनसंख्या के मध्य सम्बन्धों को विश्लेषित किया जा रहा है। सम्बन्धों के विश्लेषण मे प्रकृति एवं मात्रा के साथ–2 सामाजिक वातावरण के प्रभावों को भी समाहित किया गया है। समस्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विजयी दल मत एवं कुल जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्ध वाले क्षेत्रों को उद्घाटित किया गया। जिसे मानचित्र 10.2.1 एवं 10.2.2 में प्रदर्शित किया गया।

मानचित्र 10.2.1 एवं 10.2.2 के आधार पर समाश्रयण अवशेष परिगणना से निम्न क्षेत्र प्रदर्शित हुए। मानचित्रानुसार मुख्य रूप से सम्बद्ध एवं असम्बद्ध दो क्षेत्र है। सम्बद्ध क्षेत्र ऐसा है जहाँ परिकल्पना सिद्ध हो रही है, अर्थात पराजित दल में कुल जनसंख्या के व्यवहार का प्रभाव स्पष्ट है। असम्बद्ध क्षेत्रों में दो क्षेत्र है समान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न। सामान्य से अधिक उच्च धनात्मक एवं सामान्य से निम्न उच्च ऋणात्मक क्षेत्रों को प्रदर्शित करता है। सामान्य क्षेत्र, सामान्य से अधिक, सामान्य से निम्न का वर्णन निम्नवत है–

10.2.1 सामान्य क्षेत्र : मानचित्र 10.2.1 एवं 10.2.2 के विश्लेषण से इलाहाबाद जनपद में निर्वाचन वर्ष 1991 में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत मंझनपुर,
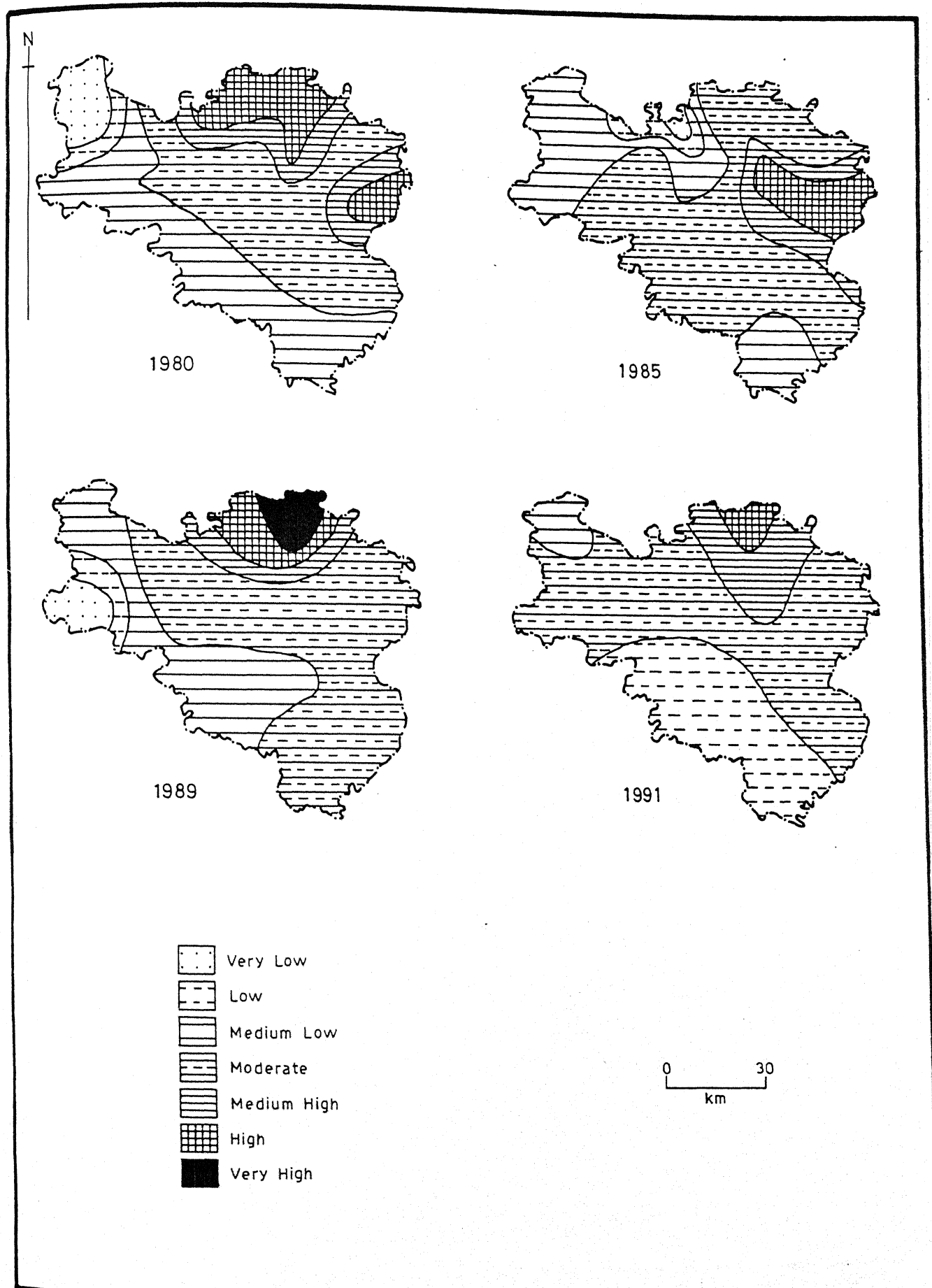
Fig. 10.2.1 Relationship Between Runner and Population 1980-1991 :Bivariate Regression
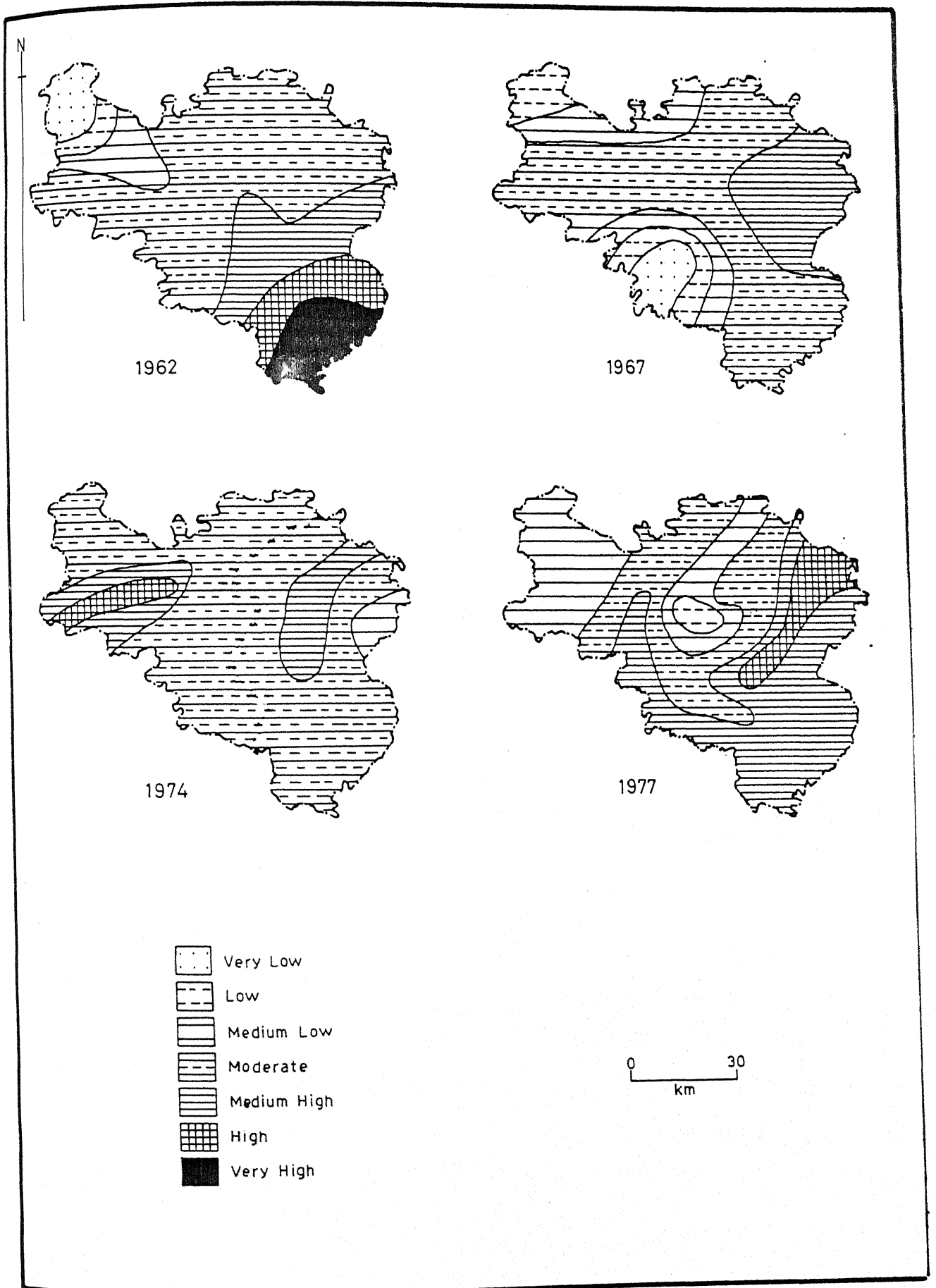
Fig.10.2.2 Relationship Between Runner and Population 1962-1977 :Bivariate Regression

चायल, इलाहाबाद पश्चिमी, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, मेजा का पश्चिमी भाग, हंडिया सम्पूर्ण विधान सभा, प्रतापपुर का मध्य एवं दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में इस कोटि के अन्तर्गत हंडिया, करछना, प्रतापपुर विधान सभा का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी विधान सभा का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा, चायल विधानसभा का उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, सिराथू का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा, मंझनपुर का उत्तरी भाग चायल विधान सभा का मध्य, उत्तरी एवं पूर्वी भाग आता है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में उपरोक्त परिस्थितियों से भिन्न परिस्थिति थी, इस वर्ष इस वर्ग में मेजा विधान सभा का उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, करछना, मंझनपुर का पूर्वी किनारा, सिराथू, चायल, झूंसी का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी, प्रताप पुर, सोरांव सम्मिलित था।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी भाग, करछना, झूंसी विधान का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, चायल विधान सभा का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा, प्रतापपुर विधान सभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित हैं। अधिकांश विस्तार नगरीय क्षेत्र में है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू का पूर्वी भाग, झूंसी का उत्तरी भाग, नवाबगंज का उत्तरी भाग, बारा उत्तरी, प्रतापपुर विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग, सोरांव विधान सभा का पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, सोरांव विधान सभा का पूर्वी एवं पश्चिमी भाग सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1977 में जनमत का झुकाव केवल विजयी दल को अधिकतम वोटों से जीताने का था जिससे पराजित

दल का विस्तार छिट पुट ही पाया गया अर्थात पराजित सामान्य जनमत किसी भी विधान सभा में नही रहा।

निर्वाचन वर्ष 1974 में सामान्य क्षेत्र का विस्तार बारा पश्चिमी, मंझनपुर, झूंसी पूर्वी, सिराथू दक्षिणी, मेजा विधान सभा, हंडिया विधान सभा का पश्चिमी भाग, बारा उत्तरी पूर्वी, इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का मध्य भाग, इलाहाबाद उत्तरी का पूर्वी भाग, झूंसी विधानसभा का उत्तरी भाग एवं प्रतापपुर विधान सभा के उत्तरी भाग में है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा एवं करछना विधान सभा का मध्य भाग, इलाहाबाद पश्चिमी उत्तरी एवं दक्षिणी विधान सभा का पश्चिमी भाग, झूंसी का उत्तरी भाग, सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी भाग, चायल विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत करारी एवं भरवारी विधान सभा का मध्य पूर्व दक्षिणी भाग, चायल, इलाहाबाद शहर का उत्तरी दक्षिणी भाग एवं फूलपुर विधान सभा सम्मिलित है।

10.2.2 सामान्य से अधिक क्षेत्र

सामान्य से अधिक क्षेत्र असम्बद्ध क्षेत्र है इसमे प्रतिमान उच्च धनात्मक सम्मिलित है। उच्च धनात्मक क्षेत्र चूंकि असम्बद्ध क्षेत्र है। पराजित दल एवं जनसंख्या के मध्य सम्बन्ध उच्च धनात्मक रहा इस वर्ग में अधिकांश ग्रामीण, अशिक्षित जनसंख्या सम्मिलित है।

मानचित्रानुसार विभिन्न वर्षों में इसमें निम्नवत क्षेत्र सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1991 में असम्बद्ध धनात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत मेजा, बारा विधान सभा का मध्य एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग सिराथू विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव विधान सभा, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी भाग छोड़कर समस्त, झूंसी का उत्तरी पश्चिमी किनारा, बारा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1985 में हंडिया विधान सभा, प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी भाग , झूंसी का दक्षिणी पूर्वी भाग धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र में सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी किनारा, झूंसी उत्तरी सोरांव, नवाबगंज विधान सभा का दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण सम्मिलित है।

सामान्य से अधिक क्षेत्र के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1977 में मेजा, करछना, हंडिया विधान सभा, बारा विधान सभा का दक्षिणी भाग एवं प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है। इसी तरह इस वर्ग निर्वाचन वर्ष 1974 में भी मात्र 4 विधान सभाओं का सीमित क्षेत्र सम्मिलित है। जो भिन्नवत है– मंझनपुर विधान सभा का मध्य भाग, चायल का पश्चिमी भाग, करछना, झूंसी विधान सभा एवं प्रतापपुर विधान सभा मध्य भाग।

निर्वाचन वर्ष 1967 में हंडिया प्रतापपुर एवं झूंसी विधान सभा में धनात्मक असम्बद्धता थी।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, केवाई दक्षिणी, करछना, बारा का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

उपरोक्त विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि पराजित दल का असम्बद्ध धनात्मक सम्बन्ध ग्रामीण क्षेत्र की विधान सभाओं में अधिक है।

10.2.3 सामान्य से निम्न

उच्च ऋणात्मक असम्बद्ध वाले क्षेत्रो को सामान्य से निम्न क्षेत्र की संज्ञा दी गई। इस वर्ग के अन्तर्गत मानचित्रानुसार निम्न विधानसभायें सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इसके अन्तर्गत मेजा का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग, बारा का मध्य एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग, एवं निर्वाचन वर्ष 1989 में सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग मंझनपुर का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का दक्षिणी भाग, मंझनपुर का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी का पूर्वी भाग एवं नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, बारा एवं चायल विधान सभा का दक्षिणी भाग मंझनपुर एवं सिराथू, एवं 1977 में नवाबगंज मंझनपुर का पश्चिमी भाग, सिराथू, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का पूर्वी भाग, एवं उत्तरी का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया पूर्वी, सिराथू, उत्तरी पश्चिमी, बारा मध्य, एवं सोरांव विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी नाम सम्मिलित है निर्वाचन वर्ष 1967 में बारा, मेजा विधान सभा का पश्चिमी भाग एवं सिराथू मे उच्च असम्बद्धता विद्यमान थी।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधान सभा, करारी विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी किनारा, भरवारी का पश्चिमी किनारा सम्मिलित था।

उपरोक्त वर्णन से निम्न निष्कर्ष निकलता है–

1. अधिकांश नगरीय विधानसभायें सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित हैं अर्थात् नगरीय क्षेत्रों में सम्बद्ध क्षेत्र अधिक है।
2. धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तृत है जहाँ की जनमत निरक्षर, एवं निर्णय लेने में अक्षम है क्योंकि उनके निर्णय परिवार के किसी मुखिया द्वारा लिये जाते हैं।
3. ऋणात्मक क्षेत्र भी ग्रामीण क्षेत्रों में है।

4. असम्बद्ध ऋणात्मक क्षेत्र सीमित एवं निश्चित है।

5. असम्बद्ध धनात्मक क्षेत्र भी सीमित है।

10.3 पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या सह–सम्बन्ध

भारतीय समाज में अनुसूचित जाति जनसंख्या का निर्माण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान रहा। अनुसूचित जाति का राजनीतिक निर्माण स्वरूप निर्वाचन वर्ष 1952 से 1991 तक व्यापक पैमान पर परिवर्तित होता रहा जिसके पीछे मुख्य कारण राजनीति दलों द्वारा इन जातियों की उपेक्षा। वर्तमान राजनैतिक परिदृश्य में इस वर्ग को प्रत्येक दल अपने साथ जोड़ना चाहता है; किन्तु वास्तविक रूप से यह वर्ग किस दल या पार्टी के साथ जुड़ा, इसके व्यवहार में किस–किस वर्ष परिवर्तन आया, उस परिवर्तन का क्या कारण था, इन सबका विश्लेषण पराजित दल के साथ करना इस अनुभाग का लक्ष्य है।

प्रस्तुत अनुभाग में पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के मध्य स्थापित सहःसम्बन्ध को प्रस्तुत अनुभाग में पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के मध्य स्थापित सहःसमबन्ध को प्रस्तुत करने के लिए समाश्रयण से प्राप्त प्रतिमानों का गणितीय विश्लेषण किया गया। तदानुसार उन परिणामों को मानचित्रित किया गया। मानचित्र 10.3.1 एवं 10.3.2 के अनुसार पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के मध्य तीन प्रकार के सम्बन्ध क्षेत्र निर्मित हैं। प्रथम सामान्य क्षेत्र, द्वितीय सामान्य से अधिक क्षेत्र तृतीय समान्य से निम्न क्षेत्र; जिसका वर्णन निम्नवत है–

10.3.1 सामान्य क्षेत्र

सामान्य क्षेत्र सम्बद्ध क्षेत्र है। जिन क्षेत्रों में पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के मध्य मध्यम समाश्रयण प्रतिमान निर्मित हुआ उनको इसके अन्तर्गत रखा है। विभिन्न वर्षों में इनका वर्णन निम्नवत है।
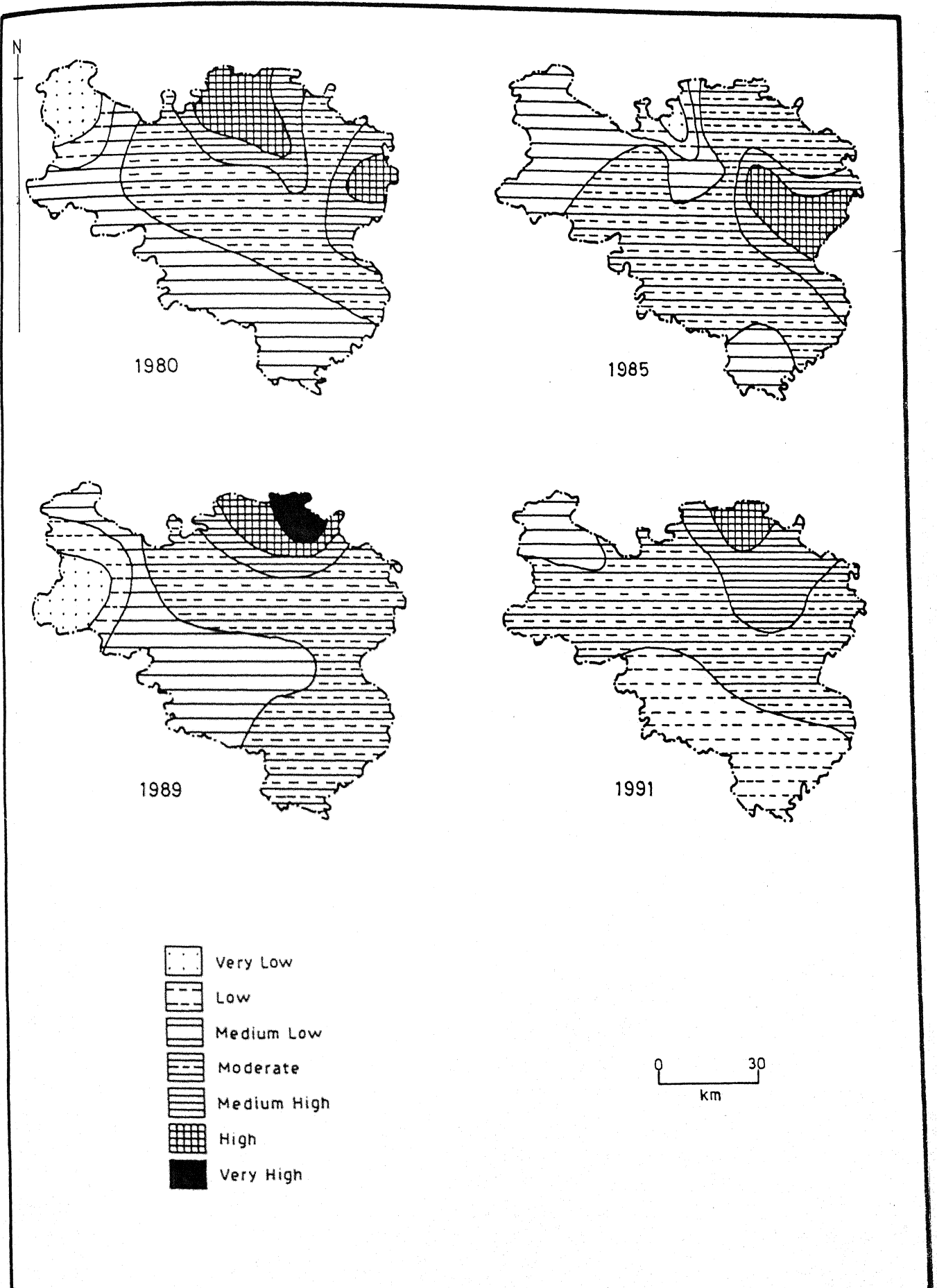
Fig.10.3.1 Relationship Between Runner and S.C. Population :1980-91 :Bivariate Regression
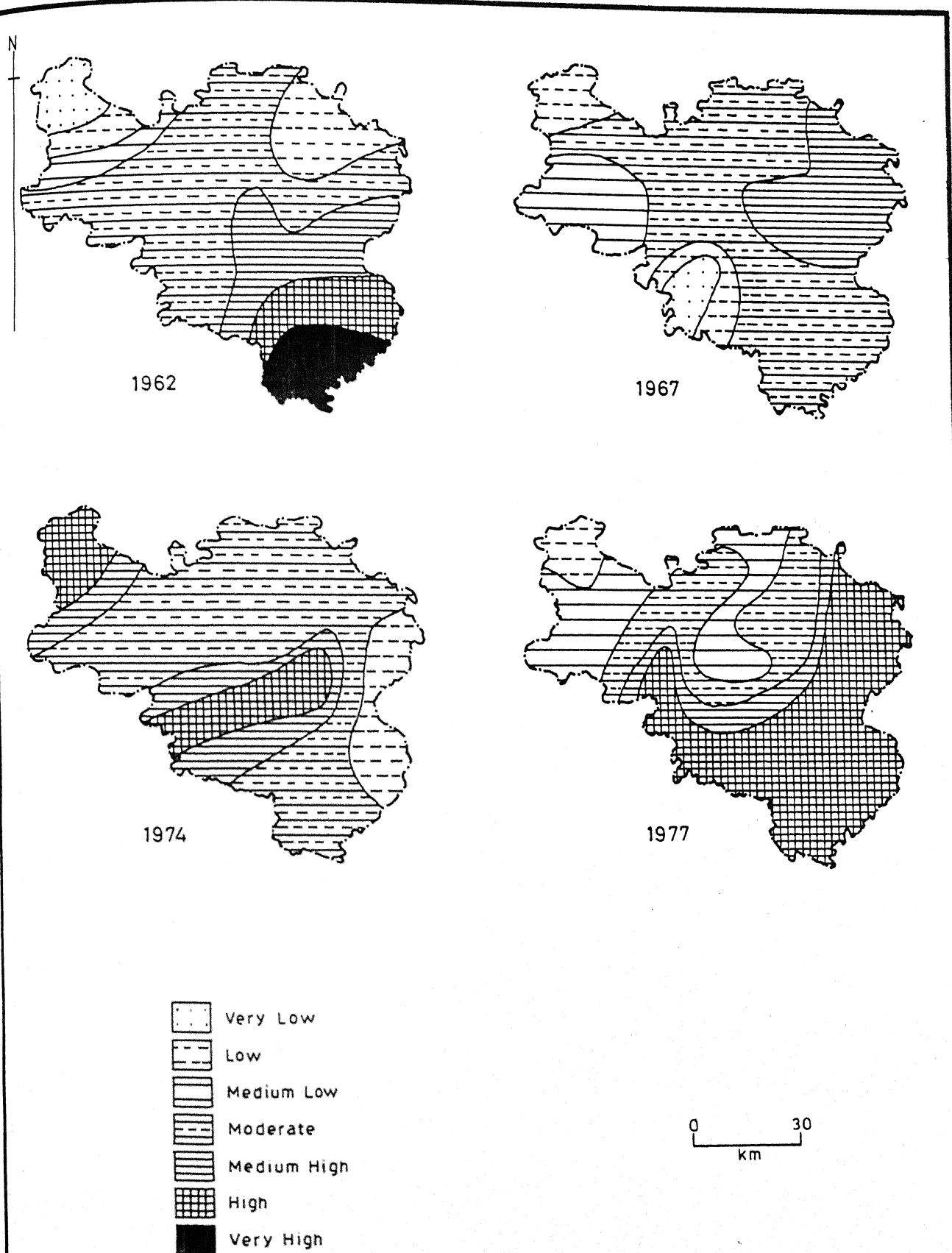
Fig.10.3.2 Relationship Between Runner and S.C. Population 1962-7
:Bivariate Regression

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत झूंसी विधान सभा सम्पूर्ण नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग, सोरांव प्रतापपुर का दक्षिणी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत सम्पूर्ण हंडिया विधान सभा, प्रतापपुर, इलाहाबाद दक्षिणी, मेजा का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण करछना का उत्तरी भाग, झूंसी का उत्तरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का डपरी भाग छोडत्रकर सम्पूर्ण, इलाहाबाद पश्चिमी , चायल का उत्तरी पूर्वी, पश्चिमी भाग, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा सिराथू का उत्तरी पूर्वी क्षेत्र चायल विधान सभा का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, हंडिया दक्षिणी, बारा, मंझनपुर, सिराथू का दक्षिणी किनारा, चायल का दक्षिणी पश्चिमी भाग, प्रतापपुर, सोरांव, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी एवं पश्चिमी विधानसभा का दक्षिणी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का उत्तरी एवं उत्तरी पूर्वी भाग, करछना सम्पूर्ण, झूंसी दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, चायल का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा, प्रतापपुर विधान सभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में सिराथू का पूर्वी भाग, झूंसी का उत्तरी भाग, नवाबगंज का उत्तरी भाग; बारा उत्तरी, प्रतापपुर उत्तरी पश्चिमी, सोरांव पूर्ण एवं पश्चिमी सामान्य क्षेत्र में सम्मिलित है। इस वर्ग में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है। वास्तविक स्थिति की अनभिज्ञता से उन्होंने कहीं भी मतदान करता दिया अर्थात जागरूकता सामान्य है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेंजा मंझनपुर, बारा विधानसभा का पश्चिमी भाग, झूंसी का पूर्वी भाग, सिराथू का दक्षिणी भाग, हंडिया पश्चिम,

इलाहाबाद दक्षिणी विधान सभा का मध्यवर्ती भाग एवं इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है। निर्वाचन वर्ष 1974 में पराजित दल के साथ नगरीय जनसंख्या का झुकाव अधिक था। अर्थात् जागरूक साक्षर जनसंख्या ने विपक्ष को प्रोत्साहित किया।

निर्वाचन वर्ष 1967 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना विधानसभा का मध्य भाग इलाहाबाद दक्षिणी, पश्चिमी उत्तरी विधानसभा का पश्चिमी भाग, झूंसी उत्तरी, सोरांव नवाबगंज दक्षिणी एवं चायल विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत केवाई उत्तरी, फूलपुर दक्षिणी, झूंसी मध्य, सोरांव पूर्व का पश्चिमी भाग, सोरांव पश्चिमी विधान सभा, चायल, भरवारी, करारी विधान सभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, बारा विधानसभा सम्मिलित है।

10.3.2 सामान्य से अधिक

असम्बद्ध क्षेत्र सामान्य से अधिक मान वाले क्षेत्र के अन्तर्गत इलाहाबाद जिले में विभिन्न वर्षों में स्थिति निम्नवत है:

निर्वाचन वर्ष 1991 मे इस वर्ग के अन्तर्गत बारा विधानसभा का मध्य एवं दक्षिण पश्चिम भाग, मेजा का मध्य एवं दक्षिण पश्चिम भाग, सिराथू विधान सभा का उत्तरी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

इस धनात्मक सम्बन्ध क्षेत्र के अन्तर्गत 1989 मे सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण झूंसी का उत्तरी पश्चिमी किनारा सम्मिलित है जबकि निर्वाचन वर्ष 1985 में हंडिया, झूंसी का दक्षिणी पश्चिमी भाग, प्रतापपुर विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में हंडिया पश्चिमी विधानसभा, मेजा उत्तरी पूर्वी, प्रतापपुर विधानसभा का दक्षिणी पूर्वी भाग; झूंसी एवं इलाहाबाद उत्तरी विधान

सभा का उत्तरी भाग; नवाबगंज, सोरांव विधान सभा मे सामान्य से अधिक अर्थात धनात्मक असम्बद्धता विद्यमान थी।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, करछना, हंडिया, बारा दक्षिणी एवं प्रतापपुर का दक्षिणी पूर्वी भाग सम्मिलित है। इलाहाबाद जिले के सन्दर्भ में इसकी स्थिति दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी है। इस धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र में 1974 में बारा मध्य, करछना, हंडिया, प्रतापपुर, झूंसी दक्षिणी पूर्वी, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 मे हंडिया, मेजा, करछना मध्य बारा पूर्वी प्रतापपुर पूर्वी, झूंसी दक्षिणी भाग में असम्बद्ध प्रतिमान प्रदर्शित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा, बारा पूर्वी करछना एवं हंडिया दक्षिणी सम्मिलित था।

10.3.3 सामान्य से निम्न

सामान्य से निम्न मे उच्च ऋणात्मक असम्बद्ध प्रतिमान वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है इन क्षेत्रों में अनुसूचित जाति जनसंख्या एवं पराजित दल के मध्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है। विभिन्न निर्वाचन वर्षों में सामान्य से निम्न क्षेत्र निम्नानुसार है–

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा का दक्षिणी, दक्षिणी पश्चिमी भाग, बारा विधानसभा का मध्य एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है। जबकि 1989 मे बारा, मंझनपुर, सिराथू का उत्तरी पूर्वी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, चायल का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का दक्षिणी भाग, सिराथू मध्य, नवाबगंज उत्तरी, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का पश्चिमी उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में मेजा दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी, बारा दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी चायल दक्षिणी, सिराथू, मंझनपुर में ऋणात्मक असम्बद्धता विद्यमान थी।

निर्वाचन वर्ष 1977 के अन्तर्गत मंझनपुर का पश्चिमी भाग, सिराथू, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तर का पश्चिमी भाग इलाहाबाद पश्चिम के पूर्वी भाग ऋणात्मक (उच्च) असम्बद्ध के क्षेत्र में सम्मिलित थे।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, इलाहाबाद पश्चिमी, मेजा मध्य; सोरांव उत्तरी पश्चिमी, बारा मध्य सम्मिलित था।

निर्वाचन वर्ष 1967 मे इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, मेजा विधानसभा का पश्चिमी भाग एवं बारा, मेजा विधानसभा का पश्चिमी भाग एवं सिराथू विधानसभा सम्मिलित था।

सिराथू, करारी विधानसभा के उत्तरी ऊपरी भाग मे, भरवारी के पश्चिमी भाग में, सोरांव पूर्वी के पूर्वी भाग में, फूलपुर विधान सभा के उत्तरी भाग में निर्वाचन वर्ष 1962 में ऋणात्मक असम्बद्धता पाई गयी।

10.4 पराजित दल एवं जनजाति जनसंख्या सहः सम्बन्ध

भारतीय संसकृति में जनजातियों का अपना अलग आधार स्तम्भ है। भारत में कुल जनसंख्या की 8.01 प्रतिशत जनसंख्या जनजातियों की है। यद्यपि इलाहाबाद जिले में जनजाति जनसंख्या नाम मात्र की है इसलिए उनका प्रभाव निर्वाचक पर व्यापक रूप में पड़ना असम्भव है। फिर भी जो भी है उसका पराजित दलों के साथ क्या सहःसम्बन्ध है इसका अध्ययन करना इस अनुभाग का प्रमुख लक्ष्य है। उनका व्यवहार दल के प्रति कैसा रहा इसका विवेचन भी प्रस्तुत है।
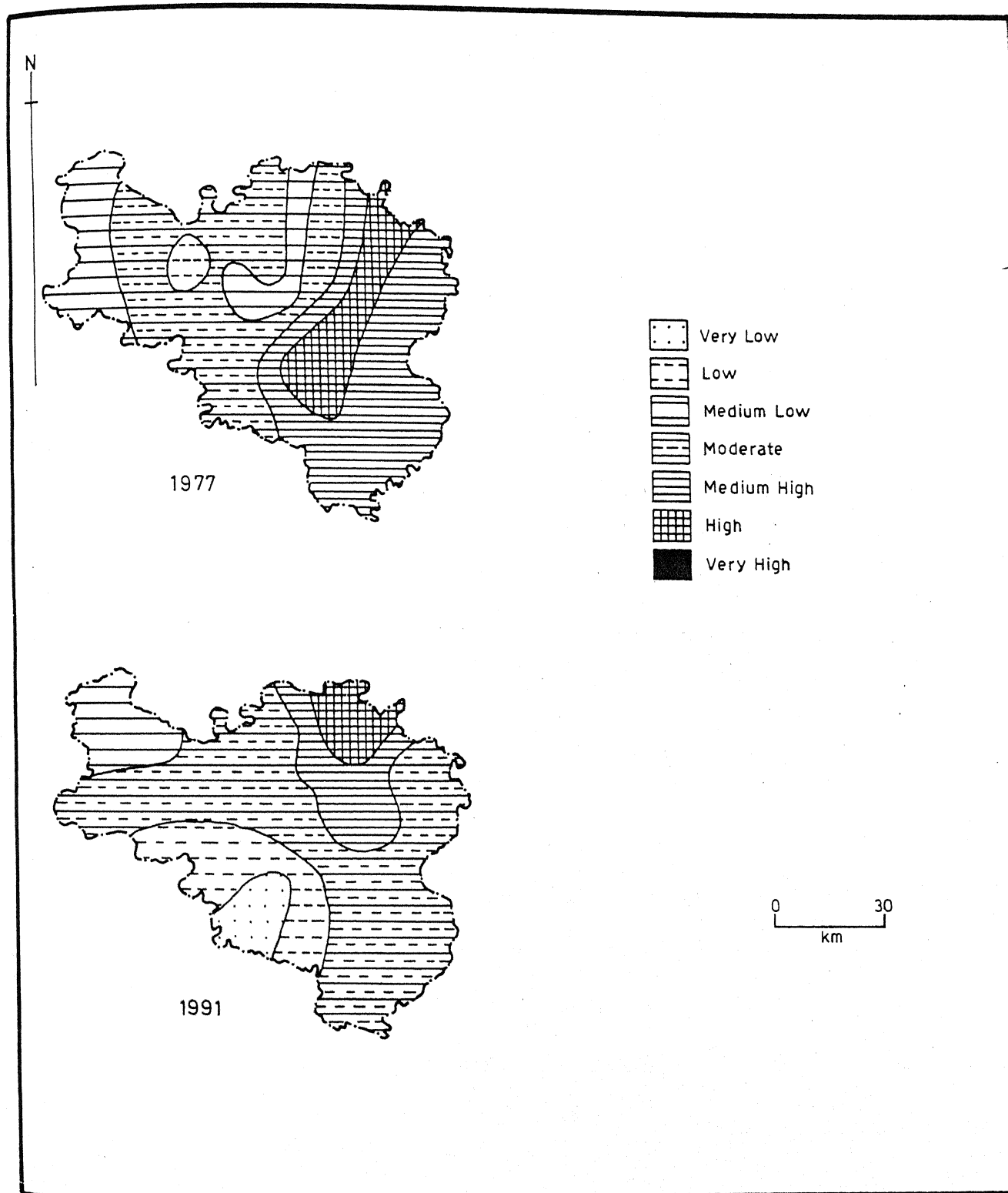
Fig.10.4.1 Relationship Between Runner and S.T. Population:1977
:Bivariate Regression

पिछले अनुभागों में मतदान, विजयी दल के साथ इसके सम्बन्ध को विश्लेषित किया गया है। इस अनुभाग में पराजित दल एवं जनजाति जनसंख्या के मध्य सम्बन्ध स्थापित किया गया है। प्राप्त समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 10.4.1 में प्रदर्शित किया गया है। मानचित्रानुसार पराजितदल एवं जनजाति जनसंख्या के निर्मित सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न है उनका वर्णन निम्नवत है–

10.4.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र (10.4.1) के अनुसार विभिन्न निर्वाचन वर्षों में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत +0.5 से –0.5 के मध्य समर्थन समबद्ध क्षेत्र निम्नवत है।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण विधानसभा, करछना, इलाहाबाद पश्चिमी एवं दक्षिणी विधानसभा सम्पूर्ण, चायल, मंझनपुर का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज का उत्तरी पूर्वी भाग छोडत्रकर सम्पूर्ण, इलाहाबाद उत्तर विधान सभा का उत्तर पूर्व भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का दक्षिणी भाग, बारा उत्तरी, झूंसी, प्रतापपुर हंडिया, सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का उत्तरी भाग एवं झूंसी विधानसभा सम्मिलित है।

10.4.2 सामान्य से अधिक

असम्बद्ध क्षेत्र (धनात्मक) सामान्य से अधिक से अधिक मान वाले क्षेत्रों के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 मे इस वर्ग के अन्तर्गत झूंसी विधानसभा सम्पूर्ण, नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी पूर्वी भाग, सोरांव विधानसभा सम्पूर्ण, प्रतापपुर

विधानसभा का दक्षिणी पश्चिम भाग एवं इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का उत्तरी पूर्वी भाग सम्मिलित है। अधिकांश विधानसभ क्षेत्र ग्रामीण है।

निर्वाचन वर्ष 1977 इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधान सभा का मध्यवर्ती भाग, करछना विधानसभा, प्रतापपुर एवं हंडिया विधान सभा सम्मिलित है।

10.4.3 सामान्य से निम्न

सामान्य से निम्न क्षेत्र असम्बद्ध ऋणात्मक क्षेत्र है। समाश्रयण प्रतिमान से प्राप्त परिणाम जिन क्षेत्रों में उच्च ऋणात्मक है इसके अन्तर्गत वे विधान सभायें सम्मिलित हैं। पराजित दल एवं अनुसूचित जन जाति के मध्य स्थापित इन क्षेत्रों में जनजातियों का व्यवहारत्मक रूप पराजित दल के विपरीत है। इस वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में स्थिति निम्नवत है–

निर्वाचन वर्ष 1991 इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, विधानसभा का मध्य उत्तरी पश्चिमी भाग, उत्तरी पूर्वी भाग, चायल विधान सभा का दक्षिणी भाग; मेजा विधानसभा का पश्चिमी किनारा एवं मंझनपुर विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, इलाहाबाद दक्षिणी एवं मंझनपुर विधानसभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

इलाहाबाद जनपद में जनजातियों की संख्या नगण्य के बराबर है इसलिए इसके साथ पराजित दल का सांख्यिकीय विश्लेषण करने पर परिणाम विभिन्न वर्षों में शून्य ही रहा है। उन वर्षों का विवेचन इसलिए सम्भव नही हो पाया। परिगणना मे मात्र दो निर्वाचन वर्षों 1991, 1977 में मानचित्रण हेतु सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुआ जिनका विवेचन किया गया। संक्षेपतः परिणाम विभिन्न क्षेत्रों में निम्नानुसार रहा।

1. सामान्य क्षेत्र या रैखिक सम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत नगरीय विधानसभायें सम्मिलित हैं।

2. सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न दोनों निर्वाचन वर्षों 1991, 1977 मे ग्रामीण क्षेत्रों की विधान सभायें सम्मिलित हैं।

अस्तु पराजित दल एवं जनजाति जनसंख्या के मध्य सम्बद्ध सम्बन्ध नगरीय क्षेत्र में एवं असम्बद्ध सम्बन्ध ग्रामीण क्षेत्र मे रहा।

10.5 पराजित दल एवं साक्षर जनसंख्या सहः सम्बन्ध

इलाहाबाद जिला प्रथम निर्वाचन से ही राजनीतिक प्रक्रिया में सक्रिय रहा। देश की राजनीति का प्रारम्भिक क्षेत्र इलाहाबाद ही था। यहां के शिक्षित जनमानस पर निर्वाचकीय राजनीति पूरी तरह हावी रही है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अनुभाग में पराजित दल के साथ साक्षर जनसंख्या का सहःसम्बन्ध व्याख्यायित किया गया।

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक लगातार साक्षर जनसंख्या मतदान, विजयी दल मत, पराजित दल मत के साथ अपने व्यवहारिक रूप परिवर्तित करती रही। प्रस्तुत अनुभाग में पराजित दल मत एवं साक्षर जनसंख्या चर के बीच स्थापित रैखिक संबंध वाले क्षेत्रों एवं असम्बन्ध क्षेत्रों का वर्णन किया गया। इन समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 10.5.1 एवं 10.5.2 में प्रदर्शित किया गया है।

मानचित्रानुसार सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र जो क्रमशः सामान्य, सामान्य से अधिक एवं सामान्य से निम्न है; जिनका वर्णन निम्नवत है।

10.5.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र 10.5.1 एवं 10.5.2 के अनुसार विभिन्न निर्वाचन वर्षो में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न विधानसभायें सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1991 मे इस कोटि के अन्तर्गत चायल, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा सम्पूर्ण, नवाबगंज का मध्य दक्षिणी एवं पश्चिमी
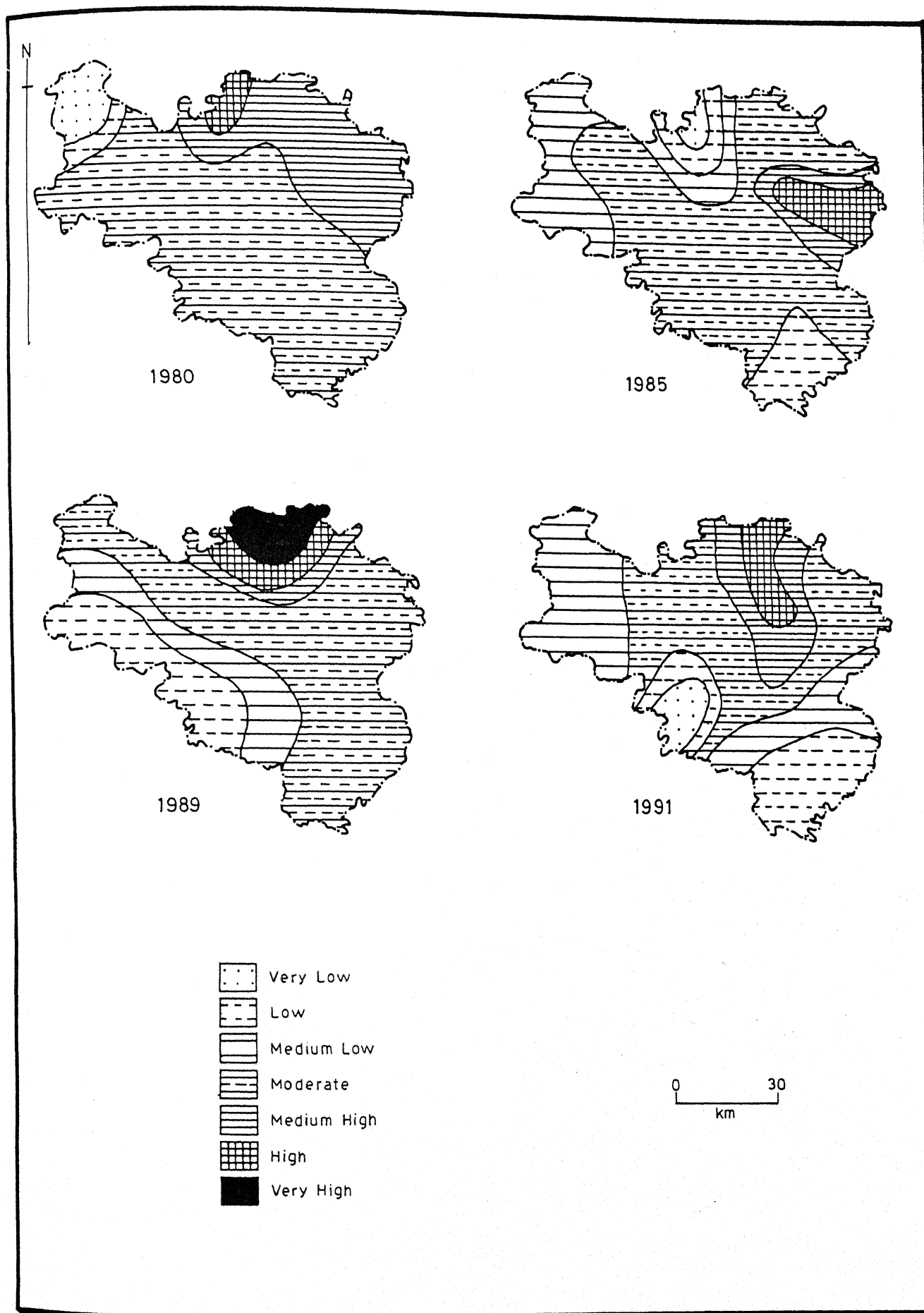
Fig. 10.5.1 Relationship Between Runner and Literate Population 1980-91 :Bivariate Regression
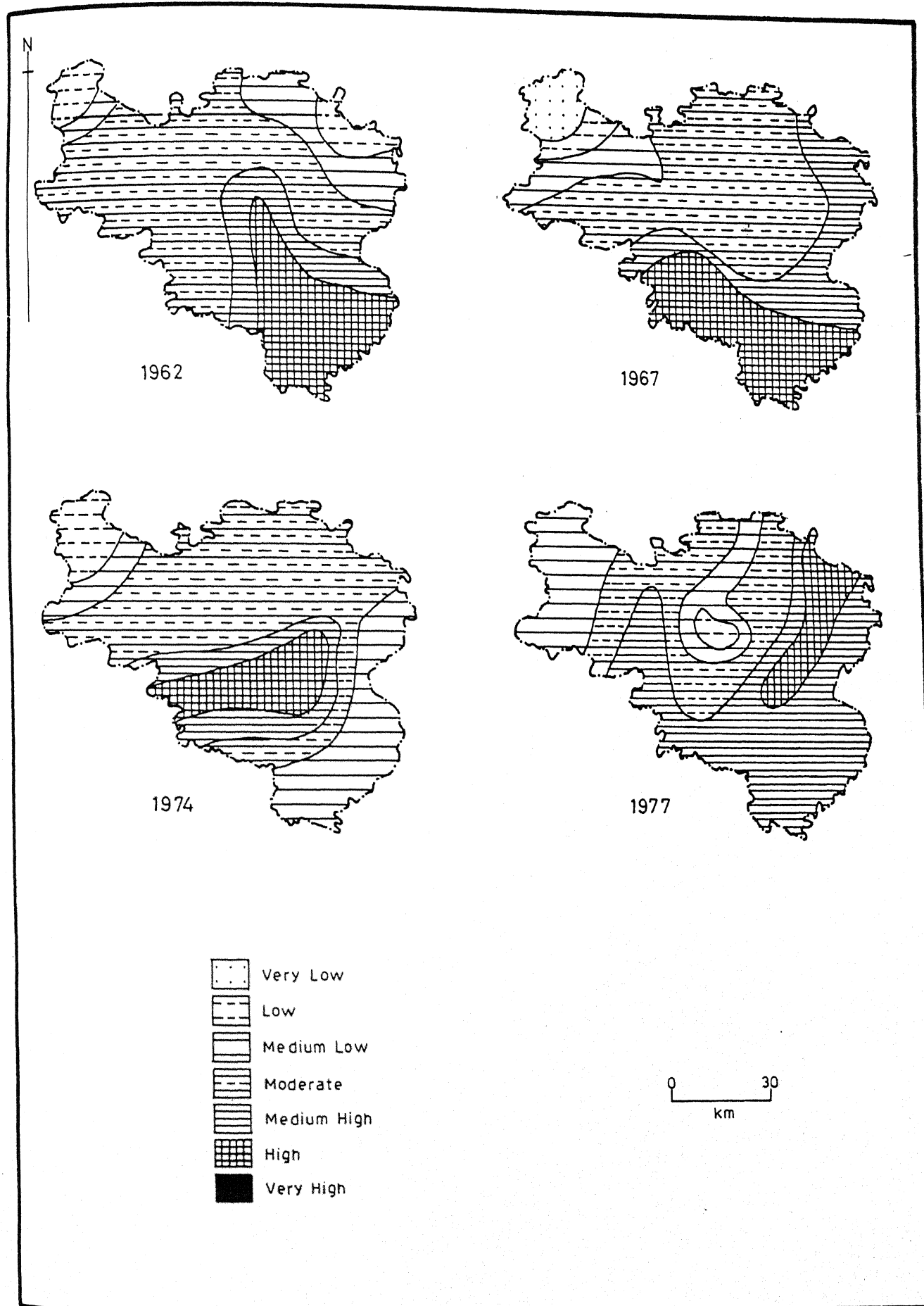
Fig. 10.5.2 Relationship Between Runner and Literate Population 1962-
:Bivariate Regression

भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधान सभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं करछना का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, करछना, प्रतापपुर विधानसभा का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी सम्पूर्ण चायल का उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, सिराथू का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज विधानसभा का दक्षिणी किनारा, मंझनपुर का उत्तरी भाग, चायल का मध्य उत्तरी एवं पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, करछना, बारा, मंझनपुर का पूर्वी किनारा, सिराथू, चायल, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी विधान सभा, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा का दक्षिणी भाग, प्रतापपुर विधान सभा का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण एवं सोरांव विधान सभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस सम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत मेजा मध्य एवं मध्यपूर्व, करछना, बारा का उत्तरी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद उत्तरी एवं इलाहाबाद पश्चिमी, चायल विधान सभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधान सभा का पूर्वी भाग, झूंसी का उत्तरी भाग, नवाबगंज विधान सभा का उत्तरी भाग, प्रतापपुर विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग, सोरांव विधानसभा का पूर्वी एवं पश्चिमी भाग तथा बारा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधानसभा का दक्षिणी भाग, मंझनपुर का उत्तरी किनारा, नवाबगंज पश्चिमी, चायल विधानसभा का पूर्वी किनारा, इलाहाबाद दक्षिणी का मध्य भाग, प्रतापपुर उत्तरी, सोरांव दक्षिणी, झूंसी

उत्तरी, मेजा हंडिया, प्रतापपुर पूर्वी एवं बारा का उत्तरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा मध्य, करछना दक्षिणी पश्चिमी, इलाहाबाद पश्चिमी, बारा का उत्तरी किनारा, झूंसी उत्तरी, सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी पूर्वी भाग, मंझनपुर पूर्वी, चायल पश्चिमी एवं सिराथू पूर्वी सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 में बारा, चायल भरवारी, इलाहाबाद शहर उत्तरी, सोरांव पश्चिमी, सोरांव पूर्वी का दक्षिणी भाग, झूंसी, फूलपुर का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं केवाई विधानसभा सम्मिलित है।

10.5.2 सामान्य से अधिक

प्रतिमान के द्वारा असम्बद्ध क्षेत्रों मे सामान्य से अधिक मे धनात्मक मान वाले क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है। जिसके अन्तर्गत विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भिन्न–भिन्न स्थिति है।

निर्वाचन वर्ष 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत झूंसी, नवाबगंज, सोरांव, विधानसभा सम्पूर्ण, इलाहाबाद उत्तरी का उत्तरी पूर्वी भाग एवं प्रतापपुर का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में सोरांव, नवाबगंज के दक्षिणी भाग को छोड़कर सम्पूर्ण मे, झूंसी के उत्तरी पश्चिमी किनारे मे, बारा के उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण मे धनात्मक सम्बन्ध था।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, झूंसी विधानसभा का पूर्वी भाग एवं प्रतापपुर विधानसभा के दक्षिणी किनारा सम्मिलित था।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सोरांव, नवाबगंज, झूंसी उत्तरी, हंडिया, प्रतापपुर सम्मिलित है।

इसके अतिरिक्त निर्वाचन वर्ष 1977 मे मेजा, बारा, करछना, प्रतापपुर दक्षिणी एवं पूर्वी 1974 मे मंझनपुर चायल पश्चिमी, करछना, झूंसी दक्षिणी प्रतापपुर मध्य, निर्वाचन वर्ष 1967 में मेजा दक्षिणी पूर्वी, हंडिया, करछना उत्तरी पूर्वी, मंझनपुर दक्षिणी, प्रतापपुर दक्षिणी पूर्वी, निर्वाचन वर्ष 1962 में मेजा करछना मध्य इलाहाबाद शहर दक्षिणी के दक्षिण भाग में धनात्मक सम्बद्धता विद्यमान थी।

10.5.3 सामान्य से निम्न

इस वर्ग के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 मे मंझनपुर, सिराथू विधानसभा सम्पूर्ण एवं बारा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 में सिराथू एवं मंझनपुर विधानसभा के दक्षिणी पश्चिमी भाग मे ऋणात्मक असम्बद्ध पाई गयी।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी का उत्तरी भाग सोरांव एवं मंझनपुर विधानसभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र के अनतर्गत 1980 मे मेजा विधानसभा का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग, बारा एवं चायल दक्षिणी सिराथू, मंझनपुर, 1977 मे मंझनपुर एवं इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का पश्चिमी भाग, सिराथू इलाहाबाद पश्चिमी का पूर्वी भाग सम्मिलित था।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इलाहाबाद पश्चिमी, सिराथू का दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, नवाबगंज के दक्षिणी भाग, सोरांव विधानसभा के उत्तरी भाग में ऋणात्मक असम्बद्धता विधमान थी। 1967 मे इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, चायल विधानसभा; सिराथू एवं नवाबगंज विधान सभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है। जब कि निर्वाचन वर्ष 1962 मे सिराथू, फूलपुर, केवाई, सोरांव पूर्वी का पूर्वी भाग एवं करारी का उत्तरी ऊपरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक पराजित दल एवं साक्षर जनसंख्या के बीच स्थापित मध्य सह:सम्बन्ध से निम्न निष्कर्ष प्रदर्शित होता है।

1. सम्बद्ध क्षेत्र का 80 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में है।
2. असम्बद्ध क्षेत्रों का 80 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में है।
3. ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों में साक्षर जनसंख्या ने पराजित दल के मध्य सहःसम्बन्ध स्थापित किया है।
4. साक्षर जनसंख्या की विभिन्न वर्षों की सम्बद्धता में व्यापक भिन्नता रही है।

10.6 पराजित दल एवं हिन्दू जनसंख्या सहःसम्बन्ध

मानव चेतना में धार्मिक चेतना समाहित है, धार्मिक चेतना मे आस्था और विश्वास की अपेक्षा भावना की अधिकता है। यद्यपि आस्था और विश्वास पर व्यक्ति का व्यवहार बदलता है किन्तु दोनों की अपेक्षा भावना की प्रबलता अधिक है। वर्तमान राजनीति मे राजनीतिक दल भावना को जगाकर मत व्यवहार में व्यापक परिवर्तन लाते हैं। दूसरे शब्दो मे वर्तमान राजनीति मे धर्म एक आवश्यक तत्व है, कहें तो अतिशयोक्ति नही होगी। प्रत्येक दल जाति, धर्म, वर्ग के आधार पर निर्वाचनों में टिकटों का बंटवारा करते है। यह निश्चित है कि निर्वाचन व्यवहार, जागरूकता में धर्म का प्रभाव पड़ता है इस तथ्य को ध्यान में रख, प्रस्तुत अनुभाग मे पराजित दल एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य स्थापित सम्बन्धों को मानचित्र 10.6. 1 मे प्रदर्शित किया गया है प्रदर्शित मानचित्रानुसार समाश्रयण अवशेषो सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्र निरूपित है जो क्रमशः सामान्य, सामान्य से अधिक तथा सामान्य से निम्न है जिनका वर्णन निम्नानुसार है :

10.6.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्र 10.6.1 के अनुसार इस वर्ग मे विभिन्न निर्वाचन वर्षों में निम्नलिखित विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।
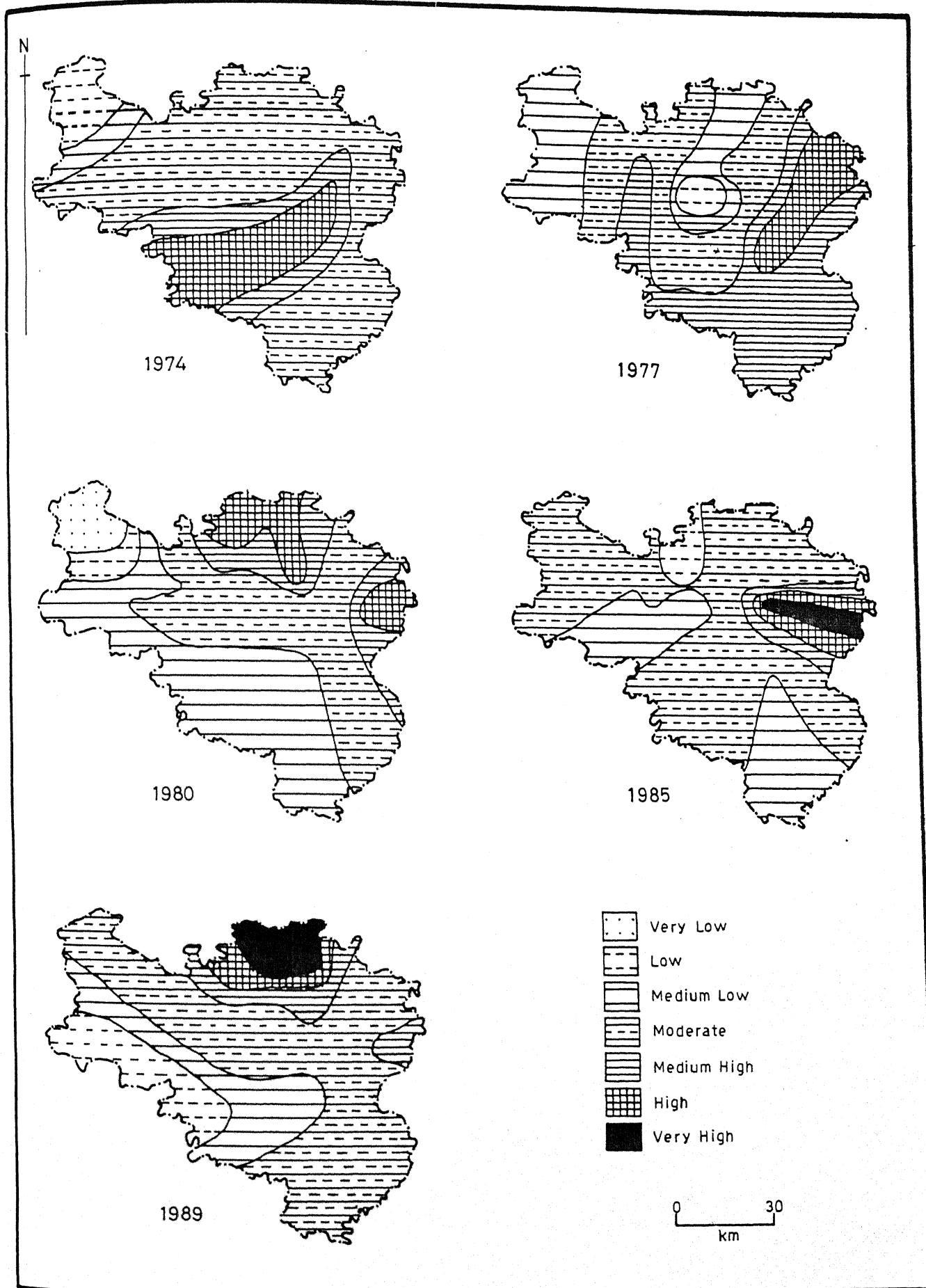
Fig.10. 6.1 Relationship Between Runner and Hindu Population 1974 :Bivariate Regression

निर्वाचन वर्ष 1989 मे इस वर्ग के अन्तर्गत इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी विधानसभा एवं प्रतापपुर का पूर्वी भाग, हंडिया का पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण; करछना उत्तरी, मेजा कादक्षिणी, उत्तरी, एवं पूर्वी भाग बारा विधानसभा का उत्तरी किनारा, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा, चायल का दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण तथा झूंसी विधानसभा का दखिणी पूर्वी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का पूर्वी एवं पश्चिमी भाग, करछना, बारा चायल, मंझनपुर, सिराथू, सोरांव विधानसभा, प्रतापपुर विधानसभा का उत्तरी भाग एवं इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस कोटि के अनतर्गत मेजा मध्य पूर्व एवं मध्य पश्चिमी, झूंसी दक्षिणी, इलाहाबाद दक्षिणी एवं पश्चिमी विधान सभा सम्पूर्ण, चायल पूर्वी एवं मध्य, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी भाग एवं प्रतापपुर विधानसभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, सोरांव, नवाबगंज विधानसभा सम्पूर्ण, सिराथू विधान सभा का पूर्वी भाग एवं बारा विधान सभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधानसभा का दक्षिणी भाग एवं मंझनपुर का उत्तरी किनारा, नवाबगंज विधानसभा का पश्चिमी उत्तरी भाग, चायल का पूर्वी किनारा, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा का मध्य भाग, प्रतापपुर उत्तरी, हंडिया, मेजा, विधानसभा एवं झूंसी विधानसभा का ऊपरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है।

10.6.2 सामान्य से अधिक

धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र को सामान्य से अधिक की संज्ञा दी गई है इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1989 मे सोरांव विधान सभा, नवाबगंज विधानसभा का दक्षिणी भाग छोड़कर समस्त एवं झूंसी विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधानसभा, झूंसी विधानसभा का पूर्वी भाग एवं प्रतापपुर विधानसभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधानसभा का पूर्वी भाग, सोरांव, नवाबगंज एवं झूंसी विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 एवं 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत क्रमशः करछना, मेजा, हंडिया, प्रतापपुर, झूंसी विधानसभा का दक्षिणी पूर्वी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधान सभा, दक्षिणी विधानसभा का मध्य भाग एवं 1974 मे सिराथू उत्तरी पश्चिमी, सोरांव उत्तरी, इलाहाबाद पश्चिमी बारा विधानसभा का मध्य भाग सम्मिलित है।

10.6.3 सामान्य से निम्न

इस उच्च ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र मे निर्वाचन वर्ष 1989 मे बारा विधान सभा ऊपरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, करछना का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग, [illegible] का दक्षिणी भाग, मंझनपुर का पूर्वी भाग सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी [illegible]।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का दक्षिणी पश्चिमी एवं पश्चिमी भाग, बारा विधानसभा का उत्तरी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, मंझनपुर, सिराथू सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, मंझनपुर का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का पूर्वी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा का उत्तरी भाग एवं उत्तरी विधानसभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग, सोरांव विधान का उत्तरी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा एवं बारा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि–

1. हिन्दू जनसंख्या एवं पराजित दल के मध्य स्थापित सहःसम्बन्ध ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों मे है।
2. प्रत्येक निर्वाचन वर्ष मे सहःसम्बन्ध स्तर में व्यापक परिवर्तन हुआ है।
3. ग्रामीण जनसंख्या (हिन्दू) भी अपेक्षा नगरीय जनसंख्या (हिन्दू) का सहःसम्बन्ध सम्बद्ध क्षेत्रो मे अधिक है।
4. अधिकांश असम्बद्ध क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों मे है।

10.7 पराजित दल एवं मुस्लिम जनसंख्या सहःसम्बन्ध

धर्म में अपूर्व एकता करने की शक्ति होती है यह दलों को राजसत्ता हथियाने की एक दृष्टि है। प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में चुनाव जीतना धर्म और जाति पर निर्भर हो गया है। राजनीतिक दल स्वार्थवश धार्मिक भावना को अपने पक्ष मे करने का प्रयास करते है। पूर्व अनुभाग मे हिन्दू धर्म का पराजित दल के साथ सहःसम्बन्ध प्रस्तुत किया गया। उसी कड़ी में इस अनुभाग में मुस्लिम धर्म एवं पराजित दल के मध्य सहःसम्बन्ध विश्लेषण किया जा रहा है।

प्रस्तुत अनुभाग पराजित दल मत एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों वाले सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों को प्रकट किया गया है। इनसे प्राप्त समाश्रयण अवशेषों को मानचित्र 10.7.1 मे प्रदर्शित किया गया है।

मानचित्रानुसार इस सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का वर्णन निम्नवत है–
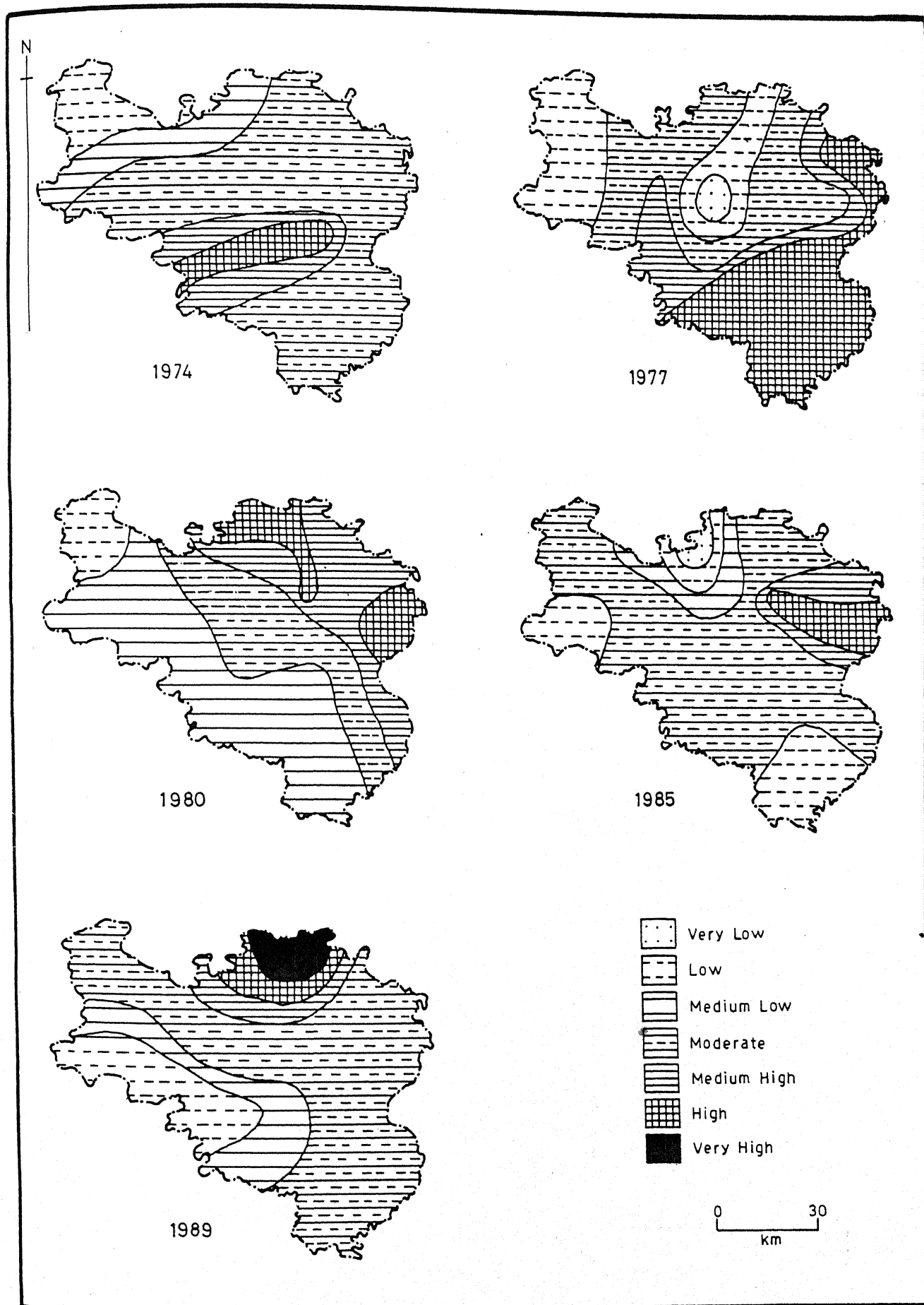
Fig.10.7.1 Relationship Between Runner and Muslim Population 1974
:Bivariate Regression

10.7.1 सामान्य क्षेत्र

इलाहाबाद जिले में विभिन्न निर्वाचन वर्षों में सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न विधानसभायें सम्मिलित हैं–

निर्वाचन वर्ष 1989 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, करछना, प्रतापपुर विधानसभा का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद उत्तरी का दक्षिणी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी सम्पूर्ण, चायल विधानसभा का उत्तरी पूर्वी एवं पश्चिम भाग, सिराथू का उत्तरी पूर्वी भाग, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा, मंझनपुर का उत्तरी भाग, चायल का मध्य उत्तरी एवं पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिम, करछना, बारा, मंझनपुर का दक्षिणी पूर्वी किनारा, सिराथू, चायल, इलाहाबाद उत्तरी एवं दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी का दक्षिणी भाग, प्रतापपुर विधानसभा का दक्षिणी भाग छोड़कर सम्पूर्ण एवं सोरांव विधानसभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा का मध्यपूर्व भाग, करछना उत्तरी, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का उत्तरी भाग, बारा उत्तरी, चायल मध्य एवं पूर्वी, नवाबगंज का दक्षिणी किनारा एवं झूंसी का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, सोरांव, नवाबगंज विधान सभा, सिराथू विधानसभा का पूर्वी भाग, चायल विधानसभा का उत्तरी भाग, बारा विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित हे।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर विधानसभा का उत्तरी भाग, सिराथू दक्षिणी, सोरांव, नवाबगंज, प्रतापपुर उत्तरी एवं दक्षिणी, हंडिया, मेजा, विधानसभा, बारा का पूर्वी भाग, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा का मध्यभाग एवं झूंसी उत्तरी विधानसभा सम्मिलित है।

10.7.2 सामान्य से अधिक

असम्बद्ध उच्च धनात्मक सामान्य से अधिक क्षेत्र के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1989 में सोरांव, नवाबगंज का दक्षिणी पश्चिमी भाग छोड़कर सम्पूर्ण, झूंसी विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी किनारा एवं बारा विधानसभा का उत्तरी पूर्वी भाग छोड़कर सम्पूर्ण सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधानसभा, झूंसी विधानसभा का पूर्वी भाग एवं प्रतापपुर विधानसभा का दक्षिणी किनारा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 में इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया विधानसभा का पूर्वी भाग, सोरांव, नवाबगंज, झूंसी उत्तरी एवं इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत करछना मेजा, हंडिया, प्रतापुर, झूंसी विधानसभा का दखिणीपूर्वी भाग, बारा दक्षिणी पूर्वी एवं इलाहाबाद पश्चिमी एवं दक्षिणी विधानसभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत बारा विधानसभा का मध्य भाग, करछना, हंडिया, प्रतापपुर एवं झूंसी विधानसभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

10.7.8 सामान्य से निम्न

ऋणात्मक असम्बद्ध क्षेत्र के अन्तर्गत विभिन्न वर्षों में निम्नवत स्थिति रही—

निर्वाचन वर्ष 1989 मे सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं मंझनपुर विधानसभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, 1985 मे नवाबगंज, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा का उत्तरी भाग, सोरांव का पश्चिमी भाग एवं मंझनपुर विधानसभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर सिराथू, चायल विधानसभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग, बारा पश्चिमी एवं पूर्वी, मेजा विधानसभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू, मंझनपुर विधानसभा का पश्चिम भाग एवं प्रतापपुर विधानसभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधानसभा का उत्तरी पश्चिमी भाग, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा, बारा विधानसभा का मध्यवर्ती भाग एवं चायल विधानराभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

पराजित दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य स्थापित सम्बन्धों के विश्लेषण निम्न निष्कर्ष निकलता है–

1. नगरीय मुस्लिम जनसंख्या सामान्य क्षेत्र में पराजित दल के साथ सहःसम्बन्ध धनात्मक है।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में ऋणात्मक क्षेत्रों की अधिकता है।

10.8 पराजित दल एवं कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति, जनजाति, साक्षर, हिन्दू, मुस्लिम जनसंख्या का समग्र सहःसम्बन्ध

पिछले छः अनुभागों में पराजित दल मत के साथ कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति जनसंख्या, जनजाति जनसंख्या, साक्षर जनसंख्या, हिन्दू जनसंख्या, मुस्लिम जनसंख्या का विश्लेषण पृथक–पृथक प्रस्तुत किया गया। जिनके परिणामों, प्रभावों को सम्यक रूप से विवेचित किया गया। प्रस्तुत अनुभाग में छः चरों का संयुक्त रूप से पराजित दल मत से गणना करके संबंधित असम्बन्धित क्षेत्रों का वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा। समाश्रयण अवशेष प्रतिमान
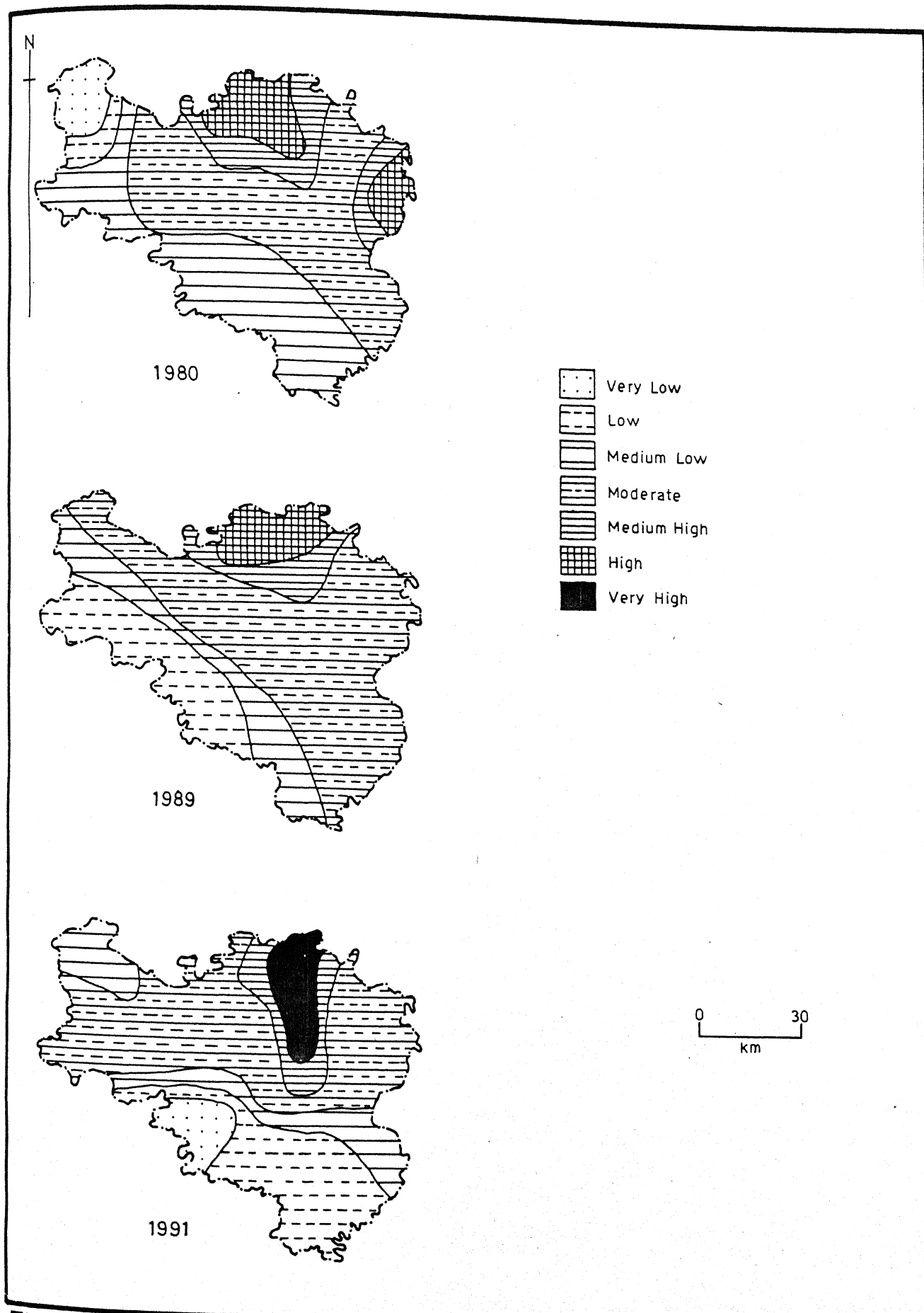
Fig. 10.8.1 Relationship Between Runner and All Variables 1980-91 :Multivariate Regression
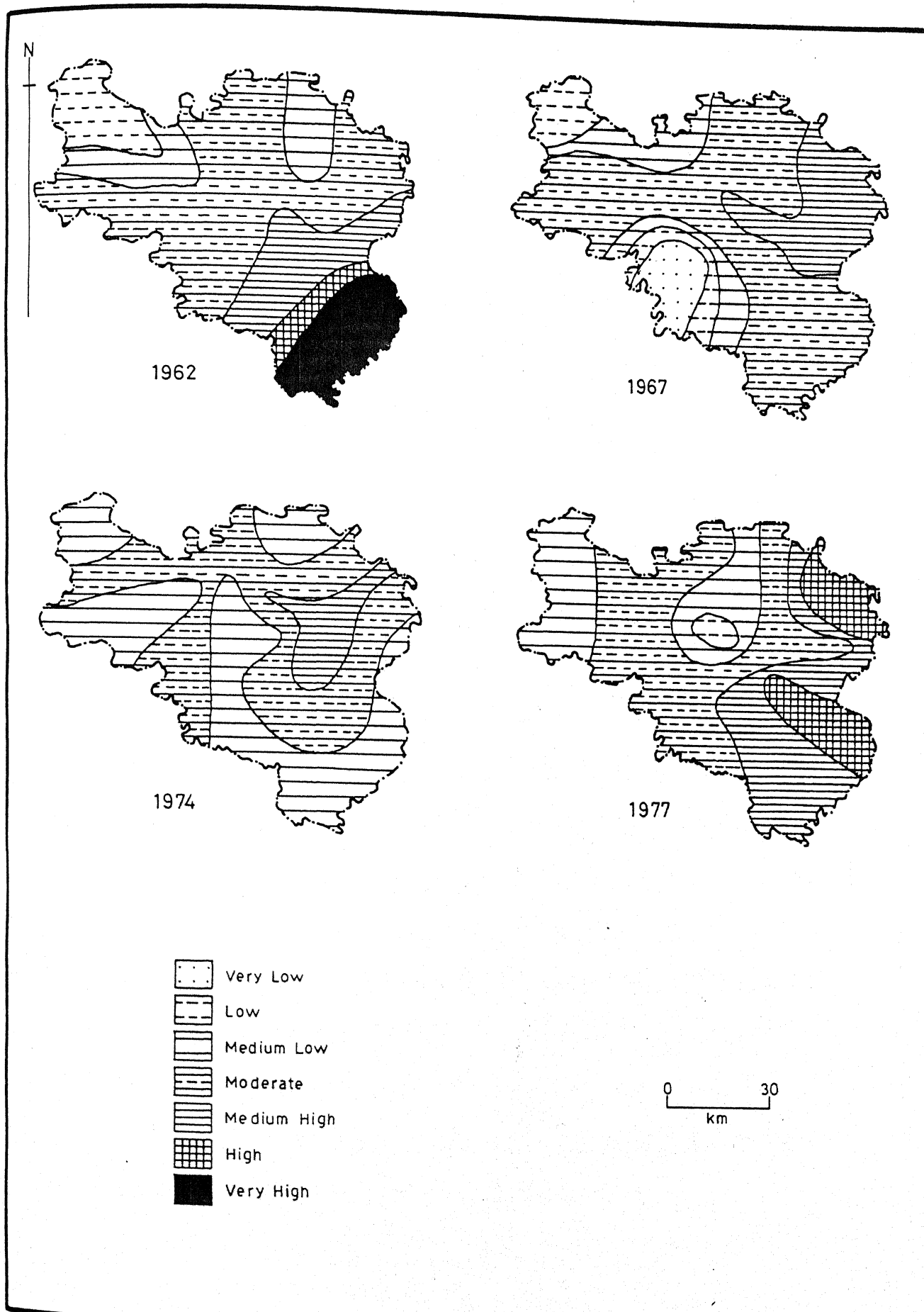
Fig.10.8.2 Relationship Between Runner and All Variables 1962 - 77
:Multivariate Regression

मानचित्र 10.8.1 एवं 10.8.2 में प्रदर्शित किया गया है। जिसका वर्णन निम्नानुसार है–

10.8.1 सामान्य क्षेत्र

मानचित्रानुसार सामान्य क्षेत्र के अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में हंडिया, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी विधानसभा सम्पूर्ण, करछना का मध्यवर्ती भाग, नवाबगंज विधानसभा का पश्चिमी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण, मंझनपुर एवं चायल विधानसभा का दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1989 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा, हंडिया, करछना, प्रतापपुर, सिराथू, इलाहाबाद उत्तरी, दक्षिणी एवं पश्चिमी, चायल का मध्यवर्ती भाग, उत्तरी भाग एवं झूंसी का ऊपरी उत्तरी भाग छोड़कर सम्पूर्ण भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 में इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का उत्तरी एवं उत्तरी पश्चिमी भाग, बारा, करछना, सिराथू, चायल, मंझनपुर का पूर्वी भाग, झूंसी पश्चिमी, इलाहाबाद दक्षिणी, प्रतापपुर, सोरांव विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का मध्यपूर्व भाग, करछना, इलाहाबाद दक्षिणी एवं पश्चिमी विधानसभा, चायल विधानसभा, इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का दक्षिणी भाग, झूंसी दक्षिणी, प्रतापपुर मध्य एवं हंडिया विधानसभा का पश्चिम भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत बारा, चायल, मंझनपुर, सिराथू विधानसभा का पूर्वी भाग, नवाबगंज, इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा, झूंसी विधानसभा का मध्यभाग एवं प्रतापपुर सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत, मंझनपुर उत्तरी, सिराथू दक्षिणी नवाबगंज, मेजा, प्रतापपुर विधानसभा का दक्षिणी भाग, हंडिया पूर्वी, बारा पूर्वी, इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का मध्यवर्ती भाग, करछना मध्य दक्षिणी, इलाहाबाद पश्चिमी विधानसभा, उत्तरी विधानसभा, दक्षिणी विधानसभा का पश्चिमी भाग, सोरांव, झूंसी उत्तरी, मंझनपुर एवं चायल विधानसभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 मे इस वर्ग के अन्तर्गत चायल विधानसभा, भरवारी विधानसभा पूर्वी भाग, बारा का पश्चिमी एवं उत्तरी भाग, इलाहाबाद शहर उत्तरी एवं दक्षिणी, झूंसी का मध्य भाग एवं फूलपुर विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

10.8.2 सामान्य अधिक

उच्च धनात्मक समाश्रयण अवशेष प्रतिमान सामान्य से अधिक के अन्तर्गत सम्मिलित किये गये हैं, यह धनात्मक असम्बद्ध क्षेत्र है इसके अन्तर्गत निर्वाचन वर्ष 1991 में सोरांव एवं झूंसी विधानसभा, 1989 मे सोरांव पूर्वी, झूंसी का ऊपरी उत्तरी किनारा, नबाबगंज विधानसभा का दक्षिणी किनारा छोड़कर सम्पूर्ण विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया, प्रतापपुर दक्षिणी एवं झूंसी विधानसभा का दक्षिणी पूर्वी एवं मध्य भाग, 1980 मे हंडिया मध्यपूर्व, सोरांव, नवाबगंज इलाहाबाद उत्तरी का उत्तरी भाग एवं झूंसी विधानसभा का उत्तरी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 मे इस वर्ग के अन्तर्गत प्रतापपुर विधानसभा का पूर्वी भाग, मेजा विधानसभाा का मध्य भाग, करछना एवं हंडिया विधानसभा का पूर्वी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मंझनपुर, चायल विधानसभा का पश्चिमी भाग; करछना; उत्तरी, झूंसी दक्षिणी एवं प्रतापपुर विधानसभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1967 मे इस वर्ग के अन्तर्गत हंडिया प्रतापपुर विधानसभा करछना एवं इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा का पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1962 मे मेजा, करछना, हंडिया विधानसभा के दक्षिणी एवं बारा विधानसभा के पूर्वी भाग में धनात्मक असम्बद्ध पायी गयी।

10.8.8 सामान्य से निम्न

इस वर्ग को ऋणात्मक असम्बद्धता क्षेत्र भी कहा जाता है; इसमें विभिन्न वर्षों मे भिन्न–भिन्न विधानसभा क्षेत्र सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1991 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा; बारा, सिराथू विधानसभा, 1989 में सिराथू का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं मंझनपुर विधानसभा का दक्षिणी पश्चिमी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1985 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा दक्षिणी, मंझनपुर पश्चिमी, इलाहाबाद पश्चिमी का पूर्वी भाग, इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा का उत्तरी भाग एवं नवाबगंज विधानसभ सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1980 मे इस वर्ग के अन्तर्गत मेजा विधानसभा का दक्षिणी एवं दक्षिणी पश्चिमी भाग, बारा विधानसभा का दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी भाग, मंझनपुर एवं सिराथू विधानसभा सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1977 में इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधानसभा मंझनपुर विधानसभा का पश्चिमी भाग, इलाहाबाद उत्तरी दक्षिणी एवं पश्चिमी विधानसभा, सोरांव विधानसभा का मध्यवर्ती भाग एवं नवाबगंज विधानसभा का दक्षिणी भाग सम्मिलित है।

निर्वाचन वर्ष 1974 मे इस वर्ग के अन्तर्गत सिराथू विधानसभा का पश्चिमी भाग इलाहाबाद पश्चिमी, बारा विधानसभा का मध्यवर्ती भाग एवं सोरांव विधानसभा का मध्यवर्ती भाग सम्मिलित है।

पराजित दल एवं संयुक्त चरों के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि इलाहाबाद जनपद मे तीन समाश्रयण अवशेष क्षेत्रों का निर्माण हुआ जो क्रमशः सामान्य; सामान्य से अधिक, सामान्य से निम्न कहलाये। विभिन्न वर्षों में इसके अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

1. अन्य चरों की भाँति संयुक्त चर का प्रभाव भी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रहा अर्थात् ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवहार परिवर्तन तीव्रगति से हुआ।
2. नगरीय क्षेत्रों में व्यवहार परिवर्तन अस्थायी तो था किन्तु स्थिर था अर्थात विधानसभा क्षेत्रों में अल्प परिवर्तन हुआ।
3. नगरीय क्षेत्र की विधानसभाओं में रैखिक सम्बद्धता पायी गयी जबकि ग्रामीण क्षेत्र की विधानसभाओं में असम्बद्धता पायी गयी।

एकादश् अध्याय

सारांश

11. सारांश

वर्तमान काल वस्तुतः जनतंत्र का काल है, जिसका स्वरूप विश्वव्यापी हो गया है। जनतंत्र यह लोकतंत्र का मूलमंत्र प्रत्येक व्यक्ति मे भाईचारा परस्पर निष्काम सेवा एवं सहायता भाव का होना, जिसके बिना जनतन्त्र सम्भव नही है। जनतंत्र समाज जीवन का एक विशिष्ट दृष्टिकोण है, जहां किसी भी व्यक्ति को दूसरे के साथ वैसा व्यवहार नही करना चाहिए जिसे वह स्वयं नही चाहता है। इसका मुख्य उद्देश्य **'अधिक से अधिक मनुष्य को अधिक से अधिक सुख'**।

लोकतन्त्र में राजनीतिक दल सरकार एवं जनता के मध्य कड़ी है। इन्ही के माध्यम से जनता को सहभागिता प्राप्त होती है, सहभागिता के लिए वह अपने मताधिकार का प्रयोग करता है। मताधिकार जनतंत्र की प्राणवायु है। जिसके बिना जनतंत्र की परिकल्पना नही की जा सकती। जनतन्त्र मे निहित मताधिकार से जनता का व्यक्तित्व गौरव पूर्ण होता है एवं इस अधिकार से कर्तव्यपालन की भावना का विकास होता है। निर्वाचक अपने इसी अधिकार से लोकतंत्र की रक्षा करता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे निर्वाचन प्रक्रिया, निर्वाचन अधिकार, मतदान व्यवहार, मतदान जागरूकता, निर्वाचकीय दायित्व मे होने वाला परिवर्तन, मतदाता दल समर्थन, विजयी दल समर्थन, पराजित दल समर्थन का अध्ययन विभिन्न आयामों, दृष्टिकोणों, समीकरणों, अध्ययन विधियों से इलाहाबाद जिले के निर्वाचन क्षेत्रों के सन्दर्भ में करने का प्रयास किया गया है।

उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित जिला इलाहाबाद पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश की सीमा को स्पर्श करता है, इसलिए राज्य सीमा पर स्थित विधानसभाओं में मतदान

व्यवहार पर पड़ोसी राज्य की राजनीति का प्रभाव पड़ना निश्चित है। इलाहाबाद स्वतन्त्रता संग्राम का मुख्य केन्द्र रहा है; इसलिए इसके राजनीतिक व्यवहार में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का प्रभाव भी समाहित है। वर्तमान कुल स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के 99% लोग आज भी कांग्रेस से जुड़े हैं। इन इन्कलाबी नेताओं ने अपने नेतृत्व के बल पर बहुत दिनों तक लगातार कांग्रेस के प्रति मतदान व्यवहार को परिवर्तित करते रहे। इन्हीं के बल पर स्वतन्त्रता के बाद मतदाताओं मे राजनैतिक जागरूकता संचालित थी; जो अध्ययन मे स्पष्ट है।

शोध अध्ययन मे यह भी स्पष्ट हुआ है कि प्रारम्भिक चुनाव (1952) से लेकर 1971 तक लगभग बीस वर्षों तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल का ही प्रभाव रहा, परन्तु धीरे–धीरे क्षेत्रीय दलों ने जनमत मे अपने विचार प्रस्तुत किये जिससे उनका प्रभाव निर्मित हुआ। राजनैतिक व्यवहार के अध्ययन से यह उजागर हुआ है कि प्रारम्भिक राजनीति मे जिले मे व्यक्तिवाद को बढ़ावा मिला था।

प्रारम्भिक निर्वाचन वर्षों में मतदाताओं ने देश के विकास की भावना से काम किया जिससे राष्ट्रीय मुद्दे पर मतदान हुआ। धीरे–धीरे क्षेत्रीय विकास का मुद्दा आया, जनमत ग्रामीण विकास को महत्व दिया। जनमत आर्थिक पक्षों पर बल दिया। जनमत जागरूकता का दूसरा महत्वपूर्ण आधार साक्षरता जागरूकता, मतदाता जागरूकता रहा जिसका सम्यक विवेचन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में किया गया। प्रतियोगिता प्रगाढ़ता अध्ययन इसकी प्रमुख पहचान है।

उपरोक्त सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे 1952 से 1991 तक सम्पन्न लोकसभा एवं विधानसभा निर्वाचन से प्राप्त परिणामों के आधार पर उत्तर प्रदेश के

इलाहाबाद जनपद में निर्वाचन की राजनैतिक पृष्टिभूमि का अध्ययन विभिन्न भौगोलिक प्रतिरूपों के साथ, सकारण विश्लेषण विभिन्न अध्ययों में किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में निर्वाचन भूगोल का संक्षिप्त परिचय, निर्वाचन भूगोल के अध्ययन का विकास क्रम, भारत में निर्वाचन सम्बन्धी अध्ययन, अध्ययन का उद्देश्य, संकल्पना, विधितंत्रात्मक औचित्य, उपागम एवं विधि, अध्ययन क्षेत्र परिचय, अध्ययन से सम्बन्धित समस्याओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

सामाजिक एवं निर्वाचन सम्बन्धी प्रमुख आंकड़ो के द्वारा समस्या के विश्लेषण मे जिन विधियों का प्रयोग हुआ है उनका वर्णन अध्याय दो में किया गया है। प्रस्तुत भाग में शोध योजना, आंकड़ों का श्रोत, आंकड़ो का शुद्धीकरण, आंकड़ो की विसंगति, आंकड़ो के सांख्यिकीय विश्लेषण की विधि, प्रमुख चर विश्लेषण, सहसम्बन्ध एवं चर विश्लेषण, मानचित्रण की विधियों का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के तीसरे अध्याय मे निर्वाचन की एतिहासिक पृष्ठिभूमि वर्तमान भारतीय निर्वाचन प्रणाली, निर्वाचन का संवैधानिक ढांचा, निर्वाचन आयोग, सीटो का आरक्षण, निर्वाचन नामांकन, चुनाव चिन्ह आवंटन, लोकसभा एवं निर्वाचन प्रक्रिया, विधानसभा एवं निर्वाचन प्रक्रिया, निर्वाचन की राजनैतिक पृष्ठिभूमि, प्रथम लोकसभा विधानसभा निर्वाचन 1952, द्वितीय लोक सभा विधानसभा, निर्वाचन 1957, तृतीय लोकसभा विधान निर्वाचन 1962, चर्तुथ लोकसभा विधानसभा निर्वाचन 1967, पंचम लोकसभा, का मध्यावधि चुनाव 1971, षष्टम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन 1974, सप्तम् लोकसभा विधानसभा निर्वाचन

1977, अष्टम् निर्वाचन 1980, नवम् निर्वाचन 1985, दसम् निर्वाचन 1989 एवं एकादश निर्वाचन 1991 को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन के चतुर्थ अध्याय मे सीट वितरण प्रतिरूप को प्रदर्शित किया गया है वितरण प्रतिरूप मे लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र एवं विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र दोनो का चयन किया गया है। लोकसभा निर्वाचन मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1952 से 1967 तक लगातार सभी सीटों पर विजय प्राप्त की; जब कि 1971 मे कांग्रेस (जे) नामक दल ने 1977 में भारतीय लोकदल ने सभी सीटों पर विजय प्राप्त की है 1952 से 1971 लगभग बीस वर्षों तक जनमत ने स्पष्ट जनाधार दिया, किन्तु निर्वाचन वर्ष 1980 मे स्थिति परिवर्तित हुई लोकसभा निर्वाचन मे सीटे विभिन्न दलों को प्राप्त हुई। जो कांग्रेस 1952 में 73.20 प्रतिशत मत प्राप्त की थी वही निर्वाचन वर्ष 1991 में 10.90 प्रतिशत मत ही प्राप्त कर सकी। तालिका 4.2 से स्पष्ट है कि 1971 के बाद मतों में बंटवारा हुआ अर्थात् दल विशेष का वर्चस्व समाप्त हुआ। लोकसभा से विधानसभा की स्थिति कुल भिन्न रही। विधानसभा में मतों के बंटवारे का क्रम 1962 से ही प्रारम्भ हो गया था। दलों के बीच मतों के विभाजन से यह निष्कर्ष निकलता है कि दल प्रतियोगिता प्रगाढ़ता में वृद्धि हुई है। तालिका 4.5 एवं 4.6 में प्रतियोगिता प्रगाढ़ता के अवलोकन से स्पष्ट है कि 1952 से 1967 तक लोकसभा निर्वाचन मे उम्मीदवारों की संख्या 1 से 5 के बीच थी किन्तु 1971 मे 66.67 प्रतिशत सींटो पर उम्मीदवारों की संख्या 11 से 15 हो गयी तथा 33.33 प्रतिशत सीटो पर उम्मीदवारों की संख्या 1 से 5 के बीच रह गयी। अगले निर्वाचन वर्षों में कहीं भी उम्मीदवारो की संख्या 1 से 5 नही रह गयी, 1991 के निर्वाचन वर्ष में स्थिति विपरीत हो गयी 66.67 प्रतिशत सीटों पर 11 से 15 उम्मीदवार चुनाव लड़े एवं 33.33 प्रतिशत सीटों पर 25 से अधिक उम्मीदवार चुनाव मे सहभागी हुए।

विधानसभा के सन्दर्भ मे स्थिति दूसरी थी निर्वाचन वर्ष 1957 तक तो लोकसभा की स्थिति थी किन्तु इसके बाद व्यापक परिवर्तन हुआ। तालिका 4.6 के अनुसार 1991 के विधानसभा निर्वाचन में 7.14 प्रतिशत सीटों पर 6 से 10 उम्मीदवार 21.47 प्रतिशत सीटो पर 11 से 15 उम्मीदवार 19.28 प्रतिशत सीटों पर 16–20 उम्मीदवार एवं 35.72 प्रतिशत सीटों पर 25 से ऊपर उम्मीदवार चुनाव मे प्रत्यासी बने। अतः स्पष्ट हुआ कि दल प्रतियोगिता में उच्च स्तर पर वृद्धि हुई। अध्याय के अगले अनुभागों मे आरक्षित एवं सामान्य सीट वितरण को प्रस्तुत किया गया है लोकसभा निर्वाचन वर्ष 1952 से 1991 तक कुल आरक्षित सीटों के 62.50 प्रतिशत भाग पर कांग्रेस (आई) ने विजय प्राप्त की। किन्तु विधानसभा निर्वाचन में सीटों का बंटवारा हो गया। विधानसभा निर्वाचन में 1952 से 91 तक कांग्रेस (I) ने मात्र 57.58 प्रतिशत आरक्षित सीटें प्राप्त की जब कि जनतादल ने 12.12 प्रतिशत हासिल की शेष आरक्षित सीटे अन्य दलों या निर्दलीय ने जीती। इसके अतिरिक्त आरक्षित एवं सामान्य सीटों पर मतदान का प्रतिशत भी विश्लेषित किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन के अध्याय पांच में मतदान वितरण प्रतिरूप निरूपित किया गया है। जिसमें लोकसभा मतदान का स्थानिक वितरण, जेड लब्धि एवं विधानसभा मतदान का स्थानिक वितरण एवं जेडलब्धि प्रदर्शित किया गया है। तालिका 5.1 एवं 5.2 मे मतदान प्रतिशत प्रस्तुत किया गया है। तदानुसार लोकसभा निर्वाचन में इलाहाबाद जिले में सर्वाधिक मतदान का प्रतिशत 1952 से 1991 के बीच निर्वाचन वर्ष 1985 मे 54.81 प्रतिशत था। जब कि विधानसभा निर्वाचन में सर्वाधिक मतदान निर्वाचन वर्ष 1957 मे 60.82 प्रतिशत था। इस औसत वितरण के अतिरिक्त मानचित्र द्वारा 1952 से 91 तक लोकसभा क्षेत्रवार एवं विधानसभा क्षेत्रवार वितरण भी प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अनुभाग 5.2.1 में लोकसभा मतदान का क्षेत्रीय संकेन्द्रण एवं 5.2.2 मे विधानसभा मतदान का

क्षेत्रीय संकेन्द्रण प्रस्तुत किया गया है। फूलपुर लोकसभा क्षेत्र मे निर्वाचन वर्ष 1971, 1980, 1989 मे उच्चतम संकेन्द्रण पाया गया, जब कि सम्पूर्ण जनपद के किसी भी लोकसभा क्षेत्र में निम्नतम संकेन्द्रण नही पाया गया। लोकसभा से विधानसभा की स्थिति भिन्न है। विधानसभा निर्वाचन वर्ष 1952 में मेजा, करछना उत्तरी एवं दक्षिणी, चायल दक्षिणी, मंझनपुर, सिराथू विधानसभा में 1957 में मेजा, फूलपुर, चायल, मंझनपुर, 1962 मे मेजा, केवाई, इलाहाबाद उत्तरी, इलाहाबाद दक्षिणी 1967 में मेजा, करछना, हंडिया, प्रतापपुर, इलाहाबाद दक्षिणी और उत्तरी विधान सभा, 1974 मे बारा, करछना, प्रतापपुर, 1977 मे बारा, करछना, प्रतापपुर 1980 में, करछना, बारा, झूंसी, हंडिया प्रतापपुर, 1985 में करछना, झूंसी, हंडिया वर्ष 1989 मे झूंसी, हंडिया प्रतापपुर एवं 1991 में झूंसी, हंडिया मे उच्चतम संकेन्द्रण पाया गया, जब कि निम्नतम संकेन्द्रण 10 निर्वाचन वर्षों मे मात्र पांच विधानसभा क्षेत्रों 1952 मे इलाहाबाद (मध्य) 1980 में इलाहाबाद पश्चिमी, मंझनपुर, सिराथू एवं 1989 मे मंझनपुर में पाया गया।

लोकतांत्रिक शासन मे राजनीतिक दल अपरिहार्य होते है। लोकतन्त्र को चाहे कोई स्वरूप क्यों न हो; राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति अकल्पनीय है। इसलिए दलीय व्यवस्था को लोकतंत्र का प्राण कहना अतिशयोक्ति नही है। दलों का वास्तविक अध्ययन, स्थानिक वितरण अध्याय–6 एवं अध्याय–7 में प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय–6 के प्रथम अनुभाग मे लोकसभा चुनाव मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस आई) का स्थानिक वितरण सामान्य गणना एवं जेडलब्धि के माध्यम से प्रस्तुत किया। कांग्रेस (आई) को उच्चतम समर्थन अर्थात 65 प्रतिशत से अधिक मत निर्वाचन वर्ष 1985 मे इलाहाबाद संसदीय क्षेत्र मे प्राप्त हुआ है इससे स्पष्ट है नगरीय, शिक्षित मतदाताओं ने 1985 मे इस दल को स्वीकार

किया, उच्चतम जेडलब्धि किसी भी लोकसभा क्षेत्र में इस दल ने नही प्राप्त किया। द्वितीय अनुभाग में विधान सभा निर्वाचन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस/(कांग्रेस आई) का स्थानिक वितरण एवं जेडलब्धि प्रस्तुत किया गया है। 1952 से 1991 तक के विधानसभा निर्वाचन में उच्चतम समर्थन 1952 मे सोरांव उत्तर एवं फूलुर विधानसभा क्षेत्र में 69.32% मत एवं 1962 के निर्वाचन मे फूलपुर विधानसभा क्षेत्र मे 69.91 प्रतिशत मत प्राप्त कर उच्च समर्थन प्राप्त किया। वास्तव में यह पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की छवि का द्योतक था। विधानसभा निर्वाचन मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस/(कांग्रेस आई) ने उच्चतम जेडलब्धि 1962 के निर्वाचन में इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा 1967 मे मेजा, बारा, 1974 मे करछना, 1977 में करछना, प्रतापपुर 1980 में प्रतापपुर, 1985 मे इलाहाबाद (उत्तरी) 1989 मे प्रतापपुर एवं 1991 मे इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा क्षेत्र प्राप्त किया। अनुभाग तीन मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) का लोकसभा एवं विधानसभा सकेन्द्रण प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अन्तिम तीन अनुभागों मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) विजयी दल के रूप में, विजय के कारण एवं पराजय के कारणों का क्रमबद्ध ढंग से विश्लेषण किया गया है।

अध्याय सात मे इलाहाबाद जिले मे प्रदर्शन के आधार पर तीन प्रमुख दलों का समर्थन प्रतिरूप एवं स्थानिक वितरण प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के प्रथम अनुभाग में भारतीय जनता पार्टी का विकास, स्थानिक वितरण, जेडलब्धि, क्षेत्रीय सकेन्द्रण (लोकसभा एवं विधानसभा) के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है। निर्वाचन वर्ष 1952–91 तक किसी भी क्षेत्र मे भा0ज0पा0 ने उच्चतम समर्थन एवं उच्चतम जेडलब्धि नही प्राप्त किया। विधान सभा चुनावों में दल की स्थिति लोकसभा से भिन्न थी। विधानसभा निर्वाचन वर्ष 1980 में इलाहाबाद उत्तरी विधानसभा, 1985 मे नवाबगंज विधानसभा, 1989 में इलाहाबाद दक्षिणी एवं

नवाबगंज विधानसभा, 1991 मे इलाहाबाद दक्षिणी विधानसभा मे भाजपा ने उच्चतम जेडलब्धि प्राप्त किया। अन्तिम दो उपअनुभागों में भाजपा का लोकसभा एवं विधानसभा संकेन्द्रण वर्णित किया गया है। निर्वाचन वर्ष 1952 से 1991 तक किसी भी क्षेत्र (लोकसभा एवं विधानसभा में) भाजपा का संकेन्द्रण उच्चतम नही था। अध्याय के दूसरे अनुभाग मे जनता दल का विकास, उसका स्थानिक वितरण, जेडलब्धितल, क्षेत्रीय संकेन्द्रण (लोकसभा एवं विधानसभा) के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है। किसी भी निर्वाचन वर्ष में जनता दल ने उच्चतम समर्थन, जेडलब्धि तल, संकेन्द्रण नही प्राप्त किया। अध्याय के तीसरे अनुभाग मे बहुजन समाज पार्टी का विकास, स्थानिक वितरण, जेडलब्धि तल, क्षेत्रीय संकेन्द्रण (लोकसभा एवं विधानसभा) के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया गया है। बहुजन समाज पार्टी का प्रदर्शन इलाहाबाद जिले मे मध्यम एवं निम्न पाया गया। इसका क्षेत्र जिले की ग्रामीण विधानसभायें में है। इस दल ने किसी भी लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में उच्चतम समर्थन नही प्राप्त किया, इसलिए इसकी जेडलब्धि तल एवं संकेन्द्रण भी मध्यम या निम्न रही।

विचार, भावना, अभिव्यक्ति व्यवहार, सम्बन्ध, जागरूकता प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न–भिन्न एवं अस्थायी होता है, यद्यपि इसका विवेचन कठिन होता है फिर भी विभिन्न निर्वाचनों में सहःसम्बन्ध, व्यवहार एवं जागरूकता को सांख्यिकीय विधि से प्रस्तुत किया गया है। अध्याय आठ मे कुल मतदान के साथ विभिन्न वर्षों में कुल जनसंख्या, अनुसूचित जाति जनसंख्या जनजाति जनसंख्या, हिन्दू जनसंख्या, मुस्लिम जनसंख्या, संयुक्त चर स्थापित सहःसम्बन्धों को प्रस्तुत किया गया है। इसके प्रथम अनुभाग मे समाश्रयण प्रतिमान सम्बन्धों की प्रकृति, सम्बन्धों की मात्रा एवं सहःसम्बनध को विस्तृत रूप से विश्लेषित किया गया है। सम्बन्धों की मात्रा तालिका 8.9 के अवलोकन से निम्न निष्कर्ष निकलता है। निर्वाचन वर्ष 1991, 77,

74, 67 मे मतदान एवं समस्त चरों में ऋणात्मक सहःसम्बन्ध पाया गया जब कि निर्वाचन वर्ष 1989, 85, 80, 62 मे सभी चरों के साथ धनात्मक एवं ऋणात्मक दो सम्बन्ध पाये गये। तालिका 8.1.4.1 समाश्रयण अवशेषों के वर्ग दिशा एवं स्तर निर्धारित है। अध्ययन में त्रुटि का होना भी स्वाभाविक है इसलिए मानक त्रुटि, 'F' अनुपात 'b' मान की मानक त्रुटि निर्वाचन वर्ष 1962 से 1991 तक विधानसभा के सन्दर्भ मे प्रस्तुत की गयी। तालिका क्रमांक 8.1.4.1 के अनुसार सर्वाधिक मानक त्रुटि निर्वाचन वर्ष 1991 मे तृतीय चर (जनजाति संख्या) मे पायी गयी जब कि सबसे कम मानक त्रुटि 1967 मे प्रथम चर (कुल जनसंख्या) में पायी गयी। तालिका 8.1.4.3 के अनुसार 'F' अनुपात सर्वाधिक निर्वाचन वर्ष 1991 मे मतदान एवं प्रथम चर (कुल जनसंख्या) के बीच तथा सबसे कम 1962 मे चतुर्थ चर (साक्षरता) मे .026 पायी गयी। इसी अध्याय के अनुभाग 8.2 मे मतदान एवं कुल जनसंख्या के मध्य सहः सम्बन्ध प्रस्तुत किया गया जिसमें निष्कर्ष निकला कि मतदान एवं कुल जनसंख्या में सम्बद्ध क्षेत्र नगरीय विधानसभा एवं आसपास भी विधानसभाओं में था जब कि असम्बद्ध क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्रों मे पाया गया। अनुभाग 8. 3 मे मतदान एवं अनुसूचित जाति के बीच सहःसम्बन्ध निरूपित किया गया। कुल मतदान एवं अनुसूचित जाति चर के मध्य रैखिक सम्बद्ध वाले अधिकांश भाग जिले के पूर्वी एवं उत्तरी भागों में पाये गये जब कि अन्य भागों में असम्बद्ध क्षेत्र निर्मित हुए। अनुभाग 8.4 मे मतदान एवं जनजाति जनसंख्या के मध्य सहःसम्बनध निरूपित किया गया। जनजाति जनसंख्या का सम्बद्ध (सामान्य क्षेत्र) ग्रामीण विधानसभाये हैं। अधिकांश सहःसम्बन्ध ऋणात्मक शून्य है। निर्वाचन वर्ष 1962 एवं 67 मे मतदान एवं जनजाति समर्थन ऋणात्मक शून्य है। अनुभाग 8.5 मे मतदान एवं साक्षर जनसंख्या के मध्य 8.6 मे मतदान एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य 8.7 में मतदान एवं मुस्लिम जनसंख्या में मध्य 8.8 में मतदान एवं संयुक्त चरों के मध्य रैखिक समाश्रयण से सम्बद्ध एवं असम्बद्ध क्षेत्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया।

सामान्य क्षेत्र नगरीय विधानसभाओं एवं सामान्य से अधिक (धनात्मक) सामान्य से निम्न (ऋणात्मक) ग्रामीण विधानसभाओं में पाया गया है अर्थात नगरीय क्षेत्रों सम्बद्ध क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्रों में असम्बद्ध क्षेत्र पाये गये।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अध्याय नौ को कुल आठ अनुभागों में बांटकर विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सहः सम्बन्ध का वर्णन किया गया है। अध्याय के प्रथम अनुभाग मे समाश्रयण प्रतिमान सम्बन्धों की प्रकृति, प्रसरण विश्लेषण एवं समाश्रयण अवशेष की विवेचना की गयी। सम्बन्धों की प्रकृति तालिको 9.1.1 से 9.1.8 तक प्रस्तुत किया गया है। तदानुसार सम्बन्धों की प्रकृति विभिन्न वर्षों मे भिन्न–भिन्न रही। निर्वाचन वर्ष 1991 मे तृतीय चर, पंचम चर, षष्टम् चर मे धनात्मक सम्बन्ध पाया गया जब कि प्रथम द्वितीय चतुर्थ चर मे ऋणात्मक सम्बन्ध था, अर्थात निर्वाचन वर्ष 1991 मे जनजाति जनसंख्या, हिन्दू जनसंख्या मुस्लिम जनसंख्या ने विजयी दल को समर्थन किया। निर्वाचन वर्ष 1989 में पंचम चर में 1985 मे समस्त चरो में, 1980 मे तीसरे चर मे 1977 मे प्रथम द्वितीय, तृतीय चर में धनात्मक सम्बन्ध पाया गया। ऋणात्मक सम्बन्ध 1977 मे चतुर्थ, पंचम, षष्टम्, चर मे 1976 एवं 67 मे समस्त चरो मे, 1962 मे चतुर्थ, पंचम, षष्टम् चर के साथ पाया गया। सम्बन्धों की मात्रा या डिग्री विजयी दल एवं चरो के मध्य भिन्न–भिन्न रही, निर्वाचन वर्ष 1991 सहःसम्बन्ध प्रथम से चतुर्थ चर तक क्रमशः +.914, –.218, +.087, –.174 एवं संयुक्तचर मे +.914 पाया गया, जो धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनो है अर्थात सम्बन्ध सामान्य पाया गया। निर्वाचन वर्ष 1989 मे सहःसम्बन्ध प्रथम चर का .081, द्वितीय चर का +.181, तृतीय चर का –1.21, चतुर्थ चर का –.130 पंचम चर का +.003 षष्टम चर का –.148 पाया गया अर्थात निर्वाचन वर्ष 1989 मे सामान्य सम्बन्ध प्रदर्शित है। निर्वाचन वर्ष 1985 में समस्त चरों के साथ धनात्मक सहःसम्बन्ध पाया गया, जिससे स्पष्ट है

कि विजयी दल के साथ समस्त चरों का सम्बन्ध उच्च था। 1980 के निर्वाचन मे समस्त चरों के साथ ऋणात्मक सहःसम्बन्ध था अर्थात् विजयी दल एवं सामाजिक चरो के बीच सम्बन्ध ऋणात्मक था। 1977 मे मतदान एवं चरों के बीच मिला जुला सम्बन्ध रहा; प्रथम चर के साथ +.112, द्वितीय चर के साथ +.072, तृतीय चर के साथ +.013, चतुर्थ चर के साथ –.012, पंचम चर के साथ –.069, षष्टम् चर के साथ –.262 एवं संयुक्त चर के साथ +.112 सहःसम्बन्ध पाया गया। निर्वाचन वर्ष 1974 मे समस्त सामाजिक चरो के साथ ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, जब 1967 एवं 62 के निर्वाचन मे धनात्मक एवं ऋणात्मक सहःसम्बन्ध था। विजयी दल एवं सामाजिक चरों के मध्य परिगणना के समय मानक त्रुटि पायी गयी। सर्वाधिक मानक त्रुटि विजयी दल एवं जनजाति जनसंख्या बीच जबकि सबसे कम त्रुटि 1991 मे .004 पायी गयी। सर्वाधिक 'F' अनुपात 1991 मे प्रथम चर मे एवं सबसे कम 'F' अनुपात 1974 में .010 पायी गयी। अध्याय के द्वितीय अनुभाग 9.2 मे विजयी दल एवं कुल जनसंख्या के मध्य सहःसम्बन्ध प्रस्तुत किया गया जिसमे अधिकांश विधानसभा क्षेत्र सम्बद्ध क्षेत्र मे सम्मिलित है। अनुभाग 9.3 मे विजयी दल एवं अनुसूचित जाति के मध्य स्थापित रैखिक सम्बंध मे सामान्य क्षेत्र नगर से दूर एवं ग्रामीण विधानसभाओं का है। अनुभाग 9.4 विजयी दल एवं साक्षर जनसंख्या के बीच सहः सम्बन्ध स्थापित किया गया है, इसके अन्तर्गत अधिकांश ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्र सामान्य क्षेत्र है। अनुभाग 9.5 में विजयी दल एवं साक्षर जनसंख्या के मध्य सहःसम्बन्ध प्रस्तुत किया गया है। अनुभाग 9.6 में विजयी दल एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य सहःसम्बन्ध प्रस्तुत किया गया है। इसमें हिन्दू जनसंख्या का विजयी दल का समर्थन ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों मे सामान्य रहा। अनुभाग 9.7 मे विजयी दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य सहःसम्बन्ध निरूपित किया गया। मुस्लिम जनसंख्या का समर्थन विजयी दल के साथ नगरीय क्षेत्रों में सामान्य है। अन्तिम अनुभाग मे विजयी पार्टी एवं संयुक्त चरों

के मध्य रैखिक सम्बन्ध का विवरण प्रस्तुत किया गया है। तदानुसार इसके अन्तर्गत अधिकांश सम्बद्ध क्षेत्र नगरीय क्षेत्रों एवं आस–पास की विधानसभाओं में है। असम्बद्ध क्षेत्र ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में है।

कोई भी व्यक्ति जो सामाजिक प्राणी है, वह एक राजनीतिक प्राणी भी है। अस्तु उसका सम्बन्ध राजनीति के समस्त पहलुओं से है। आज के सन्दर्भ मे जहां व्यक्ति अपने मत का प्रयोग राजनीतिक दलों को विजयी बनाने में करता है, वही कभी–कभी अपने मतों का प्रयोग राजनीतिक दलों को पराजित करने में करता है। ऋणात्मक मतदान दल विशेष के प्रति ही किया जाता है। इस शोध प्रबन्ध के अन्तिम अध्याय 10 मे पराजित दलो के साथ सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्धों का परीक्षण किया गया है। अध्ययन की आवश्यकतानुसार अध्याय 10 को आठ अनुभागों में विभाजित किया गया है। प्रथम अनुभाग 10.1 में समाश्रयण प्रतिमान, सम्बन्धों की प्रकृति, सम्बन्धों की मात्रा, समाश्रयण अवशेष को विभिन्न समीकरणों से विश्लेषित किया गया है। द्वितीय अनुभाग 10.2 में पराजित दल एवं कुल जनसंख्या, तृतीय अनुभाग 10.3 मे पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या, अनुभाग 10.4, 10.5, 10.6, 10.7, 10.8 मे क्रमशः पराजित दल जनजाति जनसंख्या, साक्षर जनसंख्या, हिन्दू जनसंख्या, मुस्लिम जनसंख्या एवं संयुक्त चर के मध्य स्थापित सहःसम्बन्ध को प्रस्तुत किया गया है। समाश्रयण प्रतिमान के आधार पर सम्बन्धों की प्रकृति, मात्रा का भी विश्लेषण किया गया है। पराजित दल एवं सामाजिक चरों के मध्य सम्बन्धों की प्रकृति विभिन्न निर्वाचन वर्षों में भिन्न–भिन्न है। निर्वाचन वर्ष 1991 प्रथम, द्वितीय, पंचम चर के साथ सम्बन्ध धनात्मक है जब कि अन्य चरों के साथ ऋणात्मक सहःसम्बन्ध है। निर्वाचन वर्ष 1989, 85, 80, 77 मे समस्त चरो के साथ पराजित दल का समाश्रयण प्रतिमान ऋणात्मक है। निर्वाचन वर्ष 1974 में षष्टम् चर को छोड़कर समस्त चरों के साथ

धनात्मक सम्बन्ध है। निर्वाचन वर्ष 1967 चतुर्थ षष्टम् चर के साथ धनात्मक सम्बन्ध है जब कि अन्य चरो के साथ ऋणात्मक सम्बन्ध है। निर्वाचन वर्ष 1962 मे प्रथम, चतुर्थ चर के साथ धनात्मक सम्बन्ध है जबकि शेष चरो के साथ ऋणात्मक सम्बन्ध है। सहःसम्बन्ध गुणांक की गणना समस्त सामाजिक चरों के साथ की गयी जिसका परिणाम निम्नवत रहा। जनपद मे निर्वाचन वर्ष 1991 मे प्रथमचर एवं पराजित दल के साथ सहःसम्बन्ध गुणांक पूर्व धनात्मक पाया गया अर्थात सहःसम्बन्ध पूर्ण था। निर्वाचन वर्ष 1989 मे समस्त चरो के साथ सहःसम्बन्ध ऋणात्मक था। निर्वाचन वर्ष 1985 मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं संयुक्त चर के साथ सहःसम्वन्ध पूर्ण धनात्मक पाया गया जब कि शेष चरो के साथ ऋणात्मक सहः सम्बन्ध था। निर्वाचन वर्ष 1980 मे तृतीय एवं षष्टम् चर के साथ सहः सम्बन्ध पूर्ण धनात्मक पाया गया जबकि अन्य चरों के मध्य ऋणात्मक सम्बन्ध रहा। निर्वाचन वर्ष 1977 मे प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ एवं संयुक्त चर के मध्य ऋणात्मक सहःसम्बन्ध था जबकि शेष चरों के साथ धनात्मक। निर्वाचन वर्ष 1974 मे निम्न धनात्मक सहःसम्बन्ध केवल मुस्लिम चर के साथ पाया गया शेष चरों के साथ ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया। निर्वाचन वर्ष 1967 मे प्रथम एवं संयुक्त चर के साथ ऋणात्मक सहःसम्बन्ध था अन्य सामाजिक चरों के साथ पूर्व धनात्मक। धनात्मक सहःसम्बन्ध से तात्पर्य समर्थन करना एवं ऋणात्मक सहःसम्बन्ध विरोध करना है। प्रथम अनुभाग के अन्तिम उपअनुभाग में मानक त्रुटि, 'F' अनुपात एवं 'b' मानकी मानक त्रुटि का वर्णन किया गया है। सर्वाधिक मानक त्रुटि निर्वाचन वर्ष 1991 के प्रथम चर में एवं सबसे कम चतुर्थ चर में .003 पायी गयी। 1962 से 1991 तक सर्वाधिक 'F' अनुपात 1991 के निर्वाचन मे द्वितीय चर मे और सबसे कम 1989 मे हिन्दू चर (पंचम चर) में पायी गयी। अध्याय के दूसरे अनुभाग 10.2 मे पराजित दल एवं कुल जनसंख्या के मध्य सहःसम्बन्ध का विश्लेषण किया गया। प्राप्त परिणाम यह स्पष्ट करता है कि नगरीय विधान सभायें सम्बद्ध क्षेत्र में

है जब कि ग्रामीण विधानसभायें असम्बद्ध क्षेत्र में है। पराजित दल एवं अनुसूचित जाति जनसंख्या के बीच सह सम्बन्ध विश्लेषण से निष्कर्ष निकला कि अनुसूचित जातियों का अधिकांश मत समर्थन उच्च धनात्मक या उच्च ऋणात्मक रहा अर्थात असम्बद्ध सम्बन्ध व्यापक था। अनुभाग 10.4 मे पराजित दल एवं जनजाति जनसंख्या के मध्य स्थापित रैखिक सम्बन्धों का अध्ययन किया गया तदानुसार सम्बद्ध क्षेत्रों मे इस चर का सम्बन्ध सामान्य रहा। अनुभाग 10.5 मे पराजित दल साक्षर ज नसंख्या के मध्य सहःसम्बन्ध का विश्लेषण किया गया, जिसमे ग्रामीण एवं नगरीय दोनों विधानसभाओं में शिखित जनसंख्या का सम्बन्ध मध्यम धनात्मक रहा। अनुभाग 10.6 में पराजित दल एवं हिन्दू जनसंख्या के मध्य सम्बनधों का विश्लेषण किया गया है। प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि ग्रामीण असम्बद्धता उच्च ऋणात्मक है जब कि नगरीय असम्बद्धता धनात्मक है। ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों मे इसका सम्बन्ध सामान्य है अर्थात् सम्बद्ध विधान क्षेत्रों की संख्या अधिक है। अनुभाग 10.7 मे पराजित दल एवं मुस्लिम जनसंख्या के मध्य सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है। मुस्लिम जनसंख्या का सम्बन्ध मध्यम धनात्मक एवं ऋणात्मक पाया गया अर्थात् इस वर्ग में अधिकांश विधानसभा सम्बद्ध क्षेत्रों में पायी गयी। अध्याय के अन्तिम अनुभाग में पराजित दल एवं संयुक्त चरों के मध्य रैखिक सम्बन्धों का विश्लेषण किया गया है तदानुसार अन्य चरों की भांति संयुक्त चरों का प्रभाव भी ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक रहा, अर्थात् ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवहार तीव्रगति से परिवर्तित हुआ। नगरीय क्षेत्र भी विधान सभाओं का व्यवहार प्रतिरूप स्थिर एवं स्थायी था। विभिन्न निर्वाचन वर्षों में इसमें परिवर्तन अल्पतम हुआ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे अनेक सांख्यिकीय माध्यमों को चयनित कर बहु आयामी निष्कर्षों को निरूपित किया गया। तथापि सांख्यिकीय गणनाओं के अतिरिक्त व्यक्तिगत अनुभव, क्षेत्रीय सर्वेक्षण विचार विमर्श से जो निष्कर्ष सामने

आये हैं ये गणनाओं से अलग हैं। तदानुसार वर्तमान राजनैतिक पृष्ठिभूमि में जनमत का राजनैतिक दलों, नेताओं, व्यक्तियों से विश्वास टूट सा गया है। जिसके प्रमुख कारण उनकी कथनी एवं करनी में व्यापक अन्तर का होना है निर्वाचन के पूर्व एवं पश्चात् जातिगत भावनाओं, वर्गवाद, सम्प्रदायवाद में संलग्न रहना जनमत से भेदभाव करना (आर्थिक आधार पर) अपने वर्ग एवं जाति के लोगों को प्रश्रय देना। जनभावनाओं का अनादर करना, कर्तव्यों को भूल जाना, अधिकारों की हेकड़ी दिखाना; अपने को सार्वभौम समझना। जनमत से विचारोंपरान्त यह बात स्पष्ट हुई कि जनमत सारे दलों को वर्तमान में एक जैसा मानता है किन्तु मजबूरी में किसी न किसी दल को समर्थन करता है।

वर्तमान में कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार राजनैतिक दलों एवं व्यक्तियों की आवश्यकता है; निश्चित ही ऐसे व्यक्तियों एवं दलों को जनमत स्वीकार करेगा। जिसके उदाहरण पिछले निर्वाचन है। प्रथम एवं द्वितीय महानिर्वाचन में पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, एवं लाल बहादुर शास्त्री, चतुर्थ महानिर्वाचन में श्रीमती इन्दिरागांधी जी, निर्वाचन वर्ष 1977 मे जयप्रकाश नारायन, 1985 में श्री राजीव गांधी जी 1989 में श्री बी.पी. सिंह जी । निर्वाचन वर्ष 1991 का जनमत दिग्भ्रमित था जिससे उसके बाद अलपमत, अस्थिर सरकार ही देश को मिली। देश की विकासगति मन्द हो गयी। यह प्रक्रिया तब तक चलते रहने की सम्भावना है जब तक देश मे राजनीतिज्ञों एवं राजनीतिक दलों की कर्तव्यनिष्ठ ईमानदार छवि निर्मित नही होगी। वस्तुतः जनमत किसी राजनैतिक दल के समर्थन के पूर्व उनकी आर्थिक नीति, कर्तव्य परायणता, ईमानदारी, व्यक्तित्व की समीक्षा करता है। परिस्थितिकी के साथ–साथ इन तत्वों का जन समर्थन पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध वैध मतदान, कांग्रेस मत, भाजपा मत, जनता दल मत, बहुजन समाजपार्टी मत, विजयी दल मत, पराजित दल मत एवं सामाजिक संरचना के परिस्थितिकी की तर्क पूर्ण विवेचना है। प्रत्येक निर्वाचन वर्ष के लिए अलग–2 दलों एवं सामाजिक चरो के साथ सम्बन्धों को परिस्थितिकी स्तर पर मूल्यांकित किया गया है। सम्बन्धों की सफलता एवं असफलता को भी क्षेत्रीय सन्दर्भों में मूल्यांकित कर प्रस्तुत किया गया है। यह शोध प्रबन्ध भविष्य मे शोध कत्ताओं को आधार प्रदान करेगा। प्रशासकीय सेवाओं, प्राध्यपकों, पाठकों, राजनीतिक दलों, निर्वाचन आयोगों, के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगा।

Appendix

APPENDIX N0. 2.1

PARLIAMENTARY CONSTITUENCIES OF ALLAHABAD DISTRICTS

YEAR - 1952

CONSTITUENCIE S. N0.	NAME OF PARLIAMENTARY
1-	ALLAHABAD DISTT. (WEST)
2-	ALLAHABAD DISTT. (East) cum Jaunpur
	Year - 1957
1-	Allahabad
2-	Phulpur
	YEAR - 1962, 67, 71, 77, 80, 85, 89, 91
1-	Allahabad
2-	Phulpur
3-	Chail (S.C.)

APPENDIX N0. 2.2

ASSEMBLYCONSTITUENCIES OF ALLAHABAD

YEAR - 1952 TO 1991

YEAR - 1952

APPENDIX N0. 2.1

PARLIAMENTARY CONSTITUENCIES OF ALLAHABAD DISTRICTS

YEAR - 1952

CONSTITUENCIE S. N0.	NAME OF PARLIAMENTARY
1-	ALLAHABAD DISTT. (WEST)
2-	ALLAHABAD DISTT. (East) cum Jaunpur
	Year - 1957
1-	Allahabad
2-	Phulpur
	YEAR - 1962, 67, 71, 77, 80, 85, 89, 91
1-	Allahabad
2-	Phulpur
3-	Chail (S.C.)

APPENDIX N0. 2.2

ASSEMBLYCONSTITUENCIES OF ALLAHABAD

YEAR - 1952 TO 1991

YEAR - 1952

CONSTITUENCIE S. N0.	NAME OF ASSEMBLY CONSTITUENCIES
1-	Meja-Cum-Karchana(South)
2-	Karchana (North-Cum-Chail South)
3-	Soraon (North)-Cum-Phulpur (West)
4-	SORAON [SOUTH]
5-	PHULPUR [CENTRAL]
6-	Phulpur East-Cum-Handi North West
7-	Handia (South)
8-	Shirathu Cum -Manjhanpur
9-	Allahabad City (East)
10-	Allahabad City (Central)
11-	Chail (North)
	Year - 1957
1-	Manjhanpur
2-	Chail
3-	Allahabad City (North)
4-	Allahabad City (South)
5-	Soraon (West)
6-	Soraon (East)
7-	Phulpur
8-	Kewai
9-	Karchana
10-	Media

Year - 1962

1- Media

2- Bara (S.C.)

3- Karchana

4- Kewai

5- Jhusi (S.C.)

6- Phulpur

7- Soraon East

8- Soraon West

9- Allahabad City (North)

10- Allahabad City (East)

11- Chail

12- Bharwari (S.C.)

13- Karari (S.C.)

14- Sirathu

Year - 1967

1- Meja (SC.)

2- Karchnana

3- Bara

4- Bahadurpur

5- Handia

6- Pratappur

7- Soraon

8- Kaurihar

9- Allahabad (North)

10- Allahabad (South)

11- Allahabad (West)

12- Chail (S.C.)

13- Manjanapur (S.C.)

14- Sirathu

Year - 1974, 1977, 1980, 1985, 1989, 1991

1- Media

2- Karchana

3- Bara

4- Jhusi

5- Handia

6- Pratappur

7- Soraon

8- Nawabgunj

9- Allahabad (North)

10- Allahabad (South)

11- Allahabad (West)

12- Chail

13- Manjanapur

14- Sirathu

Appendix 2.3

TEHSILS OF ALLAHABAD DISTRICTS

Year-1951, 1961, 1971, 1981

S.N. of Tehsils	Name of Tehsils
1-	Media
2-	Karchana
3-	Chail
4-	Phulpur
5-	Soraon
6-	Handia
7-	Sirathu
8-	Manjanapur
	Year - 1991
1-	Media
2-	Karchhana
3-	Bara
4-	Chail
5-	Phulpur
6-	Soraon
7-	Handia
8-	Sirathu
9-	Manjanapur

Bibliography

BIBLIOGRAPHY

Abrams, p. and little A. (1965) 'The young voter in British politics.' The British journal of Socioligy, 16, 95-100.

Acharya, N.C.N. (1937) Indian Elections and Rranchise. The Alliance co., Madras.

Ahmad, H. (1963) kansas Gubernatorial elections - a study in political Geography. ph. D. Thesis, Kansas University.

Ahmad, H. (1966) 'Election data analysis as a tool of research in political geography : Pakistan Geographical Review. 21, 34-40.

Ahmad, B. (1970) 'Caste and electoral politics', Asian Survey 10 (11), 979-92.

Alford, R.R. (1963) 'The role of social class in American Voting Behaviour'. Western politicl Geography, 16, 180-99.

Alford, Robert R. and Engene C. lee (Sep. 1968) 'Voting Turnout in American Cities' American political Science Review, 62 (3). 796-813.

Alic Jacob (ed.) (1978), Constitutional Development in India since Independence, Bombay, Tripathi.

Alic and yaseemasa Kuroda (1968) ' Aspects of Community political participation in Japan. The Journal of Asian Studies. x x vii.

Amani, K.Z. 1970 'Elections in Haryana. India : A Study in Electroral geography'. The Geographer. 17, 27-40.

Amani, K.Z. (1972) 'Voting patterns in Indian elections : Uttar Pradesh - a case study! Geographical Review of india. 34, 123-133.

Amani, K.Z. (1973) 'Electoral Geography and indian elections;. Geographical Review of india. 35 (4)

Amani, K.Z. (1974) 'Questions raised by a map of the 1971 Indian elections.' 'Questions raised by a map of the 1971 Indian elections.' Professional Geographer. 26. 207-209.

Andrews and mookerjee (1967) Rise and growth of the Congress in india', Meerut.

Archer, J.C. (1982) "Some Geographical Aspects of the American presidential Election of 1980". Political Geography Quarterly, But terworth, U.K.

Austin, Ranney (1972) :Turnout and Representation in presidential primary Election." American political Science Review. 66.

Ayyar, K. (1956) All India Election Guide. Oriental publications,Madras.

Barnett, J.R. (1973) "Scale components in the diffusion of the Danish Communist party, Geographical Analysis. 5, 35-44

Babulal Fadia (1984) State politics in India' New Delhi, Radient.

Bassett, K. (1972) "Numerical methods for map analysis." Progress in Geography. 4. 219-254.

Barnett, M.R. et al (1975) Electoral politics in the Indian State vol. 4-party systems and cleavages. Manohar Book Service, Delhi.

Baxter, L. (1969) District Voting Trends in India - A Research tool, Columbia University press, New York.

Berelson, B. R. and Stelner, G.A. (1964) Human Behaviour An Inventory of Scientific Findings. Harcour. Brace and World, Inc., New york.

Benjamin, Roger, W. and et al (1972) Patterns of political Development Japan, India, Israel. Devid Mckay Company, INC, New york.

Berelson, B.R. et al (1968) Voting. 'University of chicago,' Chicago.

Berry, B.J.L. and Marble, D.F. eds (1968) Spatial Analysis A Reader in Statistical Geography, Prentice-Hall New Jersey.

Bhagwati, J.N. et. al (1975) Electoral politics in the Indian States. Vol. 2 - Three Disadvantaged Sectors. Manohar Book Service. Delhi.

Bhalla. R.P. (1973) Elections in India (1950-72) S. Chand, Delhi.

Bhambhari, C.P. and Verma. p.s. (1972) 'Voting behaviour of Muslim Cummunity : A study of Lok Sabha Constituency. Indian Journal of political Science. 33 (2)

Bhambhari, C.P. and Verma, P.S. (1974) 'Voting behaviour : a Comparative study of the minority and majority communities.' Indian Journal of political Science. 35 (4)

Bnambhari, c.p. (1980) The janata party : A New profile. Delhi.

Bhunia, S.B. (1968) 'Social and economic context of Indian election.' Economic studies. 8 (11-12) 644-77.

Birdsall, S.S. (1969) 'preliminary analysis of the 1968 Wallace Vote in the Southeast.' South-eastern Geographer. 9. 55-66.

Biswas, J. (1984) 'Lok sabha Elections, West Bengal, 1952- 82 A study in Electoral Geography.' Unpublished D.phil Theses, Department of Geography, Allahabad University.

Blair, H.W. (1978) Voting, Caste, Community, Society. young Asia publications, New delhi.

Blake, D.E. (1967) 'The measurement of regionalism in canadian Voting patterns.' Canadian Journal of political Science 5. 55-81.

Blakes E. (March 1972) 'The measurement of Regionalism in Canadian Voting patterns.' The Canadian Journal of political Science. 5 (i) 55-81.

Brunn, S.D. (1974) Geography and politics in America Harper and row. new york.

Buchman, William (May 1956) 'An Inquiry into purposive Voting journal of politics.

Buruhan, W.D. and Sprague, J. (1970) 'Additive and multiplicative Models of the Voting behavour : the case of pensylvamia 1960-1968'. American political Science Review. 114 (2) 471-90.

Busted, M.A. (1975) Geography and Voting behavour. Oxfort University press, London.

Butter, D.E. and Stokes. D.E. (1969) political change in Britain : Forces Shaping electoral choice. Macmillan, London.

Cambell, A. et al (1954) The Votes Decides. Row peterson Evouston.

Cambell, A. et al (1960) The American Voter. John wiley. New york.

Cambell, R.V. and knight, D.B. (1976) 'political territoriality, in canada - a choropleth and Is opleth analysis. Canadian Cartographer. 13. 1-10.

Cassetti, E. and Sample, R.K. (1968) 'A method for stepwise Separation of Spartial Trends. ; Michigan Inter-University Community of Mathematical Geographers. Discussion paper II.

Capecchi, V. and Galli, G. (1969) 'Determinats of voting behaviour in Italy : a linear causal model of analysis.

in Dogan, M. and Robhan, S. (editors). Quantative Ecological Analysis in the social Sciences. The M. I. T. press. Cambridge. Mass. 235-84.

Casetevens, T. W. (1968) 'a Theorem about voting'. The American political Science Review 62 (1) 205-207.

Chandidas, R. et al. eds (1968) 'India votes : A Source Book on Indian Elections.' Popular. Bombay.

Chandidas, R. (1968) Changing Geography of Representation of parliamentary Constituencies from 1951-1966. Economic & political weekly, Bombay, 3, 41.

Chandra, A. and Saxena, T. P. (1979) Style Manual for Writing thesi Dissertations and papers in social Sciences. Metropolita Book company. pvt Ltd. new Delhi.

Chorley, R. J. and Haggetts, P. (1965) 'Trend surface mapping in geographical research.' Trans. Inst. Brit. Geographer. 37

Converse P.E. (1966) "The Concept of a normal Vote'. in campbell, A Converse, P.E. Miller, W. E., and stokes, D. E. Eletions and the political Order. John Wiley. New York. 9-39

Costar, E.P. W. da (1970-71) 'The congress multiplier in 1971, Monthly public opinion Surveys. 16, Dec., 70 Jan. and Feb. 1971.

Cox, K.R. (1967) 'Regional anomolies in the voting behaviour of the population of England and walls, 1921-1951'. Ph. D. Thesis, University of Illinois. (1967).

Cox, K.R. (1968) 'Suburbia and voting behaviour in the London Metropoliton areas'. Annuals, Association of American Geographers. 58, 111-27.

Cox, K.R. (1969 a) 'The voting decision in a spatial context', progress in Geography 1, 81-117.

Cox, K.R. (1969 b) 'Voting in the London suburbs : a factor analysis and causal model' in Dogan, M. and Robban, S. (editors), Quantitative Ecological Analysis in the Social Sciences. The M. I. T. press, Cambridge, Mass, 343-70.

Cox, K.R. (1970) 'Geography, Social contexts, and voting Behaviour in wales, 1861-1951', in Allardt, E., and Robban, S. (editors), Mass politics. The Free press, New York, 117-59.

Cox, K.R. (1971) 'The spatial components of urban voting Response surfaces'. Economic Geography. 47. 27-35.

Cox, K.R. (1972) 'The neighbourhood affect in urban voting response surfaces' in Sweet, D. C. (editor). Models of urban structure. D.C. Heath Lexington, Mass..159-76.

Cox, K.R. (Undated) 'The spatial evolution of national voting response surfaces : theory and measurement', Department of Geography. Ohio State University. Disenssion paper No. 9 Columbus.

Crisler, R.M. (1952) 'Voting habits in the united States'. Geographical Review. 42. 300-301.

Dasgupta, B. and morris - Jones; W. H. (1975) putterns and Trends in Indian politics, allied New Delhi.

Davis, OA. et al. (1970) 'An expositary development of a mathematical model of the electoral process.' American political Science Review. 64 (2) 426-48.

Dikshit, R.D. (1980) 'On the place of electrol studies in political Geography'. Transactions, Institute of Indian Geographer. 2 (2). 23-27.

Dikshit, S.K. & 'Giri, H. H. (1987) Delimitation of Indian parliamentary constituencies.' National Geographer. Allahabad , XXII, 1, 65-69.

Dikshit, S.K. (1988) 'patterns of party performance in Haryana 1982 Vidhan Sabha Election. 'National Geographer, Allahabad, XXIII, 1, 75-82.

Dogan, M. (1969) 'A covarionce analysis of French electoral Data : in Dogan. M., and Rokkan, S. (editor), Quantitative Ecological Analysis in the social Sciences. The M.I.T. press, Cambridge. Mass. 285-98.

Dogan. M. and Robban, S. editors (1969) Quantitative Ecological Analysis in the Social Sciences. the M.I.T. Press. Combridge. Mass.

Dreyer, R.C. and Reseubaurn, U.A. eds (1970) Political Opinion and Electroral Behaviour-Essays and Studies. Wordsworth Belmont.

Dubey, B.N. (1988) Electoral Turnout in parliamentary Elections of Kerala : A study in Electroal Geography. D. phil thesis, Department of Geography, Allahabad University,
Allahabad.

Elkins, David, J. (1975) 'Electoral participation in a South Indian Context', Delhi, Vikas.

Field; J.C. et al. (1977) Electoral politics in the Indian states, vol. 3 the impact of modernisation, manohar Book service Delhi.

Galli, G. 'patterns of political participation in study N. Haveryale University.

Gautam, Om p. (1985) Indian National Congress. An Analytical Biography.

Gahlot, N.S. (1985) 'State Governors in India, Trends and Issues' New Delhi, Gitanjali.

Gahlot, N.S. (1988) 'Trends in Indian politics' new Delhi.

Galanville, T.C. (1970) Spatial Biases in Electoral Distributions, Unpublished Thesis, University of Melbourne.

Goel, Madan lal (Jan-June 1971) 'Urban-Rural Correlates of political participation in India', political Science Review, 10 (182).

Goguel, F. (1951) Geographic des elections francaises de 1870 a 1951. Ammand colin, peris.

Goldsere, A.S. (1969) 'Social determinism and rationality as bases of party identification', American political Science Review, 63 (1) 5-25.

Goldberg, A.S. (1966) 'Discerning a causal pattern among date on voting variables', Am. pol. Sc. Rev., 60.

Goodey, Brain H. (1964) Some Comments on the Application of Electora Data : A new Direction in political Geography, Bloonington Indians.

Goodey, B.R. (1968) The Geography of Elections : An Introductory Bibliography. University of North Dekota, Centrs for the study of Cultural and Social Change, Monographs, Grandforks, North Dekota.

Goodmen. L.A. (1950) "Some alternatives to ecological correlations' American Journal of Sociology, 44 610-25.

Goyal, O.P. (1969) 'politics, Caste and Voting Behaviour', political Science Review, 3 (2), 237-44.

Goyal, D.P. (1980) 'India : Government and politics, New Delhi.

Graham, B.D. (1967) 'A report on some trends in Indian elections the case of Uttar pradesh, Journal of Common Wealth. Political Studies. 5, 179-99.

Greer, S., and Kaufman, W.C. (1960) 'Voting in a metropolitan community' an application of social area analysis, Social Forces, 33, 196-204.

Gudgin, G. and Taylor, p.j. (1978) Seats, Votes and the Spatial Orqanisation of Elections, pion, London.

Gudgin, G. and Taylor, P.G. (1974) 'Electoral, bias and the distribution of party voters', Transactions, Institute of British Geographers, 63, 53-73.

Gupta, R.L. (1985) Spatial patterns of Voting Behaviour in The Assembly Elections (1967-80) in Rajasthan. Ph.D. Thesis, Rajasthan University, Jaipur.

Hardgrave, Robert L. (1970) 'Government and politics in Developi/ng nation', New york.

Harring, L.L. (1959) An Analysis of Spatial Aspects of Voting Behaviour in Teneresses, ph.D. Thesis, Iowa State University, Iowa.

Harris Lovis (1956) 'Some observations on Electoral behaviour Research' Public opinion Quarterly, 20.

Hudson. T.W. (1977) 'Mississippi's 1975 Gubernatorial Race in Mattiesburg-petal : An Electoral Geography. M.A. thesis, University of Southern Mississippi.

Hall, P. (1982) The new political Geography Seven Years on.

India, Census Commission, Census Reports, 1951, 1961, 1971, 1981 and 1991; New Delhi.

India, Election Commission Reports, on the General Elections in India, New Delhi.

Jahari, J.C. (1985) 'Indian Government and politics: Jullundhar.

Jahdak 8 Gillies R. (1982) How well does 'region' explain political party charaeteristice political Geography Quraterly Butterworth, U.K.

Johnston, R.J. (1974) Social distance, proximity and Social Contact, Geographika Annaler, 56b, 57-67.

Johnston, R.J. (1973) 'Spatial patterns and influences on voting in multi-condidate elections- the Christchurch city Council election 1963', Urban Studies 10, 69-82.

Johnston, R.J. (1972) Spatial elements in voting patterns at the 1968 christchurch city council election. Political Science 24 (1), 49-61.

Johnston, R.J. (1976 a) Parliamentary seat redistribution : more opinions on the theme', Area. 8, 30-34.

Johnston, R.J. (1976 b) Spatial Structure plurality system and electoral bias', Canadian Geogapher. 20, 310-28.

Johnston, R.J. (1977 a) 'Principal components analysis and factor analysis in geographical research : some problems and issues, South African Geographical Journal, 59, 30-44.

Johnston, R.J. (1977 b) The compatibility of spatial structure and electroal reforms : obervations on the electoral geography of wales, Cambria. 125-51.

Johnston, R.J. (1977 c) The electoral geography of an election campaign : Scottish Geographical Magazine. 93, 98-108.

Johnston, R.J. (1978) Multivariate Statistical Methods in Geography A primer on the general linear Model. Longman, London.

Johnston, R.J. (1979) Political Electoral and Spatial systems. Clarendon Press, Oxrord.

Johnston, Gerald W. (1971) 'Political Correlates of Voter, participation : A Deviant Case Analysis', American political Science Review, 65 (3), 768-76.

Johnston, R.J. (1982) Short-term electoral change in England : Estimates of its spatial variation, political Geography Quarterly Butterworth, U.K.

Johnston, R.J. & Others (1983) The Changing Electoral Geography of the Netherlands 1946-1981. Journal of Economic and Social geography, 1983, IXXIV.

John W. House (1982) political Geography of Contemporary events unfinished business in the south Atlantic, political Geography Quarterly Butterworth, U.K.

Janda K. & Gillies R. (1982) How well does 'region' explain political party characteristics ? political Geography Quarterly Butterworth, U.K.

Kashyap, Subhosh, C (ed) (1971) 'Elections and Electoral Reforms in India', New Delhi, Institute of Constitutional and parliamentary studies.

Kasperson, R.E. (1969) 'On suburbia and voting behaviour', Commentary, Annals, Association of American Geographers 59, 405-411.

Key, V.C . (1968) The Responsible Electorates. Belknap press of Harvard University press, Cambridge, Mass.

Khan, Rashiududdin (1969 a) political participation and political Change in Andhra pradesh', A Study of Electoral politic in a Developing participatory Democracy. (Memeographed) Hyderabad Osmenia University.

Khan, Rashudddin (1969 b) Charminar : Communal politics and Electoral Behaviour in Hyderabad City, political Science Review, 8 (1), 569-90.

Khan, Shamshad (1989), Parliamentary Elections in orissa : A study in electoral Geography.

Kim, J., and Mueller, C.W. (1978) 'Factor Analysis. Beverly Hills, Calif : Sage.

Khan, R. Sharma, B.A.V. and Acharya, K.R. (1975) 'Electoral poletics in Andhra pradesh' (india) : An Interpretation of Multivariate Factor in political Behaviour of voters in two selected Constituencies (mimeographed), Osmenia University, Hyderabad, 4(12), 1161-73.

Kothari, R. ed (1967) Party systems and Election studies. Occassional papers of the Centre for Developing Society, No. I Allied puplishers, Bombay.

Kothary, R. (1970) Caste in Indian politics. Orient Longmans, New delhi.

Krehbiel, E. (1916) 'Geographical influences in British elections', Geographical Review, 2, 419-32.

Krishna Gopal (1967) 'Electoral participation and political Integration', Economic and political weekly, Bombay.

Kasperson, R.E. and Minghi, J.V., eds (1969) The Structure of political Geography, Aldine, Chicago.

Kanshik, S. (1982) Elections in India : Its Social Basis. K.P. Bagehis Company, Calcutta.

Krishna, M.P.H. (1967) Elections, Candidates and Voters. New India press, New Delhi.

Laux, H.D. and Simms, A. (1973) 'parliamentary elections in West germany: the geogaphy of electoral choice', Area. 5, 161-71.

Lewis, p.w. and Skipworth, C.E. (1966) Some Geographical and Statistical Aspects of the Distribution of Votes in Recent General Elections. University of Hull, Department of Geography, Miscelleneous series No. 32 Hull.

Lipset, S.M. and Rokram, s. (1967) 'Cleavage Structures, party Systems and Voter alignments : an introduction', in lipset, S.M. and Rokram, S. (editors) party systems and Voter Alignments. The Free press, new York, 3-64.

Maheshwari, S.R. (1985) Political Development in India' New Delhi, Concept.

Manrite, V.G. (1982) Changes in Regional Voting patterns in Maharashtra, 1975-80. paper presented at NAGI CONGRESS, 1982, Bombay.

Madan, N.L. (1984) Congress party and Social Change.

Mcgfe, T.C. (1962) "The Malayan election of 1959 - a study in electoral geography' Journal of Tropical Geography, 16, 72-99.

Mcgfe, T.C. (1965) 'The Malayan parliamentary elections, 1964. Pacific View-point, 6, 96-101.

Mcphall, I.R. (1971) 'Recent trends in electoral geography', proceedings of the sixth New Zeal and Geography Conference Christchurch. 1, 7-12.

Mehrotra, N.C. (1972) 'Political Crises and Polls in India', new Delhi.

Miller, W.E. (1959) 'The Study of Electoral Behaviour; Survey Research Centre, Ann Arbor, Michigan.

Narain, I. (1978) Indian Elections Studies. Allied pub. New Delhi.

Narain, I. and Sharma, M. (1969) Election Politics in India : notes towards empirical theory', Asian Survey 9(3), 202-20.

Narain, I. et al. (1976) Elections studies in India : An evaluation Allied publishers, New Delhi.

Os senbrugge, J. (1982) Political Geography around the world : West Germany, Political Geography Quarterly, But terworth, U.K.

Osei-Kwame, P. (1980) A new conceptual Model for the Study of political integration in Africa, Washington : University Press of America.

Osei-Kwame, P. and peter J. Taylor (1984) A politics of Failure : the Political Geography of Ghanaian Elections, 1954-1979. Annals of the association of American Geographers, 74(4), 574-589.

O. Loughlin, J & Taylor, A.M. (1982) Choices in redistricting and electoral outcomes : the case of Mobile, Alabama, Political Geography Quarterly Butterworth, U.K.

O. Loughlin, J. V. (1971) Selected Aspects of the Electoral Geography in Philadelphia, 1906-71 : A cartographic and Multivariate Analysis M.A. Theses, penn. State University.

Pal, A. (1985) Assembly Election in Utter Pradesh 1985 : Astudy in electroal Geography D. phil, thesis, Department of Geography Allahabad University, Allahabad.

Pal, S. (1972) Indian Elections since Independence. Election Archives, New Delhi.

Palmer, M.D. (1975) Elections and Political Development : The South Asian Experience. Vikas, New Delhi.

Pandey, J. (1982) 'State politics in India ' New Delhi.

Pattabhiram, M. Editor (1972) General Elections in India An Exhaustive Study of Main political trends. Allied publishers, New Delhi.

Phillips, C.H. editor (1963) Politics and Society in India. George Allan and Unwin, London.

Pomper, C.M. (1968) Elections in America-control And influence in Democratic politics. New York.

Prescott, H.R.V. (1959) 'The functions and Methods of electoral Geography', Annals of the Association of American Geographers. 49, 296-304.

Prescott, J.R.V. (1972) Political Geography, Methuen, London.

Parker, A.J. (1982) 'The friends and neighbour's voting effect in the Galway west constituency 'political Geography quarterly Butterworth; U.K.

Ranney, A. (1962) 'The utility and limitation of aggregate data in the study of electoral behavour in A. Ranney, Essays on the Behavioural Study of politics, University of Illinois press.

Reeves, P.D., Graham, B.D. and Goodman, J.M. (1975) Elections in Uttar pradesh; 1929-1951, Manohar, Delhi.

Reynods, D.R. (1969) A Spatial model for analysing voting behaviour', Acta Sociologica. 12, 122-30.

Reynold. D.R. and Archer, J.C. (1969) An Inquiry into the Spatial basis of Electoral Geography. Department of Geography University of Lowa, Discussion paper No. 11.

Rice, S.A. (1928) Quantitative Methods in politics, Alfred A.knof. New York.

Robinson, A.H. and sale, R.D. (1969) Elements of cartography. John willey, New York.

Rokkan, S. and Neyriat, J. (1969) International Guide to Electoral Statistics, Mouton. paris.

Ross, R. Editor (1974) Electoral Behavour : A comparative Handbook. The Free press, New York.

Rowley, G. (1969) Electoral behavour and Electoral behavour : a Note on certain recent developments in electoral Geography professional Geographer, 21 (6), 398-400.

Rowley, G. (1970) Elections and population change, Area. 3, 13-18.

Rowley, G. (1971) The Greater London Council Elections of 1964 and 1967 a study in Electoral Geography', Transactions, Institute of British Geographers, 53, 117-32.

Rowley, G. (1975) The redistribution of parlimentary seats in the U.K. : Themes and opinions : Area, 7,.16-21.

Rowley, G. (1975) Parliamentary seat redistribution elaborated, Area, 7, 279-81.

Rowley, D. and Minghi, J.V. (1977) 'A geographical frame-work for the study of the stability, and change of Urban electoral patterns, Tijeschrift Voor Economiche on Social Geographie, 63 (3).

Robinson, A.H. (1961) 'The Cartographic representation of statistical Surface', International Year book of Cartography, 1, 53-61.

Rose, R. and Mossawir, H. (1968) 'Voting and election-a functional analysis', political Studies, 15.

Rajalakshmi, Y. (1985) political Behavour of Women in Tamil nadu.

Schofield, A.N. (1959) Parliamentary Elections. Shaw and Sons, London.

Segal, D.R. and Meyer, M.W. (1969) "the Social Context of political partisenship, in Dogan, M. and Rokan, S. (editors) Quantitative Ecological Analysis in the Social Sciences, M.I.T. press, Cambridge, 217-32.

Shaffer, W.R. (1972) computer Simulations of Voting Behavour. Oxford University press, New York.

Sharma, M. (1972) 'pattern of party competitiveness : a case study of Uttar pradesh up to 1976', Indian Journal of political Science. 33(1) 75-98.

Sharma, J.C. (1980) 'The Geography of political choice in punjab (1952-1977) : An Econological Analysis of patterns and Trends of Electoral Behavour based on Aggregate

Data for Elections to the State Assembly, An Unpulished ph.D. Thesis, punjab University, Patiala.

Sharma. J.C. (1982) 'The Indian Context and Geographical Study of Voting Behavour'. Indian Geographical Studies, Research Bulletin, 19 9-16, Patna.

Sheth, D.L. (1970) 'Political Development of Indian Electorate', Econimic and political Weekly, 5, 137-148.

Sheth, P.N. (1973) 'Indian electoral behavour : Patterns of continuity and change', Indian' Journal of political Science, 34 (2)

Singh, C.P. (1981) 'Geography and Electoral Studies', Transactions of the Institute of Indian Geographers. 3(1) 81-87.

Singh, C.P. (1981) Indian Electoral Geography " Some Methodological Aspects (Short-Communication). Annals of NAGI. 1, 2, 105-8.

Sinha, M. (1977) Electoral Geography of India with Reference to parliamentary Elections of 1971. D. phil Thesis, Department of Geography, Allahabad University, Allahabad.

Sirsikar, V.M. (1962) 'The study of voting behaviour in India : Limitation and problems', Political Science Review. 2(1), 54-59.

Sirsikar, V.N. (1973) Sovereiars without crowns-A Behavioural Analysis of the Indian Electoral process. Popular prakashan Bombay.

Smith Geoffre, A. (1965) An Electoral Geography of South Lancashire and North Cheshire. Unpublished M.A. thesis, Department of Geography. Unpublished M.A. Thesis, Department of Geography, University of Nothingham.

Sorauf, F.J. (1972) Party politics in America. Little, Brown Company, Boston.

Srivastava, M.K. (1979) 'A Statistical package of Computer programms' (Unpublished) Allahabad.

Srivastava, M.K. (1982) Electoral Geography of an Indian State Space-Time Sociological Models of Congress Support in Uttar Pradesh. Atul Dissertations. Allahabad.

Srivastava, G.L. (1986) Locational Analysis of Electoral-Turnout in India : Lok Sabha polls 1952-80. D. Phil Thesis,

department of Geography, Allahabad University, Allahabad.

Srivastava, A.K. (1987) Parliamentary Elections in Rajasthan 1952-80 A Study in Electoral Geography. D. Phil Thesis, Department of Geography. D.Phil Thesis, Department of Geography, Allahabad University, Allahabad.

Singh, C.P. (1980) The Seventh Parliamentary Election in India, ICSSR project (Just Completed).

Sharpe, L.J. (1967) 'Voting in Cities, 'Macmillan, London.

Shelley, F.M. (1982) A Constitutional Choice approach to electoral district boundary delineation, political Geography Quarterly, Butterworth, U.K.

Simmons, J.W. (1967) 'Voting behavour and socio-economic characteristics-the Middlesex East federal election, 1965', Canadian Journal of Eco. And pol. Sc. 33, 239-258.

Singh, U.S. (1985) 'Spatial Analysis of Rightist Support in India : Lok Sabha Election, 1952-80', Umpublished D. phil Thesis, Department of Geography, Allahabad University, Allahabad.

Sukhwal, B.L. (1985) 'Modern political Geography of India', Sterling publishers private Ltd., New Delhi.

Tate, C.N. (1974) 'Individual and contextual variable in British Voting, behaviour : an exploratory note', American political Science Review, 68, 1956-62.

Taylor, A.H. (1973) 'Variations in the relationship, between class and voting in England, 1950-1970', Tijeschrift Voor Economiche en Social Geography, 64, 164-8.

Taylor, P.J. and Jhonston, R.J. (1979) Geography of Elections. Croom Helm, London.

Tayler, P.J. (1981a) Political Geography and the world-economy : In Political Studies from Spatial perspectives, ed. A.D. Burnett. And P.J. Tayler, pp. 157-74. Chichester, U.K. : wiley.

Tayler, P.J. (1981b) Factor Analysis in Geographical research. In European progress in Spatial-Analysis, ed. R.J. Bennett. 251-67, London : Pion.

Tayler, P.J. (1982a) A materialist framework for political Geography. Transactions. Institute of British Geographers Ns7:15-34.

Tayler, P.J. (1982) The changing political Map in the changing Geography of the united Kingdom, ed. R.J. Johnston and J.C. Doornkamp, 275-90 London; Methuen.

Tayler, P.J. (1984a) Accumulation legitimation and the electoral geographies within liberal democracies : In political Geography : recent advances and future directions. Eds, P.J. Tayler and J.W. House, 117-32.

Tayler, P.J. (1984b) The Geography of Elections, In progress in political Geography, ed. M. pacione. London : Croom Helm.

Tayler, P.J. (1984c) The political Geography of Electoral Reform. Geographical Journal 150.

Tayler, P.J. (1985) Political Geography : World Economy, nation State and locality. London : Longmans.

Thorburn, Hugh C. (1963) ed. Party Politics in Canada. Prentice Hall, Toronto.

Tiwari, V.K. (1982) Lok Sabha Elections in Andhra pradesh, 1952-77 : A study in Electoral Geography. D. phil thesis, Department of Geography, Allahabad University, Allahabad.

Tufte, E.R. (1973) 'The relationship between Seats and Votes in two party system', American political Science Review, 67, 540-54.

Thurstone, L.L. (1947) Multiple Factor Analysis. University of Chicago press, Chicago.

Thrift, N & Forbes, D. (1982) A landscape with figures : political Geography with human conflict, political Geography quarter Butterworth, U.K.

Unwin, D.J. (1975) An Introduction to Trend-Surface Analysis, CATMOG, 5.

Verma. S. et al. (1971) The models of Democratic participation : A Cross-National Comparision. Sage publication Bevely Hills, California.

Verma. S.P. et al. (1973) Voting Behaviour in a Changing Society. National, New Delhi.

Verma, S.P. and Bhambhri, C.D. (1967) Elections and political Consciousness in India, Meenakshi prakashan Meerut, Delhi, Calcutta.

Verba Sidney (1967) 'Democratic participation', The Annals of the American Academy of political and social Science CCL XXIII.

Wallerstein, I. (1961) Africa : the politics of independence. New York : Random House.

Wallerstein, I. (1974) The Modern World System. New York : Academic Press.

Wallerstein, I. (1979) The capitalist world Economy. Cambridge : University press.

Weiner, M. (1957) Party politics in India-The Development of a Multi-party System, princeton University press.

Weiner, M. (1967) Party Building in a New Nation-the Indian National Congress, The University of Chicago press, Chicago.

Weiner, M. (1978) India at the polls-The parliamentary Elections of 1977. American Enterprise Institute for public policy Research, Washington, D.C.

Weiner, W. and Kothari, W. editors (1963) Indian Voting Behavour, Mukhopadhyay, Calcutta.

Wolpert, J. (1964) 'The decision process in spatial context', Annalsl of the Association of American Geographers. 54 (4), 537-553.

Wright, C.C. (1977) 'Contextual mdels of electoral behaviour : the southern Wallace Vote', American political Science Review, 71, 497-508.

Wright, J.K. (1932) 'Voting habits in the United States', Geographical Review, 22, 266-72.

Wrong, Lennis, H. (1957 'The pattern of party voting in Canada, public Opinion Quarterly, 21, 252-264.

Wolfinger, R.E. (1965) 'The development and persistence of Esthnic voting', American political Sceince Review 59 (4), 896-908.

Yeates, M. (1974) An Introduction to Quantitative Analysis in Human Geography. Mc Graw-Hill New York.

Young, C. (1982) Ideology and development in Africa. New Haven : Yale University press.

Zain pukhraj (1978) Constitution of India (Hindi) Sahitya Bhawan, Agra.

Zaidi A.M. (1974) The annual Register of Indian political parties. Michico and Panjathan, New Delhi.

शब्दावली

शब्दावली

अवशेष	Residuals
अन्तर्वेशन	Interpotation.
अनावलम्बित	Orthogonal
अनुपात मापक	Ratio Seale
अप्रसामता	Non-Normality
अभिज्ञान	Identification
अवलम्बित	Dependent
अवस्थितिकी विश्लेषण	Locational Analysis
आवंटन	Allocation
आकलित	Estimated
आकलन	Estimation, Estimates
आगम समूह विश्लेषण	Aggregate Analaysis
आंशिक	Net
औसत उच्चताविधि	Mean Elevation Method
केन्द्रक विधि	Centroid Method

कालिक संदर्श	Temporal Dimension
क्रमागत	Continued
घटक	Component
चर	Variable
दल प्रतियोगिता	Competitiveness
निरपेक्ष वितरण	Absolute Distribution
निगमनात्मक	Deductive
प्रकाशित स्रोत	Archival
प्रसमता	Normality
प्रतिमान	Model
प्रतियोगियो की प्रगाढता	contest Intensity
प्रसार	Extension
प्रसरण	variance
बृहत प्रतिदर्श मापदण्ड	Large Sample Criterion
व्याख्यायित	Explained
व्यवहारपरक	Behavioural
भारण	Loadings

मतदान	Turnout
माध्यवर्ग	mean Square
मान	Parameters
मानकलब्धि	Standardised Score
मानकत्रुटि	Standard Error
मापदण्ड	Criterion
यौगिक	Aggregate
रैखिक अन्वेशन	Linear interaction
लब्धि	Score
वर्ग योग	Sum of Squares
विचलन	Deviation
स्थानिक वितरण	Spatial Distribution
सजातीयता	Communality
समाश्रयण	Regression
समूह	Set
सह-सम्बन्ध	Co-relation
सगुणक	Multiple

संकेन्द्रण	Concentration
सतत	Continuous
सापेक्ष आवृत्ति	Relative Frequency
स्थायित्व	Stability
स्वतन्त्रतांक	Degree of Freedom
स्थूल	Gross
सूक्ष्म	Net
स्पर्शांक	Contact number